# PREM SAGUR;

OR,

*THE HISTORY OF THE HINDOO DEITY*

## SREE KRISHN,

*CONTAINING IN THE 10TH CHAPTER OF SREE BUHAGUVUT,*

OF

## VYASUDEVU.



TRANSLATED INTO HINDUVEE

FROM THE

*BRIJ B,HASHA,*

OF

## CHUTOORBHOOJ MISR.



*BY SHREE LULLOO LAL KUB,*

B,HASHA MOONSHEE IN THE COLLEGE OF FORT WILLIAM.

**Calcutta.**

*PRINTED AT THE SUNSCRIT PRESS,*

1810.

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

बिघन बिदारन बिरद बर बारन बदन बिकास ● बर
दे बड़ बाढै बिसद बानी बुद्धि बिलास ●● युगल
चरन जीवत जगत जपत रैन दिन तोहि ● जग
माता सरस्वति सुमिरि युक्ति उक्ति दे मोहि ●● ॥

ऐक समैं व्यासदेव कृत श्री मत भागवत के दसम स्कंध की कथा को चतुर्भुज मिश्र ने दोहे चौपाई में ब्रज भाषा किया सो पाठशाला के लिये श्री महाराजा धिराज सकल गुन निधान पुन्यवान महा जान मारकोइस वलिजली गवरनर जनरल प्रतापी के राज में ●● कवि पंडित मंडित किये नग भूषन पहिराय ● गाहि गाहि बिद्या सकल बस कीनी चितचाय ●● दान गैर चऊंचक में चढे कबिन के चित्त ● आवत पावत लाल मनि हय हाथी बड़ बित्त ●● श्री श्री युत गुनगाहक गुनियन सुखदायक जान गिलकिरिस्त महाशय की आज्ञा से संवत् १८६० में श्री लल्लूजी लाल कवि ब्राह्मन गुजराती सहस्र अवदीच आगरे वाले ने विस का सार ले - यामनी भाया छोड - दिल्ली आ

गरे की खडी बोली में कह नाम प्रेमसागर धरा पर श्री युत जान गि
लक्रिस्त महाशय के जाने से बना अधबना छपा अध छपा रह गया
था सो अब श्री महा राजेश्वर अति दयाल कृपाल यसस्वी तेजस्वी गि
लबर्ट लार्ड मिंटो प्रतापवान के राज में औ श्री गुनखान सुखदान कृपा
निधान भागवान कपतान जान उलियम् टेलर प्रतापी की आज्ञा से औ
र श्री युत परमसुजान दयासागर परोपकारी डाकतर उलियम् हंटर
नक्षत्री की सहायता से औ श्री निपट प्रवीन दयायुत लिपटन अवरा
हाम लाकट रतीवंत के कहे से उसी कविने संवत् १८६६ में पूराक
र छपवाया पाठशाला के विद्यार्थियों के पढने को ◉

॥ अथ कथा आरंभ ◉ महा भारथ के अंत में जब श्री कृष्ण अंतर
ध्यान हुए तब पांडव तो महा दुखी हो हस्तिनापुर का राज परीक्षि
त को दे हिमालय गलने गये और राजा परीक्षित सब देस जीत धर्म
राज करने लगे ◉ कितने एक दिन पीछे एक दिन राजा परीक्षित
आखेट को गये तो वहां देखा कि एक गाय और बैल दौडे चले आ
ते हैं तिन के पीछे मूसल हाथ लिये एक शूद्र मारता आता है जब
वे पास पहुंचे तब राजा ने शूद्र को बुलाय दुख पाय झुंझुलायकर
कहा - अरे तू कौन है - अपना बखानकर जो मारता है गाय औ बैल
को जान कर ◉ क्या अर्जुन को तें ने दूर गया जाना तिस से उस का
धर्म नहीं पहिचाना ◉ सुन - पंडु के कुल में ऐसा किसी को न पावेगा
कि जिस के सोंहीं कोई दीन को सतावेगा ◉ इतना कह राजा ने खड
ग हाथ में लिया ◉ वह देख डरकर खडा हुआ ◉ फिर नरपति ने

गाय और बैल को भी निकट बुला के पूछा कि तुम कौन हो मुझे बुझा कर कहो - देवता हो कै ब्राह्मन और किस लिये भागे जाते हो यह निधडक कहो - मेरे रहते किसी की इतनी सामर्थ नहीं जो तुम्हें दुख दे ॥ 

इतनी बात सुनी तब तो बैल सिर झुका बोला - महा राज - यह पाप रूप काले बरन डरावनी मूरत जो आप के सनमुख खडा है सो कलियुग है - इसी के आने से मैं भागा जाता हूं ॥ यह गाय सरूप पिरथी है सोभी इसी के डर से भाग चली है ॥ मेरा नाम है धर्म - चार पांव रखता हूं - तप - सत - दया और सोच ॥ सत युग में मेरे चरन बीस बिस्वे थे - त्रेता में सोलह - द्वापर में बारह - अब कलियुग में चार बिस्वे रहे इस लिये कलि के बीच मैं चल नहीं सकता ॥ धरती बोली धर्मावतार ॥ मुझ से भी इस युग में रहा नहीं जाता क्यौं कि सूद्र राजा हो अधिक अधर्म मेरे पर करेंगे - तिनका बोझ मैं न सह सकूंगी इस भय से मैं भी भागती हूं ॥ यह सुनते ही राजा ने क्रोधकर कलियुग से कहा - मैं तुझे अभी मारता हूं ॥ वह घबरा राजा के चरनों पै गिर गिडगिडाकर कहने लगा - पृथ्वी नाथ - अब तो मैं तुम्हारी सरन आया मुझे कहीं रहने को ठौर बताइये क्यौं कि तीन काल और चारों युग जो ब्रह्माने बनाये हैं सो किसी भांति मेटे न मिटेंगे ॥ इतना बचन सुनते ही राजा परीक्षित ने कलियुग से कहा कि तुम इतनी ठौर रहो - जूए - झूठ - मद की हाट - वेश्या के घर - हत्या - चोरी और सोने में ॥ यह सुन कलि ने तो अपने स्थान को प्रस्था

न किया और राजा ने धर्म को मन में रख लिया ❁ पिरथी अपने रूप में मिलगई ❁ राजा फिर नगर में आए और धर्म राज करने लगे ❁

कितने एक दिन बीते राजा फिर एक समैं आखेट को गये औ खेलते खेलते प्यासे भये - सिर के मुकुट में तो कलियुग रहता ही था तिसने अपना औसर पा राजा को अज्ञान किया ❁ राजा प्यास के मारे कहां आते हैं कि जहां लोमस ऋषि आसन मारे नैन मूंदे हरि का ध्यान लगाये तप कर रहे थे ❁ तिन्हें देख परीक्षित मन में कहने लगा कि यह अपने तप के घमंड से मुझे देख आंख मूंद रहा है - ऐसी कुमति ठानि एक मरा सांप वहां पड़ा था सो धनुष से उठा ऋषि के गले में डाल अपने घर आया - मुकुट उतार तेही राजा को ज्ञान हुआ तो सोच कर कहने लगा ❁ कि कंचन में कलियुग का बास है यह मेरे सीस पर था इसी से मेरी ऐसी कुमति हुई जो मरा सर्प ले ऋषि के गले में डाल दिया सो मैं अब समझा कि कलियुग ने मुझ से अपना पलटा लिया - इस महा पाप से मैं कैसे छूटूंगा - बरन धन जन स्त्री और राज मेरा क्यों न गया सब आज - न जानूं किस जन्म में यह अधर्म जायगा जो मैं ने ब्राह्मन को सताया है ❁

राजा परीक्षित तो यहां इस अथाह सोच सागर में डूब रहे थे और जहां लोमस ऋषि थे तहां कितने एक लड़के खेलते हुए जा निकले - मरा सांप उन के गले में देख अचंभे रहे औ घबरा कर आपस में कहने लगे कि भाई - कोई इन के पुत्र से जा के कह दे जो

उपबन में कौशिकी नदी के तीर ऋषियों के बालकों में खेलता है ॥ ऐसे सुनते ही दौड़ा वहीं गया जहां श्रृंगी ऋषि छोकरों के साथ खेलता था ॥ कहा बंधु - तुम यहां क्या खेलते हो - कोई दुष्ट मरा हुआ काला नाग तुम्हारे पिता के कंठ में डाल गया है ॥ सुनते ही श्रृंगी ऋषि के नैन लाल हो आये - दांत पीस पीस लगा थर थर कांपने और क्रोध कर कहने कि कलियुग में राजा उपजे हैं अभिमानी - धन के मद से अंधे हो भये हैं दुख दानी ॥ अब मैं उस को दूं हूं श्राप - वही मीच पावेगा आप ॥ ऐसे कह श्रृंगी ऋषि ने कौशिकी नदी का जल चुल्लू में ले - राजा परीक्षित को श्राप दिया कि यही सर्प सातवें दिन तुझे डसेगा ॥

इस भांति राजा को सराप अपने बाप के पास आ गले से सांप निकाल कहने लगा - हे पिता - तुम अपनी देह संभालो मैं ने उसे श्राप दिया है जिसने आप के गले में मरा सर्प डाला था ॥ यह बचन सुनतेही लोमस ऋषि ने चैतन्य हो नैन उघाड अपने ज्ञान ध्यान से बिचार कर कहा - अरे पुत्र - तूने यह क्या किया - क्यौं सराप राजा को दिया - जिसके राज में थे हम सुखी - कोई पशु पंछी भी न था दुखी - ऐसा धर्म राज था कि जिस में सिंह गाय एक साथ रहते और आपस में कुछ न कहते ॥ अरे पुत्र - जिन के देस में हम बसे - क्या हुआ तिन के हंसे - मरा हुआ सांप डाला था उसे श्राप क्यौं दिया ॥ तनक दोष पर ऐसा श्राप - तैंने किया बडाही पाप ॥ कुछ बिचार मन में नहीं किया - गुन छोडा औगुनहीं लिया ॥ साध को चाहिये सील सुभाव

से है - आप कुछ न कहे - और की सुन ले - सब का गुन लेले औगुन तजदे ◉

इतना कह लोमस ऋषि ने एक चेले को बुलाके कहा तुम राजा परीक्षित को जाके जनादो जो तुम्हें शृंगी ऋषि ने श्राप दिया है - भला लोग तो दोष देहींगे पर वह सुन सावधान तो हो ◉ इतना वचन गुरूका मान चेला चला चला वहां आया जहां राजा बैठा सोच करता था ◉ आतेही कहा महा राज - तुम्हें शृंगी ऋषि ने यह श्राप दिया है कि सातवें दिन तक्षक डसेगा - अब तुम अपना कारज करो जिस से कर्म की फांसी से छूटो ◉ सुनते ही राजा प्रसन्नता से खडा हो हाथ जोड कहने लगा - कि मुझ पर ऋषि ने बडी कृपा की जो श्राप दिया ◉ क्यौं कि मैं माया मोह के अपार सोच सागर में पडा था - सो निकाल बाहर किया ◉ जब मुनि का शिष बिदा हुआ तब राजा ने आप तो वैराग लिया और जनमेजय को बुलाय राज पाट देकर कहा - बेटा - गौ ब्राह्मन की रक्षा कीजो औ प्रजा को सुख दीजो ◉ इतनी कह आये रनवास - देखी नारी सबी उदास ◉ राजा को देखतेही रानियां पांओं पर गिर रो रो कहने लगीं - महा राज - तुम्हारा बियोग हम अबला न सह सकेंगीं - इस से तुम्हारे साथ जीदें तो भला ◉ राजा बोले सुनो - स्त्री को उचित है जिस में अपने पति का धर्म रहे सो करे - उत्तम काज में बाधा न डाले ◉

इतना कह धन जन कुटुंब औ राज की माया तज निरमोही हो अपना जोग साधने को गंगा के तीर पर जाबैठा ◉ इस को जिसने

सुना वह हाय हाय कर पछताय पछताय बिन रोये न रहो और यह समाचार जब मुनियों ने सुना कि राजा परीक्षित शृंगी ऋषि के श्राप से मरने को गंगा तीर पर आ बैठा है - तब व्यास वशिष्ट भरद्वाज कात्यायन पराशर नारद विश्वामित्र वामदेव यमदग्नि आदि अट्ठासी सहस्र ऋषि आए और आसन बिछाय बिछाय पांत पांत बैठ गये ● अपने अपने शास्त्र विचार विचार अनेक अनेक भांति के धर्म राजा को सुनाने लगे - कि इतने में राजा की श्रद्धा देख - पोथी कांख में लिये दिगंबर भेष - श्री शुकदेव जी भी आन पहुंचे ● उन को देखते ही जितने मुनि थे सब के सब उठ खडे हुऐ और राजा परीक्षित भी हाथ बांध खडा हो बिनती कर कहने लगा ● कृपा निधान - मुझ पर बडी दया की जो इस समैं आपने मेरी सुधली ● इतनी बात कही तद शुकदेव मुनि भी बैठे तो राजा ऋषियों से कहने लगे कि महाराजो - शुकदेव जी व्यास जी के तो बेटे और पराशर जी के पोते तिन को देख तुम बडे बडे मुनीस होके उठे - सो तो उचित नहीं इस का कारन कहो जो मेरे मन का संदेह जाय ● तब पराशर मुनि बोले - राजा - जितने हम बडे बडे ऋषि हैं पर ज्ञान में शुक से छोटे ही हैं - इस लिये सब ने शुक का आदर मान किया ● किसी ने इस आस पर कि ये तारन तरन हैं क्यौं कि जब से जन्म लिया है तब ही से उदासी हो बन बास करते हैं - औ राजा तेरा भी कोई बडा पुन्य उदै हुआ जो शुकदेव जी आये ● ये सब धर्मों से उत्तम धर्म कहेंगे जिस से तू जन्म मरन से छूट भव सागर पार होगा ●

यह वचन सुन राजा परीक्षित ने श्री शुकदेव जी को दंडवत कर पूछा महाराज - मुझे धर्म समझाय के कहो - किस रीति से कर्म के फंदे से छूटूंगा - सात दिन में क्या करूंगा ॥ अधर्म है अपार - कैसे भव सागर हूंगा पार ॥

श्री शुकदेव जी बोले राजा - तू थोडे दिन मत समझ - मुक्ति तो होती है एकही घडी के ध्यान में - जैसे षष्टांगुल राजा को नारद मुनि ने ज्ञान बताया था और उसने दोही घडी में मुक्ति पाई थी ॥ तुम्हें तो सात दिन बहुत हैं - जो एक चित हो करो ध्यान तो सब समझोगे अपने हीं ज्ञान से - कि क्या है देह किस का है बास - कौन करता है इस में प्रकाश ॥ यह सुन राजा ने हरष के पूछा महाराज - सब धर्मों से उत्तम धर्म कौन सा है - सो कृपा कर कहो ॥ तब शुकदेव जी बोले राजा - जैसे सब धर्मों में वैष्णव धर्म बडा है - तैसे पुरानों में श्री भागवत ॥ जहां हरि भक्त यह कथा सुनावें हैं तहां हीं सब तीर्थ औ धर्म आवें हैं - जितने हैं पुरान पर नहीं है कोई भागवत के समान ॥ इस कारन मैं तुझे बारह स्कंध महा पुरान सुनाता हूं जो व्यास मुनि ने मुझे पढाया है - तू श्रद्धा समेत आनंद से चित दे सुन ॥ तब तो राजा परीक्षित प्रेम से सुनने लगे और शुकदेव जी नेम से सुनाने ॥

नौ स्कंध कथा जब मुनि ने सुनाई तब राजा ने कहा दीन दयाल - अब दया कर श्री कृष्णावतार की कथा कहिये क्योंकि हमारे सहायक औ कुल पूज वेही हैं ॥ शुकदेव जी बोले - राजा तुम ने - मुझे बडा

सुख दिया जो यह प्रसंग पूछा - सुनो मैं प्रसन्न हो कहता हूं ॥ यदु कुल में पहले भजमान नाम राजा थे तिन के पुत्र पृथिकु - पृथिकु के विदूरथ - तिनके सूरसेन जिन्हों ने नौ खंड पृथी जीतके जस पाया ॥ उन की स्त्री का नाम मरिख्या तिसके दस लडके और पांच लडकियां तिन में बडे पुत्र वसुदेव - जिन की स्त्री के आठवें गर्भ में श्री कृष्ण चंद जी ने जन्म लिया - जब वसुदेव जी उपजे थे तब देवताओं ने सुरपुर में आनंद के बाजन बजाये थे - और सूरसेन की पांच पुत्रियों में सब से बडी कुंती थी - जो पंडु को ब्याही थी - जिस की कथा महाभारथ में गाई है औ वसुदेव जी पहले तो रोहन नरेस की बेटी रोहनी को ब्याह लाये - तिस पीछे सत्रह ॥ जब अठारह पटरानी हुई तब मथुरा में कंस की बहन देवकी को ब्याहा ॥ तहां आकाश बानी भई कि इस लडकी के आठवें गर्भ में कंस का काल उपजेगा ॥ यह सुन कंस ने बहन बहनेऊ को एक घर में मूंद दिया औ श्री कृष्ण ने वहां हीं जन्म लिया ॥ इतनी कथा सुनते ही राजा परीक्षित बोले - महा राज - कैसे जन्म कंस ने लिया - किस ने तिसे महा बर दिया और कौन रीति से कृष्ण उपजे आय - फिर किस बिधि से गोकुल पहुंचे जाय - यह तुम मुझे कहो समझाय ॥

श्री सुकदेव जी बोले - मथुरा पुरी का आहुक नाम राजा - तिनके दो बेटे - एक का नाम देवक दूसरा उग्रसेन ॥ कितने एक दिन पीछे उग्रसेन ही वहां का राजा हुआ ॥ जिसकी एकही रानी तिस का नाम पवनरेखा सो अति सुंदरि औ पतिब्रता थी - आठों पहर स्वामी की

आनंद से रहे ❁ ऐक दिन कपडों से भई तो पति की आज्ञा ले स
खी सहेली को साथकर रथ में चढ वन में खेलने को गई ❁ वहां घ
ने घने वृक्षों में भांति भांति के फूल फूले हुऐ-सुगंध सनी मंद मंद
ठंढी ठंढी पवन बह रही - कोकिल - कपोत - कीर - मोर - मीठी मी
ठी मनभावन बोलियां बोल रहे और ऐक ओर पर्वत के नीचे यमुना न्या
री ही लहरें ले रही थी - कि रानी इस समैं को देख रथ से उतरक
र चली तो अचानक ऐक ओर अकेली भूल के जा निकली ❁ वहां
द्रुमलिक नाम राक्षस भी संयोग से आ पहुंचा ❁ वह इस के जोब
न औ रूप की छबि को देख छक रहा और मन में कहने लगा कि
इस से भोग किया चाहिये ❁ यह ठान तुरत राजा उग्रसेन का सरूप
बन-रानी के सोंहीं जा बोला - तू मुज से मिल ❁ रानी बोली महा
राज - दिन को काम केलि करनी जोग नहीं क्यों कि इस में सील
और धर्म जाता है ❁ क्या तुम नहीं जानते जो ऐसी कुमति विचा
री है ❁

जब पवनरेखा ने इस भांति कहा तब तो द्रुमलिक ने रानी को
हाथ पकड खेंच लिया और जो मन माना सो किया ❁ इस छल से
भोग कर के जैसा था तैसा ही बनगया - तब तो रानी अति दुख पा
य पछतायकर बोली अरे - अधर्मी - पापी - चंडाल - तूने यह
क्या अंधेर किया जो मेरा सत खो दिया - धिक्कार है तेरे माता पिता
औ गुरू को-जिस ने तुझे ऐसी बुद्धि दी ❁ तुज सा पूत जन्ने से तेरी मा
बांझ क्यों न हुई ❁ अरे दुष्ट - जो नर देह पाकर किसी का सत भंग

करते हैं सो जन्म जन्म नरक में पडते हैं ● द्रुमलिक कहा रानी - तू आप मत दे मुझे - मैं ने अपने धर्म का फल दिया है तुझे ● तेरी कोख बंध देख मेरे मन में बड़ी चिंता थी सो गई ● आज से हुई गर्भ की आस - लडका होगा दसवें मास ● और मेरी देह के सुभाव से तेरा पुत्र नौ खंड पृथ्वी को जीत राज करेगा औ कृष्ण से लडेगा ● मेरा नाम प्रथम कालनेम था तब विष्णु से युद्ध किया था ● अब जन्म ले आया तो द्रुमलिक नाम कहाया - तुज को पुत्र दे चला तू अपने मन में किसी बात की चिंता मत करे ● इतनी बात कह जब कालनेम चला गया तब रानी को भी कुछ सोच समझ कर धीरज भया ●●

जैसी हो होतव्यता - तैसी उपजे बुद्धि ●
होनहार हिरदे बसे - बिसर जाय सब सुद्धि ●

इतने में सब सखी सहेली आन मिलीं - रानी का सिंगार बिगड़ा देख ऐक सहेली बोल उठी - इतनी बेर तुम्हें कहां लगी और यह क्या गति हुई ● पवनरेखा ने कहा - सुनो सहेली तुम ने इस बन में तजी अकेली ● ऐक बंदर आया - तिस ने मुझे अधिक सताया - तिस के डर से मैं अबतक थर थर कांपती हूं ● यह बात सुनकर तो सबकी सब घबराईं औ रानी को झट रथ पर चढा घर लाईं ● जब दस महीने पूजे तब पूरे दिनों लडका हुआ - तिस समैं ऐक बडी आंधी चली कि जिस के मारे लगी धरती डोलने - अंधेरा ऐसा हुआ जो दिन की रात हो गई और लगे तारे टूट टूट गिरने - बादल गरजने औ बिजली कडकने ●

ऐसे भादौं सुदी तेरस बृहस्पति बार को कंस ने जन्म लिया ॥ तब राजा उग्रसेन ने प्रसन्न हो सारे नगर के मंगलामुखियों को बुलाय मंगलाचार करवाये और सब ब्राह्मन - पंडित - योतषियों को भी अति मान सनमान से बुलवा भेजा ॥ वे आये - राजा ने बडी आवभक्ति से आसन दे दे बैठाये ॥ तब योतषियों ने लग्न साध मुहूर्त विचारकर कहा - पृथीनाथ - यह लडका कंस नाम तुम्हारे बंस में उपजा सो अति बलवंत हो राक्षसों को ले राज करेगा और देवता औ हरि भक्तों को दुख दे आपका राज ले निदान हरिके हाथ मरेगा ॥

इतनी कथा कह शुकदेव मुनि ने राजा परीक्षित से कहा - राजा - अब मैं उग्रसेन के भाई देवक की कथा कहता हूं - कि उस के चार बेटे थे और छः बेटियां सो छओं बसुदेव को ब्याह दीं - सातवीं देवकी उई जिसके होने से देवताओं को प्रसन्नता भई और उग्रसेन के भी दस पुत्र पर सब से कंस ही बडा था जब से जन्मा - तब से यह उपाध करने लगा कि नगर में जाय छोटे छोटे लडकों को पकड पकड लावे औ पहाड की खोह में मूंद मूंद मार मार डाले ॥ जो बडे होंय तिनकी छाती पै चढ गला घोंट जी निकाले ॥ इस दुख से कोई कहीं न निकलने पावे - सब कोई अपने अपने लडके को छिपावे ॥ प्रजा कहे दुष्ट यह कंस - उग्रसेन का नहीं है बंस ॥ कोई महा पापी जन्म ले आया है जिस ने सारे नगर को सताया है ॥ यह बात सुन उग्रसेन ने विसे बुलाकर बहुत सा समझाया पर इस का कहना विस के जी में कुछ भी न आया ॥ तब दुख पाय पछताय के कहने लगा कि

ऐसे पूत होने से मैं अऊत क्यों न हुआ ॥



कहते हैं जिस समैं कपूत घर में आता है तिसी समैं जस और धर्म जा ता है ॥ जब कंस आठ बर्ष का भया तब मगध देस पर चढ गया ॥ वहां का राजा जरासिंधु बडा जोधा था तिस से मिल इस ने मल्ल युद्ध किया तो उनने कंस का बल लख लिया - तब हार मान अपनी दो बेटियां ब्याह दीं - यह ले मथुरा में आया और उग्रसेन से बैर बढाया ॥ ऐक दिन क्रोधकर अपने पिता से बोला कि तुम राम नाम कहना छोड दो औ महादेव का जप करो ॥ तिसने कहा मेरे तो करता दुखहरता वेई हैं जो तिनकोही न भजूंगा तो अधर्मी हो कैसे भवसागर पार हूंगा ॥ यह सुन कंस ने खुनसा बाप को पकडकर सारा राज लेलिया और नगर में यों डौंडी फेरदी कि कोई यज्ञ - दान - धर्म - तप औ राम का नाम करने न पावे ॥ ऐसा अधर्म बढा कि गौ - ब्राह्मन - हरिकेभक्त दुख पाने लगे और धरती अति बोझों मरने ॥ जब कंस सब राजाओं का राज ले चुका तब ऐक दिन अपना दल ले राजा इंद्र पर जढ चला - तहां मंत्री ने कहा महाराज - इंद्रासन बिन तप किये नहीं मिल ता ॥ आप बल का गर्ब न करिये - देखो गर्ब ने रावन कुंभकरन को कैसा खो दिया कि जिनके कुल में ऐक भी न रहा ॥

इतनी कथा कह श्रुकदेव जी राजा परीक्षित से कहने लगे कि रा जा - जब पृथ्वी पर अति अधर्म होने लगा तब दुखपाय घबराय गाय का रूप बन रोंभती देव लोक में गई और इंद्र की सभा में जा सिर झुकाय उसने अपनी सब पीर कही कि महाराज - संसार में

असुर अति पाप करने लगे - तिनके डर से धर्म तो उठ गया औ मुझे आज्ञा हो तो नरपुर छोड रसातल को जाऊं ॥ इंद्र सुन सब देवताओं को साथ ले ब्रह्मा के पास गये ॥ ब्रह्मा सुन सब को महादेव के निकट ले गये ॥ महादेव भी सुन सब को साथ ले वहां गये जहां क्षीर समुद्र में नारायन सो रहे थे ॥ विन को सोता जान ब्रह्मा - रुद्र - इंद्र - सब देवताओं को साथ ले खडे हो - हाथ जोड विनती कर वेदस्तुति करने लगे - महाराजा धिराज - आप की महिमा कौन कह सके - मछ रूप हो वेद डूबते निकाले ॥ कछ सरूप बन पीठ पर गिरि धारन किया ॥ वाराह बन भूमि को दांत पै रख लिया ॥ बावन हो राजा बलि को छला ॥ परसराम औतार ले क्षत्रियों को मार पृथ्वी कश्यप मुनि को दी ॥ रामावतार लिया तब महादुष्ट रावन को बध किया ॥ और जब जब दैत्य तुम्हारे भक्तों को दुख देते हैं तब तब आप विनकी रक्षा करते हैं ॥ नाथ - अब कंस के सताने से पृथ्वी अति व्याकुल हो पुकार करती है - विसकी बेग सुध लीजे - असुरों को मार साधों को सुख दीजे ॥

ऐसे गुन गाय देवताओं ने कहा तब आकाश वानी हुई सो ब्रह्मा देवताओं को समझाने लगे - यह जो वानी भई सो तुम्हें आज्ञा दी है कि तुम सब देवी देवता ब्रजमंडल जाय मथुरा नगरी में जन्म लो - पीछे चार सरूप धर हरि भी औतार लेंगे ॥ वसुदेव के घर देवकी की कोख में और बाल लीला कर नंद जसोदा को सुख देंगे ॥ इस रीति से ब्रह्मा ने जब बुझाके कहा तब तो सुर - मुनि - किन्नर - औ गंधर्व

सब अपनी अपनी स्त्रियों समेत जन्म ले ले व्रज मंडलमें आये ❁ यदुबंसी औ गोप कहाये ❁ और जो चारों वेद की ऋचायें थीं सो ब्रह्मा से कहने गईं कि हम भी गोपी हो व्रज में औतार ले वासुदेव की सेवा करें ❁ इतनी कह वे भी व्रज में आईं औ गोपी कहलाईं ❁ जब सब देवता मथुरा पुरी में आचुके तब क्षीर समुद्र में हरि विचार करने लगे - कि पहले तो लक्ष्मन हाेंय बलराम - पीछे वासुदेव हो मेरा नाम - भरत - प्रद्युम्न - सत्रुघ्न - अनिरुद्ध और सीता - रुक्मिनी का अवतार लें ❁ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे पीढा बंध प्रथमो ध्यायः ❁ ॥ १ ॥ ❁❁

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा हे महाराज - कंस तो इस अनीति से मथुरा में राज करने लगा औ उग्रसेन दुख भरने ❁ देवक जो कंस का चाचा था - तिसकी कन्या देवकी जब ब्याहन जोग हुई तब तिन्ने जा कंस से कहा कि यह लडकी किस को दें - वह बोला सूरसेन के पुत्र वसुदेव को दीजिये ❁ इतनी बात सुनते ही देवक ने एक ब्राह्मन को बुलाय - शुभ लग्न ठहराय - सूरसेन के घर टीका भेज दिया ❁ तब तो सूरसेन भी बडी धूमधाम से बरात बनाय - सब देस देस के नरेस साथ ले मथुरा में वसुदेव को ब्याहन आये ❁

बरात नगर के निकट आई सुन उग्रसेन देवक और कंस अपना दल साथ ले आगे बढ नगर में ले गये - अति आदर मान से अगोनी कर जनवासा दिया - खिलाय पिलाय सब बरातियों को मढे के नीचे लेजा

बैठाया और बेद की विध से कंस ने वसुदेव को कन्या दान दिया ❀ तिस के यौतुक में पंद्रह सहस्र घोडे - चार सहस्र हाथी - अठारह सै रथ दास दासी अनेक दे - कंचन के थाल वस्त्र आभूषन रतन जटित से भर भर अनगिनत दिये और सब बरातियों को भी अलंकार समेत बागे पहराय सब मिल पहुंचावन चले ❀ तहां आकाश बानी हुई कि अरे कंस - जिसे तू पहुंचावने चला है तिस का आठवां लडका तेरा काल उपजेगा - तिसीके हाथ तेरी मीच है ❀

यह सुनते ही कंस डरकर कांप उठा औ क्रोध कर देवकी को झोंटे पकड रथ से नीचे खेंच लाया ❀ खडग हाथ में ले दांत पीस पीस लगा कहने - जिस पेड़ को जड़ ही से उखाड़िये तिस में फूल फल काहेको लगेगा - अब इसी को मारूं तो निर्भय राज करूं ❀ यह देख सुन वसुदेव मन में कहने लगे - इस मूरख ने दिया संताप - जानता नहीं है पुन्य औ पाप - जो मैं अब क्रोध करता हूं तो काज बिगडेगा - तिस से इस समैं क्षमा करनी जोग है ❀ कहा है - जो बैरी खेंचे तरवार - करे साध तिसकी मनुहार ❀ समझ मूढ सोई पछताय - जैसे पानी आग बुझाय ❀ यह सोच समझ वसुदेव कंस के सोहीं जा हाथ जोड बिनती कर कहने लगे कि सुनो पृथीनाथ - तुम सा बली संसार में कोई नहीं और सब तुम्हारी छांह तले बसते हैं ❀ ऐसे सूर हो स्त्री पर शस्त्र करो - यह अति अनुचित है औ बहन के मारने से महा पाप होता है - तिस पर भी मनुष अधर्म तो करे जो जाने कि मैं कभी न मरूंगा ❀ इस संसार की तो यही रीति है - इधर जन्मा - उधर मरा

करोड जतन से पाप पुन्य कर कोई इस देह को पोखे - पर यह कभी अपनी न होयगी और धन-जोवन-राज-भी न आवेगा काज ● इस से मेरा कहा मान लीजे औ अपनी अबला अधीन बहन को छोड दीजे ● इतना सुन वह अपना काल जान घबराकर और भी झुंझलाया ● तब वसुदेव सोचने लगे कि यह पापी तो असुर बुद्धि लिये अपने हठ की टेक पर है - जिस में इस के हाथ से यह बचे सो उपाय किया चाहिये ● ऐसे बिचार मन में कहने लगे - अब तो इस से यों कह देवकी को बचाऊं कि जो पुत्र मेरे होगा सो तुम्हें दूंगा - पीछे किस ने देखी है लडकाई न होय कै यही दुष्ट मरे - यह औसर तो टले फेर समझी जायगी ● इस भांति मन में ठान वसुदेव ने कंस से कहा महाराज - तुम्हारी मृत्यु इस के पुत्र के हाथ न होयगी - क्यौं कि मैं ने एक बात ठहराई है कि देवकी के जितने लडके होंगे तितने मैं तुम्हें ला दूंगा - यह बचन मैं ने तुम को दिया ● ऐसी बात जब वसुदेव ने कही तब समझ के कंस ने मानली औ देवकी को छोड कहने लगा - हे वसुदेव-तुम ने अच्छा विचार किया जो ऐसे भारी पाप से मुझे बचालिया ● इतना कह विदा दी - वे अपने घर गये ●

कितने एक दिन मथुरा में रहते भये जब पहला पुत्र देवकी के हुआ तब वसुदेव ले कंस पै गये और रोता हुआ लडका आगे धरदिया - देखते ही कंस ने कहा वसुदेव - तुम बडे सत बादी हो - मैं ने सो आज जाना क्यौं कि तुम ने मुझ से कपट न किया - निरमोही हो अपना पुत्र ला दिया ● इस से डर नहीं है कुछ मुझे - यह बालक मैं ने दिया

तुरे ● इतना सुन बालक ले दंडवत कर बसुदेव जी तो अपने घर आये और विसी समैं नारद मुनि जी ने जाय कंस से कहा राजा - तुम ने यह क्या किया जो बालक उलटा फेर दिया - क्या तुम नहीं जानते कि वासुदेव की सेवा करने को सब देवताओं ने ब्रज में आय जन्म लिया है और देवकी के आठवें गर्भ में श्री कृष्ण जन्म ले सब राक्षसों को मार भूमि का भार उतारेंगे ● इतना कह नारद मुनि ने आठ लकीर खेंच गिनवाई - जब आठही आठ गिनती में आई तब डरकर कंस ने लडके समेत बसुदेव जी को बुला भेजा ● नारद मुनि तो यों समझाय बुझाय चले गये और कंस ने बसुदेव से बालक ले मारडाला ● ऐसे जब पुत्र होय तब बसुदेव ले आवे औ कंस मार डाले ● इसी रीति से छः बालक मारे तब सातवें गर्भ में शेष रूप जो श्री भगवान तिन्हों ने आ बास लिया ● यह कथा सुन राजा परीक्षित ने शुकदेव मुनि से पूछा - महाराज - नारद मुनि जी ने जो अधिक पाप करवाया तिसका ब्योरा समझाकर कहो - जिससे मेरे मनका संदेह जाय ● श्री शुकदेव जी बोले - राजा - नारद जी ने तो अच्छा विचारा कि यह अधिक अधिक पाप करे तो श्री भगवान तुरंतही प्रगट होवें ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे देवकी बिवाह बालक वधो नाम द्वितीयोध्यायः ● ॥ २ ॥ ●●

---

फेर शुकदेव जी राजा परीक्षित से कहने लगे कि राजा - जैसे गर्भ में आये हरी - और ब्रह्मादिक ने गर्भस्तुति करी औ देवी जिस भांति

बलदेव जी को गोकुल लेगई - तिसी रीति से कथा कहता हूं ● एक दिन राजा कंस अपनी सभा में आयबैठा - और जितने दैत्य उसके थे तिन को बुलाकर कहा - सुनो सब देवता पृथी में जन्म ले आये हैं - तिन्हों में कृष्ण भी औतार लेगा ● यह भेद मुज से नारद मुनि समझाय के कह गये हैं - इस से अब उचित यही है कि तुम जाकर सब यदुवंसियों का ऐसा नास करो जो एक भी जीता नबचे ●

यह आज्ञा पा सबके सब दंडवत कर चले - नगर में आ ढूंढढूंढ पकड पकड लगे बांधने - खाते पीते खडे बैठे सोते जागते चलते फिरते - जिसे पाया तिसे न छोडा - घेर के एक ठौर लाये और जला जला डबो डबो पटक पटक दुख दे दे सब को मार डाला ● इसी रीति से छोटे बडे भयावने भांति भांति के भेख बनाये - नगर नगर गांव गांव गली गली घर घर खोज खोज लगे मारने और यदुवंसी दुख पाय पाय देस छोड छोड जी ले ले भागने ●

तिसी समैं वसुदेव की जो और स्त्रियां थीं सो भी रोहनी समेत मथुरा से गोकुल में आई - जहां वसुदेव जी के परम मित्र नंदजी रहते थे ● तिन्हों ने अति हित से आसा भरोसा दे रक्खा ● वे आनंद से रहने लगीं ● जब कंस देवताओं को यों सताने औ अति पाप करने लगा तब विष्णु ने अपनी आखों से एक माया उपजाई सो हाथ बांध सनमुख आई ● तिस से कहा - तू अभी संसार में जा औतार ले मथुरा पुरीके बीच - जहां दुष्ट कंस मेरे भक्तों को दुख देता है - और कश्यप अदिति जो वसुदेव देवकी हो ब्रज में आये हैं - तिनको मूंद रक्खा है ●

छः बालक तो तिनके कंस ने मार डाले - अब सातवें गर्भ में लक्ष्मन जी हैं - उन को देवकी की कोख से निकाल - गोकुल में ले जाकर इस रीति से रोहनी के पेट में रख दीजो कि कोई दुष्ट न जाने - और सब वहां के लोग तेरा जस बखाने ●

इस भांति माया को समझा श्री नारायन बोले - कि तू तो पहले जाकर यह काज कर के नंद के घर में जन्म ले - पीछे वसुदेव के यहां औतार ले - मैं भी नंद के घर आता हूं ● इतना सुनते ही माया झट मथुरा में आई और मोहनी का रूप बन वसुदेव के गेह में बठ गई ● जो छिपाय गर्भ हर लिया - जाय रोहनी को सो दिया ● जाने सब पहला आधान - भये रोहनी के भगवान ● इस रीति से सावन सुदी चौदस बुधवार को बलदेव जी ने गोकुल में जन्म लिया - और माया ने वसुदेव देवकी को जा सपना दिया ● कि मैं ने तुम्हारा पुत्र गर्भ से लेजाय रोहनी को दिया है - सो किसी बात की चिंता मत कीजो ● सुनते ही वसुदेव देवकी जाग पडे और आपस में कहने लगे कि यह तो भगवान ने भलाकिया - पर कंस को इसी समैं जताया चाहिये - नहीं तो क्या जानिये पीछे क्या दुख दे - यों सोच समझ रखवालों से बुझाकर कहा - तिन्हों ने कंस को जा सुनाया कि महाराज - देवकी का गर्भ अधूरा गया - बालक कुछी नपूरा भया ● सुनते ही कंस घबराकर बोला कि तुम अब की बेर चौकसी करियो क्यों कि मुझे आठवेंई गर्भ का डर है जो आकाश बानी कहगई है ●

इतनी कथा कह - श्री शुकदेव जी बोले - हे राजा बलदेव जी तो

यों प्रगटे और जब श्री कृष्ण देवकी के गर्भ में आये-तभी माया ने जा नंद की नारि जसोदा के पेट में बास लिया ● दोनों आधान से यों कि एक पर्व में देवकी यमुना न्हाने गई ● वहां संयोग से जसोदा भी आन मिली तो आपस में दुख की चरचा चली - निदान जसोदा ने देवकी को बचन दे कहा कि तेरा बालक मैं रक्खूंगी अपना तुझे दूंगी ● ऐसे बचन दे - यह अपने घर आई औ वह अपने ● आगे जद कंसने जाना कि देवकी को आठवां गर्भ रहा-नंद जा वसुदेव का घर घेरा ● चारों ओर दैत्यों की चौकी बैठा दी और वसुदेव को बुलाकर कहा कि अब तुम मुझ से कपट मत कीजो - अपना लड़का लादीजो ● तब मैं ने तुम्हारा ही कहना मान लिया था ●.

ऐसे कह वसुदेव देवकी को बेडी औ हथकडी पहिराय - एक कोठे में मूंदकर ताले पर तालेदे - निज मंदिर में आ मारे डर के उपास कर सो रहा - फिर भोर होतेही वहीं गया जहां वसुदेव देवकी थे ● गर्भ का प्रकाश देख कहने लगा कि इसी यम गुफा में मेरा काल है - मार तो डालूं - पर अपजस से डरता हूं - क्यों कि अति बलवान हो स्त्री को हनना जोग नहीं - भला इसके पुत्रही को मारूंगा ● यों कह बाहर आ - गज - सिंह - स्वान - औ अपने बडे बडे जोधा वहां चौकी को रक्खे औ र आप भी नित चौकसी कर आवे - पर एक पल भी कल नपावे ● जहां देखे तहां आठ पहर चौंसठ घडी कृष्ण रूप कालही दृष्टि आवे ● तिसके भय से भावित हो रात दिन चिंता में गंवावे ●

इधर कंस की तो यह दशा थी - उधर वसुदेव औ देवकी पूरे दिनों

महा कष्ट में श्री कृष्णही को मनाते थे-कि इस बीच भगवान ने आ विन्हें स्वप्न दिया और इतना कह विनके मनका सोच दूर किया-जो हम बेगही जन्म ले तुम्हारी चिंता मेटते हैं-तुम अब मत पछिताओ ● यह सुन वसुदेव देवकी जाग पडे तो इतने में ब्रह्मा-रुद्र-इंद्रादि सब देवता अपने विमान अधर में छोड-अलख रूप बन वसुदेव के गेह में आऐ-औ हाथ जोड जोड वेद गाय गाय गर्भस्तुति करने लगे ● तिस समैं विनको तो किसी ने नदेखा पर वेद की धुनि सब ने सुनी ● यह अचरज देख सब रखवाले अचंभे रहे और वसुदेव देवकी को निह्चै हुआ कि भगवान बेगही हमारी पीर हरेंगे ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे गर्भस्तुति नाम तृतीयो ध्यायः ● ॥ ३ ॥ ●●

श्री शुकदेव जी बोले-राजा-जिस समैं श्री कृष्णचंद जन्म लेने लगे-तिस काल सबही के जी में ऐसा आनंद उपजा कि दुख नाम को भी नरहा-हरष से लगे वन उपवन हरे हो हो फूलने फलने-नदी नाले सरोवर भरने-तिन पर भांति भांति के पंछी कलोलें करने-और नगर नगर गांव गांव घर घर मंगलाचार होने-ब्राह्मन यज्ञ रचने-दसों दिसा के दिगपाल हरषने-बादल ब्रजमंडल पर फिरने-देवता अपने अपने विमानों में बैठे आकाश से फूल बरसावने-विद्याधर-गंधर्व-चारन-ढोल-दमामे-भेर-बजाय बजाय गुन गाने ● और एक ओर उर्वसी आदि सब अपसरा नाच रही थीं ● कि ऐसे समैं भादों वदी अष्टमी बुधवार रोहनी नक्षत्र में आधी रात श्री कृष्ण

ने जन्म लिया ● और मेघबरन - चंद्रमुख - कंवलनैन हो - पितांबर काछे - मुकुट धरे - बैजंती माल औ रतन जटित आभूषन पहरे - चतुर्भुज रूप किये - शंख - चक्र - गदा - पद्म - लिये वसुदेव देवकी को दरसन दिया ● देखतेही अचंभे हो तिन दोनों ने ज्ञान से बिचारा तो आदि पुरुष को जाना - तब हाथ जोड बिनती कर कहा - हमारे बडे भाग जो आपने दरसन दिया और जन्म मरन का निबेडा किया ●

इतना कह पहली कथा सब सुनाई - जैसे जैसे कंस ने दुख दिया था ● तहां श्री कृष्णचंद्र बोले - तुम अब किसी बात की चिंता मन में मत करो क्यों कि मैं ने तुम्हारे दुख के दूर करने ही को औतार लिया है - पर इस समैं मुझे गोकुल पहुंचा दो और इसी बिरियां जसोदा के लडकी हुई है सो कंस को ला दो ● अपने जाने का कारन कहता हूं सो सुनो ●●

*नंद जसोदा तप कस्यौ - मोही सों मनलाय ●*
*देख्यौ चाहत बाल सुख - रहौं कछूदिन जाय ●*

फिर कंस को मार आन मिलूंगा - तुम अपने मन में धीर धरो ● ऐसे वसुदेव देवकी को समझाय - श्री कृष्ण बालक बन रोने लगे - और अपनी माया फैलादी - तब तो वसुदेव देवकी का ज्ञान गया औ जाना कि हमारे पुत्र भया ● यह समझ दस सहस्र गाय मन में संकल्प कर लडके को गोद में उठा छाती से लगा लिया - उसका मुंह देख देख दोनों लंबी सांसें भर भर आपस में लगे कहने - जो किसी रीत से इस लडके को भगा दीजे तो कंस पापी के हाथ से बचे - वसुदेव बोले ●●

विधना बिन राखै नहीं कोई ॥ कर्म लिखा सोई फल होई ॥
तब करजोर देवकी कहै ॥ नंद मित्र गोकुल में रहै ॥
पीर जसोदा हरै हमारी ॥ नारि रोहनी तहां तिहारी ॥

इस बालक को वहां ले जाओ ॥ यों सुन वसुदेव अकुला कर कहने लगे-कि इस कठिन बंधन से छूट कैसे लेजाऊं ॥ ज्यों इतनी बात कही त्यों सब बेडी हथकडी खुल पडीं-चारों ओरके किवाड उघड गये-पहरुए अचेत नींद बस भये-तब तो वसुदेव जी ने श्री कृष्ण को सूप में रख सिर पर धर लिया और झट पट ही गोकुल को प्रस्थान किया ॥

ऊपर बरसे देव-पीछे सिंह जु गुंजरै ॥
सोचत है वसुदेव-यमुना देखि प्रवाह अति ॥

नदी के तीर खडे हो वसुदेव बिचार ने लगे कि पीछे तो सिंह बोलता है औ आगे अथाह यमुना बह रही है-अब क्या करूं ॥ ऐसे कह भगवान का ध्यान धर यमुना में पैठे ॥ ज्यों ज्यों आगें जाते थे त्यों त्यों नदी बढती थी-जब नाक तक पानी आया तब तो ये निपट घबराये ॥ इनको व्याकुल जान श्री कृष्ण ने अपना पांव बढाय हुंकारा दिया ॥ चरन छूतेही यमुना थाह हुई-वसुदेव पार हो नंद की पौर पर जा पहुंचे ॥ वहां किवाड खुले पाये-भीतर धस के देखें तो सब सोये पडे हैं ॥ देवी ने ऐसी मोहनी डाली थी कि जसोदा को लडकी के होने की भी सुध न थी ॥ वसुदेव जी ने कृष्ण को तो जसोदा के ढिग सुला दिया-और कन्या को ले चट अपना पंथ लिया ॥ नदी उतर फिर आये तहां-बैठी सोचती थीं देवकी जहां ॥ कन्या दे वहां की

कुशल कही - सुनते ही देवकी प्रसन्न हो बोली हे स्वामी - हमें कंस अब मार डाले तोभी कुछ चिंता नहीं क्यों कि इस दुष्टके हाथ से पुत्र तो बचा ॥



इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी राजा परीक्षित से कहने लगे कि जब वसुदेव लडकी को ले आये तब किवाड ज्यों के त्यों भिड गये औ दोनों ने हथकडियां बेडियां पहरलीं ॥ कन्या रोउठी-रोने की धुन सुन पहरुए जागे तो अपने अपने शस्त्र ले ले सावधान हो लगे तुपक छोडने ॥ तिनका शब्द सुन लगे हाथी चिंघाडने - सिंह दहाडने औ कुत्ते भोंकने ॥ तिसी समैं अंधेरी रातके बीच बरसते में एक रखवाले ने आ हाथ जोड कंस से कहा-महाराज-तुम्हारा बैरी उपजा - यह सुन कंस मूर्छित हो गिरा ॥ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे कृष्ण जन्म कन्या ग्रहनो नाम चतुर्थोध्यायः ॥ ॥ ४ ॥ ॥॥

---

बालक का जन्म सुनते ही कंस डरता कांपता उठ खडा हुआ और खडग हाथ में ले गिरता पडता दौडा - छुटे बालों - पसीने में डूबा - धुकुड पुकुड करता - जा बहन के पास पहुंचा ॥ जब तिस के हाथ से लडकी छीन ली तब वह हाथ जोड बोली-ऐ भैया - यह कन्या है भानजी तेरी - इसे मत मार यह पेट पोंछन है मेरी ॥ मारे हैं बालक तिनका दुख मुझे अति सताता है-बिन काज कन्या को मार क्यों पाप बढाता है ॥ कंस बोला जीती लडकी न दूंगा तुझे-जो ब्याहेगा इसे सो मारेगा मुझे ॥ इतना कह बाहर आ ज्योंहीं चाहे कि फिराय कर

पत्थर पर पटके-त्योंही हाथ से छूट कन्या आकाश को गई और पुकार के यह कह गई - अरे कंस - मेरे पटकने से क्या ऊआ-तेरा बैरी कहीं जन्म ले चुका-अब तू जीता न बचेगा ॥

यह सुन कंस अछता पछता वहां आया जहां वसुदेव देवकी थे - आते ही तिनके हाथ पांव की हथकडी बेडी काटदीं और विनती कर कहने लगा कि मैं ने बडा पाप किया जो तुम्हारे पुत्र मारे - यह कलंक कैसे छूटेगा - किस जन्म में मेरी गति होगी - तुम्हारे देवता झूठे ऊए - जिन्होंने कहा था कि देवकी के आठवें गर्भ में लडका होगा सो नहो लडकी ऊई - वहभी हाथ से छूट स्वर्ग को गई - अब दयाकर मेरा दोष जी में मत रक्खो-क्यों कि कर्म का लिखा कोई मेट नहीं सकता - इस संसार में आये से जीना-मरना-संयोग-वियोग-मनुष का नहीं छुटता-जो ज्ञानी हैं सो मरना जीना समान ही जानते हैं और अभीमानी मित्र शत्रु कर मानते हैं ॥ तुम तो बडे साध सतवादी हो जो हमारे हेतु अपने पुत्र लेआए ॥

ऐसे कह जब कंस बार बार हाथ जोडने लगा तब वसुदेव जी बोले महाराज - तुम सच कहते हो - इस में तुम्हारा कुछ दोष नहीं - विधना ने यही हमारे कर्म में लिखा था ॥ यों सुन कंस प्रसन्न हो अति हित से वसुदेव देवकी को अपने घर ले आया - भोजन करवाय बागे पहराय बडे आदर भाव से दोनों को फेर वहीं पऊंचाय दिया और मंत्री को बुला के कहा कि देवी कह गई है - तेरा बैरी जग में जन्मा - इस से अब देवताओं को जहां पावो तहां मारो - क्यों कि तिन्होंई ने मुझ से झूठी

बीने कही थी कि आठवें गर्भ में तेरा शत्रु होगा ❁ मंत्री बोला महाराज विनका मारना क्या बडी बात है - वे तो जन्म के भिखारी हैं - जद आप कोपियेगा तभी वे भाग जायगे ❁ विन की क्या सामर्थ है जो तुम्हारे सनमुख हों ❁ ब्रह्मा तो आठ पहर ज्ञान ध्यान में रहता है - महादेव भांग धतूरा खाय ❁ इंद्र का कुछ तुम पर नबसाय ❁ रहा नारायन सो संग्राम नहीं जाने - लक्ष्मी के साथ रहता है सुख माने ❁

कंस बोला - नारायन को कहां पावें औ किस विधि जीतें सो कहो ❁ मंत्री ने कहा महाराज - जो नारायन को जीता चाहते हो तो जिनके घर में आठ पहर है विनका बास - तिनही का अब करो विनास ❁ ब्राह्मन - बैस्नव - जोगी - जती - तपसी - सन्यासी - बैरागी - आदि जितने हरि के भक्त हैं तिन में लडके से ले बूढे तक एक भी जीता न रहै ❁ यह सुन कंस ने प्रधान से कहा - तुम सब को जा मारो ❁ आज्ञा पाकर मंत्री अनेक राक्षस साथ ले बिदा हो नगर में जा लगा गौ - ब्राह्मन - बालक - औ हरिभक्तों को छल बल कर ढूंढ ढूंढ मारने ❁ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे कंस उपद्रव करनो नाम पंचमोध्यायः ❁ ॥ ५ ॥ ❁❁

---

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले राजा - एक समैं न[illegible] ने पुत्र के लिये बडा तप किया - तहां श्री नारायन ने आप [illegible] कि हम तुम्हारे यहां जन्म ले जायगे ❁ जब भादों बदी अष्टमी बुधवार को आधी रातके समैं श्री कृष्ण आये तब जसोदा ने जागते ही पुत्रका मुख देख नंद को बुला अति आनंद माना औ अपना जीतब सुफल जाना ❁

भोर होते ही उठके नंद जी ने पंडित औ ज्योतिषियों को बुला भेजा-वे अपनी अपनी पोथी पत्रे ले ले आये-तिन को आसन दे दे आदर मान से बैठाये ॥ तिन्हों ने शास्त्र की बिधि से संवत्-महीना-तिथ-दिन-नक्षत्र-जोग-करन-ठहराय-लगन बिचार-महूर्त साध के कहा-महाराज-हमारे शास्त्र के विचार में तो ऐसा आता है कि यह लड़का दूसरा विधाता हो-सब असुरों को मार ब्रज का भार उतार गोपी नाथ कहावेगा-सारा संसार इसी का जस गावेगा ॥

यह सुन नंद जी ने कंचन के सींग-रूपे के खुर-तांबे की पीठ समेत दो लाख गौ पाटंबर उढाय संकल्प कीं और अनेक दान कर ब्राह्मनों को दछना दे दे असीस ले ले बिदा किया ॥ तब नगर के सब मंगलामुखियों को बुलाया ॥ वे आय आय अपना अपना गुन प्रकाश करने लगे-बजंत्री बजाने-नृत्यक नाचने-गायक गाने-ढाढी ढाढिन जस बखानने और जितने गोकुल के गोप ग्वाल थे वेभी अपनी नारियों के सिर पर दहेंडियां लिवाये-भांति भांति के भेष बनाये-नाचते गाते नंद को बधाई देन आये ॥ आतेही ऐसा दधिकांदौं किया कि सारे गोकुल में दही दही कर दिया-जब दधिकांदौं खेल चुके तब नंद जी [illegible] न को खिलाय-पिलाय-बागे पहराय-तिलककर पान दे बिदा कि[illegible] ॥

इसी रीति से कई दिन तक बधाई रही-इस बीच नंद जी से जिस जिस ने जो जो आय आय मांगा सो सो पाया ॥ बधाई से निचंत हो नंद जी ने सब ग्वालों को बुलाय के कहा-भाइयो-हमने सुनी है कि

कंस बालक पकड मंगवाता है - न जानिये कोई दुष्ट कुछ बात लगा दे - इस से उचित है कि सब मिल भेट ले चलें औ बरसौडी दे आवें ◉ यह बचन मान सब अपने अपने घर से दूध-दही-माखन-औ रुपऐ लाऐ - गाडीं में लाद लाद नंद के साथ हो गोकुल से चल मथुरा आऐ ◉ कंस से भेटकर भेट दी - कौडी कौडी चुकाय बिदा हो जुहारकर अपनी बाट ली ◉

ज्योंहीं यमुना तीर पै आऐ त्योंहीं समाचार सुन वसुदेव जी आ पहुंचे -नंद जी से मिल कुशल क्षेम पूछ कहने लगे - तुमसा सगा औ मित्र हमारा संसार में कोई नही-क्यौं कि जब हमें भारी बिपत भई तब गर्भवती रोहनी तुम्हारे यहां भेज दी - तिस के लडका हुआ सो तुम ने पाल बडा किया - हम तुम्हारा गुन कहां तक बखानें ◉ इतना कह फेर पूछा - कहो राम कृष्ण औ जसोदा रानी आनंद से हैं - नंद जी बोले-आपकी कृपा से सब भले हैं और हमारे जीवन मूल तुम्हारे बलदेव जी भी कुशल से हैं-कि जिन के होते तुम्हारे पुन्य प्रताप से हमारे पुत्र हुआ-पर ऐक तुम्हारेई दुख से हम दुखी हैं ◉ वसुदेव कहने लगे मित्र - विधाता से कुछ न बसाय - कर्म की रेख किसी से मेटी न जाय ◉ इस से संसार में आय दुख पीर पाय कौन पछताय ◉ ऐसे ज्ञान जनाय के कहा ◉◉

तुम घर जाऊ बेग आपने ◉ कीने कंस उपद्रव घने ◉

बालक ढूंढ मंगावे नीच ◉ ऊपर साध परजाकी मीच ◉

तुम तो सब यहां चले आऐ हो और राक्षस ढूंढते फिरते हैं-न

जानिये कोई दुष्ट आय गोकुल में उपाध मचावे ● यह सुनते ही नंद जी अकुलाकर सब को साथ लिये सोचते मथुरा से गोकुल को चले ● इति श्री लाल कृते प्रेमसागरे कृष्ण जन्मोत्सव नाम षष्ठोध्यायः ●॥ ६॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले हे राजा - कंस का मंत्री तो अनेक राक्षस साथ लिये मारता फिरता ही था कि कंसने पूतना नाम राक्षसी को बुलाकर कहा - तू जा जदुवंसियों के जितनें बालक पावे तितने मार ● यह सुन वह प्रसन्न हो दंडवत कर चली तो अपने जी में कहने लगी ●●

भये पूत हैं नंदकैं सूनों गोकुल गांउं ●
छलकर अबही आनिहों गोपी व्है कै जांउं ●

यह कह सोलह सिंगार बारह आभरन कर - कुचमें विष लगाय मोहनी रूप बन - कपट किये कंवल का फूल हाथ में लिये - बन ठन के ऐसे चली कि जैसे सिंगार किये लक्ष्मी अपने कंत पै जाती हो ● गोकुल में पहुंच हंसती हंसती नंद के मंदिर बीच गई ● इसे देख सब की सब मोहित हो भूली सी रहीं ● यह जा जसोदा के पास बैठी और कुशल पूछ असीस दी कि बीर तेरा कान्ह जीओ कोट बरीस ● ऐसे प्रीत बढाय लडके को जसोदा के हाथ से ले गोद में रख जो दूध पिलावने लगी तो श्री कृष्ण दोनों हाथों से चूंची पकड मुंह लगाय - लगे प्रान समेत पै पीने ● तब तो अति व्याकुल हो पूतना पुकारी - कैसा जसुदा तेरा पूत - मानुष नहीं यह है जमदूत ● जेवरी जान मैं ने सांप पकडा जो इस के हाथ से बच जीती जाऊंगी तो फेर गोकुल में क

भी न आऊंगी ● यों कह भाग गांव के बाहर आई पर कृष्ण ने न छोडा -निदान विसका जी लिया ● वह पछाड खाय ऐसे गिरी जैसे आकाश से वज्र गिरे ● अति शब्द सुन रोहनी औ जसोदा रोती पीटती वहीं आईं जहां पूतना दो कोस में मरीपडी थी और विनके पीछे सब गांव उठ धाया ● देखें तो कृष्ण विसकी छाती पर चढे दूध पी रहे हैं ● झट उठाय मुख चूंब हृदे से लगाय घर ले आईं ● गुनियों को बुलाय झाड फूंक करने लगीं और पूतना के पास गोपी ग्वाल खडे आपस में कह रहे थे कि भाई इस के गिरने का धमका सुन हम ऐसे डरे हैं जो छाती अबतक धडकती है-न जानिये बालक की क्या गति हुई होगी ●

इतने में मथुरा से नंद जी आये तो देखते क्या हैं कि एक राक्षसी मरी पडी है औ ब्रजवासियों की भीड घेरे खडी है - पूछा यह उपाध कैसे हुई ● वे कहने लगे महाराज - पहले तो यह अति सुंदरि हो तुम्हारे घर असीस देती गई - इसे देख सब ब्रज नारी भूल रहीं -यह कृष्ण को ले दूध पिलाने लगी ● पीछे हम नहीं जानते क्या गति हुई ● इतना सुन नंद जी बोले - बडी कुशल भई जो बालक बचा औ यह गोकुल पर न गिरी ● नहीं तो एक भी जीता न रहता-सब इस के नीचे दब मरते ● यों कह नंद जी तो घर आय दान पुन्य करने लगे और ग्वालों ने फरसे-फावडे - कुदाल-कुल्हाडों से काट काट पूतनाके हाड गोड तो गढे खोद खोद गाड दिये और मास चाम इकठा कर फूंक दिया ● विसके जलने से एक ऐसी सुगंध फैली कि जिस

 ने सारे संसार को सुगंध से भर दिया ◉

 इतनी कथा सुन राजा परीक्षित ने शुकदेव जी से पूछा - महाराज - वह राक्षसी महा मलीन मद मास खानेवाली - जिसके शरीर से सुगंध कैसे निकली सो कृपाकर कहो ◉ मुनि बोले राजा-श्री कृष्णचंद ने दूध पी विसे मुक्ति दी इस कारन सुगंध निकली ◉ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे पूतना बधो नाम सप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥ ◉◉

---

◉ श्री शुकदेव मुनि बोले ◉◉

जिहि नक्षत्र मोहन भये सो नक्षत्र पस्यौ आइ ◉
चारु बधाये रीति सब करत जसोदा माइ ◉

जब सत्ताईस दिन के हरि हुए तब नंद जी ने सब ब्राह्मन औ ब्रजबासियों को नौता भेज दिया ◉ वे आए तिन्हें आदर मान कर बैठाया ◉ आगे ब्राह्मनों को तो बहुत सा दान दे बिदा किया और भाईयों को बागे पहराय षट रस भोजन कराने लगे ◉ तिस समैं जसोदा रानी परोसती थी-रोहनी टहल करती थी-ब्रजबासी हंस हंस खा रहे थे-गोपियां गीत गा रही थीं-सब आनंद में ऐसे मगन थे कि कृष्ण की सुरत किसू को भी नथी ◉ और कृष्ण एक भारी छकड़े के नीचे पालने में अचेत सोते थे कि इस में भूखे हो जगे - पांव के अंगूठे मुह में दे रोवन लगे औ हिलक हिलक चारों ओर देखने ◉ विसी औसर उडता हुआ एक राक्षस आ निकला-कृष्ण को अकेला देख अपने मन में कहने लगा कि यह तो कोई बड़ा बली उपजा है पर आज मैं इस से पूतना का बैर लूंगा ◉

यों ठान सकट में आन बैठा ❁ तिसी से उसका नाम सकटासुर हुआ ❁ जब गाडा चडचडाय कर हिला - तब श्री कृष्ण ने बिलकते बिलकते ऐक ऐसी लात मारी कि वह मरगया और छकडा टूक टूक हो गिरा तो जितने बासन दूध दही के थे सब फूट चूर हुए औ गोरस की नदी सी वह निकली ❁ गाडे के टूटने औ भांडों के फूटने का शब्द सुन सब गोपी ग्वाल दौड आये - आतेही जसोदा ने कृष्ण को उठाय मुंह चूंब छाती से लगालिया ❁ यह अचरज देख सब आपस में कहने लगे - आज विधना ने बडी कुशल की जो बालक बच रहा औ सकट ही टूट गया ❁

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव बोले हे राजा - जब हरि पांच मास के हुए तब कंस ने तृनावर्त को पठाया - वह बगूला हो गोकुल में आया ❁ नंद रानी कृष्ण को गोद में लिये आंगन के बीच बैठी थी कि ऐका ऐकी कान्ह ऐसे भारी हुए जो जसोदा ने मारे बोझ के गोद से नीचे उतारे ❁ इतने में ऐक ऐसी आंधी आई कि दिन की रात हो गई औ लगे पेड उखड उखड गिरने - छप्पर उडने ❁ तब व्याकुल हो जसोदा जी श्री कृष्ण को उठाने लगीं पर वे न उठे ❁ ज्योंहीं विन के शरीर से इनका हाथ अलगा हुआ त्योंही तृनावर्त आकाश को ले उडा और मन में कहने लगा कि आज इसे विन मारे न रहूंगा ❁

वह तो कृष्ण को लिये वहां यह विचार करता था यहां जसोदा जी ने जब आगे न पाया तब रो रो कृष्ण कृष्ण कर पुकारने लगीं ❁ विनका शब्द सुन सब गोपी ग्वाल आये - साथ हो ढूंढने को धाये ❁ अंधेरे में

अटकल से टटोल टटोल चलते थे तिस पर भी ठोकरें खाय गिर गि र पडते थे ॥

ब्रज बन गोपी ढूंढत डोलैं ॥ इत रोहनी जसोदा बोलैं ॥
नंद मेघ धुनि करै पुकार ॥ टेरैं गोपी गोप अपार ॥

जद श्री कृष्ण ने नंद जसोदा समेत सब ब्रजबासी अति दुखित देखे तद तृनावर्त को फिराय आंगन में ला सिला पर पटका - कि विसका जी देह से निकल सटका ॥ आंधी थंभ गई उजाला हुआ - सब भूले भटके घर आये - देखें तो राक्षस आंगन में मरा पडा है ॥ श्री कृष्ण छाती पर खेल रहे हैं ॥ आते ही जसोदा ने उठाय कंठ से लगालिया और बहुत सा दान ब्राह्मनों को दिया ॥ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे सकट भंजन तृनावर्त बधो नाम अष्टमोध्यायः ॥ ॥ ८ ॥ ॥

श्री शुकदेव जी बोले हे राजा - एक दिन वसुदेव जीने गर्ग मुनि को जो बडे योतषी औ यदुबंसियों के परोहित थे - बुला कर कहा - कि तुम गोकुल जा लडके का नाम रक्खाओ ॥

गई रोहनी गर्भ सों भयौ पूत है ताहि ॥
कितौ आयु कैसौ बली कहा नाम ता आहि ॥

और नंद जी के पुत्र हुआ है सो भी तुम्हें बुलाय गये हैं ॥ सुनते ही गर्ग मुनि प्रसन्न हो चले औ गोकुल के निकट आ पहुंचे ॥ तिसी समैं किसी ने नंद जी से आ कहा कि यदुबंसियों के परोहित गर्ग मुनि जी आते हैं ॥ यह सुन नंद जी आनंद से ग्वाल बाल संग कर भेंट ले

उठ धाए और पाटंबर के पांवडे डालते बाजे गाजे से ले आए - पूजा 
कर आसन पर बैठाय चरनामृत ले स्त्री पुरुष हाथ जोड कहने लगे - 
महाराज - वडे भाग हमारे जो आप ने दया कर दरसन दे घर पवित्र किया ॥ तुम्हारे प्रताप से दो पुत्र हुए हैं - एक रोहनीके-एक हमारे - कृपा कर तिनका नाम धरिये ॥ गर्ग मुनि बोले ऐसे नाम रखना उचित नहीं क्यों कि जो यह बात फैले कि गर्ग मुनि गोकुल में लड कों के नाम धरने गये हैं औ कंस सुन पावे तो वह यही जानेगा कि देवकी के पुत्र को वसुदेव के मित्र के यहां कोई पहुंचाय आया है-इसी लिये गर्ग परोहित गया है - यह समझ मुझे पकड मंगावेगा और नजानिये तुम पर भी क्या उपाध लावे ॥ इस से तुम फैलाव कुछ मत करो - चुपचाप घर में नाम धरवालो ॥

नंद बोले गर्ग जी - तुम ने सच कहा ॥ इतना कह घर के भीतर ले आय बैठाया ॥ तब गर्ग मुनि ने नंद जी से दोनोंकी जन्म तिथि औ समैं पूछ लग्न साध - नाम ठहराय कहा - सुनो नंद जी वसुदेव की नारि रोहनी के पुत्र के तो इतने नाम होंयगे - संकर्षन - रेवती रमन - बलदाऊ - बलराम - कालिंदीभेदन - हलधर औ बलबीर ॥ और कृष्ण रूप जो तुम्हारा लडका है तिस के नाम तो अन गिनत हैं पर किसी समैं वसुदेव के यहां जन्मा इस से वासुदेव नाम हुआ औ मेरे बिचार में आता है कि ये दोनों बालक तुम्हारे चारों युग में जब जन्मे हैं तब साथ ही जन्मे हैं ॥

नंद जी बोले - इनके गुन कहो ॥ गर्ग मुनि ने उत्तर दिया - ये दूसरे

बिधाता हैं - इनकी गति कुछ जानी नहीं जाती पर मैं यह जानता हूं कि कंस को मार भूमि का भार उतारेंगे ❁ ऐसे कह गर्ग मुनि चुप चुपाते चलेगये औ वसुदेव को जा सब समाचार कहे ❁

आगे दोनों बालक गोकुल में दिन दिन बढ़ने लगे और बाल लीला कर कर नंद जसोदा को सुख देने ❁ नीले पीले झगुले पहने माथे पर छोटी छोटी लटूरियां बिखरी हुई - ताइत गंडे बांधे कठले गले में डाले खिलौने हाथों में लिये खेलते - आंगन के बीच घुटनों चल चल गिर गिर पड़ें और तोतली तोतली बतें करें ❁ रोहनी औ जसोदा पीछे लगी फिरें - इस लिये कि मत कहीं लड़के किसी से डर ठोकर खा गिरें ❁ जब छोटे छोटे बछड़ों औ बछियाओं की पूंछ पकड़ पकड़ उठें और गिर गिर पड़ें तब जसोदा औ रोहनी अति प्यार से उठाय छाती से लगाय दूध पिलाय भांति भांति के लाड लड़ावें ❁

जद श्री कृष्ण बड़े भये तो एक दिन ग्वाल बाल साथ ले ब्रज में दधि माखन की चोरी को गये - सूने घर में ढूंढ़ेंजाय - जो पावें सो देंय लुटाय ❁ जिन्हें घर में सोते पावें तिनकी धरी ढकी दहेंडी उठा लावें ❁ जहां छींके पर रक्खा देखें तहां पीढ़ी पर पटड़ा पटड़े पै ऊखल धर साथी को खड़ाकर उस के ऊपर चढ़ उतार लें - कुछ खावें लुटावें औ लुढ़काय दें ❁ ऐसे गोपियों के घर घर नित चोरी कर आवें ❁

एक दिन सब ने मता किया और गेह में मोहन को आने दिया ❁ जों घर भीतर पैठ चाहें कि माखन दही चुरावें तों जाय पकड़ कर

कहा दिन दिन आते थे निस भोर - अब कहां जाओगे माखन चोर ◉ यों कह जब सब गोपी मिल कन्हैया को लिये जसोदा के पास उलाहना देने चलीं - तब श्री कृष्ण ने ऐसा छल किया कि विस के लडके का हाथ विसे पकडा दिया और आप दौड अपने ग्वाल बालों का संग लिया ◉ वे चली चली नंदरानी के निकट आय - पाओं पड बोलीं - जो तुम विलग नमानो तो हम कहैं - जैसी कुछ उपाध कृष्ण ने ठानी है ◉◉

दूध दह्यौ माखन मह्यौ - बचे नहीं ब्रज मांझ ◉
ऐसी चोरी करतु है - फिरतु भोर अरु सांझ ◉

जहां कहीं धरा ढका पाते हैं तहां से निधडक उठा लाते हैं - कुछ खाते हैं औ लुटाते हैं ◉ जो कोई इनके मुख में दही लगा बतावे - विसे उलट कर कहते हैं - तूने ई तो लगाया है ◉ इस भांति नित चोरी कर आते थे - आज हम ने पकड पाया सो तुम्हें दिखाने लाई हैं ◉ जसोदा बोलीं - बीर - तुम किसका लडका पकड लाई - कल से तो घरके बाहर भी नहीं निकला मेरा कुंवर कन्हाई ◉ ऐसाही सच बोलती हो ◉ यह सुन औ अपना ही बालक हाथ में देख - वे हंसकर लजाय रहीं ◉ तहां जसोदा जी ने कृष्ण को बुलायके कहा - पुत्र - तुम किसू के यहां मत जाओ जो चहिये सो घर में से ले खाओ ◉◉

सुन कै कान्ह कहत तुतराय ◉ मत मैया तू इन्हें पतियाय ◉
ये झूठी गोपी झूठौ बोलें ◉ मेरे पीछे लागी डोलें ◉

कहीं दोहनी बछडा पकडाती हैं - कभी घर की टहल कराती हैं -

मुझे द्वारे रखवाली बैठाय अपने काज को जाती हैं - फिर झूठ मूठ आय तुम से बातें लगाती हैं ॰ यों सुन गोपी हरि मुख देख देख मुसकुराकर चलीं गईं

आगे एक दिन कृष्ण बलराम सखाओं के संग बाखल में खेलते थे कि जो कान्ह ने मट्टी खाई तो एक सखा ने जसोदा से जा लगाई - वह क्रोध कर हाथ में छडी ले उठ धाई ॰ मा को रिसभरी आती देख - मुंह पोंछ डर कर खडे हो रहे ॰ इन्होंने जातेही कहा - क्योंरे तूने माटी क्यों खाई ॰ कृष्ण डरते कांपते बोले - मा - तुझ से किस ने कहा ॰ ये बोलीं - तेरे सखा ने ॰ तब मोहन ने कोप कर सखा से पूछा - क्योंरे मैं ने मट्टी कब खाई है ॰ वह भयकर बोला - भैया - मैं तेरी बात कुछ नहीं जानता - क्या कहूंगा ॰ जो कान्ह सखा से बतराने लगे तो जसोदा ने उन्हें जा पकडा - तहां कृष्ण कहने लगे - मैया - तू मत रिसाय - कहीं मनुष भी मट्टी खाते हैं ॰ वह बोली - मैं तेरी अटपटीबात नहीं सुनती - जो तू सचा है तो अपना मुख दिखा ॰ जो श्री कृष्ण ने मुख खोला तो उस में तीनों लोक दृष्ट आए ॰ तब जसोदा को ज्ञान हुआ तो मन में कहने लगी कि मैं बडी मूरख हूं जो त्रिलोकी के नाथ को अपना सुत कर मानती हूं ॰

इतनी कथा कह श्री शुकदेव राजा परीक्षित से बोले - हे राजा - जब नंदरानी ने ऐसा जाना तब हरि ने अपनी माया फैलाई ॰ इतने में मोहन को जसोदा प्यार कर कंठ लगाय घर ले आई ॰ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे विश्व दरसनो नाम नवमोध्यायः ॥ ९ ॥ ॰॰

एक दिन दही मथने की बिरियां जान - भोरही नंदरानी उठी और सब गोपियों को जगाय बुलाया-वे आय घर झाड-बुहार-लीप-पोत-अपनी अपनी मथनियां ले ले दधि मथने लगीं ◉ तहां नंदमहरि भी एक बडासा कोरा चरुआ ले ईंडुरे पर रख चौकी बिछा नेती और रई मंगाय - टटकी टटकी दहेंडियां बाछ बाछ राम कृष्ण के लियें बिलोवन बैठी ◉ तिस समैं नंद के घर में ऐसा शब्द दही मथने का हो रहाथा कि जैसे मेघ गरजता हो ◉ इतने में कृष्ण जागे तो रो रो मा मां कर पुकारन लागे ◉ जब तिन का पुकारना किसू ने न सुना तब आपही जसोदा के निकट आये ◉ औ आखें डबडबाय अनमने हो ठुसक ठुसक तुतलाय तुतलाय कहने लगे-कि मा तुझे कै बेर बुलाया पर मुझे कलेऊ देन न आई - तेरा काज अबतक नहीं निबडा ◉ इतना कह मचल पडे ◉ रई चरुऐ से निकाल दोनों हाथ डाल लगे माखन काढ काढ फेंकने - अंग लथेडने औ पांव पटक पटक आंचल खेंच खेंच रोने ◉ तब नंदरानी घबराय झुंझलाय के बोली - बेटा यह क्या चाल निकाली ◉ चल उठ तुझे कलेऊ दूं ◉ कृष्ण कहे अब मैं नहिं लूं ◉ पहिले क्यों नहिं दीना मा - अब तो मेरी लेहै बला ◉ निदान जसोदा ने फुसलाय प्यार से मुंह चूंब गोद में उठालिया औ दधि माखन रोटी खाने को दिया ◉ हरि हंस हंस खाते थे नंदमहरि आंचल की ओट किये खिला रही थी-इस लिये कि मत किसी की दीठि लगे ◉

इस बीच एक गोपी ने आ कहा कि तुम तो यहां बैठी हो वहां चूल्हे

पर से सब दूध उफन गया ❁ यह सुनते ही झट कृष्ण को गोद से उतार उठ धाई औ आके दूध बचाया ❁ यहां कान्ह दही मही के भाजन फोड-रई तोड-माखन भरी कमोरी ले-ग्वाल बालों में दौड आये ❁ एक उलूखल औंधा धरा पाया तिसपर जा बैठे औ चारों ओर सखाओं को बैठाय लगे आपस में हंस हंस बांट बांट माखन खाने

इस में जसोदा दूध उतार आय देखे तो आंगन औ तिवारे में दही मही की कीच हो रही है ❁ तब तो सोच समझ हाथ में छडी ले निकली और ढूंढती ढूंढती वहां आई जहां श्री कृष्ण मंडली बनाये माखन खाय खिलाय रहे थे ❁ जातेही पीछे से जो कर धरा-तो हरि मा को देखतेही रोकर हाहा खाय लगे कहने कि मा - गोरस किस ने लुढाया मैं नहीं जानूं - मुझे छोड दे ❁ ऐसे दीन बचन सुन जसोदा हंसकर हाथ से छडी डाल और आनंद में मगन हो रिसके मिस-कंठ लगाय घर लाय कृष्ण को उलूखल से बांध ने लगी ❁ तब श्री कृष्ण ने ऐसा किया कि जिस रस्सी से बांधे वही छोटी होय ❁ जसोदा ने सारे घर की रस्सियां मंगाई तौभी बांधे न गये ❁ निदान मा को दुखित जान आप ही बंधाई दिये ❁ नंदरानी बांध गोपियों को खोलने की सौंह दे फिर घर की टहल करने लगी ❁ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे दाम बंधनो नाम दशमोध्यायः ❁ ॥ १० ॥ ❁❁

श्री शुकदेव जी बोले-हे राजा-श्री कृष्णचंद को बंधे बंधे पूर्व जन्मकी सुधि आई कि कुबेर के बेटों को नारद ने श्राप दिया है-तिन का उद्धार

किया चाहिये ॐ यह सुन राजा परीक्षित ने शुकदेव जी से पूछा - 
महाराज - कुवेर के पुत्रों को नारद मुनि ने कैसे श्राप दिया था - सो 
समझाय कर कहो ॐ शुकदेव मुनि बोले कि नल कूबर नाम कुवेर के दो लडके कैलास में रहैं - सो शिव की सेवाकर कर अति धनवान हुए ॐ एक दिन स्त्रियां साथ ले वे बन विहार को गये - वहां जाय मद पी मदमाते भये - तब नारियों समेत नंगेहो गंगा में न्हाने लगे और गलबहियां डाल डाल अनेक अनेक भांति की कलोलें करने - कि इतने में तहां नारद मुनि आ निकले ॐ तिन्हें देखते ही रंडियों ने तो निकल कपड़े पहने औ वे मतवारे वहीं खडे रहे ॐ तिन की दसा देख नारद जी मन में कहने लगे कि इनको धनका गर्व हुआ है - इसी से मदमाते हो काम क्रोध को सुख कर मानते हैं ॐ निरधन मनुष्य को अहंकार नहीं होता औ धनवान को धर्म अधर्म का विचार ॐ कहा है ॐ मूरख झूठी देह से नेह कर भूलें - संपत कुटुंब देख के फूलें ॐ और साध न धनमद मन में आनें - संपत विपत एक सम मानें ॐ इतना कह नारद मुनि ने तिन्हें श्राप दिया कि इस पाप से तुम गोकुल में जा वृक्ष हो - जब श्री कृष्ण अवतार लेंगे तब तुम्हें मुक्ति देंगे ॐ ऐसे नारद मुनि ने तिन्हें श्रापा था - तिसी से वे गोकुल में आ रूख हुए तब तिनका नाम यमलार्जुन हुआ ॐ

इतनी कथा कह शुकदेव जी बोले ॐ महाराज - इसी बात की सुरत कर श्री कृष्ण ओखली को घसीटे घसीटे वहां ले गये - जहां यमलार्जुन पेड़ थे - जातेही तिन दोनों तरवर के बीच उलूखल को आड़ा डाल दे

क ऐसा झटका मारा कि वे दोनों जड से उखड पडे औ तिन में से दो पुरुष अति सुंदर निकल हाथ जोड स्तुति कर कहने लगे ● हे नाथ तुम बिन हम से महा पापियों की सुध कौन ले ● श्री कृष्ण बोले ● सुनो-नारद मुनि ने तुम पर बडी दया की जो गोकुल में मुक्ति दी-तिन्हीं की कृपा से तुम ने मुझे पाया - अब बर मांगो जो तुह्मारे मन में हो ●

यमलार्जुन बोले दीनानाथ-यह नारद जी की ही कृपा है जो आप के चरन परसे औार दरसन किया-अब हमें किसी वस्तु की इच्छा नहीं पर इतना ही दीजे जो सदा तुम्हारी भक्ति हृदे में रहे ● यह सुन बर दे हंसकर श्री कृष्णचंद ने तिन्हें बिदा किया ● इति श्री लाल कृत प्रेम सागरे यमलार्जुन मोक्षो नाम एकादशोध्यायः ● ॥ ११ ॥ ●●

———●●●●●●●●●●●●———

श्री शुकदेव मुनि बोले-राजा - जब वे दोनों तरु गिरे तब तिनका शब्द सुन नंदरानी घबराकर दौडी वहां आई-जहां कृष्ण को उलूखल से बांध गई थी औार तिन के पीछे सब गोपी ग्वाल भी आये ● जद कृष्ण को वहां न पाया तद व्याकुल हो जसोदा मोहन मोहन पुकारती औ कहती चली ● कहां गया बांधा था माई-कहीं किसी ने देखा मेरा कुंवर कन्हाई ● इतने में सोहीं से आ एक बोली ब्रज नारी-कि दो पेड गिरे तहां बचे मुरारी ● यह सुन सब आगे आय देखें तो सच ही बृक्ष उखडे पडे हैं औ कृष्ण तिन के बीच ओखली से बंधे सुकडे बैठे हैं ● आते ही नंदमहरि ने उलूखल से खोल कान्ह को लेकर गले

लगा लिया-और सब गोपियां डर जान लगीं चुटकी ताली देदे हंसा ने ● तहां नंद उपनंद आपस में कहने लगे कि ये जुगान जुग के रूख जमेऊए कैसे उखडपडे-यह अचंभा जी में आता है-कुछ भेद इन का समझा नहीं जाता ● इतना सुनके ऐक लडके ने पेड गिरने का ब्योरा जों का तों कहा पर किसी के जी में न आया ● ऐक बोला-ये बालक इस भेद को क्या समझें ● दूसरे ने कहा-कदाचित यही हो-हरि की गति कौन जाने ● ऐसे अनेक अनेक भांति की बातें कर श्री कृष्ण को लिये सब आनंद से गोकुल में आये - तब नंद जी ने बज़ुत सा दान पुन्य किया ●

कितने ऐक दिन बीते कृष्ण का जन्म दिन आया-तो जसोदा रानी ने सब कुटुंब को नोत बुलाया और मंगलाचार कर बरस गांठ बांधी ● जद सब मिलि जेंवन बैठे तद नंदराय बोले सुनो भाइयो-अब इस गोकुल में रहना कैसे बने-दिन दिन होने लगे उपद्रव घने ● चलो कहीं ऐसी ठौर जावें-जाहां तृन जल का सुख पावें ● उपनंद बोले बृंदाबन जाय बसिये तो आनंद से रहिये ● यह वचन सुन नंद जी ने सब को खिलाय पिलाय पान दे बैठाय-त्योंहीं ऐक जोतषी को बुलाय-यात्रा का महूर्त पूछा ● तिस ने विचारके कहा-इस दिसा की यात्रा को काल का दिन अति उत्तम है ● बांऐ जोगनी पीछे दिसासूल औ सनमुख चंद्रमा है ● आप निस्संदेह भोरही प्रस्थान कीजे ●

यह सुन तिस रैन तो सब गोपी ग्वाल अपने अपने घर गये पर सबेरे ही अपनी अपनी वस्तु भाव गाडीं पै लाद लाद आ इकठे भये ●

तब कुटुंब समेत नंद जी भी साथ हो लिये और चले चले नदी उत र सांझ समैं जापहुंचे ॐ बृंदादेवी को मनाय बृंदावन बसाया-तहां सब सुख चैन से रहने लगे ॐ

जब श्री कृष्ण पांच बरस के हुए नंद मा से कहने लगे कि मैं बछडे चरावने जाऊंगा-तू बलदाऊ से कहदे जो मुझे बन में अकेला नछोडे ॐ वह बोली पूत-बछडे चरावने वाले बहुत हैं दास तुम्हारे-तुम मत पल ओट हो मेरे नैन आगे से प्यारे ॐ कान्ह बोले जो मैं बन में खेलने जाऊंगा-तो खानेको खाऊंगा नहीं तो नहीं ॐ यह सुन जसोदा ने ग्वाल बालों को बुलाय कृष्ण बलराम को सोंपकर कहा-कि तुम बछडे चरावने दूर मत जाइयो और सांझ न होते दोनों को संग ले घर आइयो ॐ बन में इन्हें अकेले मत छोडियो-साथही साथ रहियो-तुम इनके रखवाले हो ॐ ऐसे कह कलेऊ दे राम कृष्ण को तिन के संग कर दिया ॐ

वे जाय यमुना के तीर बछडे चराने लगे और ग्वाल बालों में खेलने कि इतने में कंस का पठाया कपट रूप किये बच्छासुर आया ॐ तिसे देखते ही सब बछडे डर जिधर तिधर भागे-तब श्री कृष्ण ने बलदेव जी को सेन से जताया कि भाई-यह कोई राक्षस आया ॐ आगे जों वह चरता चरता घात करने को निकट पहुंचा तो श्री कृष्ण ने पिछले पांव पकड फिरायकर ऐसा पटका कि तिसका जी घट से निकल सटका ॐ

बच्छासुर का मरना सुन कंस ने बकासुर को भेजा ॐ वह बृंदावन में आय अपनी घात लगाय-यमुना के तीर पर्वत सम आ बैठा ॐ तिसे

देख मारे भय के ग्वाल बाल कृष्ण से कहने लगे कि भैया-यह तो कोई राक्षस बगुला बन आया है-इस के हाथ से कैसे बचेंगे ●

ये तो इधर कृष्ण से यों कहते थे औ उधर वह जी में यह बिचार ता था कि आज इसे बिना मारे न जाऊंगा ● इतने में जों श्री कृष्ण उसके निकट गये तों तिसने इन्हें चोंच में उठाय मुंह मूंद लिया ● ग्वाल बाल ब्याकुल हो चारों ओर देख देख रो रो पुकार पुकार लगे कहने-हाय हाय-यहां तो हलधर भी नहीं है-हम जसोदा से क्या आय कहेंगे-इनको अति दुखित देख श्री कृष्ण ऐसे तत्ते हुऐ कि वह मुख में रख न सका ● जों तिसने इन्हें उगला तों इन्हों ने उसे चोंच पकड ठेंठ पांव तले दबाय चीर डाला और बछड़े घेर सखाओं को साथ ले हंसते खेलते घर आये ● इति श्री लाल कृते प्रेमसागरे बच्छासुर बकासुर बधो नाम द्वादशोध्यायः ● ॥ १२ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव बोले सुनो महाराज-प्रात होतेही एक दिन श्री कृष्ण बछड़े चरावन बन को चले-तिनके साथ सब ग्वाल बाल भी अपने अपने घर से छाक ले ले हो लिये ● और हार में जाय छाक धर बछरू चरने को छोड-लगे खडी गेरू से तन चीत चीत बनके फल फूलों के गहने बनाय बनाय पहन पहन खेलने औ पशु पंछियों की बोली बोल बोल भांति भांति के कुतूहल कर कर नाचने गाने ●

इतने में कंस का पठाया अघासुर नाम राक्षस आया-सो अति बड़ा अजगर हो मुंह पसार बैठा ● और सब सखा समेत श्री कृष्ण भी खे

लते खेलते वहीं जा निकले-जहां वह घात लगाये मुंह बाये बैठा था ◉ दूर से विसे देख ग्वाल बाल आपस में लगे कहने कि भाई-यह तो कोई बडा पहाड है कि जिस की कंदरा इतनी बडी है ◉ ऐसे कहते औ बछडे चराते उस के पास पहुंचे तब एक लडका विस का मुख खुला देख बोला-भाई-यह तो कोई अति भयावनी गुफा है-इस के भीतर न जावेंगे-हमें देखते ही भय लगता है-फिर तोख नाम सखा बोला-चलो इस में धस चलें ◉ कृष्ण साथ रहते हम क्यों डरें ◉ जो कोई असुर होगा तो बकासुर की रीत से मारा जायगा ◉

यों सब सखा खडे बातें करतेही थे कि विस ने एक ऐसी लंबी सांस खेंची जो बछडों समेत सब ग्वाल बाल उड के विस के मुख में जा पडे ◉ विष भरी तत्ती भाफ जों लगी तों लगे व्याकुल हो बछडे रंभने औ सखा पुकारने कि हे कृष्ण प्यारे-बेग सुध ले-नहीं तो सब जल मरते हैं ◉ विन की पुकार सुनते ही आतुर हो श्री कृष्ण भी उसके मुख में बड गये-विन ने प्रसन्न हो मुंह मूंद लिया ◉ तहां श्री कृष्ण ने अपना शरीर इतना बढाया कि विस का पेट फट गया ◉ सब बछरू औ ग्वाल बाल निकल पड़े-तिस समय आनंदकर देवताओं ने फूल औ अमृत बरसाय सबकी तपत हर ली ◉ तब ग्वाल बाल श्री कृष्ण से कहने लगे कि भैया-इस असुर को मार आज तो तूने भले बचाये नहीं सब मर चुके थे ◉ इति श्री लाल कृते प्रेमसागरे अघासुर बधो नाम त्रयोदशोध्यायः ◉ ॥ १३ ॥ ◉◉

श्री शुकदेव बोले हे राजा-ऐसे अघासुर को मार श्री कृष्णचंद बछडे घेर-सखाओं को साथ ले आगे चले ❁ कितनी ऐक दूर जाय कदम की छांह में खडे हो बंसी बजाय सब ग्वाल बालों को बुलाय कहा-भैया-यह भली ठौर है इसे छोड आगे कहां जांय-बैठो यहीं छाकें खांय ❁ सुनते ही तिन्हों ने बछडे तो चरने को हांक दिये और आक-ढाक-बड-कदम-कंवल के पात लाय-पत्तल-दोने-बनाय झाड बुहार श्री कृष्ण के चारों ओर पांति की पांति बैठ गये ❁ औ अपनी अपनी छाकें खोल खोल लगे आपस में परोसने ❁



जब परोस चुके तब श्री कृष्णचंद ने सब के बीच खडे हो पहले आप कौर उठाय खाने की आज्ञा दी ❁ वे खाने लगे तिन में मोर मुकुट धरे-बनमाल गरे-लकुट लिये-तृभंगी छब किये-पीतांबर पहने-पीत पट ओढे-हंस हंस श्री कृष्ण भी अपनी छाक से सब को खिलाते थे ❁ और ऐक ऐक के पनवारे से उठाय उठाय चाख चाख खट्टे मीठे सीने चरपरे का स्वाद कहते जाते थे औ तिस मंडली में ऐसे सुहावने लगते थे कि जैसे तारों में चंद्रमा ❁ तिस समैं ब्रह्मा आदि सब देवता अपने अपने विमानों में बैठे-आकाश से ग्वाल मंडली का सुख देख रहे थे-कि तिन में से आय ब्रह्मा सब बछडे चुराय ले गया ❁ और यहां ग्वाल बालों ने खाते खाते चिंता कर श्री कृष्ण से कहा-भैया-हम तो निचिंताई से बैठे खाय रहे हैं-न जानिये बछडे कहां निकल गये होंयगे ❁❁

पत्तल
चुने हुए

तब ग्वालन सों कहत कन्हाई ❁ तुम सब जेंवत रहियो भाई ❁

जिन कोऊ उठै करै औसेर ● सब के बछरा ल्याऊं घेर ●

ऐसे कह कितनी एक दूर बन में जाय जब जाना कि यहां से बछडे ब्रह्मा हर ले गया-तब श्री कृष्ण वैसे ही और बनाय लाये ● यहां आय देखें तो ग्वाल बालों को भी उठाय ले गया है ● फिर इन्हों ने वेभी जैसे थे तैसे ही बनाये-और सांझ हुई जान सब को साथ ले बृंदाबन आये ● ग्वाल बाल अपने अपने घर गये पर किसी नें यह भेद नजाना कि ये हमारे बालक औ बछडे नहीं-बरन और दिन दिन माया बढती चली ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव बोले महाराज-वहां ब्रह्मा ग्वाल बाल बछडों को ले जाय एक पर्बत की कंदरा में भर-तिस के मुंह पर पत्थर की सिला धर भूल गया ● और यहां श्री कृष्ण चंद नित नई नई लीला करते थे ● इस में एक बरष बीत गया तब ब्रह्मा को सुध हुई तो मन में कहने लगा कि मेरा तो एक पल भी नहीं हुआ-पर नर का बरष हो गया-इस से अब चल देखा चाहिये कि ब्रज में ग्वाल बाल बछडों बिन क्या गति भई ●

यह बिचार उठकर वहां आया जहां कंदरा में सब को मूंद गया था ● सिला उठाय देखे तो लडके औ बछडे घोर निद्रा में सोये पडे हैं ● वहां से चल बृंदाबन में आय बालक औ बछरू सब जौं के तौं देख अचंभे हो कहने लगा-कैसे ग्वाल बच्छ यहां आये-कै ये कृष्ण नये उपजाये ● इतना कह फिर कंदरा को देखनें गया ● जितने में वह वहां से देख कर आवे-तितने बीच यहां श्री कृष्ण चंद्रने ऐसी माया करी कि जित

ग्वाल बाल औ बछडे थे सब चतुर्भुज हो गये ● और ऐक ऐक के आगे ब्रह्मा-रुद्र-इंद्र-हाथ जोडे खडे हैं ●●

देख विरंच चित्र सौ भयौ ● भूल्यौ ज्ञान ध्यान सब गयौ ●
जनो पषान देवी चौ मुखी ● भई भक्ति पूजा बिन दुखी ●

औ डरकर नैन मूंद लगा थर थर कांपने ● जब अंतर जामी श्री कृष्णचंद ने जाना कि ब्रह्मा अति व्याकुल है तब सब का अंश हर लिया-और आप अकेलेई रह गये-ऐसे कि जैसे भिन्न भिन्न बादल ऐक हो जाय ● इति श्री लाल कृते प्रेमसागरे ब्रह्मा बच्छ हरनो श्री कृष्ण माया करनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ● ॥ १४ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले-हे राजा-जद श्री कृष्ण ने अपनी माया उठा ● ली तद ब्रह्मा को अपने शरीर का ज्ञान हुआ-तो ध्यानकर भगवान के पास आ अति गिडगिडाय पाओं पड विनतीकर हाथ बांध खडा हो कहने लगा कि हे नाथ-तुमने बडी कृपा करी जो मेरा गर्व दूर किया-इसी से अंधा हो रहा था ● ऐसी बुद्धि किस की है जो विन दया तुम्हारी तुम्हारे चरित्रों को जाने ● माया तुम्हारी ने सब को मोहा है ● ऐसा कौन है जो तुम्हें मोहे-तुम सब के करता हो-तुम्हारे रोम रोम में मुज से ब्रह्मा अनेक पडे हैं-मैं किस गिनती में हूं-दीन दयाल-अब दया कर अपराध क्षमा कीजे-मेरा दोष चित्त में न लीजे ●

इतना सुन श्री कृष्ण चंद मुसकुराये तद ब्रह्मा ने सब ग्वाल बाल औ बछडे सोतेके सोते ला दिये और लज्जित हो स्तुति कर अपने स्थान को

गया ● जैसी मंडली आगे थी तैसीही बनगई ● बरस दिन बीता किसीने न जाना ● जों ग्वाल बालकों की नींद गई तों कृष्ण बछरू घेर लाये-तब तिन से लडके बोले-भैया-तू तो बछडे बेग ले आया-हम भोजन करने भी न पाये ●●

सुनत बचन हंस कहत बिहारी ● मोकों चिंता भई तिहारी ●
निकट चरत इक ठौरे पाऐ ● अब घर चलौ भोर के आऐ ●

ऐसे आपस में बतराय बछरू ले सब हंसते खेलते अपने घर आये ● इति श्री लाल कृते प्रेमसागरे ब्रह्मा स्तुति करनो नाम पंचदशो ध्यायः ● ॥ १५ ॥ ●●

———●●●●●●●●●●●●———

श्री शुकदेव बोले-महाराज-जब श्री कृष्ण आठ बरस के हुऐ तब ऐक दिन विन्होंने जसोदा से कहा कि मा-मैं गाय चरावन जाऊंगा-तू बाबा से समझायकर कह जो मुझे ग्वालों के साथ पठाय दे ● सुनते ही जसोदा ने नंद जी से कहा-विन्होंने शुभ महूर्त ठहराय ग्वाल बालों को बुलाय-कातिक सुदी आठें को राम कृष्ण से खरक पुजवाय बिनती कर ग्वालों से कहा कि भाइयो-आज से गौ चरावन अपने साथ राम कृष्ण को भी ले जाया करो-पर इनके पास ही रहियो-बन में अकेले न छोडियो ऐसे कह छाक दे-कृष्ण बलराम को दही का तिलककर सब के संग बिदा किया ● वे मगन हो ग्वाल बालों समेत गायें लिये बन में पहुंचे ● तहां बन की छबि देख श्री कृष्ण बलदेव जी से कहने लगे-दाऊ यह तो अति मनभावनी सुहावनी ठौर है-देखो कैसे बृक्ष झुक झुक

रहे हैं-औ भांति भांति के पशु पंछी कलोलें करते हैं ● ऐसे कह एक ऊंचे टीले पर जा चढे-और लगे दुपट्टा फिराय फिराय कारी-गोरी-पीरी-धौरी-धूमरि-भूरी-नीली-कह कह पुकारने ● सुनतेही सब गायें रांभतीं हांकतीं दौड आईं ● तिस समैं ऐसी सोभा हो रही थी कि जैसे चारों ओर से बरन बरन की घटा घिर आईं होंय ●

फिर श्री कृष्णचंद गौ चरने को हांक-भाई के साथ छाक खाय कदम की छांह में एक सखा की जांघ पै सिर धर सोये ● कितनी एक बेर में जो जागे तो बलराम जी से कहा-दाऊ-सुनो खेल यह करैं-न्यारे कटक बांध कै लरैं ● इतना कह आधी आधी गायें औ ग्वाल बाल बांट लिये ● तब बन के फल फूल तोड झोलियों में भर भर लगे तुरही-भेर-भोंपू-डफ-ढोल-दमामे मुखही से बजाय बजाय लडने-औ मार मार पुकारने ● ऐसे कितनी एक बेर तक लडे-फिर अपनी अपनी टोली निराली ले गायें चराने लगे ●

इस बीच बलदेवजी से सखानें कहा-महाराज-यहां से थोडी सी दूर पर एक तालबन है-तिस में अमृत समान फल लगे हैं-तहां गधे के रूप एक राक्षस रखवाली करता है ● इतनी बात सुनते ही बलराम जी ग्वाल बालों समेत तिस बन में गये और लगे ईंट-पत्थर-डेले-लाठियां मार मार फल झाडने ● शब्द सुनकर धेनुक नाम खर रेंकता आया औ तिसने आतेही फिरकर बलदेव जी की छाती में एक दुलत्ती मारी-तब इन्हों ने तिसे उठायकर दे पटका-फिर वह लोट पोट के उठा और धरती खूंद खूंद कान दबाय दबाय हट हट दुलत्तियां झाडने लगा ●

ऐसे बडी बेर लग लडता रहा-निदान बलराम जी ने विसको दोनें। पिछली टांगें पकड फिरायकर एक ऊंचे पेड पर फेंका सो गिरते ही मर गया-औ साथ उसके वह रूख भी टूट पडा ● दोनों के गिरने से अति शब्द ऊआ और सारे बन के वृक्ष हाल उठे ●●

देखि दूर सों कहत मुरारी ● हाले रूख शब्द भयो भारी ●
तब हि सखा हलधर के आये ● चलऊ कृष्ण तुम बेग बुलाये ●

एक असुर मारा है सो पडा है ● इतनी बात के सुनते ही श्री कृष्ण भी बलराम जी के पास जा पऊंचे-तब धेनुक के साथी जितने राक्षस थे सो सब चढ आये ● तिन्हें श्री कृष्णचंद्र जी ने सहज ही मार गिराया-तब तो सब ग्वाल बलों ने प्रसन्न हो निधडक फल तोड मन मानती झोलियां भर लीं-और गायें घेर लाय श्री कृष्ण बलदेव जी से कहा महाराज-बडी बेर से आये हैं अब घर को चलिये ● इतना बचन सुनते ही दोनों भाई गायें लिये ग्वाल बालों समेत हंसते खेलते सांझ को घर आये-और जो फल लाये थे सो सारे बृंदाबन में बंटवाये ● सब को बिदा दे आप सोये फिर भोर के तडके उठते ही श्री कृष्ण ग्वाल बालों को बुलाय कलेऊ कर गायें ले बन को गये और गैा चराते चराते कालीदह जा पऊंचे ● वहां ग्वालों ने गायों को यमुना में पानी पिलाया औ आप भी पिया-जो जल पी ऊपर उठे तो गायों समेत मारे बिष के सब लोट गये ● तब श्री कृष्ण जी ने अमृत की दृष्ठ से देख सबों को जिवाया ● इति श्री लाल कृते प्रेमसागरे धेनुक बधो नाम षोडशोध्यायः ● ॥ १६ ॥ ●●

श्री शुकदेव जी बोले-महाराज-ऐसे सब की रक्षा कर श्री कृष्ण ग्वाल बालों के साथ गेंद तडी खेलने लगे-और जहां काली था तहां चार कोस तक यमुना का जल विस के विषसे खौलता था-कोई पशु पंछी वहां नजा सकता-जो भूलकर जाता सो लपट से झुलस दह में गिर पडता-औ तीर में कोई रूख भी न उपजता ❁ ऐक अविनासी कदम तट पर था-सोई था ❁ राजा ने पूछा-महाराज-वह कदम कैसे बचा ❁ मुनि बोले-किसी समैं अमृत चोंच में लिये गरुड तिस पेड पर आ बैठा था-तिसके मुंह से ऐक बूंद गिरी थी इस लिये वह रूख बचा ❁

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा से कहा-महाराज-श्री कृष्णचंद जी काली का मारना जी में ठान-गेंद खेलते खेलते कदम पर जा चढे औ जो नीचे से सखा ने गेंद चलाई तो यमुना में गिरी-तिस के साथ श्री कृष्ण भी कूदे ❁ इनके कूदने का शब्द आंख से सुन कर वह लगा विष उगलने औ अग्नि सम फुंकारें मार मार कहने-कि यह ऐसा कौन है जो अब लग दह में जीता है ❁ कहीं अखै वृक्ष तो मेरा तेज न सहिके टूट पडा-कै कोई बडा पशु पंछी आया है जो अबतक जल में आहट होता है ❁

यों कह वह ऐक सौ दसों फनों से विष उगलता था औ श्री कृष्ण पैरते फिरते थे ❁ तिस समैं सखा रोरो हाथ पसार पसार पुकारते थे ❁ गायें मुंह बायें चारों ओर रांभती ढूंकती फिरती थीं ❁ ग्वाल न्यारेही कहते थे-स्याम-बेग निकल आइये-नहीं तुम बिन घर जाय हम क्या उत्त

र देंगे ● ये तो यहां दुखित हो यों कह रहे थे-इस में किसी ने वृंदा बन में जा सुनाया कि श्री कृष्ण कालीदह में कूद पड़े ● यह सुन रोह नी जसोदा औ नंद गोपी गोप समेत रोते पीटते उठ धाये-और सर्व के सब गिरते पड़ते कालीदह आये ● वहां श्री कृष्ण को न देख व्याकुल हो नंदरानी दौरानी गिरन चली पानी में-तब गोपियों ने बीच ही जा पकड़ा औ ग्वाल बाल नंद जी को थांभे ऐसे कह रहे थे ●●

खांड महा बन या बन आए ● तोहू दैत्यनि अधिक सताए ●

बचैत कुशल असुरन तें परी ● अब क्यौं दह तें निकसें हरी ●

कि इतने में पीछे से बलदेव जी भी वहां आए औ सब ब्रजबासियों को समझाकर बोले-अभी आवेंगे कृष्ण अविनासी-तुम काहे को होते हो उदासी ●

आज साथ आयौ मैं नाहीं ● मो बिन हरि पैठे दह मांहीं ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी राजा परीक्षित से कहने लगे कि महाराज इधर तो बलराम जी सब को यों आसा भरोसा देते थे औ उधर श्री कृष्ण जो पैरकर उसके पास गये तो वह आ इनके सारे शरीर से लिपट गया ● तब श्री कृष्ण ऐसे मोटे हुए कि उसे छोड़तेही बन आया ● फिर जों जों वह फुंकारे मार मार इन पर फन चलाता था त्यों त्यों ये अपने को बचाते थे ● निदान ब्रजबासियों को अति दुखित जान श्री कृष्ण एकाएकी उचक उसके सिर पर जा चढ़े ●●

तीन लोक कौ बोझ ले-भारी भये मुरारि ●

फन फन पर नाचत फिरें-बाजे पग पट तारि ●

तब तो मारे बोझ के काली मरने लगा औ फन पटक पटक उस ने
जीभें निकाल दीं-तिन से लोहू की धारें बह चलीं ● जद विष औ बलका
गर्व गया तद उन्ने मन में जाना कि आदि पुरुष ने औतार लिया-नहीं
इतनी किस में सामर्थ है जो मेरे विष से बचे ● यह समझ जीव की
आस तज सिथल हो रहा-तद नाग पत्नी ने आय हाथ जोड़ सिर नि
वाय बिनती कर श्री कृष्णचंद से कहा-महाराज-आपने भला किया जो
इस दुख दाई-अति अभिमानी का गर्व दूर किया ● अब इसके भाग
जागे-जो तुम्हारा दरसन पाया ● जिन चरनों को ब्रह्मा आदि सब
देवता जप तप कर ध्यावते हैं-सोई पद काली के सीस पर बिरा
जते हैं ●

इतना कह फिर बोली महाराज-मुझ पर दया कर इसे छोड़ दी
जे-नहीं तो इसके साथ मुझे भी बध कीजे-क्योंकि स्वामी बिन स्त्री को म
रना हीं भला है औ जो बिचारिये तो इसका भी कुछ दोष नहीं-यह
जाति सुभाव है कि दूध पिलाये विष बढ़े ●

इतनी बात नाग पत्नी से सुन श्री कृष्णचंद उस पर से उतर पड़े तब
प्रनाम कर हाथ जोड़ काली बोला-नाथ-मेरा अपराध क्षमा कीजे-
मैं ने अनजाने आप पर फन चलाये ● हम अधम जाति सर्प हमें इतना
ज्ञान कहां जो तुम्हें पहचानें ● श्री कृष्ण बोले-भला जो हुआ सो हुआ
पर अब तुम यहां न रहो-कुटुंब समेत रौनक दीप में जा बसो ●

यह सुन काली ने डरते कांपते कहा-कृपा नाथ-वहां जाऊं तो ग
रुड़ मुझे खाजायगा-जिसी के भय से मैं यहां भाग आया हूं ● श्री कृष्ण

बोले अब तू निरभय चला जा - हमारे पद के चिन्ह तेरे सिर पर देख तुझ से कोई न बोलेगा ❀ ऐसे कह श्री कृष्णचंद्र ने तिसी समैं गरुड को बुलाय काली के मन का भय मिटाय दिया - तब काली ने धूप-दीप-नैवेद्य-समेत विधि से पूजाकर बहुत सी भेंट श्री कृष्ण के आगे धर हाथ जोड बिनती कर बिदा होय कहा ❀❀

चार घरी नाचे मो माथा ❀ यह मन प्रीति राखियो नाथा ❀

यों कह दंडवत कर काली तो कुटुंब समेत रौनक दीप को गया औ श्री कृष्णचंद जल से बाहर आये ❀ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे काली मर्दनो नाम सप्त दशोध्यायः ❀ ॥ १७ ॥ ❀❀

---

इतनी कथा सुन राजा परीक्षित ने श्री शुकदेव जी से पूछा महाराज-रौनक दीप तो भली ठौर थी - काली वहां से क्यौं आया औ किस लिये यमुना में रहा - यह मुझे समझाकर कहो जो मेरे मन का संदेह जाय ❀ श्री शुकदेव बोले - राजा - रौनक दीप में हरि का बाहन गरुड रहता है सो अति बलवंत है - तिस से वहां के बडे बडे सर्पों ने हार मान तिसे एक सांप नित देना किया ❀ एक रूख पर धर आवें - वह आवे औ खाजाय ❀ एक दिन कद्रू नागनि का पुत्र काली अपने विष का घमंड कर गरुड का भक्ष खाने गया ❀ इतने में वहां गरुड आया औ दोनों में अति युद्ध हुआ ❀ निदान हार मान काली अपने मन में कहने लगा - कि अब इस के हाथ से कैसे बचूं और कहां जाऊं ❀ इतना कह सोचा कि वृंदावन में यमुना के तीर जा

रहूं तो बचूं-क्यौंकि यहां वहां नहीं आसकता ❁ ऐसे विचार काली वहीं गया ❁ फिर राजा परीक्षित ने शुकदेव मुनि से पूछा कि महाराज-वह वहां क्यों नहीं जा सकता था सो भेद कहो ❁ शुकदेव जी बोले-राजा-किसी समय यमुना के तट सौभरि ऋषि बैठे तप करते थे-तहां गरुड़ ने जाय एक मछली मार खाई-तब ऋषि ने क्रोध कर उसे यह श्राप दिया कि तू इस ठौर फिर आवेगा तो जीता न रहेगा ❁ इस कारन वह वहां न जासकता था-और जब से काली वहां गया तभी से इस स्थान का नाम कालीदह हुआ ❁

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले-हे राजा-जब श्री कृष्णचंद निकले तब नंद जसोदा ने आनंद कर मंगन सों दान पुन्य किया-पुत्र का मुख देख नैनों को सुख दिया-औ सब ब्रजबासियों के भी जी में जी आया ❁ इस बीच सांझ हुई तो आपस में कहने लगे कि अब दिन भर के हारे-थके-भूखे-प्यासे-घर कहां जायेंगे-रात की रात यहीं काटें-भोर हुए बृंदावन चलेंगे ❁ यह कह सब सोय रहे ❁

आधी रात बीत जब गई ❁ भारी कारी आंधी भई ❁
दावा अग्नि लगी चहुं ओर ❁ अति झर बरें बृक्ष बन ढोर ❁

आग लगते ही सब चौंक पडे और घबराकर चारों ओर देख देख हाथ पसार पसार लगे पुकारने कि हे कृष्ण हे कृष्ण-इस आग से बेग बचाओ नहीं तो यह क्षन भर में सब को जलाय भस्म करती है ❁ जब नंद जसोदा समेत ब्रजबासियों ने ऐसे पुकार की तब श्री कृष्णचंद जी ने उठते ही वह आग पल में पी सब के मन की चिंता दूर की ❁ भोर हो

तेही सब वृंदावन में आये-घर घर आनंद मंगल हुए बधाये ◉ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे दावाग्नि मोचनो नाम अष्टादशोध्यायः ◉ ॥ १८ ॥ ◉◉

◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉

इतनी कथा कह श्री शुकदेव बोले-महाराज-अब मैं ऋतु बरनन करता हूं कि जैसे जैसे श्री कृष्णचंद ने तिनमें लीला करी सो चित दे सुनों ◉ प्रथम ग्रीषम ऋतु आई-जिसने आतेही सब संसार का सुख ले लिया और धरती आकाश को तपाय अग्नि सम किया-पर श्री कृष्ण के प्रताप से वृंदावन में सदा बसंतही रहे ◉ जहां घनी घनी कुंजों के वृक्षों पर बेलें लहलहा रहीं-बरन बरन के फूल फूले हुए-तिन पर भौरों के झुंड के झुंड गूंज रहे ◉ आंबों की डालियों पै कोयल कुहुक रहीं ◉ ठंढी ठंढी छाहों में मोर नाच रहे ◉ सुगंध लिये मीठी मीठी पवन बह रही और एक ओर बन के यमुना न्यारीही सोभा दे रही थी ◉ तहां कृष्ण बलराम गायें छोड सब सखा समेत आपस में अनूठे अनूठे खेल खेल रहे थे कि इतने में कंस का पठाया ग्वाल का रूप बनाय-प्रलंब नाम राक्षस आया ◉ जिसे देखते ही श्री कृष्णचंद ने बलदेव जी को सैन से कहा ◉◉

अपनौ सखा नहीं बलबीर ◉ कपट रूप यह असुर शरीर ◉
याके बध कौ करौ उपाय ◉ ग्वाल रूप मारौ नहिं जाय ◉
जब यह रूप धरे आपनौ ◉ तब तुम याहि ततक्षन हनौ ◉

इतनी बात बलदेव जी को जताय श्री कृष्ण जी ने प्रलंब को हंसकर

पास बुलाय-हाथ पकडके कहा ●●

सबतें नीकौ भेष तिहारौ ● भयो कपट बिन मित्र हमारौ ●

यों कह विसे साथ ले आधे ग्वाल बाल बांट लिये-औ आधे बलराम जी को दे-दो लडकों को बैठाय-लगे फल फूलों का नाम पूछने औ बताते ● इसमें बताते बताते श्री कृष्ण हारे-बलदेव जीते तब श्री कृष्ण की ओर वाले बलदेव के साथियों को कांधों पर चढाय ले चले-तहां प्रलंब बलराम जी को सब से आगे ले भागा औ बन में जाय उसने अपनी देह बढाई ● जिस समैं विस काले काले पहाड से पर बलदेव जी ऐसे सोभायमान थे-जैसे स्याम घटा पै चांद औ कुंडल की दमक बिजली सी चमकती थी-पसीना मेह सा बरसता था ● इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा-महाराज कि जों अकेला पाय वह बलराम जी को मारने को हुआ तोंही उन्हों ने मारे घूंसों के विसे मार गिराया ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे प्रलंब बधो नाम एकोनविंशतमोध्यायः ● ॥ १९ ॥ ●●

———●●●●●●●●●●●●———

श्री शुकदेव जी बोले हे राजा-जब प्रलंब को मार के चले बलराम-तभी सोंही से सखाओं समेत आन मिले घनस्याम ● और जो ग्वाल बाल बन में गायें चराते थे-वे भी असुर मारा सुन गायें छोड उधर देखने को गये-तौलों इधर गायें चरती चरती डाभ कांस से निकल मूंज बन में बड गईं ● वहां से आय दोनों भाई-यहां देखें तो एक भी गाय नहीं ●●

बिछुरी गैयां बिछुरे ग्वाल ॥ भूले फिरैं मूंज बन ताल ॥
रूखनि चढे परस्पर टेरैं ॥ लै लै नाम पिछौरी फेरैं ॥

इस में किसी सखा ने आय हाथ जोड श्री कृष्ण से कहा कि महाराज गायें सब मूंज बन में पैठ गईं - तिन के पीछे ग्वाल बाल न्यारे ढूंढते भटकते फिरते हैं ॥ इतनी बात के सुनते ही श्री कृष्ण ने कदम पर चढ ऊंचे सुर से जो बंसी बजाई - तो सुन ग्वाल बाल औ सब गायें मूंज बन को फाडकर ऐसे आन मिलीं - जैसे सावन भादों की नदी तुंग तरंग को चीर समुद्र में जा मिले ॥ इस बीच देखते क्या हैं कि बन चारों ओर से दहड दहड जलता चला आता है ॥ यह देख ग्वाल बाल औ सखा अति घबराय भयखायकर पुकारे - हे कृष्ण हे कृष्ण इस आग से बेग बचाओ - नहीं तो अभी छन एक में सब जल मरते हैं ॥ कृष्ण बोले तुम सब अपनी आंखें मूंदो ॥ जद तिन्हों ने नैन मूंदे तद श्री कृष्ण जी ने पल भर में आग बुझाय एक और माया करी - कि गायों समेत सब ग्वाल बालों को भंडीर बन में ले आय कहा कि अब आंखें खोल दो ॥

ग्वाल खोल दृग कहत निहारि ॥ कहां गई वह अग्नि मुरारि ॥
कब फिर आये बन भंडीर ॥ होत अचंभौ यह बल बीर ॥

ऐसे कह गायें ले सब मिल कृष्ण बलराम के साथ बृंदाबन आये - औ सबों ने अपने अपने घर जाय कहा कि आज बन में बलराम जी ने प्रलंब नाम राक्षस को मारा और मूंज बन में आग लगी थी सो भी हरि के प्रताप से बुझ गई

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने कहा हे राजा - ग्वाल बालों के मुख से यह बात सुन सब ब्रजवासी देखने को तो गये पर विन्होंनें कृष्ण चरित्र का कुछ भेद नपाया ॥ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे दावाग्नि मोचनो नाम विंशतमोध्यायः ॥ ॥ २० ॥ ॥

श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज - ग्रीषम की अति अनीति देख नृप पावस प्रचंड पृथ्वी के पशु पक्षी जीव जंतु की दया विचार चारों ओर से दल बादल साथ ले लडने को चढ आया ॥ तिस समैं घन जो गरजता था - सोई तो धौंसा बाजता था और बरन बरन की घटा जो घिर आई थीं सोई सूर - वीर - रावत थे ॥ तिनके बीच बीच बिजली की दमक - शस्त्र की सी चमक थी ॥ बग पांत ठौर ठौर सेत ध्वजा सी फहराय रही थीं - दादुर मोर कडखैतों की सी भांति जस बखानते थे औ बडी बडी बूंदों की झडी बानों की सी झडी लगी थी ॥ इस धूम धाम से पावस को आते देख ग्रीषम खेत छोड अपना जीव ले भागा - तब मेघ पिया ने बरस पृथ्वी को सुख दिया ॥ उसने जो आठ महीने पति के वियोग में जोग किया था - तिस का भोग भर लिया ॥ कुच गिर सीतल हुए औ गर्भ रहा विस में से अठारह भार पुत्र उपजे सो भी फल फूल भेट लेले पिता को प्रनाम करने लगे ॥ उस काल बृंदावन की भूमि ऐसी सुहावनी लगती थी कि जैसे सिंगार किये कामनी और जहां तहां नदी नाले सरोवर भरे हुए - तिन पर हंस सारस सरस सोभा दे रहे ॥ ऊंचे ऊंचे रूखों की डालियां झूम

रहीं-उन में पिक-चातक-कपोत-कीर-बैठे कोलाहल कर रहे थे औ ठांव ठांव सूहे कुसुंभे जोडे पहरे-गोपी ग्वाल झूलों पै झूल झूल ऊंचे सुरों से मलारें गाते थे ● तिनके निकट जाय जाय श्री कृष्ण बलराम भी बाल लीला कर कर अधिक सुख दिखाते थे ● इस आनंद से बरषा ऋतु बीती-तब श्री कृष्ण ग्वाल बालों से कहने लगे कि भैया-अब तो सुख दाई सरद ऋतु आई ●●

सबकौ सुख भारी अब जान्यौ ● स्वाद सुगंध रूप पहिचान्यौ ●
निसि नक्षत्र उज्जल आकाश ● मानऊ निर्गुन ब्रह्म प्रकाश ●
चार मास जो बिरमे गेह ● भये सरद तिन तजे सनेह ●
अपने अपनें काजनि धाये ● भूप चढे तकि देस पराये ●

इति श्री लाल कृते प्रेमसागरे बरषा सरद बर्ननो नाम ऐकविंशो ध्याय: ● ॥ २१ ॥ ●●

———●●●●●●●●●●●●———

श्री शुकदेव जी बोले कि हे महाराज-इतनी बात कह श्री कृष्णचंद फिर ग्वाल बाल साथ ले लीला करने लगे ● और जब लग कृष्ण बन में धेनु चरावें-तब लग सब गोपी घर में बैठीं हरि का जस गावें ● ऐक दिन श्री कृष्ण ने बन में बेनु बजाई तो बंसी की धुन सुन सारी ब्रज युवती हडबडाय उठ धाईं ● औ ऐक ठौर मिलकर बाट में आ बैठीं-तहां आपस में कहने लगीं ● कि हमारे लोचन सुफल तब होंगे जब कृष्ण के दरसन पावेंगे-अभी तो कान्ह गायों के साथ बन में नाचते गाते फिरते हैं-सांझ समय इधर आवेंगे-तब हमें दरसन मिलेंगे ● यों

सुन एक गोपी बोली ●●

सुनो सखी-वह बेनु बजाई ● बांस बंस देखो अधिकाई ●

इस में इतना क्या गुन है जो दिन भर श्री कृष्ण के मुंह लगी रहती है-और अधरामृत पी आनंद बरस घन सी गाजती है ● क्या हम से भी यह प्यारी-जो निस दिन लिये रहते हैं विहारी ●●

मेरे आगे की यह गढ़ी ● अब भई सौत बदन पर चढ़ी ●

जब श्री कृष्ण इसे पीतांबर से पोंछ बजाते हैं तब सुर-मुनि-किन्नर-औ गंधर्व अपनी अपनी स्त्रियों को साथ ले विमानों पर बैठ बैठ हांसकर सुन्ने को आते हैं ● औ सुनकर मोहित हो जहांके तहां चित्र से रह जाते हैं ● ऐसा इसने क्या तप किया है जो सब इस के आधीन होते हैं ●

इतनी बात सुन एक गोपी ने उत्तर दिया-कि पहले तो इस ने बांस के बंस में उपज हरि का सुमरन किया-पीछे घाम-सीत-जल-ऊपर लिया-निदान टूक टूक हो देह जलाय धुंआं पिया ●●

इस से तप करते हैं कैसा ● सिद्ध ऊई पाया फल ऐसा ●

यह सुन कोई ब्रज नारि बोली कि हम को बेनु क्यों न रची ब्रजनाथ-जो निसि दिन हरि के रहतीं साथ ● इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी राजा परीक्षित से कहने लगे कि महाराज-जबतक श्री कृष्ण धेनु चराय बनसे न आवें-तबतक नित गोपी हरि के गुन गावें ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे गोपी बेनुगीत नाम द्वाविंशोध्यायः ● ॥ २२ ॥ ●●

श्री शुकदेव मुनि बोले कि सरद ऋतु के जाते ही हेमंत ऋतु आई-औ अति जाडा-पाला-पडने लगा ● तिस काल ब्रज बाला आपस में कहने लगीं कि सुनो सहेली-अगहन के न्हाने से जन्म जन्म के पातक जाते हैं और मन की आस पूजती है ● यों हमने प्राचीन लोगों के मुख से सुना है ● यह बात सुन सब के मन में आई कि अगहन न्हाइये-तो निस्संदेह श्री कृष्ण बर पाइये ●

ऐसे बिचार भोर होते ही उठ बस्त्र आभूषन पहर सब ब्रज बाला मिल यमुना न्हान आईं-स्नान कर सूरज को अरघ दे-जल से बाहर आय-माटी की गैार बनाय-चंदन-अक्षत-फूल-फल-चढाय-धूप-दीप-नैवेद्य-आगे धर-पूजा कर हाथ जोड सिर नाय गैार को मनाय के बोलीं हे देवी-हम तुम से बार बार यही बर मागती हैं-कि श्री कृष्ण हमारे पति होंय ● इस विधि से गोपी नित न्हावें-दिन भर ब्रत कर सांझ को दही भात खा भूमि पर सोवें-इस लिये कि हमारे ब्रत का फल शीघ्र मिले ●

एक दिन सब ब्रज बाला मिल स्नान को औघट घाट गईं औ वहां जाय चीर उतार तीर पर धर नग्न हो नीर में पैठ लगीं हरि के गुन गाय गाय जल क्रीडा करने ● तिसी समैं श्री कृष्ण भी बंसी बट की छांह में बैठे धेनु चरावते थे ● दैवी इनके गाने का शब्द सुन वेभी चुपचाप चले आये और लगे छिप कर देखने ● निदान देखते देखते जो कुछ उन के जी में आई-तो सब बस्त्र चुराय कदम पर जा चढे औ गठडी बांध आगे धर ली ● इतने में गोपी जो देखें तो तीर पै चीर नहीं-तब

घबराकर चारों ओर उठ उठ लगीं देखने औ आपस में कहने कि अभी तो यहां ऐक चिडिया भी नहीं आई-बसन कौन हर लेगया माई-इस बीच ऐक गोपीने देखा-कि सिर पर मुकुट-हाथ में लकुट-केसर तिलक दिये-बनमाल हिये-पीतांबर पहरे-कपडों की गठडी बांधे-मौन साधे-श्री कृष्ण कदंब पै चढे छिपे ऊपरे बैठे हैं ॥ वह देखते ही पुकारी-सखी-वे देखो हमारे चित चोर चीर चोर कदंब पर पोट लिये बिराजते हैं ॥ यह बचन सुन औ सब युवती कृष्ण को देख लजाय-पानी में पैठ-हाथ जोड सिर नाय-बिनती कर-हाहा खाय बोलीं ॥॥

दीन दयाल-हरन दुख प्यारे ॥ दीजे मोहन-चीर हमारे ॥
ऐसे सुन के कहे कन्हाई ॥ यों नहिं दूंगा नंद दुहाई ॥
ऐक ऐक कर बाहर आओ ॥ तो तुम अपने कपडे पाओ ॥

ब्रजबाला रिसायके बोलीं-यह तुम भली सीख सीखे हो जो हम से कहते हो नंगी बाहर आओ-अभी अपने पिता बंधु से जाय कहें-तो वे तुम्हें चोर चोर कर आय गहें-औ नंद जसोदा को जा सुनावें-तो वे भी तुम को सीख भली भांति से सिखावें ॥ हम करती हैं किसी की कान-तुमने मेटी सब पहचान ॥

इतनी बात के सुनते ही क्रोध कर श्री कृष्ण जीने कहा कि अब चीर तभी पाओगी जब बिन को लिवा लाओगी-नहीं तो नहीं ॥ यह सुन डरकर गोपी बोलीं-दीन दयाल-हमारी सुध के लिवैया-पति के रखैया तो आप हैं-हम किसे लावेंगी ॥ तुम्हारे ही हेतु नेम कर मगसिर मास

न्हाती हैं ● कृष्ण बोले जो तुम मन लगाय मेरे लिये अगहन न्हाती हो तो लाज औ कपट तज आय अपने चीर लो ● जद श्री कृष्णचंद ने ऐसे कहा तद सब गोपी आपस में सोच विचारकर कहने लगीं कि चलो सखी - जो मोहन कहते हैं सोई मानें क्यौं कि ये हमारे तन मन की सब जानते हैं - इनसे लाज क्या ● यों आपस में ठान श्री कृष्ण को बाज मान - हाथ से कुच ढाँह दुराय सब युवती नीर से निकल - सिर नीचाय जाके सनमुख तीर पर जा खडी हुईं - तब श्री कृष्ण हंस के बोले कि अब तुम हाथ जोड जोड आगे आओ तो मैं वस्त्र दूं ● गोपी बोलीं ●●

काहे कपट करत नंदलाल ● हम सूधी भोरी ब्रज बाल ●
परीं ठगोरी सुधि बुधि गई ● ऐसी तुम हरि लीला ठई ●
मन संभारिकै करि हैं लाज ● अब तुम कहू करो ब्रजराज ●

इतनी बात कह जद गोपियों ने हाथ जोडे तो श्री कृष्णचंद जी ने वस्त्र दे उनके पास आय कहा - कि तुम अपने मन में कुछ इस बात का बिलग मत मानो - यह मैं ने तुम्हें सीख दी है क्यौंकि जल में बरुन देवता का बास है - इस से जो कोई नग्न हो जल में न्हाता है तिस का सब धर्म बह जाता है ● तुम्हारे मन की लगन देख मगन हो मैं ने यह भेद तुम से कहा ● अब अपने घर जाओ फिर कातिक महीने में आय मेरे साथ रास कीजियो ●

श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज - इतना बचन सुन प्रसन्न हो संतोष कर गोपी तो अपने घरों को गईं औ श्री कृष्ण बंसीबट में आय

गोप गाय ग्वाल बाल सखाओं को संग ले आगे चले - तिस समैं चारों ओर सघन वन देख देख बृक्षों की बडाई करने लगे कि देखो ये संसार में आ अपने पर कितना दुख सह लोगों को सुख देते हैं ❁ जगत में ऐसेही परकाजियों का आना सुफल है ❁ यों कह आगे बढ यमुना के निकट जा पहुंचे ❁ इति श्री लाल कृते प्रेमसागरे चीर हरनो नाम त्रयोविंशतमोध्यायः ❁ ॥ २३ ॥ ❁❁

---

श्री शुकदेव जी बोले कि जब श्री कृष्ण यमुना के पास पहुंच रूख तले लाठी टेक खडे हुए - तब सब ग्वाल बाल औ सखाओं ने आय कर जोड कहा कि महाराज - हमें इस समैं बडी भूख लगी है जोकुछ छाक लाये थे सो खाई पर भूख न गई ❁ कृष्ण बोले देखो वह जो धुआं दिखाई देता है तहां मथुरिये कंस के डर से छिपके यज्ञ करते हैं - उन के पास जा हमारा नाम ले दंडवत कर हाथ बांध खडे हो - दूर से भोजन ऐसे दीन हो मांगियो - जैसे भिखारी आधीन हो मांगता है ❁

यह बात सुन ग्वाल चले चले वहां गये जहां माथुर बैठे यज्ञ कर रहे थे ❁ जाते ही उन्हों ने प्रनामकर निपट आधीनता से कर जोड के कहा महाराज - आप को दंडवतकर हमारे हाथ श्री कृष्णचंद जी ने यह कहला भेजा है कि हम को अति भूख लगी है - कुछ कृपा कर भोजन भेज दीजे ❁ इतनी बात ग्वालों के मुख से सुन मथुरिये क्रोधकर बोले तुम तो बडे मूर्ख हो जो हम से अभी यह बात कहते हो ❁ बिन होम हो चुके किसी को कुछ न देंगे ❁ सुनो जब यज्ञ कर लेंगे और

कुछ बचेगा सो बांट देंगे ❁ फिर ग्वालों नें उन से गिडगिडा के बहुतेरा कहा कि महाराज - घर आये भूखे को भोजन करवाने से बड़ा पुन्य होता है - पर वे इनके कहने को कुछ ध्यान में न लाये - बरन इनकी ओर से मुंह फेर आपस में कहने लगे ❁❁

बडे मूढ पशु पालक नीच ❁ मांगत भात होम के बीच ❁

तब तो ये वहां से निरास हो अछताय पछताय श्री कृष्ण के पास आय बोले - महाराज - भीख मांग मान महत गंवाया - तौभी खाने को कुछ हाथ न आया ❁ अब क्या करें ❁ श्री कृष्णजी ने कहा कि अब तुम तिनकी स्त्रियों से जा मांगो - वे बडी दयावंत धरमात्मा हैं - उनकी भक्ति देखियो - वे तुम्हें देखते ही आदर मान से भोजन देंगीं ❁ यों सुन ये फिर वहां गये जहां वे बैठीं रसोई करती थीं ❁ जाते ही उन से कहा कि बन में श्री कृष्ण को धेनु चराते क्षुधा भई है सो हमें तुम्हारे पास पठाया है - कुछ खाने को होय तो दो ❁ इतना बचन ग्वालों के मुख से सुनते ही वे सब प्रसन्न हो कंचन के थालों में षट रस भोजन भर लेले उठ धाईं औ किसी की रोकी न रुकीं ❁

एक मथुरनी के पति ने जो न जाने दिया तो वह ध्यान कर देह छोड सब से पहले ऐसे जा मिली कि जैसे जल जल में जा मिले औ पीछे से सब चली चली वहां आईं - जहां श्री कृष्णचंद ग्वाल बाल समेत बृक्ष की छांह में सखा के कांधे पर हाथ दिये - त्रिभंगी छबि किये - कंवल का फूल कर लिये खडे थे ❁ आते ही थाल आगे धर दंडवत कर हरि मुख देख देख आपस में कहने लगीं कि सखी - येई हैं नंदकिशोर -

जिन का नाम सुन सुन ध्यान धरती थीं - अब चंदमुख देख लोचन सुफल कीजे औ जीतब का फल लीजे ● ऐसे बतराय हाथ जोड़ बिनती कर श्री कृष्ण से कहने लगीं कि कृपानाथ-आप की कृपा बिन तुम्हारा दरसन कब किसी को होता है - आज धन्य भाग हमारे जो दरसन पाया औ जन्म जन्म का पाप गंवाया ●●

मूरख विप्र कृपन अभिमानी ● औ मद लोभ मोह मति सानी ●
ईश्वर कों मानुष कर माने ● माया अंध कहा पहिचाने ●
जप तप यज्ञ जासु हित कीजे ● ताकों कहा न भोजन दीजे ●

महाराज - वही धन्य है धन जन लाज-जो आवे तुम्हारे काज औ सोई है तप जप ज्ञान-जिस में आवे तुम्हारा नाम ● इतनी बात सुन श्री कृष्णचंद उनकी क्षेम कुशल पूछ कहने लगे कि ●●

मत तुम मुझ को करो प्रनाम ● मैं हूं नंद महर का स्याम ●

जो ब्राह्मन की स्त्री से आप को पुजवाते हैं सो क्या संसार में कुछ बडाई पाते हैं ● तुम ने हमें भूखे जान दया कर बन में आन सुधि ली-अब हम यहां तुम्हारी क्या पहुनई करें ●●

वृंदाबन घर दूर हमारा ● किस विधि आदर करें तुम्हारा ●

जो वहां होते तो कुछ फूल फल लाआगे धरते-तुम हमारे कारन दुख पाय जंगल में आई औ यहां हम से तुम्हारी टहल कुछ न बन आई-इस बात का पछतावा ही रहा ● ऐसे सिष्टाचार कर फिर बोले तुम्हें आये बडी बेर भई-अब घर को सिधारिये क्योंकि ब्राह्मन तुम्हारी तुम्हारी बाट देखते होंगे-इस लिये कि स्त्री बिन यज्ञ सुफल नहीं ● य

श्री कृष्ण से सुन के हाथ जोड बोलीं-महाराज-हमने आप के चरन कंवल से स्नेह कर कुटुंब की माया सब छोडी क्यौं कि जिनका कहा न मान हम उठ धाईं तिनके यहां अब कैसे जांय-औ वे घर में न आने दें तो फिर कहां बसें-इस से आप की सरन में रहें सो भला और नाथ - ऐक नारि हमारे साथ तुम्हारे दरसन की अभिलाषा किये आवती थी-तिस के पति ने रोक रक्खा तब उस स्त्री ने अकुलाकर अपना जीव दिया ● इस बात के सुनते ही हंसकर श्री कृष्णचंद ने तिसे दिखाया जो देह छोड आई थी ● कहा कि सुनो जो हरि से हित करता है तिसका बिनास कभी नहीं होता-यह तुम से पहले आ मिली है ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - तिस को देखते ही तो ऐक बार सब अचंभे रहीं - पीछे ज्ञान हुआ तद हरि गुन गाने लगीं ● इस बीच श्री कृष्णचंद ने भोजन कर उन से कहा कि अब स्थान को प्रस्थान कीजे - तुम्हारे पति कुछ न कहेंगे - जब श्री कृष्ण ने तिन्हें ऐसे समझाय बुझाय के कहा तब वे बिदा हो दंडवत कर अपने घर गईं ● औ तिन के स्वामी सोच बिचार के पछताय पछताय कह रहे थे कि हम ने कथा पुरान में सुना है-जो किसी समैं नंद जसोदा ने पुत्र के निमित्त बडा तप कियाथा - तहां भगवान ने आ उन्हें यह वर दिया-कि हम यदु कुल में औतार ले तुम्हारे यहां आयगे ● वेई जन्म ले आये हैं - जिन्हों ने ग्वाल बालों के हाथ भोजन मंगवाय भेजा था ● हम ने यह क्या किया जो आदि पुरुष ने मांगा औ भोजन न दिया ●●

-यज्ञ धर्म जा कारन ठये ● तिनके सनमुख आज न भये ● 
आदि पुरुष हम मानुष जान्यौ ● नहीं बचन ग्वालन कौ मान्यौ ● 
हम मूरख पापी अभिमानी ● कीनी दया न हरि गति जानी ●
धिक्कार है हमारी मति को औ इस यज्ञ करने को जो भगवान को पहचान सेवा न करी ● हम से नारी ही भलीं कि जिन्हों ने जप-तप-यज्ञ-बिन किये साहस कर जा श्री कृष्ण के दरसन किये औ अपने हाथों तिन्हें भोजन दिया ● ऐसे पछताय मथुरियों ने अपनी स्त्रियों के सन मुख हाथ जोड़ कहा कि धन्य भाग तुम्हारे जो हरि का दरसन कर आईं-तुम्हारा ही जीतव सुफल है ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे द्विजपत्नी याचनो नाम चतुर्विंशोध्यायः ● ॥ २४ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि हे राजा-जैसे श्री कृष्णचंद ने गिर गोवर्धन उठाया औ इंद्र का गर्व हरा-अब सोई कथा कहता हूं तुम चित दे सुनो-कि सब ब्रजवासी बरसवें दिन कातिक बदी चौदस को न्हाय धोय केसर चंदन से चौक पुराय भांतिं भांतिं की मिठाई औ पकवान धर-धूप दीप कर इंद्र की पूजा किया करें ● यह रीति उनके यहां परंपरा से चली आती थी ● एक दिन वही दिवस आया-तब नंद जी ने बहुतसी खाने की सामा बनवाई औ सब ब्रजबासियों के भी घर घर सामग्री-भोजन की हो रही थी ● तहां श्री कृष्ण ने आ मा से पूछा कि माजी-आज घर घर में पकवान मिठाई जो हो रही है सो क्या है-इस का भेद मुझे समझाकर कहो जो मेरे मन की दुबधा जाय ●

जसोदा बोली कि बेटा - इस समैं मुझे बात कहने का अवकाश नहीं है - तुम अपने पिता से जा पूछो वे बुझाय कर कहेंगे ● यह सुन नंद उपनंद के पास आय श्री कृष्ण ने कहा कि पिता - आज किस देवता के पूजने की ऐसी धूम धाम है कि जिन के लिये घर घर पकवान मिठाई हो रही है - वे कैसे भक्ति मुक्ति बर के दाता हैं - तिनका नाम औ गुन कहो जो मेरे मन का संदेह जाय ●

नंदमहर बोले कि पुत्र - यह भेद तू ने अबतक नहीं समझा कि मेघों के पति जो हैं सुरपति - तिन की पूजा है जिन की कृपा से संसार में रिद्धि सिद्धि मिलती है औ तृन - जल - अन्न - होता है - बन उपबन फूलते फलते हैं - तिन से सब जीव - जंतु - पशु - पक्षी आनंद में रहते हैं ● यह इंद्र पूजा की रीति हमारे यहां पुरखाओं के आगे से चली आती है - कुछ आज ही नई नहीं निकाली ● नंद जी से इतनी बात सुन श्री कृष्णचंद बोले हे पिता - जो हमारे बडों ने जाने अन जाने इंद्र की पूजा की तो की पर अब तुम जान बूझकर धर्म का पंथ छोड़ ऊबट बाट क्यों चलते हो - इंद्र के मानने से कुछ नहीं होता क्यों कि वह भक्ति मुक्ति का दाता नहीं औ तिस से रिद्धि सिद्धि किस ने पाई है ● यह तुमहीं कहो तिन ने किसे बर दिया है ●

हां एक बात यह है कि तप यज्ञ करने से देवताओं ने अपना राजा बनाय इंद्रासन दे रक्खा है - इस से कुछ परमेश्वर नहीं हो सकता ● सुनो जब असुरों से बार बार हारता है - तब भाग के कहीं जा छिपकर अपने दिन काटता है ● ऐसे कायर को क्यों मानो - अपना धर्म किस

लिये नहीं पहचानें ● इंद्र का किया कुछ नहीं हो सकता - जो कर्म में लिखा है सोई होता है ● सुख - संपत - दारा - भाई - बंधु - येभी सब अपने धर्म कर्म से मिलते हैं - औ आठ मास जो सूरज जल सोखता है सो ई चार महीने बरसाता है - तिसी से पृथ्वी में तृन - जल - अन्न - होता है और ब्रह्मा ने जो चारों बरन बनाये हैं - ब्राह्मन - क्षत्री - वैश्य - सूद्र - तिन के पीछे भी एक एक कर्म लगा दिया है कि ब्राह्मन तो बेद बिद्या पढे ● क्षत्री सब की रक्षा करे ● वैश्य खेती बनज ● औ सूद्र इन तीनों की सेवा में रहैं ●

पिता - हम वैश्य हैं गायें बढीं - इस से गोकुल हुआ - तिसी से नाम गोप पड गया ● हमारा यही कर्म है कि खेती बनज करैं औ गौ ब्राह्मन की सेवा में रहैं ● बेद की आज्ञा है कि अपनी कुल रीति न छोडिये - जो लोग अपना धर्म तज और का धर्म पालते हैं सो ऐसे हैं - जैसे कुल बधू हो पर पुरुष से प्रीति करै - इस से अब इंद्र की पूजा छोड दीजे औ बन पर्बत की पूजा कीजे - क्यौं कि हम बनवासी हैं - हमारे राजा वेई हैं जिन के राज में हम सुख से रहते हैं - तिन्हें छोड और को पूजना हमें उचित नहीं ● इस से अब सब पकवान मिठाई अन्न ले चलो और गोवर्द्धन की पूजा करो ●

इतनी बात के सुनते ही नंद उपनंद उठकर वहां गये जहां बडे बडे गोप अथाई पर बैठे थे ● इन्होंने जातेही सब श्री कृष्ण की कही बातें तिन्हें सुनाई ● वे सुन ते ही बोले कि कृष्ण सच कहता है - तुम बालक जान उसकी बात मत टालो ● भला तुमहीं बिचारो कि इंद्र कौन

है और हम किस लिये विसे मानते हैं - जो पालता है उस की तो पूजा ही भुलाई ॥

हमें कहा सुरपति सों काज ॥ पूजैं वन सरिता गिरि राज ॥

ऐसे कह फिर सब गोपों ने कहा ॥

भलौ मतौ कान्हर कियौ - तजिये सिगरे देव ॥

गोवर्द्धन पर्वत बड़ो - ता की कीजै सेव ॥

यह वचन सुनतेही नंद जी ने प्रसन्न हो गांव में ढंढोरा फिरवाय दिया - कि कल हम सारे ब्रज बासी चलकर गोवर्द्धन की पूजा करेंगे - जिस जिस के घर में इंद्र पूजा के लिये पकवान मिठाई बनी है सो सब ले ले भोर ही गोवर्द्धन पै जाइयो ॥ इतनी बात सुन सकल ब्रज बासी दूसरे दिन भोर के तड़के ही उठ - स्नान ध्यान कर सब सामग्री झालों - परातों - थालों - डलों - हंडों - चरुओं में भर - गाडों - बहंगियों - पर रखवाय रखवाय - गोवर्द्धन को चले ॥ तिसी समै नंद उपनंद भी कुटुंब समेत सामा ले सब के साथ हो लिये और बाजे गाजे से चले चले सबमिल गोवर्द्धन पहुंचे ॥

वहां जाय पर्वत के चारों ओर झाड बुहार जल छिड़क घेवर - बावर - जलेबी - लड्डू - खुरमे - इमरती - फेनी - पेडे - बरफी - खाजे - गूझे - मठडी - सीरा - पूरी - कचौरी - सेव - पापड़ - पकौडी - आदि पकवान और भांति भांति के भोजन - बिंजन - संधाने - चुन चुन रख दिये - इतने कि जिनसे पर्वत छिप गया औ ऊपर फूलों की माला पहराय - बरन बरन के पाटंबर तान दिये

तिस समैं की शोभा बरनी नहीं जाती ● गिरि ऐसा सुहावना लगता था - जैसे किसी ने गहने कपडे पहराय नख सिख से सिंगार होय - और नंद जी ने परोहित बुलाय सब ग्वाल बालों को साथ ले रोली - अक्षत - पुष्प चढाय ● धूप - दीप - नैवेद्य कर - पान - सुपारी - दक्षिना धर - बेद की विधि से पूजा की - तब श्री कृष्ण ने कहा कि अब तुम शुद्ध मन से गिरिराज का ध्यान करो तो वे आय दरसन दे भोजन करें ●

श्री कृष्ण से यों सुनते ही नंद जसोदा समेत सब गोपी गोप कर जोड नैन मूंद ध्यान लगाय खडे हुए - तिस काल नंदलाल उधर तो अति मोटी भारी दूसरी देह धर बडे बडे हाथ पांव कर - कंवल नैन - चंद्रमुख हो - मुकुट धरे - बनमाल गरे - पीत बसन औ रतन जटित आभूषन पहरे - मुंह पसारे चुपचाप परबत के बीच से निकले - और इधर आप ही अपने दूसरे रूप को देख सब से पुकारके कहा - देखो गिरिराज ने प्रगट होय दरसन दिया - जिनकी पूजा तुम ने जी लगाय करी है ● इतना बचन सुनाय श्री कृष्णचंद जी ने गिरिराज को दंडवत की - उन की देखा देखी सब गोपी गोप प्रनाम कर आपस में कहने लगे कि इस भांति इंद्र ने कब दरसन दिया था ● हम वृथा उस की पूजा किया किये और क्या जानिये पुरुषाओं ने ऐसे प्रत्यक्ष देव को छोड क्यों इंद्र को माना था - यह बात समझी नहीं जाती ●

यों सब बतराय रहे थे कि श्री कृष्ण बोले - अब देखते क्या हो - जो भोजन लाये हो सो खिलाओ ● इतना बचन सुनते ही गोपी गोप झट

रस भोजन थाल परातों में भर भर उठाय उठाय लगे देने औ गोवर्द्धन नाथ हाथ बढ़ाय बढ़ाय ले ले भोजन करने ॥ निदान जितनी सामग्री नंद समेत सब ब्रजवासी ले गये थे सो खाई - तब वह मूरत पर्वत में समाई ॥ इस भांति अद्भुत लीला कर श्री कृष्णचंद सब को साथ ले पर्वत की परिक्रमा दे - दूसरे दिन गोवर्द्धन से चल हंसते खेलते वृंदावन आये ॥ तिस काल घर घर आनंद मंगल बधाये होने लगे औ ग्वाल बाल सब गाय बछड़ों को रंग रंग उन के गले में गंडे घंटा लियां घूंघरू बांध बांध न्यारे ही कुतूहल कर रहे थे ॥ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे गोवर्द्धन पूजनो नाम पंचविंशत्तमोध्यायः ॥ ॥ २५ ॥ ॥

---

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव मुनि बोले ॥

सुरपति की पूजा तजी - करी पर्वत की सेव ॥
तबहिं इंद्र मन कोपिकै - सबै बुलाए देव ॥

जब सारे देवता इंद्र के पास गये तब वह उन से पूछने लगा कि तुम मुझे समझाकर कहो कल ब्रज में पूजा किस की थी ॥ इस बीच नारद जी आय पहुंचे तो इंद्र से कहने लगे - कि सुनों महाराज - तुम्हें सब कोई मानता है पर एक ब्रजबासी नहीं मानते क्यों कि नंद के एक बेटा हुआ है - तिसी का कहा सब करते हैं - तिन्हों ने तुम्हारी पूजा मेट कर सब से पर्वत पुजवाया ॥ इतनी बात के सुनते ही इंद्र क्रोधकर बोला कि ब्रज बासियों के धन बढ़ा है - इसी से तिन्हें अति गर्व हुआ है ॥

जप तप यज्ञ तज्यौ ब्रत मेरौ ❁ काल दरिद्र बुलायौ नेरौ ❁ ॥ प्रेम० ॥

मानुष कृष्ण देव कै मानै ❁ ताकी बातें सांची जानै ❁ ॥ ७७ ॥

वह बालक मूरख अंज्ञान ❁ बकुत बादी राखै अभिमान ❁

अब हौं उनकौ गर्व परिहरौं ❁ पशु खोऊं लक्ष्मी बिन करौं ❁

ऐसे बकझक खिजलायकर सुरपति ने मेघपति को बुलाय भेजा - वह सुनतेही डरता कांपता हाथ जोड सनमुख आ खडा हुआ - तिसे देखते ही इंद्र तेह कर बोला - कि तुम अभी अपना सब दल साथ ले जाओ औ गोवर्द्धन पर्वत समेत ब्रजमंडल को बरस बहाओ ❁ ऐसा कि कहीं गिरि का चिन्ह औ ब्रज औ ब्रजवासियों का नाम न रहे ❁

इतनी आज्ञा पाय मेघपति दंडवत कर राजा इंद्र से बिदा हुआ और उसने अपने स्थान पर आय बडे बडे मेघों को बुलायके कहा - सुनो - महाराज की आज्ञा है कि तुम अभी जाय ब्रज मंडल को बरस के बहा दो ❁ यह बचन सुन सब मेघ अपने अपने दल बादल ले ले मेघपति के साथ हो लिये ❁ तिस ने आतेही ब्रजमंडल को घेर लिया औ गरज गरज बडी बडी बूंदों से लगा मूसलाधार जल बरसावने औ उंगली से गिरि को बतावने ❁

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज ❁ जब ऐसे चहूंओर से घनघोर घटा अखंड जल बरसने लगीं - तब नंद जसोदा समेत सब गोपी ग्वाल बाल भय खाय भींगते थर थर कांपते श्री कृष्ण के पास जाय पुकारे कि हे कृष्ण - इस महा प्रलय के जल से कैसे बचेंगे - तबतो तुमने इंद्र की पूजा मेट पर्वत पुजवाया -

अब वेग उस को बुलाइये जो आय रक्षा करे - नहीं तो क्षन भर में नगर समेत सब डूब मरते हैं ● इतनी बात सुन औ सब को भयातुर देख श्री कृष्णचंद्र बोले कि तुम अपने जी में किसी बात की चिंता मत करो - गिरिराज अभी आय तुम्हारी रक्षा करते हैं ● यों कह गोवर्द्धन को तेज से तपाय अग्नि सम किया औ बायें हाथ की छिंगुली पर उठाय लिया ● तिस काल सब ब्रजवासी अपने ढोरों समेत आ उस के नीचे खडे हुए औ श्री कृष्णचंद्र को देख देख अचरज कर आपस में कहने लगे ●●

है कोऊ आदि पुरुष औतारी ● देवन हू कौ देव मुरारी ●
मोहन मानुष कैसो भाई ● अंगुरी पर क्यों गिरि ठहराई ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव मुनि राजा परीक्षित से कहने लगे - कि उधर तो मेघपति अपना दल लिये क्रोध करकर मूसलाधार जल बरसता था औ इधर पर्वत पै गिर छनाक तवे की बूंद हो जाता था ● यह समाचार सुन इंद्र भी कोप कर आप चढ आया और लगातार उसी भांति सात दिन बरसा - पर ब्रज में हरि प्रताप से एक बूंद भी न पडी ● जब सब जल निबडा तब मेघों ने आ हाथ जोड कहा कि हे नाथ - जितना महाप्रलय का जल था सबका सब हो चुका - अब क्या करें ● यों सुन इंद्र ने अपने ज्ञान ध्यान से विचारा कि आदि पुरुष ने औतार लिया - नहीं तो किस में इतनी सामर्थ थी जो गिरि धारन कर ब्रज की रक्षा करता ● ऐसे सोच समझ अकता पकता मेघों समेत इंद्र अपने स्थान को गया और बादल उघड प्रकाश हुआ - तब सब ब्रज

बासियों ने प्रसन्न हो श्री कृष्ण से कहा महाराज - अब गिरि उतार धरिये-मेघ जाता रहा ● यह बचन सुन ते ही श्री कृष्णचंद ने पर्वत जहां का तहां रखदिया ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे ब्रज रक्षणो नाम षडविंशतमोध्यायः ●॥ २६ ॥ ●● 

———●●●●●●●●●●●●———

श्री शुकदेव बोले कि जद हरि ने गिरि कर से उतार धरा तिस समैं सब बडे बडे गोप तो इस अद्भुत चरित्र को देख यों कह रहे थे - कि जिस की शक्ति ने इस महाप्रलय से आज ब्रजमंडल बचाया तिसे हम नंद सुत कैसे कहेंगे - हां किसी समय नंद जसोदा ने मुहा तप किया था - इसी से भगवान ने आ इन के घर जन्म लिया है ● औ ग्वाल बाल आय आय श्री कृष्ण के गले मिल मिल पूछने लगे कि भैया - तूने इस कोमल कमल से हाथ पर कैसे ऐसे भारी पर्वत का बोझ संभाला - औ नंद जसोदा करुना कर पुत्र को हृदय लगाय हाथ दाब उंगली चटकाय कहने लगे - कि सात दिन गिरि कर पर रक्खा - हाथ दुखता होयगा ● और गोपी जसोदा के पास आय पिछली सब कृष्ण की लीला गाय कहने लगीं ●●

यह जो बालक पूत तिहारौ ● चिर जीवौ ब्रज कौ रखवारौ ●
दानव दैयत असुर संहारे ● कहां कहां ब्रज जन न उबारे ●
जैसी कही गर्ग ऋषि राई ● सोइ सोइ बात होति है आई ●

इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे सप्तविंशतमोध्यायः ● ॥ २७ ॥ ●●

———●●●●●●●●●●●●———

श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज - भोर होतेही सब गायें औ ग्वाल बालों को संगकर अपनी अपनी छाक ले कृष्ण बलराम बैन बजाते औ मधुर मधुर सुर से गाते जों धेनु चरावन बन को चले- तों राजा इंद्र सकल देवताओं को साथ लिये- कामधेनु को आगे किये- ऐरावत हाथी पर चढा- सुरलोक से चला चला बृंदावन में आय- बन की बाट रोक खडा हुआ - जद श्रीकृष्णचंद उसे दूर से दिखाई दिये तद गज से उतर नंगे पाओं गले में कपडा डाले. थरथर कांपता आ श्री कृष्ण के चरनों पर गिरा और पछताय पछताय रो रो कहने लगा - कि हे ब्रजनाथ - मुझ पर दया करो ॥

मैं अभिमान गर्व अति किया ॥ राजस तामस में मन दिया ॥
धन मदकर संपति सुख माना ॥ भेद न कुछी तुम्हारा जाना ॥
तुम परमेश्वर सब के ईस ॥ और दूसरौ को जगदीस ॥
ब्रह्मा रुद्र आदि बर दाई ॥ तुम्हरी दई संपदा पाई ॥
जगत पिता तुम निगम निवासी ॥ सेवत नित कमला भई दासी ॥
जन के हेत लेत औतार ॥ तब तब हरत भूमि कौ भार ॥
दूर करौ सब चूक हमारी ॥ अभिमानी मूरख हौं भारी ॥

जब ऐसे दीन हो इंद्र ने स्तुति करी तब श्री कृष्णचंद दयाल हो बोले - कि अब तो तू कामधेनु के साथ आया इस से तेरा अपराध क्षमा किया - पर फिर गर्व मत कीजो क्यौं कि गर्व कर-ने से ज्ञान जाता है औ कुमति बढती है - उसी से अपमान होता है ॥

इतनी बात श्री कृष्ण के मुख से सुनते ही इंद्र ने उठकर बेद की

विधि से पूजा की और गोविंद नाम धर चर्नामृत ले परिक्रमा करी ● तिस समय गंधर्व भांति भांति के बाजे बजा बजा श्री कृष्ण का जस गाने लगे - औ देवता अपने विमानों में बैठे आकाश से फूल बरसावने ● उस काल ऐसा समा हुआ कि मानो फेरकर श्री कृष्ण ने जन्म लिया ● जब पूजा से निचंत हो इंद्र हाथ जोड सनमुख खडा हुआ तब श्री कृष्ण ने आज्ञा दी कि अब तुम कामधेनु समेत अपने पुर को जाओ ● आज्ञा पाते ही कामधेनु औ इंद्र बिदा होय दंडवत कर इंद्रलोक को गये ● और श्री कृष्णचंद गौ चराय सांझ हुए सब ग्वाल बालों को लिये बृंदाबन आए ● उन्होंने अपने अपने घर जाय जाय कहा - आज हमने हरि प्रताप से इंद्र का दरसन बन में किया ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा राजा - यह जो श्री गोविंद कथा मैंने तुम्हें सुनाई इसके सुनने औ सुनाने से संसार में धर्म - अर्थ - काम - मोक्ष - चारों पदारथ मिलते हैं ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे इंद्र स्तुति करनो नाम अष्टाविंशत मोध्यायः ● ॥ २८ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - एक दिन नंद जी ने संयम कर एकादशी ब्रत किया ● दिन तो स्नान - ध्यान - भजन - जप - पूजा - में काटा औ रात्रि जागरन में बिताई - जब छ घडी रैन रही औ द्वादशी भई - तब उठके देह शुद्धकर भोर हुआ जान धोती - अंगोछा - झारी - ले यमुना न्हान चले - तिनके पीछे कई एक ग्वाल भी

ले लिये ❀ तीर पर आय प्रनाम कर कपडे उतार नंद जी जौं नीर में पैठे - तों बरुन के सेवक जो जल की चौकी देते थे - कि कोई रात को न्हाने न पावे - तिन्होंने जा बरुन से कहा कि महाराज - कोई इस समैं यमुना में न्हाय रहा है - हमें क्या आज्ञा होती है ❀ बरुन बोला - तिसे अभी पकड लाओ ❀ आज्ञा पातेही सेवक फिर वहां आए - जहां नंद जी स्नान कर जल में खडे जप करते थे ❀ आतेही अचानक नाग फांस डाल नंद जी को बरुन के पास ले गये - तब नंद जी के साथ जो ग्वाल गये थे तिन्हों ने आय श्री कृष्ण से कहा कि महाराज - नंदराय जी को बरुन के गन यमुना तीर से पकड बरुन लोक को ले गये ❀ इतिनी बात के सुनते ही श्री गोविंद क्रोध कर उठ धाये औ पल भर में बरुन के पास जा पहुंचे ❀ इन्हें देखते ही बरुन उठ खडा हुआ और हाथ जोड बिनती कर बोला ❀❀

सुफल जन्म है आज हमारौ ❀ पायौ यदुपति दरस तुम्हारौ ❀
कीजे दोष दूर सब मेरे ❀ नंद पिता इस कारन घेरे ❀
तुम कौं सब के पिता बखाने ❀ तुम्हरे पिता नहीं हम जाने ❀

रात को न्हाते देख अनजाने गन पकड लाये - भला इसी मिस मैं ने दरसन आप के पाये ❀ अब दया कीजे - मेरा दोष चित्त में न लीजे ❀ ऐसे अति दीनता कर बहुत सी भेट लाय नंद औ श्री कृष्ण के आगे धर - जद बरुन हाथ जोड सिर नाय सनमुख खडा हुआ - नंद श्री कृष्ण भेट ले पिता को साथ कर वहां से चल बृंदावन आए ❀ इन को देखते ही सब ब्रजबासी आय मिले ❀ तिस समैं बडे बडे गोपों ने नंद

राय से पूछा - कि तुम्हें बरुन के सेवक कहां ले गये थे ❁ नंद जी बो
ले सुनो-औ वे यहां से पकड़ मुझे बरुन के पास ले गये-तोहीं पीछे
से श्री कृष्ण पहुंचे - इन्हें देखते ही वह सिंहासन से उतर पाओं पर
गिर अति विनती कर कहने लगा - नाथ - मेरा अपराध क्षमा कीजे -
मुझ से अनजाने यह दोष हुआ सो चित्त में न लीजे ❁ इतनी बात
नंद जी के मुख से सुनते ही गोप आपस में कहने लगे कि भाई -
हमने तो यह तभी जाना था जब श्री कृष्णचंद ने गोवर्द्धन धारन
कर ब्रज की रक्षा करी - कि नंद महर के घर में आदि पुरुष ने आय
औतार लिया है ❁

ऐसे आपस में बतराय फिर सब गोपों ने हाथ जोड़ श्री कृष्ण से
कहा कि महाराज - आपने हमें बहुत दिन भरमाया - पर अब सब
भेद तुम्हारा पाया ❁ तुम्हीं जगत के करता दुखहरता हो - त्रिलोकी
नाथ - दया कर अब हमें बैकुंठ दिखाइये ❁ इतना वचन सुन श्री
कृष्ण जी ने छिन भर में बैकुंठ रच तिन्हें ब्रज ही में दिखाया ❁ देखते
ही ब्रजवासियों को ज्ञान हुआ तो कर जोड़ सिर झुकाय बोले हे नाथ
- तुम्हारी महिमा अपरंपार है - हम कुछ कह नहीं सकते - पर आ
प की कृपा से आज हमने यह जाना कि तुम नारायन हो - भूमि का
भार उतारने को संसार में जन्म ले आए हो ❁

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - जब ब्रजवासियों ने इतनी बात
कही तभी श्री कृष्णचंद ने सब को मोहित कर - जो बैकुंठ की रचना
रची थी सो उठाय ली औ अपनी माया फैलाय दी - तो सब गोपों ने

सपना सा जाना और नंद जी ने भी माया के बस हो श्री कृष्ण को अ
पना पुत्रही कर माना ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे वरुन लोक
गमने वैकुंठ चरित्रो नाम एकोनत्रिंशतमोध्यायः ● ॥ २९ ॥ ●●

---

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले ●●.

जैसे हरि गोपिन सहित - कीनौ रास विलास ●
सो पंचाध्याई कहों - जैसी बुद्धि प्रकास ●

जब श्री कृष्ण जी ने चीर हरे थे तब गोपियों को यह बचन दिया था कि हम कातिक महीने में तुम्हारे साथ रास करेंगे - तभी से गोपी रास की आस किये मन में उदास रहैं औ नित उठ कातिक मास ही को मनाया करैं ● दैवी उनके मनाते मनाते सुखदाई ● सरद ऋतु आई ●●

लागौ जब तें कातिक मास ● घाम सीत बरखा कौ नास ●
निर्मल जल सरवर भर रहे ● फूले कंवल होय डहडहे ●
कुमद चकोर कंत कामिनी ● फूलहिं देख चंद्र जामिनी ●
चकई मलिन कंवल कुम्हिलाने ● जे निज मित्र भानु कौं माने ●

ऐसे कह श्री शुकदेव मुनि फिर बोले कि पृथ्वीनाथ - एक दिन श्री कृष्णचंद कातिकी पून्यो की रात्रि को घर से निकल बाहर आय देखें तो निर्मल आकाश में तारे छिटक रहे हैं - चांदनी दसों दिसा में फैल रही है ● सीतल सुगंध सहित मंद गति पौन बह रही है - औ एक ओर सघन बन की छबि अधिक ही सोभा दे रही है ● ऐसा समा

देखते ही उन के मन में आया कि हम ने गोपियों को यह बचन दिया है जो सरद ऋतु में तुम्हारे साथ रास करेंगे - सो पूरा किया चाहिये ॥ यह विचार कर बन में जाय श्री कृष्ण ने बांसुरी बजाई ॥ बंसी की धुनि सुनि सब ब्रज युवती बिरह की मारी कामातुर हो अति घबराईं ॥ निदान कुटुंब की माया छोड - कुल कान पटक - गृह काज तज - हडबडाय उलटा पुलटा सिंगार कर उठ धाईं ॥ एक गोपी जो अपने पति के पास से जो उठ चली तो उस के पति ने बाट में जा रोका औ फेरकर घर ले आया - जाने न दिया - तब तो वह हरि का ध्यान कर देह छोड सब से पहले जा मिली - तिस के चित्त की प्रीति देख श्री कृष्णचंद ने तुरंत मुक्ति गति दी ॥

इतनी कथा सुन राजा परीक्षित ने श्री शुकदेव जी से पूछा कि कृपा नाथ - गोपी ने श्री कृष्ण जी को ईश्वर जानके तो नहीं माना - केवल विषय की वासना कर भजा - वह मुक्त कैसे हुई - सो मुझे समझाके कहो जो मेरे मन का संदेह जाय ॥ श्री शुकदेव मुनि बोले - धर्मावतार - जो जन श्री कृष्णचंद की महिमा अनजाने भी गुनगाते हैं सो भी निस्संदेह भक्ति मुक्ति पाते हैं - जैसे कोई - बिन जाने अमृत पियेगा - वह भी अमर हो जियेगा औ जान के पियेगा तिसे भी गुन होगा ॥ यह सब जानते हैं कि पदारथ का गुन औ फल बिन हुए रहता नहीं ॥ ऐसे ही हरि भजन का प्रताप है - कोई किसी भाव से भजो मुक्त होयगा ॥ कहा है ॥

जप माला छापा तिलक - सरै न एकौ काम ॥

औ सुनौ - जिन जिन ने जैसे जैसे भाव से श्री कृष्ण को मान के मुक्ति पाई सो कहता हूं - कि नंद जसोदादि ने तो पुत्र कर बूझा ● गोपियों ने जारकर समझा ● कंस ने भय कर भजा ● ग्वाल बालों ने मित्र कर जपा ● पांडवों ने प्रीतम कर जाना ● सिसुपाल ने शत्रु कर माना ● यदुबंसियों ने अपना कर ठाना औ जोगी जती मुनियों ने ईश्वर कर ध्याया - पर अंत में मुक्ति पदारथ सबही ने पाया ● जो ऐक गोपी प्रभु का ध्यान कर तरी तो क्या अचरज हुआ ●

यह सुन राजा परीक्षित ने श्री शुकदेव मुनि से कहा कि कृपा नाथ - मेरे मन का संदेह गया अब कृपा कर आगे कथा कहिये ● श्री शुक देव जी बोले कि महाराज - जिस काल सब गोपियां अपने अपने झुंड लिये - श्री कृष्णचंद जगत उजागर रूप सागर से - धायकर यों जाय मिलीं - कि जैसे चौमासे की नदियां बल कर समुद्र को जाय मेलें ● उस समैं के वनाव की सोभा बिहारी लाल की कुछ बरनी नहीं जाती - कि सब सिंगार करे - नटवर भेष धरे - ऐसे मन भावने सुंदर सुहावने लगते थे - कि ब्रजयुवती हरि छवि देखते ही छक रहीं ● तब मोहन विन की क्षेम कुशल पूछ रूखे हो बोले - कहो रात समैं भूत प्रेत की बिरियां भयावनी बाट काट - उलटे पुलटे बस्त्र आभूषन पहने - अति घबराई - कुटुंब की माया तज इस महा बन में तुम कैसे आईं ● ऐसा साहस करना नारी को उचित नहीं ● स्त्री को कहा है कि कायर - कुमत - कूढ - कपटी - कुरूप - कोढी - काना - अंधा - लूला - लंग

डा - दरिद्री - कैसाही पति हो पर इसे उस की सेवा करनी जोग है - इसी में उस का कल्यान है औ जगत में बडाई ॥ कुलवंती पतिव्रता का धर्म है कि पति को छिन भर न छोडे और जो स्त्री अपने पुरुष को छोड पर पुरुष के पास जाती है सो जन्म जन्म नर्क बास पाती है ॥ ऐसे कह फिर बोले कि सुनो - तुम ने आय सघन बन - निर्मल चांदनी - औ यमुना तीर की सोभा देखी - अब घर जाय मन लगाय कंत की सेवा करो - इसी में तुम्हारा सब भांति भला है ॥ इतना बचन श्री कृष्ण के मुख से सुनते ही सब गोपी एक बार तो अचेत हो अपार सोच सागर में पडीं - पीछे ॥॥

नीचे चितै उसासें लईं ॥ पद नखनें भौं खोदत भईं ॥
यों दृग सों छूटी जल धारा ॥ मानऊं टूटे मोती हारा ॥

निदान दुख से अति घबराय रोरो कहने लगीं कि अहो कृष्ण - तुम बडे ठग हो - पहले तो बंसी बजाय अचानक हमारा ज्ञान ध्यान मन धन हर लिया - अब निर्दई होय कपट कर कर्कश बचन कह प्रान लिया चाहते हो ॥ यों सुनाय पुनि बोलीं ॥॥

लोग कुटुंम घर पति तजे - तजी लोक की लाज ॥
हैं अनाथ कोऊ नहीं - राखि सरन ब्रज राज ॥

और जो जन तुम्हारे चरनों में रहते हैं सो धन तन लाज बडाई नहीं चाहते ॥ तिनके तो तुम्हीं हो जन्म जन्म के कंत - हे प्रान रूप भगवंत ॥॥

करि हैं कहा जाय हम गेह ॥ अरके प्रान तुम्हारे नेह ॥

इतनी बात के सुनते ही श्री कृष्णचंद ने मुसकुराय सब गोपियों को निकट बुलायके कहा ● जो तुम राची हो इस रंग ● तो खेलो रास हमारे संग ● यह बचन सुन दुख तज गोपी प्रसन्नता से चारों ओर घिर आईं औ हरि मुख निरख निरख लोचन सुफल करने लगीं ●●

ठाढे बीच जु स्याम घन ॰ इहिं छबि कामिनि केलि ●
मनऊं नीलगिरि तरे तें ॰ उलही कंचन बेलि ●

आगे श्री कृष्ण जी ने अपनी माया को आज्ञा की कि हम रास करेंगे ॰ उस के लिये तू एक अच्छा स्थान रच औ यहां खड़ी रह ॰ जो जो जिस जिस वस्तु की इच्छा करै सो सो ला दीजो ● महा राज ॰ यिस ने सुनते ही यमुना के तीर जाय एक कंचन का मंडलाकार बड़ा चौंतरा बनाय ॰ मोती हीरे जड़ उस के चारों ओर सपल्लव केले के खंभ लगाय ॰ तिन में बंदनवार औ भांति भांति के फूलों की माला बांध ॰ आ श्री कृष्णचंद से कहा ● ये सुनते ही प्रसन्न हो सब ब्रजयुवतियों को साथ ले यमुना तीर को चले ● वहां जाय देखें तो चंद्र मंडल से रास मंडल के चौंतरे की चमक चौगुनी सोभा दे रही है ● उस के चारों ओर रेती चांदनी सी फैल रही है ● सुगंध समेत शीतल मीठी मीठी पौन चल रही है औ एक ओर सघन बन की हरियाली उजाली रात में अधिक छबि दे रही है ●

इस समैं को देखते ही सब गोपी मगन हो ॰ उसी स्थान के निकट मान सरोवर नाम एक सरोवर था तिस के तीर जाय मन मानते सुथरे

वस्त्र आभूषन पहन - नख सिख से सिंगार कर - अच्छे बाजे बीन पखा ॥ प्रेम० ॥
वज आदि सुर बांध बांध ले आई - औ लगीं प्रेम मद माती हो सोच ॥ ८७ ॥
संकोच तज, श्री कृष्ण के साथ मिल बजाने - गाने - नाचने ॥ उस समैं
श्री गोविंद गोपियों की मंडली के मध्य ऐसे सुहावने लगते थे जैसे
तारा मंडल में चंद ॥

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले सुनौ महाराज - जब गोपि
यों ने ज्ञान विवेक छोड रास में हरि को मन से विषई-पतिकर माना
औ अपने आधीन जाना - तब श्री कृष्णचंद ने मन में बिचारा कि ॥

अब मोहि इन अपने बस जान्यौ ॥ पति विषई सम मन में आन्यौ ॥
भई अज्ञान लाज तजि देह ॥ लपटहिं पकरहिं कंत सनेह ॥
ज्ञान ध्यान मिलकै बिसरायै ॥ छांडि जाऊं इनि गर्व बढायौ ॥

देखूं मुज बिन पीछे बन में क्या करती हैं और कैसे रहती हैं ॥ ऐसे
बिचार श्री राधिका को साथ ले श्री कृष्णचंद अंतरध्यान हुए ॥ इति श्री
लाल कृते प्रेम सागरे रास क्रीडा रंभो नाम त्रिंशतमोध्यायः ॥ ॥ ३० ॥ ॥

---

श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज - ऐकाऐकी श्री कृष्णचंद को
न देखते ही गोपियों की आंख आगे अंधेरा हो गया औ अति दुख पाय
ऐसे अकुलाई - जैसे मनि खोय सर्प घबराता है ॥ इस में ऐक गो
पी कहने लगी ॥

कहौ सखी मोहन कहां - गये हमें छिटकाय ॥
मेरे गरे भुजा धरे - रहे हुते उर लाय ॥

अभी तो हमारे संग हिले मिले रास विलास कररहे थे - इतने ही में कहां गये - तुम में से किसीने भी जाने न देखा ● यह बचन सुन सब गोपी बिरह की मारी निपट उदास हो हाय मार बोलीं ●●

कहां जाय कैसी करें - का सों कहें पुकारि ●
है कित कछू न जानिये - क्यों कर मिले मुरारि ●

ऐसे कह हरि मद माती होय सब गोपी लगीं चारों ओर ढूंढ ढूंढ गुन गाय गाय रोरो यों पुकारने ●●

हम को क्यों छोडी ब्रजनाथ ● सरबस दिया तुम्हारे साथ ●

जब वहां न पाया तब आगे जाय आपस में बोलीं - सखी - यहां तो हम किसी को नहीं देखतीं - किस से पूछें कि हरि किधर गये ● यों सुन एक गोपी ने कहा सुनो आली - एक बात मेरे जी में आई है कि ये जितने इस बन में पशु पक्षी औ बृक्ष हैं सो सब ऋषि मुनि हैं - ये कृष्ण लीला देखने को औतार ले आये हैं - इन्हीं से पूछो - ये यहां खडे देखते हैं - जिधर हरि गये होंगे तिधर बता देंगे ● इतना बचन सुनते ही सब गोपी बिरह से व्याकुल हो क्या जड क्या चैतन्य लगीं एक एक से पूछने ●●

हे बड पीपल पाकड बीर ● लहा पुन्य कर उच्च शरीर ●
पर उपकारी तुमहीं भये ● बृक्ष रूप पृथ्वी पर लये ●
घाम सीत बरषा दुख सहौ ● काज पराये ठाढे रहौ ●
बकला फूल मूल फलडार ● तिन सों करत पराई सार ●
सब का मन धन हर नंद लाल ● गये इधर को कहो दयाल ●

हे कदंब अंब कचनारि ● तुम कहुं देखे जात मुरारि ●
हे असोक चंपा करवीर ● जात लखे तुम ने बलवीर ●
हे तुलसी अति हरि की प्यारी ● तन तें कहूं न राखत न्यारी ●
फूली आज मिले हरि आय ● हम हूं कों किन देत बताय ●
जाती जुही मालती माई ● इत ह्वै निकसे कुंवर कन्हाई ●
मृगनि पुकारि कहैं ब्रज नारी ● इत तुम जात लखे बनवारी ●

इतना कह श्री सुकदेव जी बोले कि महाराज - इसी रीत से सब गोपी पसु पक्षी द्रुम बेलि से पूछती पूछती श्री कृष्णमय हो लगीं पूतना बध आदि सब श्री कृष्ण की करी हुई बाल लीला करने - औ ढूंढने ● निदान ढूंढते ढूंढते कितनी एक दूर जाय देखैं तो श्री कृष्णचंद के चरन चिन्ह - कंवल - जव - ध्वजा - अंकुस - समेत रेत पर जगमगा य रहे हैं ● देखते ही ब्रज युवती - जिस रज को सुर-नर-मुनि-खोजते हैं तिस रज को दंडवत कर सिर चढाय हरि के मिलने की आस धर वहां से बढीं तो देखा - जो उन चरन चिन्हों के पास पास एक नारी के भी पांव उपडे हुए हैं ● उन्हें देख अचरज कर आगे जाय देखैं तो एक ठौर कोमल पातों के बिछौने पर सुंदर जडाऊ द रपन पडा है - लगीं उस से पूछने - जब बिरह भरा वह भी न बोला तब विन्हों ने आपस में पूछा - कहो आली - यह कौं कर लिया - किसी समैं जो पिय प्यारी के मन की जानती थी उस ने उत्तर दिया कि सखी - जद प्रीतम प्यारी की चोटी गूंथन बैठे औ सुंदर बदन बि लोकने में अंतर हुआ - तिस बिरियां प्यारी ने दरपन हात में ले पिय

को दिखाया - तद श्री मुख का प्रतिबिंब सनमुख आया ❁ यह बात सुन गोपियां कुछ न कोपियां - बरन कहने लगीं कि इस ने शिव पार्वती को अच्छी रीति से पूजा है औ बड़ा तप किया है - जो प्रान पति के साथ एकांत में निधड़क बिहार करती है ❁ महाराज - सब गोपी तो इधर बिरह मद माती बकबक झखझख ढूंढती फिरती ही थीं - कि उधर श्री राधिकाजी हरि के साथ अधिक सुख मान प्रीतम को अपने बस जान आप को सब से बड़ा ठान - मन में अभिमान आन बोलीं - प्यारे - अब मुझ से चला नहीं जाता - कांधे चढ़ाय ले चलिये ❁ इतनी बात के सुनते ही गर्व प्रहारी अंतर जामी श्री कृष्णचंद्र ने मुसकुराय बैठकर कहा कि आइये - हमारे कांधे चढ़ लीजिये ❁ जद वह हाथ बढ़ाय चढ़ने को हुई तद श्री कृष्ण अंतर ध्यान हुए - जों हाथ बढ़ाये थे तों हाथ पसारे खड़ी रह गई - ऐसे कि जैसे घन से मान कर दामिनी बिछड़ रही हो - कै चंद्र से चंद्रिका रूस पीछे रह गई हो ❁ औ गोरे तन की जोति छूटि छिति पर छाय यों छबि दे रही थी कि मानों सुंदर कंचन की भूमि पै खड़ी है ❁ नैनों से जल की धार बह रही थी औ सुबास के बस जो मुख पास भंवर आय आय बैठते थे - तिन्हें भी उड़ाय न सकती थी - औ हाय हाय कर बन में बिरह की मारी इस भांति रो रही थी अकेली - कि जिस के रोने की धुन सुन सब रोते थे पशु पक्षी औ द्रुम बेली - और यों कह रही थी ❁❁

हाहा नाथ परम हितकारी ❁ कहां गये स्वछंद बिहारी ❁
चरन सरन दासी मैं तेरी ❁ कृपा सिंधु लीजे सुधिमेरी ❁

कि इतने में सब गोपी भी ढूंढती ढूंढती उस के पास जा पहुंचीं-औ विसे के गले लग लग सबोंने मिल मिल ऐसा सुख माना कि जैसे कोई महा धन खोय मध्य आधा धन पाय सुख माने ● निदान सब गोपी भी विसे अति दुखित जान साथ ले महा बन में पैठीं-औ जहां लग चांदना देखा तहां लग गोपियों ने बन में श्री कृष्णचंद को ढूंढा-जब सघन बन के अंधेरे में बाट न पाई तब वे सब वहां से फिर धीरजधर मिलने की आसकर-यमुना के उसी तीर पर आय बैठीं-जहां श्री कृष्णचंद ने अधिक सुखदिया था ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे गोपी बिरह बर्ननो नाम एक त्रिंशोध्यायः ● ॥ ३१ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-सब गोपी यमुना तीर पर बैठ प्रेम मद माती हो हरि के चरित्र और गुन गाने लगीं कि प्रीतम-जब से तुम ब्रज में आए तब से नये नये सुख यहां आनकर छाए ● लक्ष्मी ने कर तुम्हारे चरन की आस-किया है अचल आयके बास ● हम गोपी हैं दासी तुम्हारी - बेग सुध लीजे दयाकर हमारी ● जद से सुंदर सांवली सलोनी मूरति हेरी-तद से हुई हैं बिन मोल की चेरी ● तुम्हारे नैन बानों ने हने हैं हिय हमारे - सो प्यारे - किस लिये लेखे नहीं है तुम्हारे ● जीव जाते हैं हमारे अब करुना कीजे - तज कर कठोरता बेग दरसन दीजे ● जो तुम्हें मारना हीं था तो हम को बिषधर आग औ जल से किस लिये बचाया - तभी मरने क्यों न दिया ● तुम केवल जसोदा सुत नहीं हो - तुम्हें तो ब्रह्मा - रुद्र -

इंद्रादि सब देवता बिनती कर लाये हैं संसार की रक्षा के लिये ◉

हे प्रान नाथ - हमें एक अचरज बडा है कि जो अपनों हीं को मारोगे-तो करोगे किस की रखवाली ◉ प्रीतम - तुम अंतर जामी होय हमारे दुख हर मन की आस क्यौं नहीं पूरी करते ◉ क्या अबलाओं पर ही सूरता धारी है - हे प्यारे - जब तुम्हारी मंद मुसकान युत प्यार भरी चितवन - औ भृकुटी की मरोर - नैनों की मटकन - ग्रीवा की लटक - औ बातों की चटक - हमारे जिय में आती है-तब क्या क्या न दुख पाती हैं ◉ और जिस समैं तुम गौ चरावन जाते थे बन में-तिस समैं तुम्हारे कोमल चरन का ध्यान करने से बन के कंकर कांटे आ कसकते थे हमारे मन में ◉ भोर के गये सांझ को फिर आते थे - तिस पर भी हमें चार पहर चार युग से जनाते थे ◉ जद सनमुख बैठ सुंदर बदन निहारती थीं-तद अपने जी में बिचारती थीं - कि ब्रह्मा कोई बडा मूरख है जो पलक बनाई है-हमारे इकटक देखने में बाधा डालने को ◉

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - इसी रीत से सब गोपी बिरह की मारीं श्री कृष्णचंद के गुन औ चरित्र अनेक अनेक प्रकार से गाय गाय हारीं-तिस पर भी न आये बिहारी-तब तो निपट निरास हो मिलने की आस कर-जी ने का भरोसा छोड - अति अधीरता से अचेत हो - गिरकर ऐसे रोय पुकारीं कि सुनकर चर अचर भी दुखित भये भारी ◉ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे गोपी जन बिरह कथनो नाम द्वित्रिंशोध्यायः ◉ ॥ ३२ ॥ ◉◉

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - जद श्री कृष्णचंद अंतरजामी ने जाना जो अब ये गोपियां मुझ बिन जीती न बचेंगीं ●●

तब तिनहीं में प्रगट भये नंद नंदन यौं ●
दृष्ट बंध कर छिपै फेर प्रगटै नटबर ज्यौं ●
आये हरि देखे जबै - उठी सबै यौं चेत ●
प्रान परे ज्यौं मृतक में - इंद्री जगैं अचेत ●
बिन देखे सब कौ मन व्याकुल हो भयौ ●
मानो मनमथ भुवंग सबनि डसिकै गयौ ●
पीर खरी पिय जान पहुंचे आइकै ●
अमृत बेलनि सींच लई सब ज्याइ कै ●
मनहुं कमल निसि मलिन हैं - ऐसें ही ब्रज बाल ●
कुंडल रवि छवि देखिकै - फूले नैन बिसाल ●

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - श्री कृष्णचंद आनंद कंद को देखते ही सब गोपियां ऐकाऐकी बिरह सागर से निकल उन के पास जाय ऐसे प्रसन्न हुई - कि जैसे कोई अथाह समुद्र में डूब थाह पाय प्रसन्न होय ● और चारों ओर से घेरकर खडी भई - तब श्री कृष्ण उन्हें साथ लिये वहां आये जहां पहले रास बिलास किया था ● जातेही ऐक गोपी ने अपनी ओढनी उतारके श्री कृष्ण के बैठने को बिछादी - जो वे उस पर बैठे तो कईऐक गोपी क्रोध कर बोलीं कि महाराज - तुम बडे कपटी बिराना मन धन ले जानते हो - पर

किसी का कुछ गुन नहीं मानते ● इतना कह आपस में कहने लगीं ●●

गुन छांडै औगुन गहै - रहै कपट मन भाय ●
देखो सखी विचारिकै - तासों कहा बसाय ●

यह सुन ऐक विन में से बोली कि सखी - तुम अलगी रहो - अपने कहे कुछ सोभा नहीं पातीं ● देखो मैं कृष्ण ही से कहाती हूं ● यों कह विसने मुसकुराय के श्री कृष्ण से पूछा कि महाराज-ऐक विन गुन किये गुन मान ले - दूसरा किये गुन का पलटा दे - तीसरा गुन के पलटे औगुन करै - चौथा किसी के किये गुन को भी मन में न धरै ● इन चारों में कौन भला है औ कौन बुरा - यह तुम हमें समझाके कहो ● श्री कृष्णचंद बोले कि तुम सब मन दे सुनौ - भला औ बुरा मैं बुझाकर कहता हूं ● उत्तम तो वह है जो विन किये करे-जैसे पिता पुत्र को चाहता है-और किये पर करने से कुछ पुन्य नहीं-सो ऐसे है जैसे बांट के हेत गौ दूध देती है ● गुन को औगुन माने तिसे शत्रु जानिये ● सब से बुरा कृतघ्नी जो किये को मेटे ●

इतना बचन सुनते ही जब गोपियां आपस में ऐक ऐक का मुंह देख हंसने लगीं - तब तो श्री कृष्णचंद घबराकर बोले कि सुनौ मैं इन चार की गिनती में नहीं - जो तुम जानके हंसती हो - बरन मेरी तो यह रीति है कि जो मुझ से जिस बात की इच्छा रखता है तिस के मन की बांछा पूरी करता हूं ● कदाचित तुम कहो कि जो तुम्हारी यह चाल है तो हमें बन में ऐसे क्यौं छोड गये - इस का कारन यह है कि मैं ने तुम्हारी प्रीति की परिक्षा ली - इस बात का बुरा मत मानौ मेरा

कहा सच ही जानौ यों कह फिर बोले ॥

अब हम परचौ लियौ तिहारौ ॥ कीनौ सुमिरन ध्यान हमारौ ॥
मोही सों तुम प्रीत बढाई ॥ निर्धन मनो संपदा पाई ॥
ऐसें आई मेरे काज ॥ छांडी लोक बेद की लाज ॥
ज्यों बैरागी छांडे गेह ॥ मन दे हरि सों करै सनेह ॥
कहा तिहारी करें बडाई ॥ हम पै पलटौ दियौ न जाई ॥

जो ब्रह्मा के सौ बरस जियें तौभी हम तुम्हारे रिन से उतरन न होंय ॥ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे गोपी कृष्ण संवादो नाम त्रयस्त्रिंशो ध्यायः ॥ ॥ ३३ ॥ ॥

---

श्री शुकदेव मुनि बोले राजा - जब श्री कृष्णचंद ने इस ढब से रस के बचन कहे - तब तो सब गोपियां रिस छोड प्रसन्न हो उठ हरि से मिल भांति भांति के सुख मान आनंद मगन हो कुतूहल करने लगीं ॥ तिस समें ॥

कृष्ण जोगमाया ठई - भये अंस बहु देह ॥
सब कों सुख चाहत दियौ - लीला परम सनेह ॥

जितनी गोपियां थीं तितने ही शरीर श्री कृष्णचंद ने धर - उसी रास मंडल के चौंतरे पर - सब को साथ ले फिर रास बिलास का आरंभ किया ॥

द्वै द्वै गोपी जोरे हाथा ॥ तिन के बीच बीच हरि साथा ॥
अपनी अपनी ढिग सब जाने ॥ नहीं दूसरे कौं पहिचाने ॥

अंगुरिन में अंगुरी कर दिये ● प्रफुलित फिरैं संग हरि लिये ●
बिच गोपी बिच नंदकिशोर ● सघन घटा दामिनि चहुं ओर ●
स्याम कृष्ण गोरी ब्रज बाला ● मानहुं कनक नीलमनि माला ●

महाराज - इसी रीति से खडे होय गोपी और कृष्ण लगे अनेक अनेक प्रकार के यंत्रो के सुर मिलाय मिलाय कठिन कठिन राग - अलाप अलाप - बजाय बजाय गाने औ तीखी - चोखी - आडी - डैाढी - दुगन - तिगन की तानें - उपजें - ले ले बोल बताय बताय नाचने ● औ आनंद में ऐसे मगन हुए कि उन को तन मन की भी सुध नथी ● कहीं इन का अंचल उघड जाता था - कहीं उन का मुकुट खिसल ● इधर मोतियों के हार टूट टूट गिरते थे - उधर बनमाल ● पसीने की बूंदें माथें पर मोतियों की लडी सी चमकती थी औ गोपियों के गोरे गोरे मुखडों पर अलकें यों बिखर रही थी - कि जैसे अमृत के लोभ से संपोलिये उडकर चांद को जालगे होंय ● कभी कोई गोपी श्री कृष्ण की मुरली के साथ मिलकर झील में गाती थी - कभी कोई अपनी तान अलग ही ले जाती थी ● औ जब कोई बंसी को छेक उस की तान समूची ज्यों की त्यों गले से निकालती थी - तब हरि ऐसे भूल रहते थे कि ज्यों बालक दरपन में अपना प्रतिबिंब देख भूल रहै ●

इसी ढब से गाय गाय नाच नाच अनेक अनेक प्रकार के हाव भाव - कटाक्ष करकर सुख लेते देते थे - औ परस्पर रीझ रीझ हंस हंस कंठ लगाय लगाय वस्त्र आभूषन निछावर कर रहे थे ● उस काल ब्रह्मा - रुद्र - इंद्र - आदि सब देवता औ गंधर्व अपनी अपनी स्त्रियों समेत

विमानों में बैठे रास मंडली का सुख देख देख आनंद से फूल बरसा ॥ प्रेम०॥
वते थे - और उन की स्त्रियां वह सुख लख हँस कर मन में कह ॥ ९९ ॥
ती थीं कि जो जन्म ले ब्रज में जातीं तो हम भी हरि के साथ रास बि
लास करतीं - औ राग रागनियों का ऐसा समां बंधा हुआ था कि जि
से सुनके पौन पानी भी न बहता था - औ तारा मंडल समेत चंद्रमा
थकित हो किरनों से अमृत बरसाता था ● इस में रात बढी तो छः
महीने बीत गये औ किसी ने न जाना - तभी से उस रैन का नाम ब्रह्म
रात्रि हुआ ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले - पृथी नाथ - रास लीला करते करते जो कुछ श्री कृष्णचंद के मन में तरंग आई तो गोपियों को लिये यमुना तीर पै जाय - नीर में पैठ जल क्रीडा कर श्रम मिटाय - बाहर आय - सब के मनोरथ पूरे कर बोले - कि अब चार घडी रात रही है तुम सब अपने घर जाओ ● इतना बचन सुन उदास हो गोपियों ने कहा नाथ - आपके चरन कंवल छोडके घर कैसे जांय - हमारा लालची मन तो कहा मानताही नहीं ● श्री कृष्ण बोले कि सुनो - जैसे जोगी जन मेरा ध्यान धरते हैं - तैसे तुम भी ध्यान कीजियो - मैं तुम्हारे पास जहां रहोगी तहां रहूंगा ● इतनी बात के सुनते ही संतोष कर सब बिदा हो अपने अपने घर गईं औ यह भेद उन के घरवालो में से किसीने न जाना कि ये यहां न थीं ●

इतनी कथा सुन राजा परीक्षित ने श्री शुकदेव मुनि से पूछा कि दीन दयाल - यह तुम मुझे समझाकर कहो जो श्री कृष्णचंद तो असु

सें को मार पृथ्वी का भार उतारने औ साध संत को सुख दे धर्म का पंथ चलाने के लिये औतार ले आये थे - तिन्होंने पराई स्त्रियों के सा थ रास विलास क्यों किया - यह तो कुलंपट का कर्म है जो बिरानी नारी से भोग करै ● श्रीशुकदेव जी बोले ●●

सुन राजा यह भेद न जान्यौ ● मानुष सम परमेश्वर मान्यौ ●
जिन के सुमिरे पातक जात ● तेजवंत पावन हैं गात ●
जैसें अग्नि मांझ कछु परै ● सोऊ अग्नि होयकै जरै ●

सामर्थी क्या नहीं करते क्यों कि वे तो करके कर्म की हानि करते हैं - जैसे शिव जी ने विष लिया औ खाके कंठ को भूषन दिया - औ काले सांप का किया हार - कौन जाने उनका ब्यौहार ● वेतो अपने लिये कुछ भी नहीं करते जो तिनका भजन सुमिरन कर कोई बर मांगता है तैसाही तिस को देते हैं ●

उन की तो यह रीति है कि सब से मिले दृष्ट आते हैं औ ध्यान कर देखिये तो सबही से ऐसे अलग जनाते हैं - जैसे जल में कंवल का पात ● और गोपियों की उतपत्ति तो मैं तुम्हें पहलेही सुना चुका हूं - कि देवी औ बेद की ऋचाऐं हरि का दरस परस करने को ब्रज में जन्म ले आई हैं औ इसी भांति श्री राधिका भी ब्रह्मा से बर पाय श्री कृष्णचं द की सेवा करने को जन्म ले आई औ प्रभु की सेवा में रही ●

इतना कह श्री शुकदेव जी बोले महाराज - कहा है - कि हरि के चरित्र मान लीजे पर उनके करने में मन न दीजे ● जो कोई गोपी नाथ का जस गाता है सो निर्भय अटल परम पद पाता है - औ जैसा

फल होता है अठसठ तीरथ के न्हाने में - तैसा ही फल मिलता है श्री कृष्ण जस गाने में ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे पंचाध्याई रास लीला वर्ननो नाम चतुस्त्रिंशोध्यायः ● ॥ ३४ ॥ ●●



---

श्री शुकदेव मुनि कहने लगे कि राजा - जैसे श्री कृष्ण जी ने विद्याधर को तारा औ शंखचूड को मारा सो प्रसंग कहता हूं - तुम जीलगाय सुनौ ● ऐक दिन नंद जी ने सब गोप ग्वालों को बुलायके कहा कि भाईयो - जब कृष्ण का जन्म हुआ था - तब मैं ने कुल देवी अंबिका की यह मानता करी थी - कि जिस दिन कृष्ण बारह बरस का होगा तिस दिन नगर समेत बाजे गाजे से जाकर पूजा करूंगा - सो दिन उनकी कृपा से आज देखा - अब चलकर पूजा किया चाहिये ●

इतना बचन नंद जी के मुख से सुनते ही सब गोप ग्वाल उठ धाये औ झट पट ही अपने अपने घरों से पूजा की सामग्री ले आये ● नंद तो नंदराय भी पुजापा औ दूध दही माखन सगडों बंहगियों में रख वाय - कुटुंब समेत उनके साथ हो लिये औ चले चले अंबिका के स्थान पर पहुंचे ● वहां जाय सरस्वती नदी में न्हाय - नंद जी ने पुरोहित बुलाय - सब को साथ ले देवीके मंदिर में जाय - शास्त्रकी रीति से पूजा की ● औ जो पदारथ चढाने को ले गये थे सो आगे धर - परिक्रमा दे हाथ जोड बिनती कर कहा कि मा - आपकी कृपा से कान्ह बारह बरस का हुआ ●

ऐसे कह दंडवत कर मंदिर के बाहर आय - सहस्त्र ब्राह्मन जिमाये

॥ इस में अबेर जो हुई तो सब ब्रजवासियों समेत - नंद जी तीरथ ब्रत कर वहां हीं रहे ॥ रात को सोते थे कि एक अजगर ने आय नंद राय का पांव पकडा औ लगा निगलने - तब तो वे देखते ही भय खाय घबरायके लगे पुकारने - हे कृष्न हे कृष्न - बेग सुध ले - नहीं तो यह मुझे निगले जाता है ॥ उनका शब्द सुनते ही सारे ब्रजबासी स्त्री क्या पुरुष नींद से चौंक नंद जी के निकट जाय - उजाला कर देखें तो एक अजगर उनका पांव पकडे पडा है ॥ इतने में श्री कृष्नचंद जी ने पहुंच सब के देखते ही - जो उस की पीठ में चरन लगाया - तों हीं वह अपनी देह छोड सुंदर पुरुष हो प्रनाम कर सनमुख हाथ जोड़ खडा हुआ ॥ तब श्री कृष्न ने उस से पूछा कि तू कौन है औ किस पाप से अजगर हुआ था सो कह ॥ वह सिर झुकाय बिनती कर बोला - अंतरजामी - तुम सब जानते हो मेरी उतपत्ति - कि मैं सुदरसन नाम बिद्याधर हूं - सुरपुर में रहता था औ अपने रूप गुन के आगे - गर्व से किसी को कुछ न गिनता था ॥

एक दिन बिमान में बैठ फिरने को निकला तो जहां अंगिरा ऋषि बैठे तप करते थे - तिन के ऊपर हो सौ बेर आया गया ॥ एक बेर जो उन्हों ने बिमान की परछांईं देखी - तो ऊपर देख क्रोध कर मुझे स्राप दिया कि रे अभिमानी - तू अजगर सांप हो ॥

इतना बचन उनके मुख से निकला कि मैं अजगर हो नीचे गिरा ॥ तिस समैं ऋषि ने कहा था कि तेरी मुक्ति श्री कृष्नचंद के हाथ होगी - इसी लिये मैं ने नंदराय जी के चरन आन पकडे थे जो आप आयके

मुझे मुक्ति करें - सो कृपानाथ ने आपने आय कृपा कर मुझे मुक्ति दी ❁ ऐसे कह विद्याधर ने परिक्रमा दे हरि से आज्ञा ले दंडवत कर विदा हो बिमान पर चढ़ सुरलोक को गया औ यह चरित्र देख सब ब्रजबासियों को अचरज हुआ ❁ निदान भोर होते ही देवी का दरसन कर सब मिल वृंदाबन आये ❁

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव मुनि बोले कि पृथ्वीनाथ - एक दिन हलधर औ गोबिंद गोपियों समेत चांदनी रात को आनंद से बन में गाय रहे थे - कि इस बीच कुबेर का सेवक संखचूड़ नाम यक्ष - जिस के सीस में मनि औ अति बलवान था - सो आ निकला ❁ देखे तो एक ओर सब गोपियां कुतूहल कर रही हैं - औ एक ओर कृष्ण बलदेव मगन हो मत्तवत गाय रहे हैं ❁ कुछ इस के जी में जो आई तो सब ब्रज युवतियों को घेर आगे धर ले चला - तिस समैं भय खाय पुकारीं ब्रजबाम - रक्षा करो कृष्ण बलराम ❁

इतना बचन गोपियों के मुख से निकलते ही सुनकर दोनों भाई रूख उखाड़ हाथों में ले यों दौड़ आए - कि मानो गज माते सिंह पर उठ धाए - औ वहां जाय गोपियों से कहा कि तुम किसी से मत डरो - हम आन पहुंचे ❁ इनको काल समान देखते ही यक्ष भयमान हो गोपियों को छोड़ अपना प्रान ले भागा ❁ उस काल नंदलाल ने बलदेव जी को तो गोपियों के पास छोड़ा औ आप जाय उस के झोंटे पकड़ पछाड़ा - निदान तिरछा हाथ कर उस का सिर काट मनि ले आन बलराम जी को दिया ❁ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे विद्याधर मोक्ष संख

चूड़ वधो नाम पंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

श्री शुकदेव मुनि बोले राजा जबतक हरि बन में धेनु चरावें तबतक सब ब्रज युवतियां नंदरानी के पास आय बैठकर प्रभु का जस गावें जो लीला श्री कृष्ण बन में करें सो गोपियां घर बैठी उचरें

सुनौ सखी बाजति है बैन ● पशु पक्षी पावत हैं चैन ●
पति संग देवी थकी बिमान ● मगन भई हैं धुनि सुन कान ●
करतें परहिं चुरी मूंदरी ● बिह्वल मन तन की सुधि हरी ●
तब हीं ऐक कहै ब्रज नारि ● गरजनि मेघ तजी अति हारि ●
गावत हरि आनंद अडोल ● भौंह नचावत पानि कपोल ●
पिय संग मृगी थकी सुनि बेनु ● यमुना फिरी घिरी तहां धेनु ●
मोहे बादर छैयां करें ● मानौ छत्र कृष्ण पर धरें ●
अब हरि सघन कुंज कौं धाऐ ● पुनि सब बंसीवट तर आऐ ●
गायन पाछें डोलत भये ● धेर लई जल प्यावन गये ●
सांझ भई अब उलटे हरी ● संभनि गाय बेनु धुनि करी ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज इसी रीति से नित गोपियां दिन भर हरि को गुन गावें औ सांझ समय आगे जाय श्री कृष्णचंद्र आनंद कंद से मिल सुख मान ले आवें औ तिस समैं जसोदा रानी भी रज मंडित पुत्र का मुख प्यार से पोंछ कंठ लगाय सुख माने इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे गोपी गीत बर्ननो नाम षटत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - ऐक दिन श्री कृष्ण बलराम सांझ के समैं धेनु चराय के बन से घर को आते थे - इस बीच ऐक असुर अति बडा बैल बन आय गायों में मिला ●●

आकाश लौं देह तिनि धरी ● पीठ कडी पाथर सी करी ●
बडे सींग तीक्षन दोउ खरे ● रक्त नैन अति ही रिस भरे ●
पूंछ उठाय डकारतु फिरै ● रहि रहि मूतत गोबर करै ●
फडकै कंध हिलावे कान ● भजे देवसब छोड विमान ●
खुर सों खोदे नदी करारे ● पर्वत उथल पीठ सों डारे ●
सब कौं त्रास भयो तिहि काल ● कंपहि लोकपाल दिगपाल ●
पृथ्वी हलै शेष थरहरै ● तिय औ धेनु गर्भ भू परै ●

उसे देखते ही सब गायें तो जिधर तिधर फैल गईं औ ब्रज बासी दौड वहां आऐ - जहां सब के पीछे कृष्ण बलराम चले आते थे ● प्रनाम कर कहा महाराज - आगे ऐक अति बडा बैल खडा है - उस से हमें बचाओ ● इतनी बात के सुनते ही अंतरजामी श्री कृष्णचंद बोले कि तुम कुछ मत डरो उस से - वह बृषभ का रूप बन कर आया है नीच - हम से चाहता है अपनी मीच ● इतना कह आगे जाय उसे देख बोले बनवारी - कि आव हमारे पास कपट तन धारी ● तू और किन्हू को क्यौं डरता है - मेरे निकट किस लिये नहीं आता ● जो बैरी सिंह का कहावता है - सो मृग पर नहीं धावता ● देख मैं हीं हूं काल रूप गोविंद - मैं ने तुज से बहुतों को मारके किया है निकंद ●

यों कह फिर ताल ठोक ललकारे - आ मुझ से संग्राम कर ● यह बचन सुनते ही असुर ऐसे क्रोध कर धाया - कि मानो इंद्र का बज्र आया ● जों जों हरि उसे हटाते थे त्यों त्यों वह संभल संभल बढा आता था ● एक बार जों इन्हों ने विसे दे पटका त्योंहीं खिजलाकर उठा औ दोनों सींगों में उस ने हरि को दबाया - तब तो श्री कृष्ण जी ने भी फुरती से निकल झट पांव पर पांव दे उस के सींग पकड यों मड़ोड़ा कि जैसे कोई भींगे चीर को निचोड़े - निदान वह पछाड खाय गिरा औ उस का जी निकल गया ● तिस समैं सब देवता अपने अपने विमानों में बैठ आनंद से फूल बरसावने लगे औ गोपी गोप कृष्ण जस गाने ● इस बीच श्री राधिका जी ने आ हरि से कहा कि महाराज ब्रषभ रूप जो तुम ने मारा इस का पाप हुआ - इस से अब तुम तीरथ न्हाय आओ तब किसी को हाथ लगाओ ● इतनी बात के सुनते ही प्रभु बोले कि सब तीरथों को मैं ब्रजही में बुला लेता हूं ● यों कह गोवर्द्धन के निकट जाय दो औंडे कुंड खुदवाये - तहीं सब तीरथ देह धर आये - औ अपना अपना नाम कह कह उन में जल डाल डाल चले गये ● तब श्री कृष्णचंद उन में स्नान कर बाहर आय अनेक गौ दान दे बहुत से ब्रह्मान जिमाय शुद्ध हुए - औ तिसी दिन से कृष्ण कुंड राधा कुंड करके वे प्रसिद्ध हुए ●

यह प्रसंग सुनाय श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज - एक दिन नारद मुनि जी कंस के पास आए - औ उस का कोप बढाने को जब उन्हों ने बलराम औ स्याम के होने औ माया के आने औ कृष्ण के जा

ने का भेद समझाकर कहा तब कंस क्रोध कर बोला - नारद जी - तुम सच कहते हो ॥ 

प्रथम दियौ सुत आनिकै - मन परतीत बढाय ॥
ज्यौं ठग कछू दिखाइकै - सर्बसु ले भजिजाय ॥

इतना कह वसुदेव को बुलाय पकड बांधा औ खांडे पर हाथ रख अकुला कर बोला ॥

मिला रहा कपटी तू मुझे ॥ भला साध जाना मैं तुझे ॥
दिया नंद के कृष्ण पठाय ॥ देवी हमें दिखाई आय ॥
मन में कछी कही मुख और ॥ आज अवश्य मारूं इहिं ठौर ॥
मित्र सगा सेवक हित कारी ॥ करै कपट सो पापी भारी ॥

मुख मीठा मन विष भरा - रहै कपट के हेत ॥
आप काज पर द्रोहिया - उस से भला जु प्रेत ॥

ऐसे बक झख फिर कंस नारद जी से कहने लगा कि महाराज - हमने कुछ इस के मन का भेद न पाया - कृष्ण लडका औ कन्या को ला दिखाया ॥ जिसे कहा अधूरा गया - सोई जा गोकुल में बलदेव भया ॥ इतना कह क्रोध कर होठ चबाय खडग उठाय ज्यौं चाहा कि वसुदेव को मारूं - तो नारद मुनि ने हाथ पकडकर कहा राजा - वसुदेव को तो तू रख आज - औ जिस में कृष्ण बलदेव आवें सो कर काज ॥ ऐसे समझाय बुझाय जब नारद मुनि चले गये - तब कंस ने वसुदेव देवकी को तो एक कोठडी में मूंद दिया औ आप भयातुर हो केशी नाम राक्षस को बुलाके बोला ॥

महाबली तूं साथी मेरा ● बडा भरोसा मुझ को तेरा ●
एक बार तू ब्रज में जा ● राम कृष्ण हनि मुझे दिखा ●

इतना बचन सुनते ही केसी तो आज्ञा पा बिदा हो दंडवत कर बृंदाबन को गया औ कंस ने साल - तुसाल - चानूर - अरिष्ट - ब्योमासुर - आदि जितने मंत्री थे सब को बुला भेजा ● वे आए - तिन्हें समझाकर कहने लगा कि मेरा बैरी पास आय बसा है - तुम अपने जी में सोच बिचार करके मेरे मन का सूल जो खटकता है निकालो ● मंत्री बोले - पृथ्वीनाथ - आप महाबली हो - किस से डरते हैं ● राम कृष्ण का मारना क्या बडी बात है - कुछ चिंता मत करो - जिस छल बल से वे यहां आवें - सोई हम मता बतावें ●

पहले तो यहां भली भांति से एक ऐसी सुंदर रंगभूमि बनवावें - कि जिस की सोभा सुनते ही देखने को नगर नगर गांव गांव के लोग उठ धावें - पीछे महादेव का जज्ञ करवाओ औ होम के लिये बकरे भैंसे मंगवाओ ● यह समाचार सुन सब ब्रज बासी भेट लावेंगे - तिनके साथ राम कृष्ण भी आवेंगे ● उन्हें तभी कोई मल्ल पछाडेगा - कै कोई और ही बली पौरपै मार डालेगा ● इतनी बातके सुनते ही ●●

कहै कंस मन लाय - भलौ मतौ मंत्री कियौ ●
लीने मल्ल बुलाय - आदर कर बीरा दए ●

फिर सभाकर अपने बडे बडे राक्षसों से कहने लगा कि जब हमारे भानजे राम कृष्ण यहां आवें तब तुम में से कोई उन्हें मार डालियो - जो मेरे जी का खटका जाय ● तिन्हें यों समझाय पुनि महावत को बुलाके

बोला - कि तेरे बस में मतवाला हाथी है - तू द्वार पर लिये खडा रहि 
यो - जब वे दोनों आवें औ बार में पांव दें तब तू हाथी से चिरवा 
डालियो - किसी भांति भागने न पावें ● जो विन दोनों को मारेगा - सो मुंह मांगा धन पावेगा ●

ऐसे सब को सुनाय समझाय बुझाय - कातिक बदी चौदस को शिव का यज्ञ ठहराय - कंस ने सांझ समैं अक्रूर को बुलाय अति आवभगति कर घर भीतर ले जाय - ऐक सिंहासन पर अपने पास बैठाय - हाथ पकड अति प्यारसे कहा ● कि तुम यदुकुल में सब से बडे - ज्ञानी - धर्मात्मा - धीर - हो - इस लिये तुम्हें सब जानते मानते हैं - ऐसा कोई नहीं जो तुम्हें देख सुखी न होय - इस से जैसे इंद्र का काज बावन ने जा किया जो छलकर बलि का सारा राज ले दिया औ राजा बलि को पाताल पठाया - तैसे तुम हमारा काम करो तो ऐक बेर बृंदावन जाओ और देवकी के दोनों लडकों को जों बने तों छल बलकर यहां ले आओ ●

कहा है - जो बडे हैं सो आप दुखसह करते हैं पराया काज - तिस में तुम्हें तो है हमारी सब बात की लाज ● अधिक क्या कहेंगे - जैसे बने तैसे उन्हें ले आओ - तो यहां सहज ही में मारे जायगे - कैतो देखते ही चानूर पछाडेगा - कै गज कुवलिया पकड चीर डालेगा - नहीं तो मैंहीं उठ मारूंगा - अपना काज अपने हाथ संवारूंगा ● औ उन दोनों को मार पीछे उग्रसेन को हनूंगा - क्यों कि वह बडा कपटी है - मेरा मरना चाहता है ● फिर देवकी के पिता देवक को आग से जलाय पानी में डबोऊंगा - साथ ही उस के वसुदेव को मार हरि

भक्तों को जड से खोऊंगा ॥ तब निकंटक राजकरूं जुरासिंधु जो मेरा मित्र है प्रचंड - उस के त्रास से कांपते हैं नौखंड ॥ औ नरकासुर-बाणासुर-आदि बडे बडे महाबली राक्षस जिसके सेवक हैं तिस से जा मिलूंगा - जो तुम राम कृष्ण को ले आओ ॥

इतनी बातें कहकर कंस फिर अक्रूर को समझाने लगा कि तुम वृंदावन में जाय नंद के यहां कहियो जो शिव का यज्ञ है - धनुषयज्ञ है औ अनेक अनेक प्रकार के कुतूहल वहां होंयगे ॥ यह सुन नंद उपनंद गोपों समेत बकरे भैंसे ले भेंट देने लावेंगे - तिनके साथ देखने को कृष्ण बलदेव भी आवेंगे ॥ यह तो मैंने तुम्हें उनके लावने का उपाय बताय दिया - आगे तुम सज्ञान हो जो और जुकत बनि आवे सो करि कहियो - अधिक तुम से क्या कहूं ॥ कहा है ॥॥

होय विचित्र बसीठ - जाहि बुद्धि बल आपनौ ॥
पर कारज परढीठ - करहि भरोसौ ना तनौ ॥

इतनी बात के सुनते ही पहले तो अक्रूर ने अपने जीमें बिचारा कि जो मैं अब इसे कुछ भली बात कहूंगा तो यह न मानेगा - इस से उत्तम यही है कि इस समैं इसके मन भाती सुहाती बात कहूं ॥ ऐसे और भी ठौर कहा है कि वही कहिये जो जिसे सुहाय ॥ यों सोच विचार अक्रूर हाथ जोड सिर झुकाय बोला - महाराज - तुम ने भला मता किया - यह वचन हमने भी सिर चढाय मान लिया - होनहार पर कुछ बस नहीं चलता ॥ मनुष अनेक मनोरथ कर धावता है - पर करम का लिखा ही फल पावता है ॥ सोचते हैं और होता है और - कि

स्रीके मन का चीता होता नहीं ॐ आगम बांध तुमने यह बात विचारी है - न जानिये कैसी होय - मैंने तुम्हारी बात मान ली - कल भोर को जाऊंगा औ राम कृष्ण को ले आऊंगा ॐ ऐसे कह कंस से बिदा हो अक्रूर अपने घर आया ॐ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे कंस ना रद संवादो नाम सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॐ ॥ ३७ ॥ ॐॐ 

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - ज्यों श्री कृष्णचंद ने केसी को मार औ नारद ने जाय स्तुति करी - पुनि हरिनें व्योमासुर को हना त्यों सब चरित्र कहता हूं - तुम चित दे सुनो ॐ कि भोर होते ही केसी अति ऊंचा भयावना घोडा बन बृंदावन में आया और लगा लाल लाल आंखेंकर नथने चढाय कान पूंछ उठाय टाप टाप भूं खोदने औ हीं स हींस कांधा कंपाय कंपाय लातें चलाने ॐ

उसे देखते ही ग्वाल बालों ने भय खाय भाग श्री कृष्ण से जा कहा - वे सुन के वहां आए - जहां वह था औ विसे देख लडने को फेंट बांध ताल ठोक सिंह की भांति गरजकर बोले - अरे - जो तू कंस का बडा प्रीतम है औ घोडा बन आया है तो और के पीछे क्यों फिरता है ॐ आ मुज से लड जो तेरा बल देखूं ॐ दीप पतंग की भांति कब तक फिरेगा - तेरी मृत्यु तो निकट आन पहुंची है ॐ यह वचन सुन के सी कोपकर अपने मन में कहने लगा कि आज इस का बल देखूंगा औ पकड ईख की भांति चबाय कंस का कारजकर जाऊंगा ॐ

इतना कह मुंह बायके ऐसे दौडा कि मानो सारे संसार को खा जा

यगा - आते ही पहले जों उन ने श्री कृष्ण पर मुंह चलाया तों उन्हों ने ऐक बेर तो धकेलकर पीछे को हटाया - जब दूसरी बेर वह फिर संभलके मुख फैलाय धाया - तब श्री कृष्ण ने अपना हाथ उसके मुंह में डाल लोह लाठ सा कर ऐसा बढाया - कि जिस ने विस के दसो द्वार जा रोके - तब तो केसी घबराकर जी में कहने लगा कि अब देह फटती है - यह कैसी भई अपनी मृत्यु आप मुंह में ली - जैसे मछली बंसी को निगल प्रान देती है - तैसे मैंने भी अपना जीव खोया ●

इतना कह उसने बहुतेरे उपाय हाथ निकालने को किये पर ऐक भी काम नआया ● निदान सांस रुककर पेट फट गया - तो पछाड खायके गिरा तब - उस के शरीर से लोहू नदी की भांति बह निकला ● तिस समैं ग्वाल बाल आय आय देखने लगे औ श्री कृष्णचंद आगे जाय बन में ऐक कदम की छांह तले खडे हुऐ ●

इस बीच बीन हाथ में लिये नारद मुनि जी आन पहुंचे - प्रनाम कर खडे होय बीन बजाय श्री कृष्णचंद की भूत भविष्य की सब लीला औ चरित्र गायके बोले कि कृपा नाथ - तुम्हारी लीला अपरंपार है - इतनी किस में सामर्थ है जो आप के चरित्रों को बखाने - पर तुम्हारी दया से मैं इतना जानता हूं कि आप भक्तों को सुख देने के अर्थ औ साधों की रक्षा के निमित्त औ दुष्ट असुरों के नाश करने के हेतु बार बार औतार ले संसार में प्रगट हो भूमि का भार उतारते हो ●

इतना बचन सुनते ही प्रभु ने नारद मुनि को तो बिदा दी - वे दंडवत कर सिधारे औ आप सब ग्वाल बाल सखाओं को साथ लिये - ऐक

बड के तले बैठ पहले तो किसी को मंत्री - किसी को प्रधान - किसी को सेनापति बनाय आप राजा हो राज रीति के खेल खेलने लगे औ पीछे आंख मिचौली ● इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि पृथ्वीनाथ ●●

मारयौ केसी भोरही - सुनी कंस यह बात ●
व्योमासुर सों कहतु है - झखत कंपत गात ●

अरि कंदन व्योमासुर बली ● तेरी जग में कीरति भली ●
ज्यों राम के पवन कौ पूत ● त्यों हौं तू मेरे यम दूत ●
बसुदेव के पूत हनि ल्याव ● आज काज मेरो करि आव ●

यह सुन कर जोड व्योमासुर बोला महाराज - जो बसायगी सो करूंगा आज - मेरी देह है आपही के काज ● जो जीके लोभी हैं - तिन्हें स्वामी के अर्थ जी देते आती है लाज ● सेवक औ स्त्री को तो इसी में जस धरम है जो स्वामी के निमित्त प्रान दे ● ऐसे कह कृष्ण बलदेव पर बीडा उठाय कंस को प्रनाम कर व्योमासुर वृंदाबन को चला ● बाट में जाय ग्वाल का भेष बनाय चला चला वहां पहुंचा - जहां हरि ग्वाल बाल सखाओं के साथ आंख मिचौली खेल रहे थे ● जातेही दूर से जब उस ने हाथ जोड श्री कृष्णचंद से कहा महाराज - मुझे भी अपने साथ खिलाओ तब हरि ने उसे पास बुलाकर कहा - तू अपने जी में किसी बात की हौंस मत रख जो तेरा मन माने सो खेल हमारे संग खेल ● यों सुन वह प्रसन्न हो बोला कि बृक मेंढे का खेल भला है ● श्री कृष्णचंद ने मुसकरायके कहा बहुत अच्छा - तू बन भेडिया औ सब

ग्वाल बाल होवें मेंढे ● सुनते ही फूलकर व्योमासुर तो ग्वारो हुआ, औ ग्वाल बाल बने मेंढे - मिलकर खेलने लगे ●

तिस समैं वह असुर एक एक को उठा ले जाय औ पर्वत की गुफा में रख उस के मुंह पर आडी सिला धर मूंदके चला आवे ● ऐसे जब सब को वहां रख आया औ अकेले श्री कृष्ण रहे - तब ललकारकर बोला कि आज कंस का काज सारूंगा - औ सब यदुबंसियों को मारूंगा ● यों कह ग्वालका भेष छोड सचमुच भेडिया बन जों हरि पर झपटा तों उन्हों ने उस को पकड गला घोंट मारे घूंसों के यों मार पटका - कि जैसे यज्ञ के बकरे को मार डालते हैं ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे व्योमासुर बधोनाम अष्टत्रिंशोध्यायः ● ॥ ३८ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज - कार्तिक बदी द्वादशी को तो केसी औ व्योमासुर मारा गया और त्रयोदशी को भोर के तडके ही - अक्रूर कंस के पास आय बिदा हो रथ पर चढ अपने मन में यों बिचारता बृंदाबन को चला - कि ऐसा मैं ने क्या जप-तप-यज्ञ-दान-तीरथ-ब्रत - किया है - जिस के पुन्य से यह फल पाऊंगा ● अपने जाने तो इस जन्मभर कभी हरि का नाम नहीं लिया - सदा कंस की संगति में रहा - भजन का भेद कहां पाऊं ● हां अगले जन्म कोई बडा पुन्य किया हो-उस धर्म के प्रताप का यह फल हो तो हो-जो कंस ने मुझे श्री कृष्णचंद आनंद कंद के लेने को भेजा है - अब जाय उनका दरसन पाय जन्म सुफल करूंगा ●●

हाथ जोरिकै पायन परिहौं ● पुनि पग रेनु सीस पर धरिहौं ●
पाप हरन जेई पग आहि ● सेवत श्री ब्रह्मादिक ताहि ●
जे पग काली के सिर परे ● जेपग कुच चंदन सौं भरे ●
नाचे रास मंडली आछे ● जे पग डोलें गायन पाछे ●
जा पग रेनु अहिल्या तरी ● जा पग तें गंगा नीसरी ●
बलि छलि कियौ इंद्र कौ काज ● ते पग हौं देखौंगो आज ●
मो कौं सगुन होत हैं भले ● मृग के झुंड दाहने चले ●

महाराज - ऐसे बिचार फिर अक्रूर अपने मन में कहने लगा - कि कहीं मुझे वे कंस का दूत तो न समझें ● फिर आपही सोचा कि जिनका नाम अंतर जामी है - वे तो मन की प्रीति मानते हैं औ सब मित्र शत्रु को पहचानते हैं - ऐसा कभी न समझेंगे - बरन मुझे देखते ही गले लगाय दया कर अपना कोमल कंवल सा कर मेरे सीस पर धरेंगे ● तब मैं उस चंद्र बदन की सोभा इकटक निरख अपने नैन चकोरों को सुख दूंगा - कि जिस का ध्यान ब्रह्मा रुद्र इंद्र आदि सब देवता सदा करते हैं ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज - इसी भांति सोच बिचार करते रथ हांके इधर से तो अक्रूर जी गये औ उधर बन से गौ चराय - ग्वाल बाल समेत कृष्ण बलदेव भी आये - तो इन से उन से बृंदाबन के बाहर ही भेट भई ● हरि छबि दूर से देखते ही अक्रूर रथ से उतर अति अकुलाय दौड उन के पांओं पर जा गिरा - औ ऐसा मगन हुआ कि मुंह से

बोल न आया - महा आनंद कर नैनों से जल बरसावने लगा - तब श्री कृष्ण जी उसे उठाय अति प्यार से मिल हाथ पकड घर लिवाय ले गये ● वहां नंदराय अक्रूर जी को देखते ही प्रसन्न हो उठकर मिले औ बहुत सा आदर मान किया - पांव धुलवाय आसन दिया ●●

लिये तेल मरदनियां आये ● उबटि सुगंध चुपरि अन्हवाये ●
चौका पटा जसोदा दियौ ● षट रस रुचि सों भोजन कियौ ●

जब अचायके पान खाने बैठे तब नंदजी उन से कुशल क्षेम पूछ बोले - कि तुम तो यदुबंसियों में बडे साध हो - सदा अपनी बडाई से रहे हो - कहो अब कंस दुष्ट के पास कैसे रहते हो औ वहां के लोगों की क्या गति है - सो सब भेद कहो ● अक्रूर जी बोले ●●

जब तें कंस मधुपुरी भयौ ● तब तें सबही कौं दुख दयौ ●
पूछौ कहा नगर कुसलात ● परजा दुखी होत है गात ●
जौ लौं है मथुरा में कंस ● तौलौं कहां बचै यदुवंस ●
पसु मेंढे छेरीन कौ - ज्यौं खटीक रिपु होइ ●
त्यौं परजा कौ कंस है - दुख पावें सब कोइ ●

इतना कह फिर बोले कि तुम तो कंस का व्योहार जानते हो हम अधिक क्या कहेंगे ● इति श्री लाल कृत प्रेम सागरे अक्रूर वृंदावन गमनो नाम एकोनचत्वारिंशोध्यायः ● ॥ ३९ ॥ ●●

———●●●●●●●●●●●●●———

श्री शुकदेव जी बोले कि पृथ्वीनाथ - जब नंद जी बातें कर चुके तब अक्रूर को कृष्ण बलराम सैन से बुलाय अलग ले गये ●●

आदर कर पूछी कुशलात ● कहौ कका मथुरा की बात ●
हैं वसुदेव देवकी नीके ● राजा वैर पस्यौ तिनहीं के ●
अति पापी है मामा कंस ● जिन खोयौ सिगरौ यदुबंस ●

कोई यदुकुल का महारोग जन्मले आया है - तिसी ने सब यदुवंसियों को सताया है ● औ सच पूछो तो वसुदेव देवकी हमारे लिये इतना दुख पाते हैं - जो हमें न छिपाते तो वे इतना दुख न पाते ● यों कह कृष्ण फिर बोले ●●

तुमसों कहा कहत उनि कह्यौ ● तिन कौ सदा चहनी हौं रह्यौ ●
करतु होंयगे सुरत हमारी ● संकट में पावत दुख भारी ●

यह सुन अक्रूर जी बोले कि कृपानाथ - तुम सब जानते हो - क्या कहूंगा कंस की अनीति - जिस की किसी से नहीं है प्रीति ● वसुदेव औ उग्रसेन को नित मारने का बिचार किया करता है - पर वे आज तक अपनी प्रारब्ध से बँच रहे हैं और जद से नारद मुनि आय आप के होने का सब समाचार बुझाय के कह गये हैं - तद से वसुदेव जी को बेडी हथकडी दे महा दुख में रक्खा है औ कल उस के यहां महादेव का यज्ञ है - औ धनुष धरा है - सब कोई देखने को आवेंगे - सो तुम्हें बुलाने को मुझे भेजा है यह कहकर - कि तुम जाय राम कृष्ण समेत नंदराय को यज्ञ की भेट सुद्धां लिवाय लाओ - सो मैं तुम्हें लेने को आया हूं ● इतनी बात अक्रूर जी से सुन राम कृष्ण ने आ नंदराय से कहा ●●

कंस बुलाये हैं सुनौ तात ● कही अक्रूर कका यह बात ●

गोरस मेंढे छेरी लेउ ॥ धनुष यज्ञ है ताकौं देउ ॥
सब मिल चलौ साथ आपने ॥ राजा बोले रहत न बने ॥

जब ऐसे समझाय बुझायकर श्री कृष्णचंद जी ने नंद जी से कहा - तब नंद राय जी ने उसी समैं ढंढोरिये को बुलवाय सारे नगर में यों कह डौंडी फिरवाय दी - कि कल सबेरे ही सब मिल मथुरा को जांयगे - राजाने बुलाया है ॥ इस बातके सुन्ने से भोर होतेही भेट ले ले सकल बृजबासी आन पहुंचे औ नंद जी भी दूध - दही - माखन - मेंढे - बकरे - भैंसे - ले सगड जुतवाय उनके साथ हो लिये - और कृष्ण बलदेव भी अपने ग्वाल बाल सखाओं को साथ ले रथ पर चढे ॥॥

आगे भये नंद उपनंद ॥ सब पाछैं हलधर गोविंद ॥

श्री शुकदेव जी बोले कि पृथ्वीनाथ-ऐका एकी श्री कृष्णचंद का चलना सुन सब ब्रज की गोपियां - अति घबराय व्याकुल हो घर छोड हडबडाय उठ धाईं - और कुढती झखती गिरती पडती वहां आईं - जहां श्री कृष्णचंद का रथ था ॥ आतेही रथ के चारों ओर खडी हो हाथ जोड बिनती कर कहने लगीं - हमें किस लिये छोडते हो ब्रजनाथ - सर्वस दिया है तुम्हारे हाथ ॥ साध की तो प्रीति कभी घटती नहीं - कर की सी रेखा सदा रहती है - औ मूढकी प्रीति नहीं ठहरती - जैसे बालू की भींति ॥ ऐसा तुम्हारा क्या अपराध किया है जो हमें पीठ दिये जाते हो ॥ यों श्री कृष्णचंद को सुनाय फिर गोपियां अक्रूर की ओर देख बोलीं ॥॥

यह अक्रूर क्रूर है भारी ॥ जानी कछू न पीर हमारी ॥

जा बिन छिन सब होति अनाथ ● ताहि लेचल्यौ अपने साथ ● 

कपटी क्रूर कठिन मन भयौ ● नाम अक्रूर वृथा किन दयौ ● 

हे अक्रूर कुटिल मति हीन ● क्यौं दाहत अबला आधीन ●

ऐसे कडी कडी बातें सुनाय सोच संकोच छोड हरि का रथ पकड आपस में कहने लगीं-मथुरा की नारियां अति चंचल - चतुर - रूप-गुन - भरी हैं - उन से प्रीति कर गुन औ रस के बस हो वहां हीं रहेंगे विहारी - तब काहे को करेंगे सुरत हमारी ● उन्हीं के बडे भाग हैं जो प्रीतम के संग रहेंगीं - हमारे जप तप करने में ऐसी क्या चूक पडी थी-जिस से श्री कृष्णचंद बिछडते हैं-यों आपस में कह फिर हरि से कहने लगीं - कि तुम्हारा तो नाम है गोपीनाथ - किस लिये नहीं ले चलते हमें अपने साथ ●●

तुम बिन छिन छिन कैसें कटै ● पलक ओट भये छाती फटै ●

हित लगाय क्यौं करत बिछोह ● निठुर निर्दई धरत न मोह ●

ऐसे तहां जंपैं सुंदरी ● सोचैं दुख समुद्र में परी ●

चाहि रहीं इकटक हरि ओर ● ठगी मृगी सी चंद चकोर ●

परहिं नैन तें आंसू टूट ● रहीं बिथुरि लट मुख पर छूट ●

श्री शुकदेव मुनि बोले कि राजा - उस समैं गोपियों की तो यह दसा थी - जो मैंने कही औ जसोदा रानी ममता कर पुत्र को कंठ लगाय रो रो अति प्यार से कहती थीं - कि बेटा - जै दिन में तुम वहां से फिर आओ - तै दिन के लिये कलेऊ ले जाओ - तहां जाय किसी से प्रीति मत कीजो - बेग आय अपनी जननी को दरसन दीजो ● इतनी

बात सुन श्री कृष्ण रथ से उतर सब को समझाय बुझाय - मा से बिदा होय दंडवत कर आसीस ले - फिर रथ पर चढ चले - तिस काल इधर से तो गोपियों समेत जसोदा जी अति अकुलाय रो रो कृष्ण कृष्ण कर पुकारती थीं औ उधर से श्री कृष्ण रथ पर खडे पुकार पुकार कहते जाते थे कि तुम घर जाओ किसी बात की चिंता मत करो - हम पांच चार दिन में हीं फिर कर आते हैं ॥

ऐसे कहते कहते औ देखते देखते जब रथ दूर निकल गया औ धूलि आकाश तक छाई - तिस में रथ की ध्वजा भी न दी दिखाई - तब निरास हो एक बेर तो सब की सब नीर बिन मीन की भांति तडफडाय मूर्छा खाय गिरीं - पीछे कितनी एक बेर के - चेत कर उठीं औ अवध की आस मन में धर - धीरज कर उधर जसोदा जी तो सब गोपियों को ले बृंदावन को गईं औ इधर श्री कृष्णचंद सब समेत चले चले यमुना तीर पर आ पहुंचे - तहां ग्वाल बालों ने जल पिया औ हरि ने भी एक बड़ की छांह में रथ खड़ा किया ॥ जद अक्रूर जी न्हाने का बिचार कर रथ से उतरे - तद श्री कृष्णचंद ने नंदराय से कहा कि आप सब ग्वाल बालों को ले आगे चलिये - चचा अक्रूर स्नान कर लें तो पीछे से हम भी आ मिलते हैं ॥

यह सुन सब को ले नंद जी आगे बढे औ अक्रूर जी कपड़े खोल हाथ पांव धोय - आचमन कर तीर पर आय - नीर में पैठ डुबकी ले पूजा - तर्पन - जप - ध्यान कर फिर चुभकी मार आंख खोल जल में देखें तो वहां रथ समेत श्री कृष्ण दृष्ट आये ॥

पुनि उन देख्यौ सीस उठाय • तिहिं ठां वैठे हैं यदुराय •
करै अचंभौ हिये विचारि • वे रथ ऊपर दूर मुरारि •
बैठे दोऊ बर की छांह • तिनहीं कौं देखौं जल मांह •
बाहर भीतर भेद न लहौं • सांचौ रूप कौन सौं कहौं •

महाराज - अक्रूर जी तो एकही मूरत बाहर भीतर देख देख सोचतेही थे - कि इस बीच पहले तो श्री कृष्णचंद्र जी ने चतुर्भुज हो - शंख - चक्र - गदा - पद्म - धारन कर - सुर - मुनि - किन्नर - गंधर्व - आदि सब भक्तों समेत जल में दरसन दिया औ पीछे शेषशाई हो • तो अक्रूर देख और भी भूल रहा • इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे अक्रूर दर्शनो नाम चत्वारिंशोऽध्यायः • ॥ ४० ॥

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - पानी में खडे खडे अक्रूर को कितनी एक बेर में प्रभु का ध्यान करने से ज्ञान ऊआ - तो हाथ जोड प्रनाम कर कहने लगा - कि करता हरता तुम्हीं हौ भगवंत • भक्तों के हेतु संसार में आय धरते हो भेष अनंत - और सुर नर मुनि तुम्हारे अंस हैं - तुम हीं से प्रगट हो - तुम्हीं में ऐसे समाते हैं - जैसे जल सागर से निकल सागर में समाता है • तुम्हारी महिमा है अनूप - कौन कह सके सदा रहते हो बिराट सरूप • सिर स्वर्ग - पृथ्वी पांव - समुद्र पेट - नाभि आकाश - बादल केस - वृक्ष रोम - अग्नि मुख - दसों दिसा कान - नैन चंद्र औ भानु - इंद्र भुजा - बुद्धि ब्रह्मा - अहंकार रुद्र - गरजन बचन - प्रान पवन - जल बीर्य - पलकलगाना

रात दिन - इस रूप से सदा बिराजते हो - तुम्हें कौन पहचान सके - इस भांति स्तुति कर अक्रूर ने प्रभु के चरन का ध्यान धर कहा कृपा नाथ - मुझे अपनी सरन में रक्खो ॥ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे अक्रूर स्तुति करनो नाम एकचत्वारिंशोऽध्याय ॥ ४१ ॥

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - जद श्री कृष्णचंद ने नटमाया की भांति जल में अनेक रूप दिखाय हर लिये - तद अक्रूर जी ने नीर से निकल तीर पर आ हरि को प्रनाम किया ॥ तिस काल नंद लाल ने अक्रूर से पूछा कि कका - सीत समैं जल के बीच इतनी बेर क्यों लगी - हमें यह अति चिंता थी तुम्हारी - कि चचा ने किस लिये बाट चलने की सुधि बिसारी - क्या कुछ अचरज तो जा कर नहीं देखा - यह समझायके कहो - जो हमारे मन की दुबधा जाय ॥

सुनि अक्रूर कहै जोरे हाथ ॥ तुम सब जानत हौ ब्रज नाथ ॥
भलो दरस दीनौं जल माहिं ॥ कृष्ण चरित कौ अचरज नाहिं ॥
मोहिं भरोसो भयौ तिहारौ ॥ बेग नाथ मथुरा पग धारौ ॥

अब यहां बिलंब न करिये शीघ्र चल कारज कीजे ॥ इतनी बात के सुनते ही हरि झट रथ पर बैठ अक्रूर को साथ ले चल खडे हुए - औ नंद आदि जो सब गोप ग्वाल आगे गये थे उन्हों ने जा मथुरा के बाहार डेरे किये - औ कृष्ण बलदेव की बाट देख देख अति चिंताकर आपस में कहने लगे - इतनी अबेर न्हाते क्यों लगी और किस लिये अबतक नहीं आए हरी - कि इस बीच चले चले आनंद कंद श्री कृष्ण

नंद भी आय मिले ● उस समै हाथ जोड सिर झुकाय बिनतीकर अक्रूर जी बोले कि ब्रजराज - अब चलके मेरा घर पवित्र कीजे औ आप ने भक्तों को दरस दिखाय सुख दीजे ● इतनी बात के सुनते ही हरि ने अक्रूर से कहा ●●

पहले सोध कंस कौ देऊ ● तब अपनौ दिखरावौ गेऊ ●
सब की बिनती कहौ जु जाय ● सुनि अक्रूर चले सिर नाय ●

चले चले कितनी एक बेर में रथ से उतर कर वहां पहुंचे - जहां कंस सभाकिये बैठा था ● इन को देखते ही सिंहासन से उठ नीचे आय अति हित कर मिला औ बडे आदर मान से हाथ पकड ले जाय सिंहासन पर अपने पास बैठाय - इनकी कुशल क्षेम पूछ बोला ● जहां गये थे वहां की बात कहो ●●

सुनि अक्रूर कहै समझाय ● ब्रज की महिमा कही नजाय ●
कहा नंद की करौं बडाई ● बात तुम्हारी सीस चढाई ●
राम कृष्ण दोऊ हैं आए ● भेट सबै ब्रजवासी लाए ●
डेरा किये नदी के तीर ● उतरे गाडा भारी भीर ●

यह सुन कंस प्रसन्न हो बोला - अक्रूर जी - आज तुमने हमारा बडा काम किया जो राम कृष्ण को ले आये - अब घर जाय बिश्राम करो ●

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज - कंस की आज्ञापाय अक्रूर जी तो अपने घर गये - बहु सोच बिचार करने लगा और जहां नंद उपनंद बैठे थे - तहां उन्हीं से हलधर औ गोबिंद ने पूछा - जो हम आप की आज्ञा पावें तो नगर देख

आवें ॥ यह सुन पहले तो नंदराय जी ने कुछ खाने को मिठाई निकाल दी - उन दोनों भाइयों ने मिलकर खाय ली - पीछे बोले - अच्छा जाओ देख आओ - पर बिलंब मत कीजो ॥

इतना बचन नंद महर के मुख से निकलते ही आनंद कर दोनों भाई अपने ग्वाल बाल सखाओं को साथ ले नगर देखने चले ॥ आगे बढ देखें तो नगर के बाहर चारों ओर बन उपवन फूल फल रहे हैं - तिन पर पंछी बैठे अनेक अनेक भांति की मन भावन बोलियां बोलते हैं - औ बडे बडे निर्मल जल भरे सरोवर हैं - उन में कंवल खिले हुए - जिन पर भौंरों के झुंड के झुंड गूंज रहे - औ तीर में हंस सारस आदि पक्षी कलोलें कर रहे ॥ सीतल सुगंध सनी मंद पौन बह रही - औ बडी बडी बाडियों की बाडों पर पनवाडियां लगी हुईं ॥ बीच बीच बरन बरन के फूलों की क्यारियां कोसों तक फूली हुईं - ठौर ठौर इंदारों बावडियों पर रहट परोहे चल रहे - माली मीठे सुरों से गाय गाय जल सींच रहे ॥

यह सोभा बन उपबन की निरख हरष प्रभु सब समेत मथुरा पुरी में पैठे ॥ वह पुरी कैसी है कि जिस के चहुं ओर तांबे का कोट - औ पक्की चुआन चौडी खाई - स्फटक के चार फाटक - तिन में अष्ट धाती कि वाड कंचनखचित लगे हुए - औ नगर में बरन बरन के राते पीले हरे धौले पंचखने सतखने मंदिर ऊंचे ऐसे कि घटा से बातें कर रहे - जिन के सोने के कलस कलसियों की जोति बिजली सी चमक रही - ध्वजा पताका फहराय रहीं - जाली झरोखों मोखों से धूप की

सुगंध आय रही ● द्वार द्वार पर केले के खंभ औ सुवरन कलस स पल्लव भरे धरे ऊऐ ● तोरन बंदनवार बंधी ऊई - घर घर बाज न बाज रहे - औ एक ओर भांति भांति के मनि मय कंचन के मंदिर राजा के न्यारेही जगमगाय रहे - तिनकी सोभा कुछ बरनी नहीं जाती ● ऐसी जो सुंदर सुहावनी मथुरा पुरी तिसे श्री कृष्ण बलदेव ग्वाल बालों को साथ लिये देखते चले ●●

परी धूम मथुरा नगर - आवत नंद कुमार ●
सुनि धाये पुर लोग सब - गृह कौ काज बिसार ●

और जो मथुरा की सुंदरी ● सुनत कान अति आतुर खरी ●
कहैं परस्पर बचन उचारि ● आवत हैं बलभद्र मुरारि ●
तिन्हैं अक्रूर गये हे लैन ● चलऊ सखी अब देखहिं नैन ●
कोऊ खात न्हात तें भजै ● गुहत सीस कोऊ उठि तजै ●
काम केलि पिय की बिसरावै ● उलटे भूषन बसन बनावै ●
जैसें हीं तैसें उठि धाईं ● कृष्ण दरस देखन कों आईं ●

लाज कान डर डार - कोऊ खिरकिन कोऊ अटन पर ●
कोऊ खरी दुवार - कोऊ दौरी गलियन फिरत ●

ऐसे जहां तहां खडी नारि ● प्रभुहिं बतावैं बांह पसारि ●
नील बसन गोरे बलराम ● पीतांबर ओढे घनस्याम ●
ये भानजे कंस के दोऊ ● इनते असुर बचौ नहीं कोऊ ●
सुनत ऊती पुरुषारथ जिन कौ ● देखऊ रूप नैन भरि तिनकौ ●
पूरब जन्म सुकृत कोऊ कीनौं ● सो विधि यह दरसन फल दीनौं ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज - इसी रीत से सब पुरबासी क्या स्त्री क्या पुरुष अनेक अनेक प्रकार की बातें कह कह दरसन कर मगन होते थे - और जिस हाट - बाट - चौहटे - में हो सब समेत कृष्ण बलराम निकलते थे - तहीं अपने अपने कोठों पर खडे इन पर चोवा चंदन छिडक छिडक आनंद से वे फूल बरसावते थे औ ये नगर की सोभा देख देख ग्वाल बालों से यों कहते जाते थे - भैया - कोई भूलियो मत औ जो कोई भूले तो पिछले डेरों पर जाइयो ● इस में कितनी एक दूर जायके देखते क्या हैं - कि कंस के धोबी धोए कपडों की लादियां लादे-पोटें मोटें लिये-मद पिये-रंग राते कंस जस गाते-नगर के बाहर से चले आते हैं ● उन्हें देख श्री कृष्णचंद ने बलदेव जी से कहा कि भैया - इन के सब चीर छीन लीजिये-औ आप पहर ग्वाल बालों को पहराय बचें सो लुटाय दीजिये ● भाई को यों सुनाय सब समेत धोबियों के पास जाय हरि बोले ●●

हम कों उज्जल कपरा देऊ ● राजहि मिलि आवें फिर लेऊ ●
जो पहिरावनि न्रप सों पै हैं ● ता में तें कछु तुम कों दै हैं ●

इतनी बात के सुनते ही तिन में से जो बडा धोबी था सो हंसकर कहने लगा ●●

राखैं घरी बनाय - ह्वै आवो न्रप द्वार लों ●
तब लीजो पट आय - जो चाहो सो दीजियो ●

बन बन फिरत चरावत गैया ● अहीर जाति कामरी उढैया ●
नट को भेष बनायकै आए ● न्रप अंबर पहरन मन भाए ●

जुरि कै चले न्टपति के पास ● पहिरावनि लैवे की आस ● 

नेक आस जीवन की जोऊ ● खोवन चहत अवहि पुनि सोऊ ● 

यह बात धोबी की सुनकर हरि ने फिर मुसकुराय कहा - कि हम तो सूधी चाल से मांगते हैं तुम उलटी क्यौं समझते हो - कपडे देने से कुछ तुम्हारा न बिगडेगा - वरन जस लाभ होगा ● यह वचन सुन रजक झुंझलाकर बोला - राजा के वागे पहरने का मुहं तो देखो - मेरे आगे से जा - नहीं अभी मार डालता हूं ● इतनी वात के सुनते ही क्रोध कर श्री कृष्णचंद ने तिरछा कर एक हाथ मारा कि तिस का सिर भुट्टा सा उड गया - तब जितने उस के साथी औ टहलुए थे सब के सब पोटें मोटें लादियां छोड अपना जीव ले भागे - औ कंस के पास जा पुकारे ● यहां श्री कृष्ण जी ने सब कपडे ले लिये औ आप पहन भाई को पहराय ग्वाल बालों को वांट - रहे सो लुटाय दिये ● तिस समैं ग्वाल बाल अति प्रसन्न हो हो लगे उलटे पुलटे वस्त्र पहनने ●●

कटि कस पग पहरें गंगा - हाथन मेलें वांह ●

बसन भेद जानें नहीं - हंसत कृष्ण मन मांह ●

औ वहां से आगे बढे तो एक सूजी ने आय दंडवत कर खडे होय कर जोडके कहा महाराज - मैं कहने को तो कंस का सेवक कहलाता हूं पर मन से सदा आप ही का गुन गाता हूं - दया कर कहिये तो बागे पहराऊं - जिस से तुम्हारा दास कहाऊं ●

इतनी वात उस के मुख से निकलते ही अंतर जामी श्री कृष्णचंद

ने विसे अपना भक्त जान निकट बुलायके कहा - तू भले समैं आया - अच्छा पहराय दे ● तब तो उस ने झट पट ही खोल उधेड़ कतर छां ट सीकर ठीक ठाक बनाय चुन चुन राम कृष्ण समेत सब को बागे पहरा य दिये ● उस काल नंदलाल विसे भक्ति दे साथ ले आगे चले ●●

तहां सुदामा माली आयौ ● आदर कर अपने घर लायौ ●
सबही कौं माला पहराई ● माली के घर भई बधाई ●

इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे पुरः प्रवेशो नाम द्विचत्वारिंशोध्यायः ● ॥ ४२ ॥ ●●

---

श्री सुकदेव जी बोले कि पृथीनाथ - माली की लगन देख मगन हो श्री कृष्णचंद उसे भक्ति पदारथ दे - वहां से आगे जाय देखें तो सों हीं गली में एक कुबडी केसर चंदन से कटोरियां भरे थाली के बीच धरे लिये हाथ में खडी है ● उस से हरि ने पूछा तू कौन है औ यह कहां ले चली है ● वह बोली - दीन दयाल - मैं कंस की दासी हूं - मेरा नाम है कुबजा - नित चंदन घिस कंस को लगाती हूं - औ मन से तुम्हारे गुन गाती हूं ● तिसी के प्रताप से आज आपका दरसन पाय जन्म स्वार्थिक किया - औ नैनों का फल लिया ● अब दासी का मनोर थ यह है जो प्रभु की आज्ञा पाऊं - तो चंदन अपने हाथों चढाऊं ●

उस की अति भक्ति देख हरि ने कहा - जो तेरी इसी में प्रसन्नता है तो लगाव ● इतना बचन सुनते ही - कुबजा ने बडे राव चाव से चि त लगाय जब रामकृष्ण को चंदन चरचा - तब श्री कृष्णचंद ने उस के

मन की लाग देख दयाकर पांव पर पांव धर - दो उंगली ठोढी के त
ले लगाय उचकाय तिसे सीधा किया ● हरि का हाथ लगते ही वह
महा सुंदरि हुई औ निपट विनती कर प्रभु से कहने लगी कि कृपा
नाथ - जो आप ने कृपा कर इस दासी की देह सूधी की - तोंहीं दया
कर अब चलके घर पवित्र कीजे - औ विश्राम ले दासी को सुख दीजे
● यह सुन हरि उस का हाथ पकड मुसकुरायके कहने लगे ●●

तैं श्रम दूर हमारो कियौ ● मिल कै सीतल चंदन दियौ ●
रूप सील गुन सुंदरि नीकी ● तो सों प्रीति निरंतर जीकी ●
आय मिलों गौ कंसहि मारि ● यों कह आगे चले मुरारि ●

औ कुबजा अपने घर जाय केसर चंदन से चौक पुराय - हरि के मिल
ने की आस मन में रख मंगलाचार करने लगी ●●

आवें तहां मथुरा की नारि ● करैं अचंभौ कहैं निहारि ●
धनि धनि कुबजा तेरौ भाग ● जाकौं बिधना दियौ सुहाग ●
ऐसौ कहा कठिन तप कियौ ● गोपी नाथ भेट भुज लियौ ●
हम नीके नहिं देखे हरी ● तो कों मिले प्रीति अति करी ●
ऐसें तहां कहत सब नारि ● मथुरा देखत फिरत मुरारि ●

इस बीच नगर देखते देखते सब समेत प्रभु धनुष पौर पर जा पहुं
चे ● इन्हें अपने रंग राते माते आते देखते ही पौरिये रिसायके बोले
- इधर किधर चले आते हो गंवार - दूर खडे रहो - यह है राजद्वा
र ● द्वारपालों की बात सुनी अनसुनीकर हरि सब समेत दर्राने व
हां चले गये - जहां तीन ताड लंबा अति मोटा भारी महादेव का धनुष

धरा था ● जातेही उठ उठाय चढाय सहज सुभावही खैंच यों तो ड डाला कि जों हाथी गांडा तोडता है ●

इस में सब रखवाले जो कंस के बिठाये धनुष की चौकी देते थे सो चढ आये ● प्रभुने उन्हें भी मार गिराया ● तिस समैं पुरबासी तो यह चरित्र देख बिचारकर निसंकहो आपस में यों कहने लगे - कि देखो राजा ने घरबैठे अपनी मृत्यु आप बुलाई है - इन दोनों भाइयों के हाथ से अब जीता न बचेगा - और धनुष टूटने का अति शब्द सुन कंस भय खाय अपने लोगों से पूछने लगा - कि यह महा शब्द काहेका ऊआ ● इस बीच कितने एक लोग राजा के जो दूर खडे देखते थे - वे मूड फिकार यों जा पुकारे कि महाराज की दुहाई - राम कृष्ण ने आय नगर में बडी धूम मचाई ● शिव का धनुष तोड सब रखवालों को मार डाला ●

इतनी बात के सुनते ही कंस ने बऊत से जोधाओं को बुलाके कहा - तुम इनके साथ जाओ औ कृष्ण बलदेव को छल बल कर अभी मार आओ ● इतना बचन कंस के मुख से निकलते ही ये अपने अपने अस्त्र शस्त्र ले वहां गये जहां वे दोनों भाई खडे थे ● इन्हों ने तिन्हें ज्यों ललकारा - त्यों तिन्हों ने इन सब को भी आय मार डाला - जब हरि ने देखा कि यहां कंस का सेवक अब कोई नहीं रहा - तब बलराम जी से कहा कि भाई - हमें आए बडी बेर ऊई - डेरें पर चला चाहिये क्यों कि बाबा नंद हमारी बाट देख देख भावना करते होंयगे ● यों कह सब ग्वाल बालों को साथ ले प्रभु बलराम समे

त चल कर वहां आये - जहां डेरे पडे थे ● आते ही नंद महर से तो कहा कि पिता - हम नगर में जाय भला कुतूहल देख आये - औ गोप ग्वालों को अपने बागे दिखलाये ●●

तब लखि नंद कहै समुझाय ● कान्ह तुम्हारी टेव न जाय ●
ब्रज बन नहीं हमारौ गांव ● यह है कंस राय की ठांव ●
यहां जिन कछू उपद्रव करौ ● मेरी सीख पूत मन धरौ ●

जद नंद राय जी ऐसे समझाय चुके - तद नंदलाल बडे लाड से बोले कि पिता - भूख लगी है जो हमारी माता ने खाने को साथ कर दिया है सो दीजिये ● इतनी बात के सुनते ही उन्हों ने जो पदारथ खाने का साथ आया था सो निकाल दिया ● कृष्ण बलदेव ने ले ग्वाल बालों के साथ मिलकर खाय लिया ● इतनी कथा कथ श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज - इधर तो ये आय परमानंद से खालू कर सोये औ उधर श्री कृष्ण की बातें सुन सुन कंस के चित में अति चिंता हुई - तो न उसे बैठे चैन था न खडे - मन ही मन कुढता था - अपनी पीर किसी से न कहता था ● कहा है ●●

ज्यों काठहि घुन खात है - कोउ न जाने पीर ●
यों चिंता चित में भये - बुधि बल घटत शरीर ●

निदान अति घबराया तब मंदिर में जाय सेज पर सोया - पर उसे मारे डर के नींद न आई ●●

तीन पहर निस जागत गई ● लागी पलक नींद छिन भई ●
तब सपनौ देखौ मन मांह ● फिरे सीस बिन धर की छांह ●

कब हूं नगन रेत में न्हाय ● धावै गदहा चढ़ विष खाय ●
बसे मसान भूत संग लिये ● रक्त फूल की माला हिये ●
बरन रूख देखै चहुं ओर ● तिन पर बैठे बाल किशोर ●

महाराज - जब कंस ने ऐसा सपना देखा तब तो वह अति व्याकुल हो चौंक पडा औ सोच विचार करता उठ कर बाहर आया - अपने मंत्रियों को बुलाय बोला - तुम अभी जाओ रंगभूमि को झडवाय छिडकवाय संवारो और नंद उपनंद समेत सब ब्रज बासियों को औ वसुदेव आदि यदुबंसियों को रंगभूमि में बुलाय बिठाओ - औ सब देस देस के जो राजा आए हैं तिन्हें भी - इतने में भी आता हूं ●

कंस की आज्ञा पाय मंत्री रंगभूमि में आए - उसे झडवाय छिडकवाय तहां पाठंबर छाय बिछाय - ध्वजा पताका तोरन बंदनवार बंधवाय - अनेक अनेक भांति के बाजे बजवाय - सब को बुलाय भेजा ● वे आए औ अपने अपने मंच पर जाय जाय बैठे ● इस बीच राजा कंस भी अति अभिमान भरा अपने मचान पर आय बैठा ● उस काल देवता बिमानों में बैठे आकाश से देखने लगे ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे कंस स्वप्न दरशनो नाम त्रयश्चत्वारिंशोध्यायः ● ॥ ४३ ॥ ●●

●●●●●●●●●●●●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - भोर ही जब नंद उपनंद आदि सब बडे बडे गोप रंगभूमि की सभा में गये - तब श्री कृष्णचंद जी ने बलदेव जी से कहा कि भाई - सब गोप आगे गये - अब बिलंब

न करिये - शीघ्र ग्वाल बाल सखाओं को साथ ले रंगभूमि देखने चलिये ॥ 

इतनी बात के सुनते ही बलराम जी उठ खडे ऊए औ सब ग्वाल सखाओं से कहा कि भाइयो - चलो रंगभूमि की रचना देख आवें ॥ यह बचन सुनते ही तुरंत सब साथ हो लिये - निदान श्री कृष्ण बलराम नटवर भेष किये ग्वाल बाल सखाओं को साथ लिये - चले चले रंगभूमि की पौर पर आय खडे ऊए - जहां दस सहस्र हाथियों का बलवाला मतवाला गज कुवलिया खडा झूमता था ॥॥

देखि मतंग द्वार मतवारौ ॥ गज पाल हि बलराम पुकारौ ॥
सुनो महावत बात हमारी ॥ लेऊ द्वार तें गज तुम टारी ॥
जान देऊ हम कों न्टप पास ॥ नातर ह्वै है गज कौ नास ॥
कहे देत नहिं दोष हमारौ ॥ मत जानें हरि कों तू वारौ ॥

ये त्रिभुवन पति हैं - दुष्टों को मार भूमि का भार उतारने को आए हैं ॥ यह सुन महावत क्रोध कर बोला - मैं जानता हूं - गौ चरायके त्रिभुवन पति भये हैं - इसी से यहां आय बडे सूर की भांति अडे खडे हैं ॥ धनुष का तोडना न समझियो - मेरा हाथी दस सहस्र हाथियों का बल रखता है - जबतक इस से न लडोगे तबतक भीतर न जाने पाओगे ॥ तुमने तो बऊत बली मारे हैं पर आज इस के हाथ से बचोगे तब मैं जानूंगा कि तुम बडे बली हो ॥॥

तबै कोपि हलधर कह्यौ - सुन रे मूढ कुजात ॥
गज समेत पटकौं अबहि मुख संभारि कऊ बात ॥

नेकु न लगि है बार - हाथी मरि जै है अबहि ●
तो सों कहत पुकार - अजहुं मान मेरौ कह्यौ ●

इतनी बात के सुनते ही झुंझलाकर गजपाल ने गज पेला - जों वह बलदेव जी पर टूटा तों इन्होंने हाथ घुमाय एक थपेडा ऐसा मारा कि वह सूंड सकोड चिंघाडमार पीछे हटा ● यह चरित्र देख कंस के बडे बडे जोधा जो खडे देखते थे सो अपने जियें से हारमान मनहीं मन कहने लगे - कि इन महा बलवानों से कौन जीत सकेगा - औ महावत भी हाथी को पीछे हटा जान अति भय मान जी में विचार करने लगा - कि जो ये बालक न मारे जांय तो कंस मुझे भी जीता न छोडेगा ● यों सोच समझ उसने फिर अंकुस मार हाथी को तता किया औ इन दोनों भाइयों पर हूल दिया ● उसने आते ही सूंड से हरि को पकड पछाड खुनसाय जों दांतों से दबाया - तों प्रभु सूक्ष्म शरीर बनाय दांतों के बीच बच रहे ●●

डरपि उठे तिहि काल सब - सुर मुनि पुर नर नारि ●
दुहूं दसन विच ह्वै कढे - बल निधि प्रभु दै तारि ●
उठे गजहि के साथ - बकरि ग्वाल हीं हांकि दै ●
तुरतहिं भये सनाथ - देखि चरित्त सब स्याम के ●

हांक सुनत अति कोप बढायौ ●
झटकि सूंड बकरौं गज धायौ ●
रहे उदर तर दबकि मुरारि ●
गये जानि गज रह्यौ निहारि ●

पाछैं प्रगट फेर हरि टेलौ ●
बलदाऊ आगे तें घेलौ ●
लागे गजहिं खिलावन दोऊ ●
भैचक रहे देख सब कोऊ ●

महाराज - उसे कभी बलराम सूंड पकड खैंचते थे - कभी स्याम पूंछ पकड ● और जब वह इन्हें पकडने को आता था तब ये अलग हो जाते थे ● कितनी एक बेर तक उस से ऐसे खेलते रहे - जैसे बछडों के साथ बालकपन में खेलते थे ● निदान हरि ने पूंछ पकड फिराय उसे दे पटका औ मारे घूंसों के मारडाला - दांत उखाड लिये तब उस के मुंह से लोहू नदी की भांति बह निकला ● हाथी के मरते ही महावत ललकारकर आया ● प्रभुने उसे भी हाथी के पांव तले झट मार गिराया - औ हंसते हंसते दोनों भाई नटवर भेष किये - एक एक दांत हाथी का हाथ में लिये - रंगभूमि के बीच जा खडे हुए ● उस काल नंद लाल को जिन जिन ने जिस जिस भाव से देखा - उस उस को तिसी तिसी भाव से दृष्ट आए ● मल्लोंने मल्ल माना - राजाओं ने राजा जाना - देवताओं ने अपना प्रभु बूझा - ग्वाल बालोंने सखा ● नंद उपनंद ने बालक समझा औ पुर की युवतियों ने रूप निधान ● औ कंसादिक राक्षसों ने काल समान देखा ● महाराज - इनको निहारते ही कंस अति भयमान हो पुकारा - अरे मल्लो - इन्हें पछाड मारो - कै मेरे आगे से टालो ●

इतनी बात जों कंस के मुंह से निकली तों सब मल्ल गुरु सुत चेले

संग लिये - बरन बरन के भेष किये ताल ठोंक ठोंक भिडने को श्री कृष्ण बलराम के चारों ओर घिर आये ● जैसे वे आये तैसे येभी संभल खडे हुए - तब उन में से इन की ओर देख चतुराई कर चानूर बोला ● सुनो आज हमारे राजा कुछ उदास हैं इस से जी बहलाने को तुम्हारा युद्ध देखा चाहते हैं - क्यों कि तुमने बन में रह सब विद्या सीखी है और किसी बात का मन में सोच न कीजे - हमारे साथ मल्ल युद्ध कर अपने राजा को सुख दीजे ●

श्री कृष्ण बोले - राजा जी ने बडी दयाकर हमें बुलाया है आज - हम से क्या सरेगा इनका काज ● तुम अति बली गुनवान - हम बालक अजान - तुम से हाथ कैसे मिलावें ● कहा है ● व्याह बैर औ प्रीति समान से कीजे - पर राजा जी से कुछ हमारा बस नहीं चलता - इस से तुम्हारा कहा मानते हैं - हमें बचा लीजो - बल कर पटक न दीजो ● अब हमें तुम्हें उचित है - जिस में धर्म रहे सो कीजिये औ मिलकर अपने राजा को सुख दीजिये ●●

सुनि चानूर कहै भय खाय ● तुम्हरी गति जानी नहिं जाय ●
तुम बालक मानस नहिं दोऊ ● कीने कपट बली हौ कोऊ ●
खेलत धनुष खंड है कस्यौ ● मास्यौ तुरत कुबलिया तस्यौ ●
तुम सों लरे हानि नहिं होइ ● या बातें जानै सब कोइ ●

इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे कुबलिया बधो नाम चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ● ॥ ४४ ॥ ●●

श्री शुकदेव मुनि बोले कि पृथ्वी नाथ - ऐसे कितनी एक बातें कर ॥ प्रेम० ॥
ताल ठोंक चानूर तो श्री कृष्ण के सोंहीं हुआ - औ मुष्टक बलराम जी ॥ १३७ ॥
से आय भिड़ा ॥ इन से उन से मल्लयुद्ध होने लगा ॥

सिर सों सिर भुज सों भुजा - दृष्ट दृष्टसों जोरि ॥
चरन चरन गहि झपट के - लपटत झपट झकोरि ॥

उस काल सब लोग इन्हें उन्हें देख देख आपस में कहने लगे कि भाइयो - इस सभा में अति अनीति होती है - देखो कहां ये बालक रूपनिधान - कहां ये सबल मल्ल बज्र समान ॥ जो बरजें तो कंस रिसाय - न बरजें तो धर्म जाय - इस से अब यहां रहना उचित नहीं - क्यों कि हमारा कुछ बस नहीं चलता ॥

महाराज - इधर तो ये सब लोग यों कहते थे औ उधर श्री कृष्ण बलराम मल्लों से मल्लयुद्ध करते थे ॥ निदान इन दोनों भाइयों ने उन दोनों मल्लों को पछाड मारा ॥ तिन के मरते ही सब मल्ल आय टूटे ॥ प्रभु ने पल भर में तिन्हें भी मार गिराया ॥ तिस समैं हरि भक्त तो प्रसन्न हो बाजन बजाय बजाय जै जै कार करने लगे - औ देवता आकाश से अपने बिमानों में बैठे कृष्ण जस गाय गाय फूल बरसावने ॥ और कंस अति दुख पाय व्याकुल हो रिसाय अपने लोगों से कहने लगा - अरे - बाजे क्यों बजाते हो - तुम्हें क्या कृष्ण की जीत भाती है ॥

यों कह बोला - ये दोनों बालक बडे चंचल हैं - इन्हें पकड बांध सभा से बाहर ले जाओ औ देवकी समेत उग्रसेन बसुदेव कपटी को

पकड लाओ ॐ पहले उन्हें मार पीछे इन दोनों को भी मार डालो ॐ इतना वचन कंस के मुख से निकलते ही - भक्तों के हितकारी मुरारी सब असुरों को छिन भर में मार उछलके वहां जा चढे - जहां अति ऊंचे मंच पर झिलम पहने-टोप दिये-फरी खांडा लिये-बडे अभिमान से कंस बैठा था ॐ वह इनको काल समान निकट देखते ही भय खाय उठ खडा हुआ औ लगा थरथर कांपने ॐ

मन से तो चाहा कि भागूं - पर मारे लाज के भाग न सका ॐ फरी खांडा संभाल लगा चोट चलाने ॐ उस काल नंद लाल अपनी घात लगाये उस की चोट बचाते थे औ सुर-नर-मुनि-गंधर्व-यह महा युद्ध देख देख भयमान हो यों पुकारते थे - हे नाथ - हे नाथ - इस दुष्ट को बेग मारो ॐ कितनी एक बेर तक मंच पर युद्ध रहा - निदान प्रभु ने सब को दुखित जान उसके केस पकड मंच से नीचे पटका औ ऊपर से आपभी कूदे - कि उसका जीव घट से निकल सटका ॐ तब सब सभाके लोग पुकारे - श्री कृष्णचंद ने कंस को मारा ॐ यह शब्द सुन सुर नर मुनि सब को अति आनंद हुआ ॐॐ

करि अस्तुति पुनि पुनि हरष - बरख सुमन सुर बृंद ॐ
मुदित बजावत दुंदुभी - कहि जै जै नंद नंद ॐ
मथुरा पुर नर नारि - अति प्रफुलित सबकौ हियौ ॐ
मनऊं कुमुद बन चारु - बिकसित हरि ससि मुख निरखि ॐ

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जीने राजा परीक्षित से कहा कि धर्मावतार - कंस के मरते ही जो अति बलवान आठ भाई उस के थे सो

लड़ने को चढ़ आये ● प्रभु ने उन्हें भी मार गिराया - अब हरि ने दे खा कि अब यहां राक्षस कोई नहीं रहा - तब कंस की लोथ को घसीट यमुना तीर पर ले आये - औ दोनों भाइयों ने बैठ विश्राम लिआ - तिसी दिन से उस ठौर का नाम विश्रांत घाट हुआ ●

आगे कंसका मरना सुन कंस की रानियां द्यौरानियों समेत अति व्याकुल हो रोती पीटती वहां आईं - जहां यमुना के तीर दोनों बीर मृतक लिये बैठे थे - औ लगीं अपने पति का मुख निरख निरख - सुख सुमिर सुमिर - गुन गाय गाय - व्याकुल हो हो पछाड़ खाय खाय मरने - कि इस बीच करुना निधान कान्ह करुनाकर उनके निकट जाय बोले ●●

मांई सुनहु शोक नहिं कीजै ● मामा जू कौं पानी दीजै ●
सदा न कोऊ जीवत रहै ● झूठौ सो जो अपनौ कहै ●
मात पिता सुत बंधु न कोई ● जन्म मरन फिरही फिर होई ●
जौ लौं जा सौं सन मंद रहै ● तौ ही लौं मिलि कै सुख लहै ●

महाराज - जब श्री कृष्णचंद ने रानियों को ऐसे समझाया तब तिन्होंने वहां से उठ धीरजधर यमुना तीर पै आ पति को पानी दिया औ आप प्रभु ने अपने हाथ कंस को आग दे उस की गति की ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे कंसासुर बधो नाम पंचचत्वारिंशोध्यायः ● ॥ ४५ ॥ ●●

———●●●●●●●●●●●●———

श्री शुकदेव मुनि बोले कि हे राजा - रानियां तो द्यौरानियों समेत व

हां से न्हाय धोय शेय अंग मंदिर को गई - औ श्री कृष्ण बलराम वसुदेव देवकी के पास आय - उनके हाथ पांव की हथकड़ियां बेड़ियां काट दंडवत कर हाथ जोड़ सनमुख खड़े हुए ❁ जिस समैं प्रभु का रूप देख वसुदेव देवकी को ज्ञान हुआ तो उन्हों ने अपने जीमें निहचै कर जाना कि ये दोनों बिधाता हैं - असुरों को मार भूमि का भार उतारने को संसार में औतार ले आये हैं ❁

जब वसुदेव देवकी ने यों जी में जाना तब अंतर जामी हरि ने अपनी माया फैलाय दी - उसने उनकी वह मति हर ली ❁ फिर तो विन्हों ने इन्हें पुत्रकर समझा कि इतने में श्री कृष्णचंद अति दीनता कर बोले ❁❁

तुम बहु दिवस लह्यौ दुख भारी ❁ करत रहे अति सुरत हमारी ❁

इस में हमारा कुछ अपराध नहीं क्यौं कि जब से आप हमें गोकुल में नंद के यहां रख आये तब से परबस थे - हमारा बस नथा - पर मनमें सदा यह आता था कि जिस के गर्भ में दस महीने रह जन्म लिया - विसे न कभी कुछ सुख दिया - न हमहीं माता पिता का सुख देखा - वृथा जन्म पराये यहां खोया - विन्होंने हमारे लिये अति बिपति सही - हम से कुछ विन की सेवा न भई - संसार में सामर्थी वेई हैं जो मा बाप की सेवा करते हैं ❁ हम विनके ऋनी रहे - टहल न कर सके ❁

पृथ्वी नाथ - जब श्री कृष्ण जी ने अपने मन का खेद यों कह सुनाया - तब अति आनंदकर उन दोनों ने इन दोनों को हितकर कंठ

लगाया औ सुख मान पिछला दुख सब गंवाया ॥ ऐसे मात पिता को सु ख दे दोनों भाई वहां से चले चले उग्रसेन के पास आये और हाथ जोड कर बोले ॥



नाना जू अब कीजै राज ॥ शुभ नक्षत्र नीकौ दिन आज ॥

इतना हरि मुख से निकलते ही राजा उग्रसेन उठकर आ श्री कृष्ण चंद के पाओं पर गिर कहने लगे - कि कृपानाथ - मेरी बिनती सुन लीजिये - जैसे आपने सब असुरों समेत कंस महादुष्ट को मार भक्तों को सुख दिया - तैसेहीं सिंहासन पै बैठ अब मधुपुरी का राजकर प्रजा पालन कीजिये ॥ प्रभु बोले महाराज - यदुबंसियों को राज का अधिकार नहीं - इस बात को सब कोई जानता है - जब राजा जजाति बूढे हुए तब अपने पुत्र यदु को उन्होंने बुला कर कहा - कि अपनी तरुन अवस्था मुझे दे औ मेरा बुढापा तूले ॥ यह सुन उस ने अपने जी में बिचारा कि जो मैं पिता को युवा अवस्था दूंगा तो यह तरुन हो भोग करैगा - इस में मुझे पाप होगा - इस से नहीं करना ही भला है ॥ यों सोच समझ के उसने कहा कि पिता - यह तो मुझ से न हो सकेगा ॥ इतनी बात के सुनतेही राजा जजाति ने क्रोधकर यदु को श्राप दिया कि जा तेरे बंस में राजा कोई न होगा ॥

इस बीच पुर नाम उन का छोटा बेटा सनमुख आ हाथ जोड बोला - पिता - अपनी बृद्ध अवस्था मुझे दो औ मेरी तरुनाई तुम लो ॥ यह देह किसी काम की नहीं - जो आप के काम आवै तो इस से उत्तम क्या है ॥ जब पुर ने यों कहा तब राजा जजाति प्रसन्न हो अपनी

वृद्ध अवस्था दे उस को युवा अवस्था ले बोले- कि तेरे कुल में राज गादी रहेगी ❀ इस से नाना जी - हम यदुवंसी हैं हमें राज करना उचित नहीं ❀❀

करो बैठ तुम राज - दूर करहु संदेह सब ❀
हम करिहैं सब काज - जो आयसु दै हौ हमें ❀

जो न मानिहै आन तुम्हारी ❀ ताहि दंड करिहैं हम भारी ❀
और कछू चित सोच न कीजै ❀ नीति सहित परजहि सुख दीजै ❀
यादव जिते कंस के त्रास ❀ नगर छांडि कै गये प्रवास ❀
तिनकों अब कर खोज मंगाओ ❀ सुख दै मथुरा मांझ बसाओ ❀
बिप्र धेनु सुर पूजन कीजै ❀ इनकी रक्षा में चित दीजै ❀

इतनी कथा कह श्री शुकदेव मुनि बोले कि धर्मावतार - महाराजाधिराज भक्त हितकारी श्री कृष्णचंद ने उग्रसेन को अपना भक्त जान ऐसे समझाय सिंहासन पर बिठाय राज तिलक दिया - औ छत्र फिरवाय दोनों भाईयों ने अपने हाथों चंवर किया ❀

उस काल सब नगर के बासी अति आनंद में मगन हो धन्य धन्य कहने लगे - औ देवता फूल बरसावने - महाराज - यों उग्रसेन को राज पाट पर बिठाय दोनों भाई बहुत से वस्त्र आभूषन अपने साथ लिवाये वहां से चले चले नंद राय जी के पास आये - औ सनमुख हाथ जोड खडे हो अति दीनता कर बोले - हम तुम्हारी क्या बडाई करें जो सहस्र जीभ होय तौभी तुम्हारे गुन का बखान हम से न हो सके ❀ तुम ने हमें अति प्रीतिकर अपने पुत्र की भांति पाला - सब ला

ड प्यार किया औ जसोदा मैया भी बड़ा स्नेह करतीं - अपना हित हमहीं पर रखतीं - सदा निज पुत्र समान जानतीं - कभी मन से भी ह में पराया कर न मानतीं ❁

ऐसे कह फिर श्री कृष्णचंद बोले कि हे पिता - तुम यह बात सुनकर कुछ बुरा मत मानों - हम अपने मन की बात कहते हैं - कि माता पिता तो तुम्हें हीं कहेंगे पर अब कुछ दिन मथुरा में रहेंगे - अपने जात भाइयों को देख यदु कुल की उत्पत्ति सुनेंगे - औ अपने माता पिता से मिल उन्हें सुख देंगे ❁ क्यों कि जिन्हों ने हमारे लिये बड़ा दुख सहा है जो हमें तुम्हारे यहां न पहुंचा आते तो वे दुख न पाते ❁ इतना कह वस्त्र आभूषन नंद महर के आगे धर प्रभु ने निरमोही हो कहा ❁❁

मैया सों पालागन कहियो ❁ हम पै प्रेम करै तुम रहियो ❁

इतनी बात श्री कृष्ण के मुंह से निकलतेही नंदराय तो अति उदास हो लगे लंबी सांसें लेने - औ ग्वालबाल बिचारकर मनहीं मन यों कहने ❁ कि यह क्या अचंभे की बात कहते हैं - इस से ऐसा समझ में आता है कि अब ये कपटकर जाया चाहते हैं - नहीं तो ऐसे निठुर बचन न कहते ❁ महाराज - निदान उन में से सुदामा नाम सखा बोला - भैया कन्हैया - अब मथुरा में तेरा क्या काम है - जो निठुराई कर पिता को छोड़ यहां रहता है ❁ भला किया कंस को मारा - सब काम संवारा - अब नंद के साथ हो लीजिये - औ वृंदावन में चल राज कीजिये - यहां का राज देख मन में मत ललचाओ - वहां का सा सुख न पाओगे ❁

सुनौं - राजदेख मूरख भूलते हैं औ हाथी घोडे देख फूलते हैं ❁ तुम वृंदावन छोड कहीं मत रहो - वहां सदा बसंत ऋतु रहती है - सघनबन औ यमुना की शोभा मन से कभी नहीं बिसरती ❁ भाई - जो वह सुख छोड हमारा कहा न मान - मात पिता की माया तज यहां रहोगे - तो इस में तुम्हारी क्या बडाई होगी ❁ उग्रसेन की सेवा करोगे औ रात दिन चिंता में रहोगे - जिसे तुमने राज दिया तिसी के आधीन होना होगा - यह अपमान कैसे सहा जायगा ❁ इस से अब उत्तम यही है कि नंदराय को दुख न दीजे - इन के साथ हो लीजे ❁❁

ब्रज बन नदी बिहार बिचारौ ❁ गायन कौं मन तें न बिसारौ ❁
नहीं छांडि हैं हम ब्रज नाथ ❁ चलिहैं सबै तिहारे साथ ❁

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव मुनि ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज - ऐसे कितनी एक बातें कह दस बीसेक सखा श्री कृष्ण बलराम जी के साथ रहे - औ तिन्हों ने नंदराय से बुझाकर कहा - कि आप सब को ले निसंदेह आगे बढिये - पीछे से हम भी इन्हें साथ लिये चले आते हैं ❁ इतनी बात के सुनतेही ऊसे ❁❁

व्याकुल सबै अहीर - मानऊं पन्नग के डसे ❁
हरि मुख लखत अधीर - ठाढे काढे चित्रसे ❁

उस समैं बलदेव जी नंदराय को अति दुखित देख समझाने लगे कि पिता - तुम इतना दुख क्यौं पाते हो - थोडेएक दिनों में यहां का काजकर हम भी आते हैं - आप को आगे इस लिये बिदा करते हैं कि

माता हमारी अकेली व्याकुल होती होंगी - तुम्हारे गये से तिन्हें कुछ धीरज होगा ● नंद जी बोले कि बेटा - एक बार तुम मेरे साथ चलो - फिर मिलकर चले आइयो ●●

ऐसे कह अति बिकल हो - रहे नंद गहि पाय ●
भई छीन दुति मंद मति - नैनन जल न रहाय ●

महाराज - जब माया रहित श्री कृष्णचंद जी ने ग्वाल बालों समेत नंद महर को महा व्याकुल देखा - तब मन में बिचारा कि ये मुझ से बिछड़ेंगे तो जीते न बचेंगे - तों हीं उन्हों ने अपनी उस माया को छोड़ा - जिस ने सारे संसार को भुला रक्खा है - उन ने आते हीं नंद जी को सब समेत अज्ञान किया ● फिर प्रभु बोले कि पिता - तुम इतना क्यों पछताते हो - पहले यही बिचारो जो मथुरा औ बृंदाबन में अंतर ही क्या है - तुम से हम कहीं दूर तो नहीं आते जो इतना दुख पाते हो - बृंदाबन के लोग दुखी होंगे - इस लिये तुम्हें आगे भेजते हैं ● बाद ऐसे प्रभु ने नंद महर को समझाया तद वे धीरज धर हाथ जोड़ बोले - प्रभु - जो तुम्हारे ही जी में यों आया तो मेरा क्या बस है - जाता हूं - तुम्हारा कहा टाल नहीं सकता ● इतना बचन नंद जी के मुख से निकलते ही - हरि ने सब गोप ग्वाल बालों समेत नंदराय को तो बृंदाबन बिदा किया औ आप कई एक सखाओं समेत दोनों भाई मथुरा में रहे - उस काल नंद सहित गोप ग्वाल ●●

चले सकल मग सोचत भारी ● हारे सर्बसु मनउं जुआरी ●
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं ● लट पट चरन परत मग मांहीं ●

जात बृंदावनं देई मधुवन ● बिरह बिथा बाढी व्याकुल तन ●

इसी रीत से जो तो कर बृंदावन पहुंचे ● इनका आना सुनतेही ज सोदा रानी अति अकुलाकर दौडी आई - औ राम कृष्ण को न देख म हा व्याकुल हो नंद जी से कहने लगीं ●●

अहो कंत सुत कहां गंवाये ● बसन आभूषन लीने आये ●
कंचन फैंक काच घर राखौ ● अमृत छांडि मूढ बिष चाखौ ●
पारस पाय अंध जों डारै ● फिरि गुन सुनहिं कपारहि मारै ●

ऐसे तुमने भी पुत्र गंवाये - औ बसन आभूषन उनके पलटे ले आये ● अब तिन बिन धन ले क्या करोगे - हे मूरख कंत - जिन के पलक ओट भये छाती फटे - कहो उन बिन दिन कैसे कटे ● जब उन्होंने तुम से बिछडने को कहा - तब तुम्हारा हिया कैसे रहा ●

इतनी बात सुन नंद जी ने बड़ा दुख पाया औ नीचासिरकर यह बचन सुनाया - कि सच है - ये बस्त्र अलंकार श्री कृष्ण ने दिये - पर मुझे यह सुध नहीं जो किस ने लिये - और मैं कृष्ण की बात क्या कहूं गा - सुन करि तू भी दुख पावेगी ●●

कंस मार मो पै फिर आये ● प्रीति हरन कहि बचन सुनाये ●
बसुदेव के पुत्र वे भये ● कर मनुहार हमारी गये ●
हों तब महरि अचंभे रह्यौ ● पोषन भरन हमारो कह्यौ ●
श्रवन महरि हरि सों सुत कहिये ● ईश्वर जानि भजन करि रहिये ●

विसे तो हमने पहले ही नारायन जाना था - पर माया बस पुत्र कर मा ना ● महाराज नंद नंदराय जी ने संच सच बातें श्री कृष्ण की कही

कह सुनाई - तिस समैं माया बस हो जसोदा रानी कभी तो प्रभु को अपना पुत्र जान मन हीं मन पछताय व्याकुल हो हो रोती थीं - औ कभी ज्ञानकर ईश्वर जान उन का ध्यानधर गुन गाय गाय मन का खेद खोती थीं ॥ औ इसी रीति से सब बृंदाबनबासी क्या स्त्री क्या पुरुष हरि के प्रेम रंग राते - अनेक अनेक प्रकार की बातें करते थे - सो मेरी सामर्थ नहीं जो मैं बरनन करूं - इस से अब मथुरा की लीला कहता हूं - तुम चित दे सुनो ॥

कि जब हलधर औ गोबिंद नंदराय को बिदाकर बसुदेव देवकी के पास आये तब उन्हों ने इन्हें देख दुख भुलाय ऐसे सुख माना - कि जैसे तपी तपकर अपने तप का फल पाय सुख माने ॥ आगे बसुदेव जी ने देवकी से कहा कि कृष्ण बलदेव परये रहे हैं - इन्हों ने तिनके साथ खाया पिया है औ अपनी जात का व्यौहार भी नहीं जानते - इस से अब उचित है कि पुरोहित को बुलाय पूछें - जो वह कहे सो करें ॥ देवकी बोलीं - बहुत अच्छा ॥

तब वसुदेव जी ने अपने कुलपूज गर्ग मुनि जी को बुला भेजा - वे आये ॥ उन से इन्हों ने अपने मन का संदेह सब कह के पूछा - कि महाराज - अब हमें क्या करना उचित है सो दयाकर कहिये ॥ गर्ग मुनि बोले - पहले सब जात भाइयों को नौत बुलाइये - पीछे जातकर्मकर रामकृष्ण का जनेऊ दीजे ॥

इतना बचन पुरोहित के मुख से निकलते ही - वसुदेव जीने नगर में नौता भेज सब ब्राह्मन औ यदुबंसियों को नौत बुलाया - वे आये

तिन्हें अति आदर प्रीत कर बिठाया ॥

उस काल पहले तो बसुदेव जी ने बिधि से जातकर्म कर जन्म पत्री लिखवाय – दस सहस्र गौ – सोने के सींग – तांबे की पीठ – रूपे के खुर समेत – पाटंबर उढाय – ब्राह्मनों को दीं – जो श्री कृष्ण जी के जन्म समै संकल्पी थीं ॥ पीछे मंगलाचार करवाय बेद की बिधि से सब रीति भांतिकर राम कृष्ण का यज्ञोपवीत किया – औ उन दोनों भाइयों को कुछ दे बिद्या पढने को भेज दिया ॥

वे चले चले अवंतिकापुरी का एक सांदीपन नाम ऋषि महा पंडित औ बडा ज्ञानवान काशीपुरी में था – उसके यहां आये – दंडवत कर हाथ जोड सनमुख खडे हो अति दीनताकर बोले ॥

हम पर कृपा करौ ऋषि राय ॥ बिद्या दान देहु मन लाय ॥

महाराज – जब श्री कृष्ण बलराम जी ने सांदीपन ऋषि से यों दीनता कर कहा – तब तो विन्होंने इन्हें अति प्यार से अपने घर में रक्खा औ लगे बडी कृपा कर पढाने ॥ कितने एक दिनों में ये चार बेद – उपबेद – छः शास्त्र – नौ व्याकरन – अठारह पुरान – मंत्र – जंत्र – तंत्र – आगम – ज्योतिष – बैद्यक – कोक – संगीत – पिंगल – पढ चौदह बिद्या निधान हुए ॥ तब एक दिन दोनों भाइयों ने हाथ जोड अति बिनती कर गुरु से कहा कि महाराज – कहा है जो अनेक जन्म औतार ले बहुतेरा कुछ दीजिये तो भी बिद्या का पलटा न दिया जाय – पर आप हमारी शक्ति देख गुरुदक्षिना की आज्ञा कीजे – तो हम यथा शक्ति दे असीस ले अपने घर जांय ॥

इतनी बात श्री कृष्ण बलराम के मुख से निकलते ही-सांदीपन ऋषि वहां से उठ सोच बिचारकरता घर भीतर गया - श्रौ उस ने अपनी स्त्री से इनका भेद यों समझाकर कहा - कि ये राम कृष्ण जो दोनों बालक हैं सो आदि पुरुष अविनाशी हैं - भक्तों के हेतु अवतार ले भूमि का भार उतारने को संसार में आये हैं - मैंने इनकी लीला देख यह भेद जाना क्यों कि जो पढ पढ फिर फिर जन्म लेते हैं-सो भी विद्या रूपी सागर की थाह नहीं पाते - श्रौ देखो इस बाल अवस्था से थोडे ही दिनों में ये ऐसे अगम अपार समुद्र के पार हो गये ◉ ये जो किया चाहैं सो पल भर में कर सकते हैं ◉ इतना कह फिर बोले ◉

इन पै कहा मांगिये नारि ◉ सुनके सुंदरि कहै बिचारि ◉
मृतक पुत्र मांगौ तुम जाय ◉ जौ हरि हैं तौ दै हैं ल्याय ◉

ऐसे घर में से विचार कर - सांदीपन ऋषि स्त्री सहित बाहर आय श्री कृष्ण बलदेव जी के सनमुख करजोड दीनताकर बोले - महाराज - मेरे एक पुत्र था - तिसे साथले मैं कुटुंब समेत एक पर्व में समुद्र न्हान गया था - जों वहां पहुंच कपडे उतार सब समेत तीर में न्हाने लगा - तों एक सागर की बडी लहर आई - तिस में मेरा पुत्र बह गया - सो फिर न निकला किसी मगर मच्छ ने निगल लिया - तिसका दुख मुझे बडा है ◉ जो आप गुरु दक्षिना दिया चाहते हैं तो वही सुत लादीजे - श्रौ हमारे मन का दुख दूर कीजे ◉

यह सुन श्री कृष्ण बलराम गुरु पत्नी श्रौ गुरु को प्रनामकर रथ पर चढ उन के पुत्र लाने के निमित्त समुद्र की ओर चले - श्रौ चले चले

कितनी ऐक बेर में तीर पर आ पहुंचे - कि इन्हें क्रोधवान आते देख सागर भयमान हो मनुष्य शरीर धारनकर बहुत सी भेट ले नीर से निकल तीर पर डरता कांपता इनके सोंहीं आ खडा हुआ - औ भेट रख दंडवतकर हाथ जोड सिर निवय अति बिनतीकर बोला ●●

बडौ भाग प्रभु दरसन दयौ ● कौन काज इत आवन भयौ ●

श्री कृष्णचंद बोले - हमारे गुरुदेव यहां कुनबे समेत न्हाने आऐ थे - तिनके पुत्र को जो तू तरंग से बहाय ले गया है - तिसे लादे - इसी लिये हम यहां आऐ हैं ●●

सुन समुद्र बोल्यौ सिर नाय ● मैं नहिं लीनौं वाहि बहाय ●

तुम सबही के गुरु जगदीस ● राम रूप बांध्यौ हो ईस ●

तभी से मैं बहुत डरता हूं - औ अपनी मर्य्याद से रहता हूं ● हरि बोले - जो तूने नहीं लिया तो यहां से और कौन उसे ले गया - समुद्र ने कहा - कृपानाथ - मैं इस का भेद बताता हूं कि ऐक संखासुर नाम असुर संख रूप मुझ में रहता है - सो सब जल चर जीवों को दुख देता है - औ जो कोई तीर पै न्हाने को आता है विसे पकड कर ले जाता है - कदाचित वह आप के गुरुसुत को लेगया होय तो मैं नहीं जानता - आप भीतर पैठ देखिये ●●

यों सुन कृष्ण धसे मनलाय ● मांझ समंदर पहुंचे जाय ●

देखत ही संखासुर मारौ ● पेट फाडकै बाहर डारौ ●

तामें गुरु कौ पुत्र न पायौ ● पछताने बल भद्र सुनायौ ●

कि भैया - हमने इसे बिन काज मारा ● बलराम जी बोले - कुछ चिंता

नहीं - अब आप इसे धारन कीजे ● यह सुन हरि ने उस संख को अपना आयुध किया ● आगे दोनों भाई वहां से चले चले यम की पुरी में जा पहुंचे - जिसका नाम है संयमनी - औ धर्म राज जहां का राजा है ●



इन को देखतेही धर्मराज अपनी गादी से उठ आगे आय अति आवभगतिकर ले गया - सिंहासन पर बैठाय पांव धो चरनामृत ले बोला - धन्य यह ठौर - धन्य यह पुरी - जहां आकर प्रभुने दरसन दिया औ अपने भक्तों को कृतारथ किया - अब कुछ आज्ञा कीजे जो सेवक पूरन करै - प्रभु ने कहा कि हमारे गुरु पुत्र को ला दे ●

इतना बचन हरि के मुख से निकलते ही धर्मराज झट जाकर बालक को ले आया - और हाथ जोड बिनतीकर बोला - कि कृपा नाथ - आप की कृपा से यह बात मैंने पहले ही जानी थी कि आप गुरु सुत के लेने को आवेंगे - इस लिये मैं ने यत्नकर रक्खा है - इस बालक को आज तक जन्म नहीं दिया ● महाराज - ऐसे कह धर्म राज ने बालक हरि को दिया ● प्रभु ने ले लिया औ तुरंत उसे रथ पर बैठाय वहां से चल कितनी एक बेर में ला गुरु के सोंही खडा किया - औ दोनों भाइयों ने हाथ जोडके कहा - गुरुदेव - अब क्या आज्ञा होती है ●

इतनी बात सुन औ पुत्र को देख - सांदिपन ऋषि ने अति प्रसन्न हो श्री कृष्ण बलराम जी को बहुत सी आसीसें देकर कहा ●●

अब हों मागों कहा मुरारी ● दीनो मोहि पुत्र सुख भारी ●

अति जस तुम सों सिष्य हमारे ◉ कुशल क्षेम अब घरहि पधारो ◉

जब ऐसे गुरु ने आज्ञा की तब दोनों भाई विदा हो दंडवतकर रथ पर बैठ वहां से चले चले मथुरा पुरी के निकट आये ◉ इन का आना सुन राजा उग्रसेन वसुदेव समेत नगर निवासी क्या स्त्री क्या पुरुष सब उठ धाये - औ नगर के बाहर आय भेटकर अति सुखपाय बाजे गाजे से पाटंबर के पांवडे डालते प्रभु को नगर में ले गये ◉ उस काल घर घर मंगलाचार होने लगे - औ बधाई बाजने ◉ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे संखासुर बधो नाम षट चत्वारिंशोध्यायः ◉ ॥ ४६ ॥ ◉◉

---

श्री शुकदेव जी बोले कि पृथीनाथ - जो श्री कृष्णचंद ने बृंदावन की सुरतकरी तो मैं सब लीला कहता हूं - तुम चित्त दे सुनो कि एक दिन हरि ने बलराम जी से कहा कि भाई - सब बृंदाबन बासी हमारी सुरतकर अति दुख पाते होंगे क्यों कि जो हमने उन से अवध की थी सो बीत गई - इस से अब उचित है कि किसी को वहां भेज दीजे जो जाकर उन का समाधानकर आवे ◉

यों भाई से मताकर हरि ने ऊधो को बुलायके कहा कि अहो ऊधो - एक तो तुम हमारे वडे सखा हो - दूजे अति चातुर - ज्ञानवान औ धीर - इस लिये हम तुम्हें बृंदावन भेजा चाहते हैं - कि तुम जाकर नंद जसोदा औ गोपियों को ज्ञान दे - उन का समाधान कर आओ - औ माता रोहिनी को ले आओ ◉ ऊधो जीने कहा - जो आज्ञा ◉

फिर श्री कृष्णचंद बोले कि तुम प्रथम नंद महर औ जसोदा जी को ज्ञान उपजाय उन के मन का मोह मिटाय ऐसे समझाय कर कहियो जो वे मुझे निकट जान दुख तजें - औ पुत्र भाव छोड ईश्वर मान भजें ॥ पीछे फिर गोपियों से कहियो कि जिन्होंने मेरे काज छोडी है लोक बेद की लाज - रात दिन लीला गाती हैं औ अवध की आस किये प्रान मुट्ठी में लिये हैं - कि तुम कंत भाव छोड हरि को भगवान जान भजो - औ बिरह दुख तजो [illegible]

महाराज - ऐसे ऊधो को कह दोनों भाइयों ने मिलकर एक पाती लिखी - जिस में नंद जसोदा समेत गोप ग्वाल बालों को तो यथा जोग दंडवत प्रनाम आसीरबाद लिखा औ सब ब्रजयुवतियों को जोग का उपदेस लिख ऊधो के हाथ दी औ कहा - यह पाती तुम हीं पढ सुनाइयो - जैसे बने तैसे उन सब को समझाय शीघ्र आइयो ॥ [illegible]

इतना संदेसा कह प्रभु ने निज बस्त्र - आभूषन - मुकट पिहराय अपने हीं रथ पर बैठाय - ऊधो जी को बृंदावन बिदा किया ॥ वे रथ हांके कितनी एक बेर में मथुरा से चले चले बृंदावन के निकट जा पहुंचे - तो वहां देखते क्या हैं कि सघन सघन कुंजों के पेडों पर भांति भांति के पक्षी मनभावन बोलियां बोल रहे हैं - औ जिधर तिधर धौली - पीली - भूरी - काली - गायें घंटा सी फिरती हैं औ ठौर ठौर गोपी गोप ग्वाल बाल श्री कृष्ण जस गाय रहे हैं ॥

यह सोभा निरख हरखते औ प्रभु का बिहारस्थल जान प्रनाम करते ऊधो जी जों गांव के खेंडे गये - तों किसी ने दूर से हरि का रथ पहि

वान पास आय इनका नाम पूछ नंद महर से जा कहा कि महाराज - श्री कृष्ण का भेष किये उन्हीं का रथ लिये कोई ऊधो नाम मथुरा से आया है ●

इतनी बात के सुनते ही नंद राय जैसे गोप मंडली के बीच अथाई पर बैठे थे - तैसे ही उठ धाए - औ तुरंत ऊधो जी के निकट आए ● राम कृष्ण का संगी जान अति हित कर मिले औ कुशल क्षेम पूछ बडे आदर मान से घर लिवाय ले गये ● पहले पांव धुलवाय आसन बैठने को दिया - पीछे षट रस भोजन बनवाय ऊधो जी की पहुनई की ● जब वे रुच से भोजन कर चुके तब एक सुथरी उज्ज्वल फेन सी सेज बिछवा दी - तिस पर पान खाये जाय उन्हों ने पौढ़ कर अति सुख पाया औ मारग का श्रम सब गंवाया ● कितनी एक बेर में जों ऊधो जी सोके उठे - तों नंद महर उन के पास आ बैठे औ पूछने लगे कि कहो ऊधो जी - सूरसेन के पुत्र हमारे परम मित्र वसुदेव जी कुटुंब सहित आनंद से हैं - औ हमसे कैसी प्रीति रखते हैं - यों कह फिर बोले ●●

कुशल हमारे सुत की कहो ● जिन के संग सदा तुम रहो ●
कब हूं वे सुधि करत हमारी ● उन बिन दुख पावत हम भारी ●
सब ही सों आवन कह गये ● बीती अवध बहुत दिन भये ●

नित उठ जसोदा दही बिलोय माखन निकाल हरि के लिये रखती है - उस की औ ब्रज युवतियों की - जो उन के प्रेम रंग में रंगी हैं सुरत कभू कान्ह करते हैं कै नहीं ● -

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि पृथीनाथ - इसी रीति से समाचार पूछते पूछते औ श्री कृष्णचंद्र की पूर्व लीला गाते गाते नंदराय जी तो प्रेम रस भीज - इतना कह प्रभु का ध्यान धर अवाक हुऐ कि ●●

महा बली कंसादिक मारे ● अब हम काहे कृष्ण बिसारे ●

इस बीच अति व्याकुल सुध बुध देह की बिसारे - मन मारे रोती जसोदा रानी ऊधो जी के निकट आय राम कृष्ण की कुशल पूछ बोली ● कहो ऊधो जी - हरि हम बिन वहां कैसे इतने दिन रहे औ क्या संदेसा भेजा है - कब आय दरसन देंगे ● इतनी बात के सुनते ही पहले तो ऊधो जी ने नंद जसोदा को श्री कृष्ण बलराम की पाती पढ सुनाई - पीछे समझाकर कहने लगे ● कि जिन के घर में भगवान ने जन्म लिया औ बाललीलाकर सुख दिया - तिनकी महिमा कौन कह सके ● तुम बडे भागवान हो क्यौं कि जो आदि पुरुष अविनासी शिव विरंच का करता - न जिस के माता न पिता न भाई न बंधु - तिसे तुम अपना पुत्र जान मानते हो - औ सदा उसी के ध्यान में मन लगाये रहते हो वह तुम से कब दूर रह सकता है ● कहा है ●●

सदा समीप प्रेम बस हरी ● जन के हेतु देह जिन धरी ●

जा कौ बैरी मित्र न कोई ● ऊंच नीच कोऊ किन होई ●

जोई भक्ति भजन मन धरे ● सोई हरि सौं मिल अनुसरे ●

जैसे भृंगी कीट को ले जाता है - औ अपने रूप बना देता है - और जैसे कंवल के फूल में भौंरी मुंद जाती है औ भौंरा रातभर उस के

कोटर में सूआ रहता है तिसे छोड़ और कहीं नहीं जाता - तैसे ही जो हरि से हित करता है और उन का ध्यान धरता है - तिसे वेभी आप सा बना लेते हैं औ सदा तिस के पास ही रहते हैं ॥

यों कह फिर ऊधो जी बोले कि अब तुम हरि को पुत्र कर मत जानो - ईश्वर कर मानो ॥ वे अंतरजामी भक्त हितकारी प्रभु आय दरसन दे तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करेंगे - तुम किसी बात की चिंता न करो ॥

महाराज - इसी रीति से अनेक अनेक प्रकार की बातें कहते कहते औ सुनते सुनते जब सब रात बितीत भई औ चार घड़ी पिछली रही - तब नंदराय जी से ऊधो जी ने कहा कि महाराज - अब दधि मथने की बिरियां हुई जो आप की आज्ञा पाऊं तो यमुना स्नान करि आऊं ॥ नंद महर बोले बहुत अच्छा - इतना कह वे तो वहां बैठे सोच विचार करते रहे - औ ऊधो जी उठ रथ में बैठ यमुना तीर पर आये ॥ पहले वस्त्र उतार देह शुद्ध करी - पीछे नीर के निकट जाय रज सिर चढ़ाय हाथ जोड़ कालिंदी की अति स्तुति गाय आचमन कर जल में पैठे - औ न्हाय धोय संध्या पूजा तरपन से निचिंत हो लगे जप करने ॥ उसी समैं सब ब्रज युवतियां भी उठीं - औ अपना अपना घर झाड़ बुहार लीप पोत धूप दीपकर लगीं दधि मथने ॥

दधि कौ मथन मेघ सौ गाजै ॥
गावें नूपुर की धुनि बाजै ॥
दधि मथिकै माखन लियौ - कियौ गेह कौ काम ॥

तब सब मिल पानी चलीं - सुंदरि ब्रज की बाम ●

महाराज - वे गोपियां श्री कृष्ण के वियोग मद मातियां उन का ही ज स गातियां - अपने अपने झुंड लिये प्रीतम का ध्यान किये - बाट में प्रभु की लीला गाने लगीं ●●

एक, कहै मुहि मिले कन्हाई ● एक कहै वे भजे लुकाई ●
याके तें पकरी मो बांह ● वे ठाढे हरि बर की छांह ●
कहत एक गो दोहत देखे ● बोली एक मोरही पेखे ●
एक कहै वे धेनु चरावें ● सुनहु कान दै बैनु बजावें ●
या मारग हम जाय न माई ● दान मांगि है कुंवर कन्हाई ●
गागरि फोरि गांठि छोरि है ● नेक चितैके चित्त चोरि है ●
हैं कहूं दुरे दौरि आय हैं ● तब हम कहां जानि पाय हैं ●
ऐसे कहत चलीं ब्रज नारी ● कृष्ण बियोग विकल तन भारी ●

इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे ऊधो बृंदावन गमनो नाम सप्त चत्वारिंशोध्यायः ● ॥ ४७ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव मुनि बोले पृथीनाथ - जब ऊधो जी जपकर चुके - तब नदी से निकल बस्त्र आभूषन पहन रथ में बैठ जो कालिंदी तीर से नंद गेह की ओर चले - तो गोपी जो जल भरने को निकलीं थीं तिन्हों ने रथ दूर से पंथ में आते देखा ● देखते ही आपस में कहने लगीं कि यह रथ किसका चला आता है - इसे देख लो तब आगे पांव बढाओ ● यों सुन तिन में से एक गोपी बोली कि सखी - कहीं वही कपटी अक्रूर

तो न आया होय - जिस ने श्री कृष्णचंद को ले जाय मथुरा में बसाया - औ कंस को मरवाया ● इतना सुन एक और उन में से बोली - यह विश्वासघाती फिर काहेको आया - एक बेर तो हमारे जीवन मूल को ले गया - अब क्या जीव लेगा ● महाराज - इसी भांति की आपस में अनेक अनेक बातें कहैं ●●

ठाढी भईं तहां ब्रज नारि ● सिर तें गागरि धरी उतारि ●

इतने में जौं रथ निकट आया तौं गोपियां कुछ एक दूर से ऊधो जी को देखकर आपस में कहने लगीं कि सखी - यह तो कोई स्याम बरन - कंवल नैन - मुकुट सिर दिये - बनमाल हिये - पीतांबर पहरे - पीत पट ओढे - श्री कृष्णचंद सा रथ में बैठा हमारी ओर देखता चला आता है ● तब तिनहीं में से एक गोपी ने कहा कि सखी - यह तो कल से नंद के यहां आया है ऊधो इस का नाम है - औ श्री कृष्ण चंद ने कुछ संदेसा इस के हाथ कह पठाया है ●

इतनी बात के सुनते ही गोपियां एकांत ठौर देख सोच संकोच छोड दौडकर ऊधो जी के निकट गईं औ हरि का हितू जान दंडवतकर कुशल क्षेम पूछ हाथ जोड रथ के चारों ओर घिरके खडी हुईं ● उनका अनुराग देख ऊधो जी भी रथ से उतर पडे - तब सब गोपियां तिन्हें एक पेड की छाया में बैठाय आप भी चारों ओर घिरके बैठीं - औ अति प्यार से कहने लगीं ●●

भली करी ऊधो तुम आये ● समाचार माधो के लाये ●
सदा समीप कृष्ण के रहौ ● उन कौ कह्यौ संदेसौ कहौ ●

पठये मात पिता के हेत ● और न काहूकी सुधि लेत ●
सर्वसु दीनों उन के हाथ ● अरगे प्रान चरन के साथ ●
अपने हीं स्वारथ के भये ● सबही कों अब दुख दै गये ●

औ जैसे फल हीन तरवर को पंछी छोड जाता है - तैसे ही हरि ह में छोड गये - हम ने उन्हें अपना सर्वस दिया - तौभी वे हमारे न हुऐ ● महाराज - जब प्रेम में मगन होय इसी ढब की बातें बहुत सी गोपियों ने कहीं - तब ऊधो जी उन के प्रेम की दृढता देख - ज्यों प्रनाम करने को उठा चाहते थे ● त्यौंही किसी गोपी ने एक भौंरे को फूल पर बैठता देख उस के मिस ऊधो से कहा ●

अरे मधुकर - तैंने माधव के चरन कंवल का रस पिया है - तिसी से तेरा नाम मधुकर हुआ औ कपटी का मित्र है - इसी लिये तुझे तिसने अपना दूतकर भेजा है - तू हमारे चरन मत परसे - क्यौं कि हम जाने हैं - जितने स्याम बरन हैं तितने सब कपटी हैं - जैसा तू है तैसेई हैं स्याम - इस से तू हमें मत करे प्रनाम ● ज्यों तू फूल फूल का रस लेता फिरता है औ किसी का नहीं होता - त्यों वे भी प्रीति कर किसी के नहीं होते ● ऐसे गोपी कह रही थी कि एक भौंरा और आया ● तिसे देख ललिता नाम गोपी बोली ●●

अहो भ्रमर तुम अलगे रहौ ● यह तुम जाय मधु पुरी कहौ ●

जहां कुबजा सी पटरनी औ श्री कृष्णचंद बिराजते हैं - कि एक जन्मकी हम क्या कहैं - तुम्हारी तो जन्म जन्म यही चाल है ● बलि राजा ने सर्वस दिया - तिसे पाताल पठाया - औ सीता सी सती को बिन

अपराध घर से निकाला ● अब उन की यह दसा की तो हमारी क्या चली है - यों कह फिर सब गोपी मिल हाथ जोड ऊधो से कहने लगीं कि ऊधो जी - हम अनाथ हैं श्री कृष्ण बिन - तुम अपने साथ ले चलो ●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - इतना बचन गोपियों के मुख से निकलते ही ऊधो जी ने कहा - जो संदेसा श्री कृष्णचंद ने लिख भेजा है सो मैं समझ कर कहता हूं - तुम चित दे सुनो ● लिखा है - तुम भोग की आस छोड जोग करो - तुम से बियोग कभी न होगा - औ कहा है - जिस दिन तुम करती हो मेरा ध्यान - इस से कोई नहीं है प्रिय मेरे तुम समान ●

इतना कह फिर ऊधो जी बोले - जो हैं आदि पुरुष अबिनासी हरी - तिन से तुम ने प्रीति निरंतर करी ● औ जिन्हें सब कोई अलख अगोचर अभेद बखाने - तिन्हें तुम ने अपने कंतकर माने ● पृथ्वी - पवन - पानी - तेज - आकाश - का है जैसे देह में निवास - ऐसे प्रभु तुम में बिराजते हैं - पर माया के गुन से न्यारे दिखाई देते हैं ● उनका सुमिरन ध्यान किया करो - वे सदा अपने भक्त के बस रहते हैं - औ पास रहने से होता है ज्ञान ध्यान का नास - इस लिये हरि ने किया है दूर जायके बास ● औ मुझे यह भी श्री कृष्णचंद ने समझायके कहा है - कि तुम्हें बेनु बजाय बन में बुलाया औ जब देखा मदन औ बिरह का प्रकास - तब हम ने तुम्हारे साथ मिलकर किया था रास ●●

जद तुम ईश्वरता बिसराई ॥ अंतर ध्यान भये यदुराई ॥ ॥ प्रेम० ॥
फिर जो तुम ने ज्ञानकर ध्यान हरि का मन में किया - तोंहीं तुम्हारे ॥ १६१ ॥
चित की भक्ति जान प्रभु ने आय दरसन दिया ॥ महाराज - इतना ब
चन ऊधो जी के मुख से निकलते ही ॥

गोपी तबै कहैं सतराय ॥ सुनो बात अब रहु अरगाय ॥
ज्ञान जोग बुद्धि हमहिं सुनावै ॥ ध्यान छोड आकाश बतावै ॥
जिन की लीला में मन रहै ॥ तिन को को नारायन कहै ॥
बालकपन तें जिन सुख दयौ ॥ सो क्यौं अलख अगोचर भयौ ॥
जो सब गुन युत रूप सरूप ॥ सो क्यों निर्गुन होय निरूप ॥
जौ तन में पिय प्रान हमारे ॥ तो को सुनि है बचन तिहारे ॥
ऐक सखी उठि कहै बिचारि ॥ ऊधो की कीजे मनुहारि ॥
इनसों सखी कछू नहिं कहिये ॥ सुनिके बचन देख मुखरहिये ॥
ऐक कहति अपराध न याको ॥ यह आयौ पठयौ कुबजा को ॥
अब कुबजा जो जाहि सिखावै ॥ सोइ वाको गायौ गावै ॥
कबहूं स्याम कहैं नहिं ऐसी ॥ कही आय ब्रज में इन जैसी ॥
ऐसी बात सुने को माई ॥ उठत सूल सुनि सहीन जाई ॥
कहत भोग तजि जोग अराधो ॥ ऐसी कैसे कहि हैं माधो ॥
जप तप संजम नेम अचार ॥ यह सब बिधवा कौ ब्यौहार ॥
जुग जुग जीवहु कुंवर कन्हाई ॥ सीस हमारे पर सुख दाई ॥
अच्छत पति भभूति किन लाई ॥ कहौ कहां की रीति चलाई ॥
हम कों नेम जोग ब्रत ऐहा ॥ नंद नंदन पद सदा सनेहा ॥

ऊधो तुम्हें दोष को लावै ● यह सब कुबजा नीच नचावै ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज - जब गोपियों के मुख से ऐसे प्रेम सने बचन सुने - तब जोग कथा कह के ऊधो मनहीं मन पछताय सकुचाय मौनसाध सिर निवाय रहगये ● फिर एक गोपी ने पूछा - कहो बलभद्र जी कुशल क्षेम से हैं - औ बालापन की प्रीति बिचार कभी वे भी हमारी सुधिकरते हैं कि नहीं ●

यह सुन तिनहीं में से किसी और गोपी ने उत्तर दिया - कि सखी - तुम तो हो अहीरी गंवारि - औ मथुरा की हैं सुंदर नारि ● तिन के बस हो हरि बिहार करते हैं - अब हमारी सुरत क्यों करेंगे - जद से वहां जाके छाये - सखी - तद से पी भये पराये - जो पहले हम ऐसा जानतीं - तो काहे को जाने देतीं ● अब पछताये कुछ हाथ नहीं आता - इस से उचित है कि सब दुख छोड अवध की आसकर रहिये - क्यों कि जैसे आठ महीने पृथ्वी - बन - पर्वत - मेघ की आस किये तपन सहते हैं - औ तिन्हें आय वह ठंढा करता है - तैसे हरि भी आय मिलेंगे ●●

एक कहति हरि की नौ काज ● बैरी मारयौ लीनौ राज ●
काहे कौं बृंदाबन आवें ● राज छांडि क्यों गाय चरावें ●
छोडहु सखी अवध की आस ● चिंता जैहै भये निरास ●
एक त्रिया बोली अकुलाय ● कृष्ण आस क्यों छोडी जाय ●

बन पर्वत औ यमुना के तीर में जहां जहां श्री कृष्ण बलबीर ने लीला करी हैं - वही वही ठौर देख सुध आती है सखी - प्राणपति हरी की

यों कह फिर बोली ●●

दुख सागर यह ब्रज भयौ - नाम नाव बिच धार ●
बूडहिं बिरह बियोग जल - कृष्ण करें कब पार ●

गोपी नाथ थी क्यौं सुधि गई ● लाज न कछू नाम की भई ●

इतनी बात सुन ऊधो जी मनहीं मन बिचारकर कहने लगे - कि धन्य है इन गोपियों को औ इनकी दृढता को - जो सर्वसु छोड श्री कृष्णचंद के ध्यान में लीन हो रहीं हैं ● महाराज - ऊधो जी तो उन का प्रेम देख मनहीं मन सराहते ही थे - कि उस काल सब गोपी उठ खडी हुई औ ऊधो जी को बडे आदर मान से अपने घर लिवाय ले गईं ● उन की प्रीति देख इन्हों ने भी वहां जाय भोजन किया - औ विश्रामकर श्री कृष्ण की कथा सुनाय तिन्हें बहुत सुख दिया ● तब सब गोपी ऊधो जी की पूजाकर बहुत सी भेंट आगेधर हाथ जोड अति बिनतीकर बोलीं - ऊधो जी - तुम हरि से जायकहियो कि नाथ - आगे तो तुम बडी कृपाकरते थे - हाथ पकड अपने साथ लिये फिरते थे - अब ठकुराई पाय नगर नारि कुबजा के कहे जोग लिख भेजा - हम अबला अपवित्र अबतक गुरु मुख भी नहीं हुई - हम ज्ञान क्या जाने ●●

उन सों बालापन की प्रीति ● जानें कहा जोग की रीति ●
बे हरि क्यौं न जोग दे जात ● यह न संदेसे की है बात ●
ऊधो यों कहियो समझाय ● प्रान जात हैं रखें आय ●

महाराज - इतनी बात कह सब गोपियां तो हरि का ध्यानकर मगन

हो रहीं औ ऊधो जी विन्हें दंडवतकर वहां से उठ रथ पर बैठ गोवर्धन में आये ● वहां कई एक दिन रहे फिर वहां से जो चले - तो जहां जहां श्री कृष्णचंद जी ने लीला करी थी तहां तहां गये - औ दो दो चार चार दिन सब ठौर रहे ●

निदान कितने एक दिवस पीछे फिर वृंदावन में आये - औ नंद जसोदा जी के पास जा हाथ जोडकर बोले ● आप की प्रीति देख मैं इतने दिन ब्रज में रहा - अब आज्ञा पाऊं तो मथुरा को जाऊं ●

इतनी बात के सुनते ही जसोदा रानी दूध दही माखन औ बज्जत सी मिठाई - घर में जाय ले आई - औ ऊधो जी को देके कहा - कि यह तो तुम श्री कृष्ण बलराम प्यारे को देना - औ बहन देवकी से यों कहना ● कि मेरे कृष्ण बलराम को भेज दे - बिरमाय न रक्खे - इतना संदेसा कह नंदरानी अति व्याकुल हो रोने लगी - तब नंद जी बोले कि ऊधो जी हम तुम से अधिक क्या कहैं - तुम आप चातुर गुनवान महाज्ञान हो - हमारी ओर हो प्रभु से ऐसे जाय कहियो - जो वे ब्रजबासियों का दुख विचार बेग आय दरसन दें - औ हमारी सुध न बिसारें ●

इतना कह जब नंदराय ने आंसू भरलिये औ जितने ब्रजबासी क्या स्त्री क्या पुरुष वहां खडे थे सो भी सब लगे रोने - तब ऊधो जी विन्हें समझाय बुझाय आसा भरोसा दे ढाढसबंधाय बिदा हो रोहिनी को साथ ले मथुरा को चले - औ कितनी एक बेर में चले चले श्री कृष्णचंद के पास आ पड़ंचे ●

इन्हें देखते ही श्री कृष्ण बलदेव उठकर मिले औ बडे प्यार से इन की क्षेम कुशल पूछ बृंदावन के समाचार पूछने लगे ● कहो ऊधो जी - नंद जसोदा समेत सब ब्रजबासी आनंद से हैं - औ कभी हमारी सुरत करते हैं कि नहीं ● ऊधो जी बोले महाराज - ब्रज की महिमा औ ब्रज बासियों का प्रेम मुझ से कुछ कहा नहीं जाता - उन के तो तुम्हीं हो प्रान - निस दिन करते हैं वे तुम्हारा ही ध्यान औ ऐसी देखी गोपियों की प्रीति - जैसी होती है पूरन भजन की रीति ● आप का कहा जोग का उपदेस जा सुनाया - पर मैं ने भजन का भेद उनहीं से पाया ●

इतना समाचार कह ऊधो जी बोले कि दीन दयाल - मैं अधिक क्या कहूं - आप अंतर जामी घट घट की जानते हैं - थोडे ही में समझिये - कि ब्रज में क्या जड क्या चैतन्य सब आप के दरस परस बिन महादुखी हैं - केवल अवध की आसकर रहे हैं ●

इतनी बात के सुनते ही जद दोनों भाई उदास हो रहे - तद ऊधो जी तो श्री कृष्णचंद से बिदा हो नंद जसोदा का संदेसा वसुदेव देवकी को पहुंचाय अपने घर गये - औ रोहिनी जी श्री कृष्ण बलराम से मिल अति आनंदकर निज मंदिर में रहीं ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे ऊधो गोपी संबोधन भ्रमरगीत नाम अष्टचत्वारिंशोध्यायः ● ॥ ४८ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज - एक दिन श्री कृष्ण बिहारी

भक्त हितकारी कुबजा की प्रीति विचार - अपना वचन प्रतिपालने को ऊधो को साथ ले उस के घर गये ॥

जब कुबजा जान्यौ हरि आये ॥ पाटंबर पांवडे बिछाये ॥
अति आनंद लये उठि आगे ॥ पूरव पुन्य पुंज सब जागे ॥
ऊधो कौं आसन बैठारि ॥ मंदिर भीतर धसे मुरारि ॥

वहां जाय देखें तो चित्रशाला में उजला बिछौना बिछा है - उस पर एक फूलों से संवारी अच्छी सेज बिछी है - तिसी पर हरि जा बिराजे औ कुबजा एक और मंदिर में जाय सुगंध उबटन लगाय - न्हाय धोय कंघी चोटी कर - सुथरे कपडे गहने पहर आप को नखसिख से सिंगार पानखाय सुगंधलगाय - ऐसे राव चाव से श्री कृष्णचंद के निकट आई कि जैसे रति अपने पति के पास आई होय ॥ औ लाज से घूंघट किये प्रथम मिलन का भय उर लिये - चुपचाप एक ओर खडी हो रही ॥ देखते ही श्री कृष्णचंद आनंद कंद ने उसे हाथ पकड़ अपने पास बिठाय लिया औ उस का मनोरथ पूरन किया ॥

तब उठि ऊधो के ढिग आये ॥ भई लाज हंसि नैननिवाये ॥

महाराज - यों कुबजा को सुख दे ऊधो जी को साथ ले श्री कृष्णचंद फिर अपने घर आये - औ बलराम जी से कहने लगे कि भाई - हमने अक्रूर जी से कहा था कि तुम्हारा घर देखन जायगे सो पहले तो वहां चलिये - पीछे तिन्हें हस्तिनापुर को भेज वहां के समाचार मंगवावें ॥

इतना कह दोनों भाई अक्रूर के घरगये ॥ वह प्रभु को देखतें ही अति सुख पाय - प्रनामकर चरनरज सिर चढाय - हाथ जोड बिनतीकर बोला ॥ कृपा नाथ - आपने बडी कृपा की जो आय दरसन दिया - औ मेरा घर पवित्र किया ॥ यह सुन श्री कृष्णचंद बोले - कका - इतनी बडाई क्यों करते हो - हम तो आप के लडके हैं ॥ यों कह फिर सुनाया कि कका आप के पुन्य से असुर तो सब मारे गये - पर ऐक ही चिंता हमारे जी में है - जो सुनते हैं कि पंडु बैकुंठ सिधारे - औ दुर्योधन के हाथ से पांचों भाई हैं दुखी हमारे ॥॥

कुंती फुफू अधिक दुख पावै ॥ तुम बिन जाय कौन समझावै ॥

इतनी बात के सुनते ही अक्रूर जी ने हरि से कहा कि आप इस बात की चिंता न कीजे - मैं हस्तिनापुर जाऊंगा औ तिन्हें समझाय वहां की सुध ले आऊंगा ॥ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे कुबजा केलि बर्ननो नाम ऐकोनपंचाशतमोध्यायः ॥ ॥ ४९ ॥ ॥॥

---

श्री शुकदेव मुनि बोले कि पृथ्वी नाथ - जब ऐसे श्री कृष्ण जी ने अक्रूर के मुख से सुना - तब उन्हें पंडु की सुध लेने को बिदा किया ॥ वे रथ पर बैठ चले चले कईऐक दिन में मथुरा से हस्तिनापुर पहुंचे - औ रथ से उतर जहां राजा दुर्योधन अपनी सभा में सिंहासन पर बैठा था तहां जाय जुहारकर खडे हुऐ ॥ इन्हें देखते ही दुर्योधन सभा समेत उठ कर मिला - औ अति आदर मान से अपने पास बिठाय इनकी कुशल क्षेम पूछ बोला ॥॥

नीके सूरसेन वसुदेव ● नीके हैं मोहन बलदेव ●
उग्रसेन राजा किहिं हेत ● नाहि न काहू की सुध लेत ●
पुत्र हि मार करत हैं राज ● तिन्हें न काहू सों है काज ●

ऐसे जब दुर्योधन ने कहा - तब अक्रूर सुन चुप हो रहा औ मनहीं मन कहने लगा कि यह पापियों की सभा है-यहां मुझे रहना उचित नहीं-क्यों कि जो मैं रहूंगा तो यह ऐसी ऐसी अनेक अनेक बातें कहैगा सो मुझ से कब सुनी जायगीं - इस से यहां रहना भला नहीं ●

यों विचार अक्रूर जी वहां से उठ बिदुर को साथ ले पंडु के घर गये - तहां जाय देखैं तो कुंती पति के सोग से महा ब्याकुल हो रो रही है ● उसके पास जा बैठे औ लगे समझाने कि माई - बिधना से कुछ किसी का बस नहीं चलता - औ सदा कोई अमर हो जीता भी नहीं रहता-देहधर जीव दुख सुख सहता है-इस से मनुष को चिंता करनी उचित नहीं - क्यों कि चिंता किये से कुछ हाथ नहीं आता - केवल चित को दुख देना है ●

महाराज - जद ऐसे समझाय बुझाय अक्रूर जी ने कुंती से कहा - तद वह सोच समझ चुप हो रही - औ इन की कुशल पूछ बोली - कहो अक्रूर जी - हमारे माता पिता औ भाई वसुदेव जी कुटुंब समेत भले हैं - औ श्री कृष्ण बलराम कभी भीम - युधिष्ठिर - अर्जुन - नकुल - सहदेव - इन अपने पांचों भाइयों की सुधकरते हैं - ये तो यहां दुख समुद्र में पड़े हैं - वे इनकी रक्षा कब आय करेंगे - हम से अब तो इस अंध धृतराष्ट्र का दुख सहा नहीं जाता - क्यों कि वह दुर्योधन

की मति से चलता है-इन पांचों को मारने के उपाय में दिन रात रह ता है-कई बेर विष घोलदिया सो मेरे भीमसेन ने पीलिया ❁

इतना कह पुनि कुंती बोली कि कहो अक्रूर जी-अब सब कौरव यौं बैर किये रहैं-तब ये मेरे बालक किसका मुंह चहैं ❁ औ भीच से बच कैसे होंय सयाने-यही दुख बड़ा है हम क्या बखानें ❁ औ हरनी कुंड से बिछड करती है त्रास-त्यों मैं भी सदा रहती हूं उदास ❁ जि न्हों ने कंसादिक असुर संहारे-सोई हैं मेरे रखवारे ❁❁

भीम युधिष्ठिर अर्जुन भाई ❁ इनकौ दुख तुम कहियौ जाई ❁

जब ऐसे दीन हो कुंती ने कहे बैन-तब सुनकर अक्रूर ने भरलिये नैन ❁ औ समझाके कहने लगा कि माता-तुम कुछ चिंता मत करो ये जो पांचों पुत्र तुम्हारे हैं-सो महा बली जसी होंगे-शत्रु औ दुष्टों को मार करेंगे निकंद-इनके पक्षी हैं श्री गोविंद ❁ यों कह फिर अ क्रूर जी बोले कि श्री कृष्ण बलराम ने मुझे यह कह तुम्हारे पास भेजा है कि फूफी से कहियो किसी बात से दुख न पावे-हम वेग ही तुम्हा रे निकट आते हैं ❁

महाराज-ऐसे श्री कृष्ण की कही बातें कह अक्रूर जी कुंती को समझा य बुझाय आस भरोसा दे बिदा हो बिदुर को साथ ले धृतराष्ट के पास गये-औ उस से कहा कि तुम पुरखा होय ऐसी अनीति क्यों करते हो -जो पुत्र के बस होय अपने भाई का राज पाट ले भतीजों को दुख देते हो ❁ यह कहां का धर्म है औ ऐसा अधर्म करते हो ❁❁

लोचन गये न सूझे हिये ❁ कुल बहिजाय पाप के किये ❁

तुमने भले चंगे बैठे बिठाए क्यौं भाई का राज लिया-औ भीम युधिष्ठिर को दुख दिया ❁ इतनी बात के सुनते ही धृतराष्ट्र अक्रूर का हाथ पकड बोला कि मैं क्या करूं-मेरा कहा कोई नहीं सुनता- ये सब अपनी अपनी मति से चलते हैं-मैं तो इन के सोंहीं मूरख हो रहा हूं-इस से इन की बातों में कुछ नहीं बोलता-एकांत बैठ चुपचाप अपने प्रभु का भजन करता हूं ❁ इतनी बात जो धृतराष्ट्र ने कही तो अक्रूर जी दंडवतकर वहां से उठ रथ पर चढ हस्तनापुर से चले चले मथुरा नगरी में आए ❁❁

उग्रसेन वसुदेव सों-कही पंडु की बात ❁
कुंती के सुत महा दुखी-भये छीन अति गात ❁

यों उग्रसेन वसुदेव जी से हस्तनापुर के सब समाचार कह अक्रूर जी फिर श्री कृष्ण बलराम जी के पास जा प्रनामकर हाथ जोड बोले-महाराज-मैं ने हस्तनापुर में जाय देखा-आप की फूफी औ पांचों भाई कौरों के हाथ से महा दुखी हैं-अधिक क्या कहूंगा आप अंतरजामी हैं वहां की अवस्था औ बिपरीत तुम से कुछ छिपी नहीं ❁ यों कह अक्रूर जी तो कुंती का कहा संदेसा सुनाय बिदा हो अपनेघर गये औ सब समाचार सुन श्री कृष्ण बलदेव जो हैं सब देवन के देव-सो लोक रीति से बैठ चिंताकर भूमि का भार उतारने का बिचार करने लगे ❁

इतनी कथा श्री शुकदेव मुनि ने राजा परीक्षित को सुनायकर कहा कि हे पृथ्वी नाथ - यह जो मैं ने ब्रजबन मथुरा का जस गाया-सो

पूर्वार्ध कहाया ● अब आगे उत्तरार्ध गाऊंगा-जो द्वारिकानाथ का बल पाऊंगा ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे अक्रूर हस्तनापुर गमनो नाम पंचाशत्तमोऽध्यायः ● ॥ ५० ॥ ●



इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे पूर्वार्ध कथा समाप्तम् ●●●●

॥ अथ उत्तरार्ध कथा लिख्यते ॥

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-जों श्री कृष्णचंद दल समेत जुरा सिंधु को जीत कालयमन को मार मुचकुंद को तार ब्रज को तज द्वारिका में जाय बसे-तों मैं सब कथा कहता हूं-तुम सचेत हो चित लगाय सुनों-कि राजा उग्रसेन तो राजनीति लिये मथुरापुरी का राज करते थे-औ श्री कृष्ण बलराम सेवक की भांति उनकी आज्ञाकारी ● इस से राजा राज प्रजा सुखी थी-पर ऐक कंस की रानियां दों अपने पति के शोक से महादुखी थीं ● न उन्हें नींद आती थी न भूख प्यास लगती थी-आठ पहर उदास रहती थीं ●

ऐक दिन वे दोनों बहन अति चिंताकर आपस में कहने लगीं कि जैसे नृप बिन प्रजा-चंद बिन जामिनी-शोभा नहीं पाती-तैसे कंत बिन कामिनी भी शोभा नहीं पाती ● अब अनाथ हो यहां रहना भला नहीं-इस से अपने पिता के घर चल रहिये सो अच्छा ● महाराज-वे दोनों रानियां ऐसे आपस में सोच बिचारकर रथ मंगवाय उस पर चढ़-मथुरा से चली चली मगध देस में अपने पिता के यहां आईं-औ जैसे श्री कृष्ण बलराम जी ने सब असुरों समेत कंस को

मारा - जैसे उन दोनों ने ये रो समाचार अपने पिता से सब कह सुनाया ●

सुनते ही जुरासिंधु अति क्रोधकर सभा में आया - औ लगा कहने कि ऐसे बली कौन यदुकुल में उपजे - जिन्हों ने सब असुरों समेत महा बली कंस को मार मेरी बेटियों को रांड किया ● मैं अभी अपना सब कटक ले चढ धाऊं औ सब यदुबंसियों समेत मथुरापुरी को जलाय राम कृष्ण को जीता बांध लाऊं - तो मेरा नाम जुरासिंधु - नहीं तो नहीं ● -

इतना कह उस ने तुरंत ही चारों ओर के राजाओं को पत्र लिखे - कि तुम अपना दल ले ले हमारे पास आओ - हम कंस का पलटा ले यदुबंसियों को निर्बंस करेंगे ● जुरासिंधु का पत्र पातेही सब देस देस के नरेस - अपना अपना दल साथ ले झट चलेआए - औ यहां जुरासिंधु ने भी अपनी सब सेना ठीकठाक बनाय रक्खी - निदान सब असुर दल साथ ले जुरासिंधु ने जिस समैं मगध देस से मथुरा पुरी को प्रस्थान किया - तिस समैं उस के संग तेईस अक्षौहिनी थी ● इक्कीस सहस्र आठ सौ सत्तर रथी - औ इतने ही गजपती - एक लाख नव सहस्र साढेतीन सौ पैदल - औ छःसठ सहस्र अश्वपती - यह अक्षौहिनी का प्रमान है ●

ऐसी तेईस अक्षौहिनी उस के साथ थी औ उन में जो एक एक राक्षस जैसा बली था सो मैं कहांतक बर्नन करूं ● महाराज - जिस काल जुरासिंधु सब असुर सेना साथ ले धौंसा दे चला - उस काल दसों

दिस के दिग्पाल लगे थरथर कांपने - औ सब देवता मारे डरके भागने - पृथ्वी न्यारी ही बोझ से लगी छाती सी हिलने ॥ निदान कितने एक दिनों में चला चला आ पहुंचा औ उस ने चारों ओर से मथुरापुरी को घेर लिया - सब नगरनिवासी अति भयखाय श्री कृष्णचंद्र के पास जा पुकारे कि महाराज - जुरासिंधु ने आय चारों ओर से नगर घेरा अब क्या करें औ किधर जांय ॥

इतनी बात के सुनते ही हरि कुछ सोच विचारकरने लगे - इस में बलराम जी ने आय प्रभु से कहा कि महाराज - आपने भक्तों का दुख दूर करने के हेतु अवतारलिया है - अब अग्नि तन धारनकर असुर रूपी बन को जलाय - भूमि का भार उतारिये ॥ यह सुन श्री कृष्णचंद्र उन को साथ ले उग्रसेन के पास गये औ कहा कि महाराज - हमें तो लडने की आज्ञा दीजे - और आप सब यदुबंसियों को साथ ले गढ की रक्षा कीजे ॥

इतना कह जों मात पिता के निकट आये - तो सब नगरनिवासी घिर आये - औ लगे अति व्याकुल हो कहने कि हे कृष्ण - हे कृष्ण अब इन असुरों के हाथ से कैसे बचें - तब हरि ने मात पिता समेत सब को भयातुरदेख समझाके कहा - कि तुम किसी भांति चिंता मत करो ॥ यह असुर दल जो तुम देखते हो सो पल भर में यहां का यहीं ऐसे बिलाय जायगा - कि जैसे पानी के बबूले पानी में बिलाय जाते हैं ॥ यों कह सब को समझाय बुझाय ढाढस बंधाय उनसे बिदा हो प्रभु जों आगे बढे - तों देवताओं ने दो रथ शस्त्रभर इनके लिये भेज

दिये ● वे आय इनके सोंहीं खड़े ऊए - तब ये दोनों भाई उन दो नों रथ में बैठलिये ●●

निकसे दोऊ यदुराय ● पऊंचे सु दल में जाय ●

जहां जरासिंधु खड़ा था तहां जा निकले - देखते ही जरासिंधु श्री कृष्ण चंद से अति अभिमानकर कहने लगा - अरे - तू मेरे सोंहीं से भागजा मैं तुझे क्या मारूं - तू मेरी समान का नहीं - जो मैं तुज पर शस्त्र चलाऊं - भला बलराम को मैं देख लेता हूं ● श्री कृष्णचंद बोले अरे - मूरख अ भिमानी - तू यह क्या बकता है - जो सूरमा होते हैं सो बड़ा बोल कि सी से नहीं बोलते - सब से दीनता करते हैं - काम पड़े अपना बल दिखाते हैं - और जो अपने मुंह अपनी बड़ाई मारते हैं सो क्या कुछ भले कहाते हैं ● कहा है कि गरजता है सो बरसता नहीं - इस से अ या बकवाद क्यों करता है ●

इतनी बात के सुनते ही जरासिंधु ने जों क्रोध किया - त्यों श्री कृष्ण बल देव चलखड़ेऊए ● इनके पीछे वह भी अपनी सब सेना ले धाया - औ उस ने यों पुकारके कह सुनाया ● अरे दुष्टो - मेरे आगे से तुम कहां भागा जाओगे - बऊत दिन जीते बचे तुम ने अपने मन में क्या स मझा है - अब जीते न रहने पाओगे - जहां सब असुरों समेत कंस गया है तहांई सब यदुबंसियों समेत तुम्हें भी भेजूंगा ● महाराज - ऐसा दु ष्टवचन उस असुर के मुख से निकलते ही - कितनी एक दूर जाय दोनों भाई फिर खड़ेऊए ● श्री कृष्ण जी ने तो सब शस्त्र लिये औ ब लराम जी ने हल मूसल - जों असुर दल उनके निकट गया तो दोनों

बीर ललकार के ऐसे टूटे कि जैसे हाथियों के यूथ पर सिंह टूटे - औ लगा लोहा बाजने ॥

उस काल मारू जो बाजता था - सो तो मेघ सा गाजता था ॥ औ चारों ओर से राक्षसों का दल जो घिर आया था - सो दल बादल सा छाया था ॥ औ शस्त्रों की झड़ी झड़ी सी लगी थी ॥ उस के बीच श्री कृष्ण बलराम युद्ध करते ऐसे सोभाय मान लगते थे - जैसे सघन घन में दामनी सुहावनी लगती है ॥ सब देवता अपने अपने बिमानों पर बैठे आकाश से देख देख प्रभु का जस गाते थे - औ इन्हीं की जीत मनाते थे - और उग्रसेन समेत सब यदुबंसी अति चिंताकर मन हीं मन पछताते थे - कि हम ने यह क्या किया - जो श्री कृष्ण बलराम को असुर दल में जाने दिया ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले कि पृथीनाथ - जब लड़ते लड़ते असुरों की बहुत सी सेना कट गई - तब बलदेव जी ने रथ से उतर जुरासिंधु को बांध लिया ॥ इस में श्री कृष्णचंद जी ने जा बलराम से कहा कि भाई - इसे जीता छोड़ दो मारो मत क्यौं कि यह जीता जायगा तो फिर असुरों को साथ ले आवेगा - तिन्हें मार हम भूमि का भार उतारेंगे - औ जो जीता न छोड़ेंगे तो जो राक्षस भाग गये हैं सो हाथ न आवेंगे ॥ ऐसे बलदेव जी को समझाय प्रभु ने जुरासिंधु को छुड़वाय दिया ॥ वह अपने बिन लोगों में गया जो रन से भाग के बचे थे ॥॥

चहुं दिस चाहि कहै पछताय ॥ सिगरी सेना गई बिलाय ॥

भयो दुःख अति कैसें जीजे ॥ अब घर छांडि तपस्या कीजे ॥
मंत्री तबै कहै समझाय ॥ तुम सौ ज्ञानी क्यौं पछिताय ॥
कबहूं हार जीत पुनि होइ ॥ राज देस छांडे नहि कोइ ॥

क्या हुआ जो अब की लडाई में हारे ॥ फिर अपना दल जोड लावेंगे -औ सब यदुबंसियों समेत कृष्ण बलदेव को स्वर्ग पठावेंगे ॥ तुम किसी बात की चिंता मत करो ॥ महाराज - ऐसे समझाय बुझाय जो असुर रन से भाग के बचे थे तिन्हें औ जुरासिंधु को मंत्री ने घर ले पहुंचाया - औ वह फिर वहां कटक जोडने लगा ॥ यहां श्री कृष्ण बलराम रन भूमि में देखते क्या हैं कि लोहू की नदी बह निकली है - तिस में रथ विना रथी नाव से बहे जाते हैं ॥ ठौर ठौर हाथी मरे पहाड से पडे दृष्ट आते हैं ॥ उन के घावों से रक्त झरनों की भांति झरता है - तहां महादेव जी भूत प्रेत संग लिये अति आनंद कर नाच नाच गाय गाय मुंडों की माला बनाय बनाय पहनते हैं ॥ भूतनी प्रेतनी जोगिनियां खप्पर भर भर रक्त पीती हैं - गिद्ध गीदड काग लोथों पर बैठ बैठ मास खाते हैं - औ आपस में लडते जाते हैं ॥

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - जितने रथ हाथी घोडे औ राक्षस उस खेत में रहे थे तिन्हें पवन ने तो समेट इकठा किया और अग्नि ने पल भर में सब को जलाय भस्मकर दिया ॥ पंचतत्व पंचतत्व में मिल गये ॥ उन्हें आते तो सब ने देखा पर जाते किसीने न देखा कि किधर गये ॥ ऐसे असुरों को मार भूमि का भार उतार श्री कृष्ण बलराम भक्त हितकारी उग्रसेन के पास आय दंडवतकर हाथ

जोड बोला कि महाराज - आप के पुन्य प्रताप से असुर दल मारभगा या - अब निर्भय राज कीजे - औ प्रजा को सुखदीजे ● इतना बचन इनके मुखसे निकलते ही राजा उग्रसेन ने अति आनंद मान बडी बधाई की - औ धर्म राजकरने लगे ● इस में कितने एक दिन पीछे फिर जरासिंधु उतनी हीं सेना ले चढिआया - औ श्री कृष्ण बलदेव जी ने पुनि यौंही मारभगाया ● ऐसे तेईस तेईस अक्षौहिनी ले जरासिंधु सत्रह बेर चढिआया - औ प्रभु ने मार मार हटाया ●

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव मुनि ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज - इस बीच नारद मुनि जी के जो कुछ जी में आई तो ये एका एकी उठकर कालयमन के यहां गये ● इन्हें देखते ही वह सभा समेत उठ खडा हुआ - औ उसने दंडवतकर करजोड पूछा कि महाराज - आप का आना यहां कैसे भया ●●

सुनिकै नारद कहै बिचारि ● मथुरा में बलभद्र मुरारि ●
तो बिन तिन्हें हनै नहिं कोइ ● जरासिंधु सों कछु नहिं होइ ●
तू है अमर अति बली - बालक हैं बलदेव औ हरी ●

यों कह फिर नारद जी बोले कि जिसे तू मेघबरन - कंवल नैन - अति सुंदर बदन - पीतांबर पहरे - पीत पट ओढे देखे तिस का तू पीछा बिन मारे मत छोडियो ● इतना कह नारद मुनि तो चले गये औ कालयमन अपना दल जोडने लगा ● इस में कितने एक दिन बीच उस ने तीन कडोड महा मलेछ अति भयावने इकठे किये - ऐसे कि जिन के मोटे भुज गले - बडे दांत - मैले भेष - भूरे केस - नैन लाल घूंघची से -

तिन्हें साथले डंकादे मथुरापुरी पर चढि आया - औ उसे चारों ओर से घेर लिया ● उस काल श्री कृष्णचंद जी ने उस का बोहार देख अपने जी में विचारा - कि, अब यहां रहना भला नहीं क्यौं कि आज यह चढआया है - औ कल को जरासिंधु भी चढि आवे तो प्रजा दुखपावेगी ● इस से उत्तम यही है कि यहां न रहिये - सब समेत अनत जाय बसिये महाराज - हरि ने यों विचारकर बिस्वकर्मा को बुलाय समझाय बुझाय के कहा - कि तू अभी जा के समुद्र के बीच ऐक नगर बनाव ऐसा जिस में सब यदुबंसी सुख से रहैं - पर वे यह भेद न जानें कि ये हमारे घर नहीं औ पल भर में सब को वहां ले पहुंचाव ●

इतनी बात के सुनते ही जा बिस्वकर्मा ने समुद्र के बीच सुदरसन के ऊपर - बारह योजन का नगर जैसा श्री कृष्ण जी ने कहा था तैसाही रात भर में बनाय - उस का नाम द्वारिका रख - आ हरि से कहा ● फिर प्रभु ने उसे आज्ञा दी कि इसी समैं तू सब यदुबंसियों को वहां ऐसे पहुंचाय दे - कि कोई यह भेद न जाने जो हम कहां आऐ औ कौन ले आया ●

इतना बचन प्रभु के मुख से जों निकला त्यों रातों रातही उग्रसेन बसुदेव समेत बिस्वकर्मा ने सब यदुबंसियों को ले पहुंचाया - औ श्री कृष्ण बलराम भी वहां पधारे ● इस बीच समुद्र की लहर का शब्द सुन सब यदुबंसी चौंक पडे औ अति अचरजकर आपस में कहने लगे - कि मथुरा में समुद्र कहां से आया - यह भेद कुछ जाना नहीं जाता ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि पृथीनाथ- ऐसे सब यदुवंसियों को द्वारिका में बसाय श्री कृष्णचंद जी ने बलदेव जी से कहा कि भाई- अब चल के प्रजा की रक्षा कीजे औ कालयमन का बध ● इतना कह दोनों भाई वहां से चल ब्रजमंडल में आऐ ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे जुरासिंधु पराजयो नाम एक पंचाशतमोध्यायः ● ॥ ५१ ॥ ●●

———●●●●●●●●●●●●———

श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज- ब्रजमंडल में आते ही श्री कृष्णचंद ने बलराम जी को तो मथुरा में छोडा औ आप रूप सागर - जगत उजागर-पीतांबर पहने-पीत पट ओढे-सब सिंगार किये-कालयमन के दल में जाय उस के सनमुख हो निकले ● वह इन्हें देखते ही अपने मन में कहने लगा कि हो नहो यही कृष्ण है - नारद मुनि ने जो चिन्ह बताये थे सो सब इस में पाये जाते हैं - इन्ही ने कंसादि असुर मारे - जुरासिंधु की सब सेना हनी ● ऐसे मन ही मन विचार ●●

कालयमन यों कहै पुकारि ● काहे भागे जात मुरारि ●
आय परयौ अब मोसों काम ● ठाढे रहौ करौ संग्राम ●
जुरासिंधु हों नाहीं कंस ● यादव कुल कौ करौं विध्वंस ●

हे राजा - यों कह कालयमन अति अभिमानकर अपनी सब सेना को छोड अकेला श्री कृष्णचंद के पीछे धाया - पर उस मूरख ने प्रभु का भेद न पाया ● आगे आगे तो हरि भाजे जाते थे औ एक हाथ के अं

तर से पीछे पीछे वह दौडा जाता था ● निदान भागते भागते जब अनेक दूर निकल गये तब प्रभु एक पहाड की गुफा में बड गये-वहां जा देखें तो एक पुरुष सोया पडा है ● ये झट अपना पीतांबर उसे उढाय आप अलग एक ओर छिप रहे - पीछे से कालयमन भी दौडता हांफता उस अति अंधेरी कंदरा में जा पहुंचा - औ पीतांबर ओढे तिस पुरुष को सोता देख इस ने अपने जी में जाना कि यह कृष्ण ही छलकर सो रहा है ●

महाराज - ऐसे मन हीं मन विचार क्रोधकर उस सोते हुए को एक लात मार कालयमन बोला - अरे कपटी - क्या मिसकर साध की भांति निचिंताई से सो रहा है - उठ मैं तुझे अबहीं मारता हूं ● यों कह इस ने उस के ऊपर से पीतांबर झटक लिया - वह नींद से चौंक पडा और जों तिस ने इस की ओर क्रोधकर देखा तों यह जल बल भस्म हो गया ● इतनी बात के सुनते ही राजा परीक्षित ने कहा ●●

यह शुकदेव कहौ समझाय ● को वह रह्यौ कंदरा आय ●
ताकी दृष्ट भस्म क्यौं भयौ ● काने वाहि महा बर दयौ ●

श्री शुकदेव मुनि बोले पृथ्वीनाथ - इक्ष्वाकवंसी क्षत्री मानधाता का बेटा मुचुकुंद अति बली महाप्रतापी जिस का अरि दल दलन जस छाय रहा नौखंड ● एक समैं सब देवता असुरों के सताये - निपट घबराये मुचुकुंद के पास आए - औ अति दीनताकर उन्हों ने कहा महाराज असुर बहुत बढे - अब तिन के हाथ से बच नहीं सकते वेग हमारी रक्षा

करे ॥ यह रीति परंपरा से चली आई है कि जब जब सुर मुनि ऋषि अबोल करें हैं तब तब उनकी सहायता क्षत्रियों ने करी है ॥ इतनी बात के सुनते ही मुचकुंद उनके साथ हो लिया औ जाके असुरों से युद्ध करने लगा ॥ इस में लड़ते लड़ते कितने ही जुग बीत गये तब देवताओं ने मुचकुंद से कहा कि महाराज आपने हमारे लिये बहुत श्रम किया अब कहीं बैठ बिश्राम कीजिये औ देह को सुख दीजिये ॥ [illegible]

बहुत दिननि कीनौं संग्राम ॥ गयौ कुटुंब सहित धन धाम ॥
रह्यौ न कोऊ तहां तिहारो ॥ तातें अब जिन घर पग धारो ॥

और जहां तुम्हारा मन माने तहां जाओ ॥ यह सुन मुचकुंद ने देवताओं से कहा कृपानाथ मुझे कहीं कृपाकर ऐसी एकांत ठौर बताइये कि जहां जाय मैं निश्चिंताई से सोऊं औ कोई न जगावे ॥ इतनी बात के सुनते ही प्रसन्न हो देवताओं ने मुचकुंद से कहा कि महाराज आप धौलागिरि पर्वत की कंदरा में जाय सयन कीजिये तहां तुम्हें कोई न जगावेगा औ जो कोई जाने अनजाने वहां जाके तुम्हें जगावेगा तो वह देखते ही तुम्हारी दृष्टि से जल बल राख हो जावेगा ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा से कहा कि महाराज ऐसे देवताओं से बर पाय मुचकुंद तिस गुफा में रहा था ॥ इस से उस की दृष्टि पड़ते ही कालयमन जलकर छार हो गया ॥ आगे करुनानिधान कान्ह भक्त हितकारी ने मेघ बरन चंद्रमुख कंवलनैन चतुर्भुज हो शंख चक्र गदा पद्म लिये मोर मुकुट मकराकृत कुंडल बन

माल औ पीतांबर पहरे मुचकुंद को दरसन दिया ● प्रभु का स्वरूप देखते ही वह अष्टांग प्रनाम कर खड़ा हो हाथ जोड़ बोला - कि कृपानाथ - जैसे आप ने इस महा अंधेरी कंदरा में आय उजाला कर तम दूर किया - तैसे दया कर अपना नाम भेद बताय मेरे मन का भी भरम दूर कीजे ●

श्री कृष्णचंद बोले कि मेरे तो जन्म कर्म और गुन हैं घने - वे किसी भांति गने न जांय कोई कितना ही गने ● पर मैं इस जन्म का भेद कहता हूं सो सुनो कि अब के बसुदेव के यहां जन्म लिया इस से बासुदेव मेरा नाम हुआ औ मथुरापुरी में सब असुरों समेत कंस को मैं ने ही मार भूमि का भार उतारा - औ सत्रह बेर तेईस तेईस अक्षौहिनी सेना ले जरासिंधु युद्ध करने को चढि आया - सो भी मुझी से हारा और यह कालयमन तीन करोड़ म्लेछ की भीड़भाड़ ले लड़ने को आया था सो तुम्हारी दृष्टि से जल मरा ● इतनी बात प्रभु के मुख से निकलते ही सुनकर मुचकुंद को ज्ञान हुआ तो बोला कि महाराज - आप की माया अति प्रबल है उस ने सारे संसार को मोहा है - इसी से किसी की कुछ सुध बुद्धि ठिकाने नहीं रहती ●●

करत कर्म सब सुख के हेत ● तातें भारी दुख सहि लेत ●
चुभे हाड़ ज्यों स्वान-मुख-रुधिर चचोरे आप ●
जानत ताही तें चुवत-सुख माने संताप ●

और महाराज - जो इस संसार में आया है सो गृह रूपी अंध कूप से बिन आप की कृपा निकल नहीं सकता - इस से मुझे भी चिंता है कि

मैं कैसे गृह रूप कूप से निकलूंगा ● श्री कृष्ण जी बोले सुन मुचकुंद बात तो ऐसे ही है-जैसे तू ने कही पर मैं तेरे तरने का उपाय बतादेता हूं सो तू कर-तैं ने राजपाय भूमि-धन-स्त्री के लिये अधिक अधर्म किये हैं सो बिन तप किये न छूटेंगे-इस से उत्तर दिस में जाय तू तप करके यह अपनी देह छोड फिर ऋषि के घर जन्म लेगा-तब तू मुक्तिपदारथ पावेगा ● महाराज-इतनी बात जो मुचकुंद ने सुनी तो जाना कि अब कलियुग आया ● यह समझ प्रभु से बिदा हो दंडवतकर परिक्रमादे मुचकुंद तो बद्रीनाथ को गया-औ श्री कृष्णचंद जी ने मथुरा में आय बलराम जी से कहा ●●

कालयमन कौ कियौ निकंद ● बद्री दिस पठयौ मुचकुंद ●
कालयमन की सेना घनी ● तिन घेरी मथुरा आपनी ●
आवहु तहां मलेछन मारैं ● सकल भूमि कौ भार उतारैं ●

ऐसे कह हलधर को साथ ले श्री कृष्णचंद मथुरापुरी से निकल वहां आए जहां कालयमन का कटक खडा था-औ आते ही दोनों उन से युद्ध करने लगे ● निदान लडते लडते जब म्लेच्छ की सेना प्रभु ने सब मारी तब बलदेव जी से कहा कि भाई-अब मथुरा की सब संपति ले द्वारिका को भेजदीजे ● बलराम जी बोले बहुत अच्छा-तब श्री कृष्णचंद ने मथुरा का सब धन निकलवाय भैंसों-छकडों-ऊटों-हाथियों-पर लदवाय द्वारिका को भेज दिया ● इस बीच फिर जरासिंधु तेईस ही अक्षौहिनी सेना ले मथुरापुरी पर चढिआया-तब श्री कृष्ण बलराम अति घबराय के निकले औ उस के सनमुख जा दिखाई दे तिस के मन

का संताप मिटाने को भाग चले - तद मंत्री ने जुरासिंधु से कहा कि महाराज - आप के प्रताप के आगे ऐसा कौन बली है - जो ठहरे - देखो वे दोनों भाई कृष्ण बलराम - छोड के सब धन धाम - लेके अपना प्रान तुम्हारे त्रास के मारे नंगे पाओं भागे चले जाते हैं ❁ इतनी बात मंत्री से सुन जुरासिंधु भी यों पुकारकर कहता ऊआ सेना ले उन के पीछे दौड़ा ❁❁

काहे डरके भागे जात ❁ ठाढे रहौ करौ कछु बात ❁
परत उठत कंपत क्यौं भारी ❁ आई है ढिंग मीच तिहारी ❁

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव मुनि बोले कि पृथीनाथ - जब श्री कृष्ण औ बलदेव जी ने भाग के लोकरीति दिखाई - तब जुरासिंधु के मन से पिछला सब शोक गया औ अति प्रसन्न ऊआ - ऐसा कि जिस का कुछ बरनन नहीं किया जाता ❁ आगे श्री कृष्ण बलराम भागते भागते एक गौतम नाम पर्वत - ग्यारह जोजन ऊंचा था - तिस पर चढ़गये और उस की चोटी पर जाय खड़े भये ❁❁

देख जुरासिंधु कहै पुकारि ❁ शिखर चढे बलभद्र मुरारि ❁
अब किम हम सों जांय पलाय ❁ या पर्वत कों देऊ जलाय ❁

इतना वचन जुरासिंधु के मुख से निकलते ही सब असुरों ने उस पहाड को जा घेरा औ नगर नगर गांव गांव से काठकबाड लाय लाय उस के चारों ओर चुन दिया - तिस पर गडगूदड घी तेल से भिगो डालकर आग लगादी ❁ जब वह आग पर्वत की चोटीतक लहकी तद उन दोनों भाइयों ने वहां से इस भांति द्वारिका की बाट ली कि

किसी ने उन्हें जाते भी न देखा और पहाड़ जलकर भस्म होगया ॥ उ स काल जरासिंधु श्री कृष्ण बलराम को उस पर्वत के संग जला मरा जान अति सुखमान सब दल साथ ले मथुरापुरी में आया और वहां का राज ले नगर में ढंढोरा दे उस ने अपना थाना बैठाया ॥ जितने उग्रसेन वसुदेव के पुराने मंदिर थे सो सब ढाये और उस ने आप अपने नये बनवाये ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा से कहा कि महाराज इस रीति से जरासिंधु को धोखा दे श्री कृष्ण बलराम जी तो द्वारिका में जाय बसे और जरासिंधु भी मथुरा नगरी से चल सब सेना ले अति आनंद करता निसंक हो अपने घर आया ॥ इति श्री लाल कृते प्रेमसागरे कालयमन मरनो मुचकुंद तरनो श्री कृष्ण बलराम द्वारिका गमनो नाम द्विपंचाशतमोध्यायः ॥ ५२ ॥

श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज अब आगे कथा सुनिये कि जब कालयमन को मार मुचकुंद को तार जरासिंधु को धोखा दे बलदेव जी को साथ ले श्री कृष्णचंद आनंदकंद जो द्वारिका में गये तो सब यदुबंसियों के जी में जी आया औ सारे नगर में सुख छाया ॥ सब चैन आनंद से पुरवासी रहने लगे ॥ इस में कितने एक दिन पीछे एक दिन कई एक यदुबंसियों ने राजा उग्रसेन से जा कहा कि महाराज अब कहीं बलराम जी का बिवाह किया चाहिये क्यौं कि ये सामर्थ हुए ॥ इतनी बात के सुनते ही राजा उग्रसेन ने एक ब्राह्मन को बुला

य-अति समझाय बुझाय के कहा-कि देवता-तुम कहीं जाकर अच्छा कुल घर देख बलराम जी की सगाई कर आओ ● इतना कह रोली-अक्षत-रुपया-नारियल-मंगवा उग्रसेन जी ने उस ब्राह्मन को तिलक कर रुपया नारियल दे बिदा किया ● वह चला चला अनेता देस में राजा रेवत के यहां गया-और उस की कन्या रेवती से बलराम जी की सगाई कर लग्न ठहराय-उस के ब्राह्मन के हाथ टीका लिवाय-द्वारिका में राजा उग्रसेन के पास ले आया-और उस ने वहां का सब ब्यौरा कह सुनाया ● सुनते ही राजा उग्रसेन ने अति प्रसन्न हो उस ब्राह्मन को बुलाय-जो टीका ले आया था - मंगलाचार करवाय टीका लिया-और उसे बहुत सा धन दे बिदा किया ● पीछे आप सब यदुबंसियों को साथ ले बड़ी धूमधाम से अनेता देस में जाय बलराम जी का ब्याह कर लाए ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव मुनि ने राजा से कहा कि पृथीनाथ-इस रीति से तो सब यदुबंसी बलदेव जी का ब्याह कर लाए-और श्री कृष्णचंद जी आप ही भाई को साथ ले कुंडलपुर में जाय-भीष्मक नरेस की बेटी रुक्मिनी - सिसुपाल की मांग को राक्षसों से युद्ध कर छीन लाए ● उसे घर में लाय ब्याह लिया ● यह सुन राजा परीक्षित ने श्री शुकदेव जी से पूछा-कि कृपासिंधु - भीष्मक सुता रुक्मिनी को श्री कृष्णचंद कुंडलपुर में जाय असुरों को मार किस रीति से लाए सो तुम मुझे समझाकर कहो ● श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-आप मन लगाय सुनिये मैं सब भेद वहां का समझाकर कहता हूं कि विदर्भ दे

स में कुंडलपुर नाम एक नगर तहां भीष्मक नाम नरेस - जिस का 
जस छाय रहा चहुं देस ● उन के घर में जाय श्री सीता जी ने औता 
र लिया - कन्या के होते ही राजा भीष्मक ने योतिषियों को बुलाय भेजा ● तिन्हों ने आय लग्न साध उस लडकी का नाम रुक्मिनी धरकर कहा - कि महाराज - हमारे विचार में ऐसे आता है कि यह कन्या अति सुशील सुभाव - रूपनिधान - गुनों में लक्ष्मी समान - होगी और आदि पुरुष से ब्याही जायगी ●

इतना बचन योतषियों के मुख से निकलते ही राजा भीष्मक ने अति सुखमान बडा आनंद किया - औ बहुत सा कुछ ब्राह्मनों को दिया ● आगे वह लडकी चंद्रकला की भांति दिन दिन बढने लगी - और बाललीला कर कर मात पिता को सुख देने ● इस में कुछ बडी हुई तो लगी सखी सहेलियों के साथ अनेक अनेक प्रकार के अनूठे अनूठे खेल खेलने ● एक दिन वह मृगनैनी - पिकबैनी - चंपकबरनी - चंदमुखी - सखियों के संग आंखमिचौली खेलने गई - तो खेल समै सब सखियां उसे कहने लगीं - कि रुक्मिनी - तू हमारा खेल खोने को आई है - क्यौं कि जहां तू हमारे साथ अंधेरे में छिपती है तहां तेरे मुखचंद की जोति से चांदना होजाता है - इस से हम छिप नहीं सकतीं ● यह सुन वह हंस कर चुप हो रही ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने कहा कि महाराज - इसी भांति वह सखियों के संग खेलती थी औ दिन दिन छबि उस की दूनी होती थी - कि इस बीच एक दिन नारद जी कुंडलपुर में आए - औ रुक्मिनी

को देख श्री कृष्णचंद के पास द्वारिका में जाय उन्हों ने कहा कि महा राज कुंडलपुर में राजा भीष्मक के यहां एक कन्या रूप गुन शीलकी खा न लक्ष्मी की समान जन्मी है-सो तुम्हारे योग है ● यह भेद जब ना रद मुनि से सुन पाया तभी से रात दिन हरि ने अपना मन उस पर लगाया ● महाराज इस रीति करके तो श्री कृष्णचंद ने रुक्मिनी का नाम गुन सुना और जैसे रुक्मिनी ने प्रभु का नाम औ जस सुना सो कहता हूं ● कि एक समैं देस देस के कितने एक जाचकों ने जाय कुं डलपुर में श्री कृष्णचंद का जस गाय-जैसे प्रभु ने मथुरा में जन्म लि या औ गोकुल बृंदावन में जाय ग्वाल बालों के संग मिल बाल चरित्र किया-और असुरों को मार भूमि का भार उतार यदुबंसियों को सुख दिया था-तैसे ही गाय सुनाया ● हरि के चरित्र सुनते ही सब नगर निवासी अति आश्चर्यकर आपस में कहने लगे-कि जिन की लीला हम ने कानों सुनी-तिन्हें कब नैनों देखेंगे ● इस बीच जाचक किसी ढ ब से राजा भीष्मक की सभा में जाय प्रभु के चरित्र औ गुन गाने लगे ● उस काल ●● [illegible]

चढी अटा रुक्मिनि सुंदरी ● हरि चरित्र धुनि श्रवननि परी ●
अचरज करै भूलि मन रहै ● फेर उझककर देखनि चहै ●
सुन कै कुंवरि रही मन लाय ● प्रेम लता उर उपजी आय ●
भई मगन बिह्वल सुंदरी ● वाकी सुध बुध हरि गुन हरी ●

यों कह श्री शुकदेव जी बोले-कि पृथीनाथ-इस भांति श्री रुक्मिनी जी ने प्रभुका जस औ नाम सुना-तो तिसी दिन से रात दिन आठ पहर

चौंसठ घडी सोते-जागते-बैठे-खडे-चलते-फिरते-खाते-पीते-खेलते-तिन्हीं का ध्यान कियेरहे-ग्रौर गुन गायाकरे ● नित भोरही उठे स्नानकर मट्टी की गौर बनाय रोली-ग्रक्षत-पुष्पचढाय-धूप-दीप-नैवेद्यकर मनाय-हाथ जोड सिरनाय-उस के ग्रागे कहाकरे ●●

मो पर गौरि कृपा तुम करौ ● यदुपति पति दे मम दुख हरौ ●

इसी रीति से सदा रुक्मिनी रहने लगी-एक दिन सखियों के संग खेलती थी कि राजा भीष्मक उसे देख ग्रपने मन में चिंताकर कहने लगा-कि ग्रब यह ऊई ब्याहन जोग-इसे शीघ्र कहीं न दीजे तो हंसेंगे लोग ● कहा है-कि जिस के घर में कन्या बडी होय तिस का दान-पुन्य-जप-तपकरना ग्रथा है-क्यों कि किये से तवतक कुछ धर्म नहीं होता-जबतक कन्या के पहन से न उतरन होय ● यों बिचार राजा भीष्मक ग्रपनी सभा में ग्राय सब मंत्री ग्रौ कुटुंब के लोगों को बुलाय बोले-भाइयो-कन्या ब्याहन जोग ऊई-इस के लिये कुलवान-गुनवान-रूपनिधान-शीलवान-कहीं वर ढूंढा चाहिये ●

इतनी बात केसुनते ही तिन लोगों ने ग्रनेक ग्रनेक देसों के नरेसों के कुल-गुन-रूप-ग्रौ पराक्रम कह सुनाये पर राजा भीष्मक के चित में किसी की बात कुछ न ग्राई ● तब उन का बडा बेटा जिस का नाम रुक्म-सो कहने लगा कि पिता-नगर चंदेरी का राजा सिसुपाल ग्रति बलवान है ग्रौर सब भांति से हमारी समान ● तिस से रुक्मिनी की सगाई वहां कीजे ग्रौ जगत में जस लीजे ● महाराज-जद उस की भी

बात राजा ने सुनी अनसुनी की तद तो रुक्मकेश नाम उन का छोटा लडका बोला ●●

रुक्मिनि पिता कृष्ण कौं दीजे ● वसुदेव सों सगाई कीजे ●
यह सुनि भीष्मक हरषे गात ● कही पूत तें नीकी बात ●
तू बालक सब सों अति ज्ञानी ● तेरी बात भली हम मानी ●
[illegible] कहा है ●●
छोटे बडेनि पूछ के - कीजै मन परतीति ●
सार बचन गहलीजिये - यही जगत की रीति ●

ऐसे कह फिर राजा भीष्मक बोले - कि यह तो रुक्मकेश ने भली बात कही यदुबंसियों में राजा सूरसेन बडे जसी औ प्रतापी हुए - तिन हीं के पुत्र बसुदेव जी हैं सो कैसे हैं कि जिन के घर में आदि पुरुष अबिनासी सकल देवन के देव श्री कृष्णचंद जी ने जन्म ले महा बली कंसादिक राक्षसों को मार औ भूमि का भार उतार यदुकुल को उजागर किया और सब यदुबंसियों समेत प्रजा को सुखदिया ● ऐसे जो द्वारका नाथ श्री कृष्णचंद जी को रुक्मिनी दें तो जगत में जस औ बडाई लें ● इतनी बात के सुनते ही सब सभा के लोग अति प्रसन्न हो बोले कि महाराज - यह तो तुम ने भली बिचारी ● ऐसा बर घर और कहीं न मिलेगा - इस से उत्तम यही है कि श्री कृष्णचंद ही को रुक्मिनी ब्याह दीजे ● महाराज - जब सब सभा के लोगों ने यों कहा तब राजा भीष्मक का बड़ा बेटा जिस का नाम रुक्म सो सुन निपट झुंझलाय के बोला ●●

समझ न बोलत महागंवार ॥ जानत नहीं कछु ब्यौहार ॥

सोरह बरस नंद के रह्यौ ॥ तब अहीर सब काहू कह्यौ ॥

कामरि ओढी गाय चराई ॥ बरहे बैठि छाक तिन खाई ॥

वह तो गंवार ग्वाल है जिस की जातपांत का क्या ठिकाना - और जिस के मा बाप ही का भेद नहीं जानाजाता - उसे हम पुत्र किस का कहैं ॥ कोई नंद गोप का जानता है - कोई बसुदेव का कर मानता है - पर आजतक यह भेद किसी ने नहीं पाया कि कृष्ण किस का बेटा है ॥ इसी से जो जिस के मन में आता है सो गाता है ॥ हम राजा हमें सब कोई जानता मानता है और यदुबंसी राजा कब भये ॥ क्या हुआ जो थोड़े दिनों से बलकर उन्हों ने बड़ाई पाई - पहला कलंक तो अब न छूटेगा ॥ वह उग्रसेन का चाकर कहाता है - तिस से सगाई कर क्या हम कुछ संसार में जस पावेंगे ॥ कहा है ॥ ब्याह - बैर और प्रीति समान से करिये तो शोभा पाइये ॥ और जो कृष्ण को देंगे तो लोग कहैंगे ग्वाल का साला - तिस से सब जायगा नाम औ जस हमारा ॥

महाराज - यों कह फिर रुक्म बोला ॥ कि नगर चंदेरी का राजा सिसुपाल बड़ा बली औ प्रतापी है - उस के डर से सब थरथर कांपते हैं ॥ और परंपरा से उन के घर में राज गाद्दी चलीआती है - इस से अब उचित यही है कि रुक्मिनी उसी को दीजे - और मेरे आगे फेर कृष्ण का नाम भी न लीजे ॥ इतनी बात के सुनते ही सब सभा के लोग मारेडर के मन ही मन अछतापछता के चुप होरहे - और राजा भीष्मक भी कुछ न बोला ॥ इस में रुक्म ने जोतषी को बोलाय शुभ दिन लग्न ठहराय - एक

ब्राह्मन के हाथ राजा सिसुपाल के यहां टीका भेज दिया ● वह ब्राह्मन टीका लिये चला चला नगर चंदेरी में जाय राजा सिसुपाल की सभा में पऊंचा ● देखते ही राजा ने प्रनामकर जब ब्राह्मन से पूछा-कहो देवता - आप का आना कहां से ऊआ और यहां किस मनोरथ के लिये आए ● तब तो उस विप्र ने असीस दे अपने जाने का सब ब्यौरा कहा ● सुनते ही प्रसन्न हो राजा सिसुपाल ने अपना परोहित बुलाय टीका लिया- औ तिस ब्राह्मन को बऊत सा कुछ दे बिदा किया ● पीछे जुरासिंधु आदि सब देस देस के नरेसों को नोंत बुलाया ● वे अपना दल लेले आए-तब यह भी अपना सब कटक ले ब्याहन चढा ● उस ब्राह्मन ने आ राजा भीष्मक से कहा जो टीका लेगया था-कि महाराज-मैं राजा सिसुपाल को टीका दे आया-वह बडी धूमधाम से बरात ले ब्याहन को आता है आप अपना कार्य कीजे ●

यह सुन राजा भीष्मक पहले तो निपट उदास ऊए-पीछे कुछ सोच समझ मंदिर में जाय उन्हों ने पटरानी से कहा ● वह सुनकर लगी मंगलामुखी औ कुटुंब की नारियों को बुलवाय-मंगलाचार करवाय ब्याह की सब रीति भांति करने ● फिर राजा ने बाहर आ-प्रधान औ मंत्रियों को आज्ञा दी-कि कन्या के बिवाह में हमें जो जो वस्तु चाहिये सो सौं सब इकठी करो ● राजा की आज्ञा पाते ही मंत्री औ प्रधानों ने सब वस्तु बात की बात में बनवाय मंगवाय लाय धरी ● लोगों ने देखा सुना तो यह चरचा नगर में फैली-कि रुकिमनी का बिवाह श्री क्रिस्नचंद से होता था सो दुष्ट रुक्म ने न होने दिया-अब सिसुपाल से होगा ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी नें राजा परीक्षित से कहा-कि पृथीनाथ - नगर में तो घर घर यह बात होरही थी औ राजमंदिर में नारियां गाय बजाय के रीति भांति करती थीं-ब्राह्मन बेद पढ पढ टेहले करवाते थे- ठौर ठौर दुंदभी बाजते थे-बार बार सपल्लव केलें के खंभ गाड गाड - सोने के कलस भरभर लोग धरते थे औ तोरन बंदनवारें बांधते थे ● और एक ओर नगर निवासी न्यारे ही-हाट-बाट-चौहटे-झाड-बुहार-पट से पाटते थे ● इस भांति घर औ बाहर में धूम मचरही थी कि उसी समैं दो चार सखियों ने जा रुक्मिनी से कहा कि ●●

तोहि रुक्म सिसुपालहि दई ● अब तू रुक्मिनि रानी भई ●
बोली सोच नायकर सीस ● मन बच मेरे पत जगदीस ●

इतना कह रुक्मिनी ने अति चिंताकर एक ब्राह्मन को बुलाय - हाथ जोड उस की बहुत सी बिनती औ बडाई कर - अपना मनोरथ उसे सब सुनाय के कहा ● कि महाराज - मेरा संदेसा द्वारिका लेजाओ औ र द्वारिकानाथ को सुनाय उन्हें साथकर लेआओ-तो मैं तुम्हारा बडा गुन मानूगी औ यह जानूगी कि तुम ने हीं दयाकर मुझे श्री कृष्न वर दिया ●

इतनी बात के सुनते ही वह ब्राह्मन बोला - अच्छा तुम संदेसा कहो मैं लेजाऊंगा औ श्री कृष्नचंद को सुनाऊंगा ● वे कृपानाथ हैं जो कृपाकर मेरे संग आवेंगे तो लेआऊंगा ● इतना बचन जों ब्राह्मन के मुख से निकला-तोंहीं रुक्मिनी जी ने एक पाती प्रेमरंगराती लिख उस

के हाथ दी और कहा कि श्री कृष्णचंद आनंदकंद को पाती दे-मेरी ओर से कहियो कि उस दासी ने करजोड अति बिनतीकर कहा है-जो आप अंतरजामी हैं-घट घट की जानते हैं-अधिक क्या कहूंगी मैं ने तुम्हारी सरनली है-अब मेरी लाज तुम्हें है-जिस में रहै सो कीजे-और इस दासी को आय बेग दरसन दीजे ●-

महाराज-ऐसे कह सुन जब रुक्मीनी जी ने उस ब्राह्मन को बिदा किया-तब वह प्रभु का ध्यानकर नाम लेता द्वारिका को चला और हरि इच्छा से बात के कहते जा पहुंचा ● वहां जाय देखे तो समुद्र के बीच वह पुरी है-जिस के चहुं ओर बडे बडे पर्वत औ बन उपबन शोभा दे रहे हैं-तिन में भांति भांति के पशु पक्षी बोल रहे हैं औ निरमल जल भरे सुथरे सरोवर-उन में कंवल डहडहाय रहे-तिन पर भौंरों के झुंड के झुंड गूंज रहे ● और तीर पै हंस सारस आदि पक्षी कलोलेंकर रहे-कोसोंतक अनेक अनेक प्रकार के फल फूलों की बाडियां चली गई हैं-तिन की बाडों पर पनबाडियां लहलहा रही हैं-बावडी-इंदारों पै खडे मीठे सुरों से गाय गाय माली रंहट परोहे चलाय चलाय ऊंचे नीचे नीर सींच रहे हैं-और पनघटों पर पनहारियों के ठट्ठ के ठट्ठ लगे हुए हैं ●

यह छबि निरख हरख-वह ब्राह्मन जों आगे बढा तो देखता क्या है कि नगर के चारों ओर अति ऊंचा कोट-उस में चार फाटक-तिन में कंचन खचित जडाऊ किवाड लगे हुए हैं औ पुरी के भीतर चांदी सोने के मनि मय-पचखने सतखने मंदिर-ऊंचे ऐसे कि आकाश से बा

करें जगमगाय रहे हैं-तिन के कलस कलसियां बिजली सी चमकती हैं बरन बरन की ध्वजा पताका फहराय रहीं हैं-खिडकी-झरोखों-मोखों-जालियों से सुगंध की लपटें आयरहीं हैं-द्वार द्वार सपल्लव केले के खंभ औ कंचन कलस भरे धरे हैं-तोरन-बंदनवारें बंधी हुई हैं औ घर घर आनंद के बाजन बाजरहे हैं-ठौर ठौर कथा पुरान औ हरि चरचा होरही हैं-अठारह बरन सुख चैन से बास करते हैं-सुदरसन चक्र पुरी की रक्षा करता है ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले-कि राजा-ऐसी जो सुंदर सुहावनी द्वारिकापुरी-तिसे देखता देखता वह ब्राह्मन राजा उग्रसेन की सभा में जा खडाहुआ और असीसकर वहां इस नैं पूछा कि श्री कृष्णचंद जी कहां बिराजतें हैं-तब किसी ने इसे हरि का मंदिर बताय दिया ● यह जों द्वारपर जाय खडा हुआ-तों द्वारपालों ने इसे देख दंडवतकर पूछा ●●

कोहौ आप कहां तें आये ● कौन देस की पाती लाये ●

यह बोला ब्राह्मन हूं औ कुंडल पुरका रहनेवाला-राजा भीष्मक की कन्या रुक्मिनी उस की चीठी श्री कृष्णचंद को देने आया हूं ● इतनी बात के सुनते ही पैरियों ने कहा-महाराज-आप मंदिर में पधारिये-श्री कृष्णचंद सोंहीं सिंहासन पर बिराजते हैं ● बचन सुन ब्राह्मन जो भीतर गया-तों हरि ने देखते ही सिंहासन से उतर दंडवतकर अति आदर मान किया औ सिंहासन पर बिठाय चरन धोय चरनामृत लिया और ऐसे सेवा करने लगे जैसे कोई अपने इष्ट की सेवा करे

● निदान प्रभु ने सुगंध उबटन लगाय-न्हिलाय धुलाय पहले तो उ से षटरस भोजन करवाया-पीछे बीडा दे केसर चंदन से चरच फूलों की माला पहिराय-मनिमय मंदिर में लेजाय-ऐक सुथरे जडाऊ खट छपर में लिटाया ● महाराज-वह भी बाट का हारा थका तो था ही-लेटते ही सुखपाय सोगया ● श्री कृष्ण जी कितनी ऐक बेरतक तो उस की बातें सुनने की अभिलाषा किये वहां बैठे मन ही मन कह ते रहे कि अब उठे अब उठे ● निदान जब देखा कि न उठा तब आ तुर हो-उस के पैंताने बैठ लगे पांव दाबने ● इस में उस की नींद टूटी तो वह उठबैठा तब हरि ने विस की क्षेम कुसल पूछ-पूछा ●●

नीकौ राजदेस तुम तनौं ● हम सौं भेद कहौ आपनौं ●
कौंन काज व्हां आवन भयौ ● दरस दिखाय हमें सुख दयौ ●

ब्राह्मन बोला कि कृपानिधान-आप मन दे सुनिये-मैं अपने आने का कारन कहता हूं-कि महाराज-कुंडलपुर के राजा भीष्मक की कन्या ने जब से आप का नाम औ गुन सुना है-तभी से वह निस दिन तुम्हारा ध्यानकिये रहती है-औ कंवल चरन की सेवा किया चाहती थी और सं योग भी आयबना था-पर बात बिगड गई ● प्रभु बोले सो क्या-ब्राह्मन ने कहा-दीनदयाल-ऐक दिन राजा भीष्मक ने अपने सब कुटुंब औ सभा के लोगों को बुलाय के कहा-कि भाइयो-कन्या ब्याहन जोग भई अब इस के लिये वर ठहराया चाहिये ● इतना वचन राजा के मुख से निकलते ही-विन्हों ने अनेक अनेक राजाओं का-कुल-गुन-नाम-औ पराक्रम-कह सुनाया-पर इन के मन में न आया-तब रुक्मकेश ने आ

य का नाम किया-तो प्रसन्न हो राजा ने उस का कहना मानलिया ● और सब से कहा कि भाइयो-मेरे मन में तो इस की बात पत्थर की लकीर होचुकी-तुम क्या कहते हो ● वे बोले महाराज-ऐसा-घर-बर-जो त्रिलोकी ढूंढियेगा तो भी न पाइयेगा ● इस से अब उचित यही है कि बिलंब न कीजे-शीघ्र श्री कृष्णचंद से रुक्मिनी का बिवाहकर दीजे ● महाराज-यह बात ठहरचुकी थी-इस में रुक्म ने भांजीमार रुक्मिनी की सगाई सिसुपाल से की ● अब वह सब असुर दल साथ ले ब्याहन को चढा है ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले-कि पृथीनाथ-ऐसे उस ब्राह्मन ने सब समाचार कह-रुक्मिनी जी की चीठी हरि के हाथ दी-प्रभु ने अति हित से पाती ले छाती से लगाय ली ● औ पढकर प्रसन्न हो ब्राह्मन से कहा-देवता-तुम किसी बात की चिंता मतकरो ● मैं तुम्हारे साथ चल असुरों को मार उन का मनोरथ पूरा करूंगा ● यह सुन ब्राह्मन को तो धीरज हुआ पर हरि रुक्मिनी का ध्यानकर चिंता करने लगे ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे श्री कृष्ण प्रत रुक्मिनी संदेशो नाम त्रिपंचाशतमोध्यायः ● ॥ ५३ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले-कि हे राजा-श्री कृष्णचंद ने ऐसे उस ब्राह्मन को ढाढस बंधाय फिर कहा ●●

जैसें घिस के काठ तें-काढहिं ज्वाला जारि ●
ऐसें सुंदरि ल्याय हौं-दुष्ट असुर दल मारि ●

इतना कह फिर सुथरे बस्त्र-आभूषन-मनमानते पहन-राजा उग्रसेन के पास जाय प्रभु ने हाथ जोडकर कहा ● महाराज-कुंडलपुर के राजा भीष्मक ने अपनी कन्या देन को पत्रलिख-पुरोहित के हाथ मुझे अकेला बुलाया है - जो आप आज्ञा दें तो जाऊं औ उस की बेटी ब्याह लाऊं ●●

सुनकर उग्रसेन यों कहै ● दूरदेस कैसें मन रहै ●

तहां अकेले जात मुरारि ● मत काहू सें उपजे रारि ●

तब तुम्हारे समाचार हमें व्हां कौन पहुंचावेगा - यों कह पुनि उग्रसेन बोले-कि अच्छा जो तुम वहां जाया चाहते हो तो अपनी सब सेना साथ ले दोनों भाई जाओ औ ब्याह कर शीघ्र चले आओ ● व्हां किसी से लडाई झगडा न करना-क्यों कि तुम चिरंजीव हो तो सुंदरि बहुत आय रहैंगीं ● आज्ञा पाते ही श्री कृष्णचंद बोले-कि महाराज-तुम ने सचकहा पर मैं आगे चलता हूं-आप कटक समेत बलराम जी को पीछे से भेज दीजेगा ●

ऐसे कह हरि उग्रसेन वसुदेव से विदाहो-उस ब्राह्मन के निकट आए-और रथ समेत अपने दारुक सारथी को बुलवाया ● वह प्रभु की आज्ञापाते ही चार घोडे का रथ तुरंत जोत लाया-तब श्री कृष्णचंद उस पर चढे औ ब्राह्मन को पास बिठाय-द्वारिका से कुंडलपुर को चले ● जों नगर के बाहर निकले तों देखते क्या हैं कि दाहनी ओर तो मृग के झुंड के झुंड चले जाते हैं औ सनमुख से सिंह सिंहनी अपना भक्ष लिये गरजते आते हैं ● यह शुभ सुगन देख ब्राह्मन अ

पने जी में विचार कर बोला कि महाराज-इस समैं इस शकुन के दे खने से मेरे विचार में यह आता है-कि जैसे ये अपना काज साध के आते हैं-तैसे ही तुम भी अपना काज सिद्धकर आओगे ● श्री कृष्णचंद बोले आप की कृपा से ● इतना कह हरि वहां से आगे बढे औ न ये नये देस-नगर-गांव-देखते देखते कुंडलपुर में जाय कुंचे-तो तहां देखा-कि ठौर ठौर ब्याह की सामा जो संजोय धरी है-तिस से नगर की छवि कुछ और की और होरही है ●●



झारें गली चौहटे छावें ● चोआ चंदन सौं छिरकावें ●
पोय सुपारी कौरा किये ● बिच बिच कनक नारियर दिये ●
हरे पात फल फूल अपार ● ऐसी घर घर बंदन वार ●
ध्वजा पताका तोरन तने ● सुढव कलस कंचन के बने ●

और घर घर में आनंद होरहा है-महाराज-यह तो नगर की सोभा थी औ राजमंदिर में जो कुतूहल होरहा था-उस का बरनन कोई क्या करे-वह देखे ही बनिआवे ● आगे श्री कृष्णचंद ने सब नगर देख आ राजा भीष्मक की बाडी में डेरा किया औ शीतल छांह में बैठ ठंडे हो उस ब्राह्मन से कहा कि देवता-तुम पहले हमारे आने का समाचार रुक्मिनी जी को जा सुनाओ-जो वे धीरजधर अपने मन का दुख हरें पीछे वहां का भेद हमें आ बताओ-जो हम फिर उस का उपाय करें ● ब्राह्मन बोला कि कृपानाथ-आज व्याह का पहला दिन है-राज मंदिर में बडी धूमधाम होरही है-मैं जाता हूं पर रुक्मिनी जी को अ केली पाय आप के आने का भेद कहूंगा ● यों सुनाय ब्राह्मन वहां से

चला ● महाराज- इधर से हरि तो यों चुपचाप अकेले पहुंचे और उधर से राजा सिसुपाल जुरासिंधु समेत सब असुर दल लिये-इस धूम से आया कि जिस का वारापार नहीं औ इतनी भीड संगकर लाया कि जिस के बोझ से लगा सेसनाग डगमगाने और पृथ्वी उथलने ● उस के आने की सोधपाय राजा भीष्मक अपने मंत्री औ कुटुंब के लोगों समेत आगूवढ लेने गये और बडे आदर मान से अंगीकार कर सब को पहरावनी पहराय- रत्न जटित शस्त्र आभूषन औ हाथी घोडे दे उन्हे नगर में ले आये औ जनवासा दिया - फिर खाने पीने का सनमान किया ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव मुनि बोले- कि महाराज-अब मैं अंतर कथा कहता हूं आप चितलगाय सुनिये - कि जब श्री कृष्णचंद द्वारिका से चले - तिसी समैं सब यदुवंसियों ने जाय-राजा उग्रसेन से कहा कि महाराज-हम ने सुना है जो कुंडलपुर में राजा सिसुपाल जुरासिंधु समेत सब असुर दल ले ब्याहन आया है और हरि अकेले गये हैं-इस से हम जानते हैं कि वहां श्री कृष्ण जी से और उन से युद्ध होगा ● यह बात जान के भी हम अजान हो हरि को छोड यहां कैसे रहैं - हमारा मन तो मानता नहीं - आगे जो आप आज्ञा कीजे सो करें ●

इस बात के सुनते ही राजा उग्रसेन ने अति भयखाय घबराय बलराम जी को निकट बुलाय समझाय के कहा - कि तुम हमारी सब सेना ले श्री कृष्ण के न पहुंचते न पहुंचते शीघ्र कुंडलपुर जाओ-औ उन्हें

अपने संगकर लेआओ ● राजा की आज्ञा पाते ही बलदेव जी छप्पन करोड यादव जोड ले कुंडलपुर को चले ● उस काल कटक के हाथी काले-धौले-धूमरे-दलबादल से जनाते थे औ उन के स्वेतस्वेत दांत बगपांति से ● धौंसा मेघ सा गरजता था औ शस्त्र बिजली से चमकते थे -राते पीले बागे पहने घुडचढों के टोल के टोल जिधर तिधर दृष्ट आते थे-रथों के तांतों के तांते झमझमाते चलेजाते थे- तिन की शोभा निरख निरख हरष हरष देवता अति हितसे अपने अपने बिमानों पर बैठे-आकाश से फूल बरसाय बरसाय श्री कृष्णचंद आनंदकंद की जै मनाते थे ● इस बीच सब दल लिये चले चले-कुंडलपुर में हरि के पहुंचते ही - बलराम जी भी जा पहुंचे ● यों सुनाय फिर श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-श्री कृष्णचंद रूपसागर जगत उजागर तो इस भांति कुंडलपुर पहुंच चुके थे-पर रुक्मिनी इन के आने का समाचार न पाय ●●



बिलख बदन चितवै चहुं ओर ● जैसे चंद मलिन भये भोर ●
अति चिंता सुंदरि जिय बाढी ● देखे ऊंच अटा पर ठाढी ●
चढि चढि उझकै खिरकी द्वार ● नैननि तें छांडे जल धार ●
बिलख बदन अति मलिन मन-लेत उसास निसास ●
ब्याकुल बरषा नैन जल-सोचत कहति उदास ●

कि अबतक क्यों नहीं आये हरी-विन का तो नाम है अंतरजामी ऐसी मुझ से क्या चूकपडी-जो अबलग तिन्हों ने मेरी सुधनली-क्या ब्राह्मन वहां नहीं पहुंचा-कै हरि ने मुझे कुरूप जान मेरी प्रीति की प्रतीत न

करी-कै जरासिंधु का आना सुन प्रभु न आऐ-कल ब्याह का दिन है, औ असुर आय पहुंचा-जो वह कल मेरा कर गहेगा-तो यह पापी जीव हरि बिन कैसे रहैगा ● जप-तप-नेम-धर्म-कुछ आडे न आया-अब क्या करूं और किधर जाऊं ● अपनी बरात ले आया सिसुपाल-कैसे बिरमे प्रभु दीनदयाल ●

इतनी बात जब रुक्मिनी के मुंह से निकली तब एक सखी ने तो कहा कि दूर देस बिन पिता बंधु की आज्ञा हरि कैसे आवेंगे औ दूसरी बोली कि जिन का नाम है अंतरजामी दीनदयाल-वे बिन आऐ न रहैंगे-रुक्मिनी-तू धीरजधर व्याकुल न हो ● मेरा मन यह हांमी भरता है कि अभी आय कोई यों कहता है कि हरि आऐ ● महाराज-ऐसे वे दोनों आपस में बातकहाव कररही थीं-कि वैसे में ब्राह्मन ने जाय असीस दे कहा-कि श्री कृष्णचंद्र जी ने आय राज बाड़ी में डेरा किया औ सब दल लिये बलदेव जी पीछे से आते हैं ● ब्राह्मन को देखते और इतनी बात के सुनते ही-रुक्मिनी जी के जी में जी आया ● और उन्हों ने उस काल ऐसा सुख माना कि जैसे तपी तप का फलपाय सुख माने ●

आगे श्री रुक्मिनी जी हाथ जोड सिर झुकाय-उस ब्राह्मन के सनमुख कहने लगीं-कि आज तुम ने आय हरि का आगमन सुनाय मुझे प्रानदान दिया-मैं इस के पलटे क्या दूं-जो त्रिलोकी की माया दूं तौभी तुम्हारे ऋन से उतरन न हूं ● ऐसे कह मनमार सकुचाय रहीं तद वह ब्राह्मन अति संतुष्ट हो आसिरबाद कर वहां से उठ राजा

भीष्मक के पास गया और उस ने श्री कृष्ण के आने का ब्योरा सब समझाय के कहा ● सुनत प्रमान राजा भीष्मक उठ धाया औ चला चला वहां आया-जहां बाडी में श्री कृष्ण बलराम सुखधाम बिराजते थे ● आते ही अष्टांग प्रनामकर - सनमुख खडे हो - हाथ जोड के कहा राजा भीष्मक ने ●●

मेरे मन बच हे तुम हरी ● कहा कहों जो दुष्टनि करी ●

अब मेरा मनोरथ पूरन हुआ जो आप ने आय दरसन दिया ● यों कह प्रभु के डेरे करवाय-राजा भीष्मक तो अपने घर आय चिंताकर ऐसे कहने लगा ●●

हरि चरित्र जाने सब कोइ ● क्या जाने अब कैसी होइ ●

और जहां श्री कृष्ण बलदेव थे तहां नगर निवासी क्या स्त्री क्या पुरुष-आय आय-सिर नाय नाय प्रभु का जस गाय गाय-सराहि सराहि आपस में यों कहते थे कि रुक्मिनी जोग बर श्री कृष्ण ही है-बिधना करै यह जोरी जुरै औ चिरंजीव रहै ● इस बीच दोनों भाइयों के कुछ जो जी में आया तो नगर देखने चले ● उस समैं ये दोनों भाई जिस हाट-बाट-चौहटे में हो जाते थे-तहीं नर नारियों के ठट्ठ के ठट्ठ लग जाते थे ● औ वे इन के ऊपर चोआ-चंदन-गुलाबनीर-छिडक छिडक फूल बरसाय बरसाय - हाथ बढाय बढाय प्रभु को आपस में यों कह कह बताते थे ●●

नीलंबर ओढे बलराम ● पीतांबर पहने घनस्याम ●
कुंडल चपल मुकट सिर धरें ● कमल नयन चाहत मनहरें ●

औ ये देखते जाते थे ◉ निदान सब नगर औ राजा सिसुपाल की कट क देख ये तो अपने दल में आये - औ इन के आने का समाचार सुन राजा भीष्मक का बडा बेटा अति क्रोधकर अपने पिता के निकट आय कहने लगा ◉ कि सच कहो कृष्ण यहां किस का बुलाया आया - यह भेद मैं ने नहीं पाया - बिन बुलाये यह कैसे आया ◉ व्याह काज है सुख का धाम - इस में इस का है क्या काम ◉ ये दोनों कपटी कुटिल जहां जाते हैं - तहां हीं उतपात मचाते हैं ◉ जो तुम अपना भला चाहो तो तुम मुज से सत्य कहो - ये किस के बुलाये आये ◉

महाराज - रुक्म ऐसे पिता को धमकाय यहां से उठ सात पांच करता वहां गया - जहां राजा सिसुपाल औ जुरासिंधु अपनी सभा में बैठे थे औ उन से कहा - कि यहां राम कृष्ण आये हैं तुम अपने सब लोगों को जता दो - जो सावधानी से रहैं ◉ इन दोनों भाइयों का नाम सुनते ही - राजा सिसुपाल तो हरि चरित्र का लख व्योहार - जीहार करने लगा मन हीं मन विचार औ जुरासिंधु कहने ◉ कि सुनो जहां ये दोनों आवें हैं - तहां कुछ न कुछ उपद्रव मचावें हैं ◉ ये महा बली औ कपटी हैं इन्हों ने ब्रज में कंसादि बडे बडे राक्षस सहज सुभाव ही मारे - इन्हें तुम मतजानो बारे ◉ ये कभी किसी से लडकर नहीं हारे - श्री कृष्ण ने सत्रह बेर मेरा दल हना - जब मैं अठारवीं बेर चढआया - तब यह भाग पर्वत पै जाचढा - जो मैं ने उस में आग लगाई तो यह छलकर द्वारिका को चलागया ◉◉

याकौ काहू भेद न पायौ ◉ अब ह्यां करन उपद्रव आयौ ◉

है यह छली महा छल करै ● काहू पै नहिं जान्यौ परै ●
इस से अब ऐसा कुछ उपाय कीजे-जिस से हम सबों की पत रहै ● इतनी बात जब जुरासिंधु ने कही तब रुक्म बोला-कि वे क्या वस्तु हैं जिन के लिये तुम इतने भावित हो-तिन्हें तो मैं भली भांति से जानता हूं-कि बन बन गाते नाचते-बेनु बजाते-धेनु चराते-फिरते थे-वे बालक गंवार युद्ध विद्या की रीति क्या जानें ● तुम किसी बात की चिंता अपने मन में मत करो - हम सब यदुबंसियों समेत कृष्ण बलराम को छिनभर में मार हटावेंगे ●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - उस दिन रुक्म तो जुरासिंधु औ सिसुपाल को समझाय बुझाय ढाढस बंधाय अपने घर आया और उन्हों ने सात पांचकर रात गंवाई ● भोर होते ही इधर राजा सिसुपाल औ जुरासिंधु तो ब्याह का दिन जान बरात निकालने की धूमधाम में लगे और उधर राजा भीष्मक के यहां भी मंगलाचार होने लगे - इस में रुक्मिनी जी ने उठते ही एक ब्राह्मन के हाथ-श्री कृष्णचंद से कहला भेजा ● कि कृपानिधान-आज ब्याह का दिन है-दो घडी दिन रहे नगर के पूरब देवी का मंदिर है तहां मैं पूजा करने जाऊंगी-मेरी लाज तुम्हें है जिस में रहे सो करियेगा ●

आगे पहर एक दिन चढे सखी सहेली औ कुटुंब की स्त्रियां आईं - तिन्हों ने आते ही पहले तो आंगन में गजमोतियों का चौक पुरवाय-कंचन की जडाऊ चौकी बिछवाय-तिस पर रुक्मिनी को बिठाय-सात सुहागनों से तेल चढवाया ● पीछे सुगंध उबटन लगाय न्हिलाय

धुलाय-उसे सोलह सिंगार करवाय-बारह आभूषन पहराय-ऊपर
राता चोला उढाय-बनीवनाय बिठाया ● इतने में घडी चारएक दिन
पिछला रहगया ● उस काल रुक्मिनी बाल-अपनी सब सखी सहेलि
यें को साथ ले बाजेगाजे से देवी की पूजा करने को चली-तो राजा भी
ष्मक ने अपने लोग रखवालों को उस के साथ करदिये ●

ये समाचार पाय कि राजकन्या नगर के बाहर देवीपूजने चली है-
राजा सिसुपाल ने भी श्री कृष्णचंद के डर से अपने बडे बडे रावत-सा
वंत-सूरवीर-जोधाओं को बुलाय-सब भांति ऊंच नीच समझाय बुझाय
-रुक्मिनी जी की चौकसी को भेज दिया ● वे भी आय अपने अपने अ
स्त्र शस्त्र संभाल राजकन्या के संग होलिये ● उस बिरियां रुक्मिनी जी
सब सिंगार किये-सखी सहेलियों के झुंड के झुंड लिये-अंतर पट की
ओट में औ काले काले राक्षसों के कोट में जाते-ऐसी सोभायमान ला
ती थीं कि जैसे स्याम घटा के बीच-तारामंडल समेत चंद ● निदान कि
तनी एक बेर में चलीं चलीं देवी के मंदिर में पहुंचीं-वहां जाय हा
थ पांव धोय-आचमनकर-शुद्धहोय राजकन्या ने पहले तो चंदन-
अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्यकर-श्रद्धा समेत बेद की विधि से देवी
की पूजा की ● पीछे ब्राह्मनियों को इच्छा भोजन करवाय-सुथरी ती
यलें पहराय-रोली की खौड काढ अक्षत लगाय-उन्हें दक्षना दी औ
उन से असीस ली ●

आगे देवी की परिक्रमा दे-वह चंदमुखी-चंपक बरनी-मृगनय
नी-पिकबयनी-गजगौनी-सखियों को साथ ले हरि के मिलने की चिंता

किये-औ वहां से निचिंत हो चलने को हुई-तो श्री कृष्णचंद भी अकेले रथ पर बैठ वहां पहुंचे-जहां रुक्मिनी के साथी सब जोधा अस्त्र शस्त्र से जकडे खडे थे ● इतना कह श्री शुकदेव जी बोले कि ●●

पूजि गौर जब ही चली - ऐक कहति अकुलाय ●
सुन सुंदरि आऐ हरी - देख ध्वजा फहराय ●

यह बात सखी से सुन औ प्रभु के रथ की बैरख देख- राजकन्या अति आनंदकर फूली अंग नसमाती थी औ सखी के हाथ पर हाथ दिये मोहनी रूप किये-हरि के मिलने की आसलिये-कुछ कुछ मुसकुराती ऐसे सब के बीच मंदगति जाती थी - कि जिस की शोभा कुछ बरनी नहीं जाती ● आगे श्री कृष्णचंद को देखते ही सब रखवाले भूले से खडे होरहे औ अंतरपट उन के हाथ से छूटपडा-इसमें मोहनी रूप से रुक्मिनी जी को जो उन्हों ने देखा तो और भी मोहित हो ऐसे सिथल हुऐ-कि जिन्हें अपने तन मन की भी सुध नथी●●

भृकुटी धनुष चढाय-अंजन बरुनी पनचकै ●
लोचन बान चलाय - मारैं पै जीवत रहे ●

महाराज-उस काल सब राक्षस तो चित्र के से कढे खडे देखते ही रहे औ श्री कृष्ण चंद सब के बीच रुक्मिनी के पास रथ बढाय जाय खडे हुऐ ● प्रानपति को देखते ही उस ने सकुचेकर मिलने को जो हाथ बढाया-तो प्रभु ने बाऐं हाथ से उठाय उसे रथ पर बैठाया ●●

कांपत गात सकुच मन भारी ● छांड सबन हरि सों सिधारी ●
जो बैरागी छांडे गेह ● कृष्ण चरन सों करै सनेह ●

महाराज - रुक्मिनी जी ने जो जप - तप - ब्रत - पुन्य किये का फल पाया औ पिछला दुख सब गंवाया ● बैरी अस्त्र शस्त्र लिये खडे मुख देखते रहे - प्रभु उन के बीच से रुक्मिनी को ले ऐसे चले कि ●●

ज्यौं बकु झुंडनि स्यार के - परै सिंहविच आय ●
अपनौ भक्षन लेइ कै - चलै निडर घहराय ●

आगे श्री कृष्णचंद्र के चलते ही बलराम जी भी पीछे से धौंसाढे - सब दल साथ ले जामिले ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे रुक्मिनी हरनो नाम चतुश्पंचाशतमोध्यायः ● ॥ ५४ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - कितनी एक दूर जाय श्री कृष्णचंद्र ने रुक्मिनी जी को सोच संकोचयुत देखकर कहा - कि सुंदरि - अब तुम किसी बात की चिंता मतकरो ● मैं शंख ध्वनिकर सब तुम्हारे मन का डर हरूंगा औ द्वारिका में पहुंच वेद की विधि से बरूंगा ● यों कह प्रभु ने उसे अपनी माला पहिराय - बांई ओर बैठाय - ज्यौं शंख धुनि करी - त्यौं सिसुपाल औ जुरासिंधु के साथी सब चौंक पडे - यह बात सारे नगर में फैलगई - कि हरि रुक्मिनी को हर ले गये ●

इस में रुक्मिनी हरन अपने विन लोगों के मुख से सुन - कि जो चौकसी को राजकन्या के संग गए थे - राजा सिसुपाल औ जुरासिंधु अति क्रोधकर झिलम - टोप - पहन - पेटी बांध - सब शस्त्र लगाय अपना अपना कटक ले लड़ने को श्री कृष्ण के पीछे चढ़दौडे औ उनके निकट जाय आयुध संभाल संभाल ललकारे ● अरे भागे क्यौं जाते हो - खड़े रहो

शस्त्र पकड लडो - जो क्षत्री सूर वीर हैं वे खेत में पीठ नहीं देते ● महाराज - इतनी बात के सुनते ही यादव फिर सनमुख भए औ लगे दोनों ओर से शस्त्र चलने ● उस काल रुक्मिनी बाले अति भय मान घूंघट की ओट किये - आंसू भर भर लंबी सांसें लेती थी औ प्रीतम का मुख निरख निरख मन ही मन बिचारकर यों कहती थी - कि ये मेरे लिये इतना दुख पाते हैं ● अंतरजामी प्रभु रुक्मिनी के मन का भेद जान बोले - कि सुंदरि - तू क्यों डरती है - तेरे देखते ही देखते सब असुर दल को मार भूमि का भार उतारता हूं - तू अपने मन में किसी बात की चिंता मत करे ● इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि राजा - उस काल देवता अपने अपने बिमानों में बैठे आकाश से देखते क्या हैं कि ●●

यादव असुरन सों लरत - होत महा संग्राम ●

ठाढे देखत कृष्ण हैं - करत युद्ध बलराम ●

मारू बाजता है - कडखैत कडखा गाते हैं - चारन जस बखानते हैं - अश्वपति अश्वपति से - गजपति गजपति से - रथी रथी से - पैदल पैदल से भिड रहे हैं ● इधर उधर के सूर बीर पिल पिल के हाथ मारते हैं औ कायर खेत छोड अपना जी ले भागते हैं - घायल खडे झूमते हैं - कबंध हाथ में तरवार लिये चारों ओर घूमते हैं औ लोथ पर लोथ गिरती हैं - तिन से लोहू की नदी बह चली है - तिस में जहां तहां हाथी जो मरे पडे हैं सो टापू से जनाते हैं औ सूंडें मगरसीं ● महादेव भूत - प्रेत - पिशाच - संग लिये सिर चुनचुन मुंडमाल बनाय बनाय पहनते

हैं औ गिद्ध-शाल-कूकर-आपस में लड लड लोथें खैंच खैंच लाते हैं औ फाड फाड खाते हैं ● कौए आंखें निकाल निकाल धडों से ले जाते हैं ● निदान देवताओं के देखते ही देखते बलराम जी नें सब असुर दल यौं काटडाला कि जों किसान खेती काटडाले ● आगे जुरासिंधु औ सिसुपाल सब दलकटाय - कई एक घायल संगलिये भाग के एक ठौर जा खडे रहे ● तहां सिसुपाल ने बऊत अछताय पछताय सिर डुलाय जुरासिंधु से कहा-कि अब तो अपजस पाय औ कुल को कलंक लगाय-संसार में जीना उचित नहीं-इस से आप आज्ञा दें तो मैं रन में जाय लडमरूं ●●

नातर हौं करि हौं बन बास ● लैऊं जोग छांडौं सब आस ●

गई आन पत अब क्यौं जीजै ● राखि प्रान क्यौं अपजस लीजै ●

इतनी बात सुन जुरासिंधु बोला- कि महाराज-आप ज्ञानवान हैं औ सब बात में जान-मैं तुम्हें क्या समझाऊं जो ज्ञानी पुरुष हैं सो कुई बात का सोच नहीं करते-क्यौं कि भले बुरे का करता और ही है-मनुष का कुछ बस नहीं-यह पर बस पराधीन हैं ● जैसे काठ की पुतली को नटुआ जौं नचाता है तो नाचती है-ऐसे ही मनुष करता के बस है-वह जो चाहता है सो करता है ● इस से सुख दुख में हरष शोक न कीजे-सब सुपना सा जानलीजे ● मैं तेईस तेईस अछोहनी ले मथुरापुरी पर सत्रह बेर चढगया और इसी कृष्ण ने सत्रह बेर मेरा सब दल हना-मैं ने कुछ सोच न किया और अठारवीं बेर जद इस का दल मारा तद कुछ हर्ष भी न किया ● यह भागकर पहाड पर जा चढा

मैं ने इसे यहीं फूंक दिया था न जानिये यह क्यौंकर जिया ● इस की गति कुछ जानी नहीं जाती ● इतनी कह फिर जुरासिंधु बोला कि महाराज - अब उचित यही है जो इस समय को टाल दीजे ● कहा है कि प्रान बचै तो पीछे सब हो रहता है - जैसे हमें हुआ कि सत्रह बार हार अठारवीं बेर जीते ● इस से जिस में अपनी कुशल होय सो कीजे औ हठ छोड दीजे ●

महाराज - जब जुरासिंधु ने ऐसे समझाय के कहा तब तिसे कुछ धीरज हुआ औ जितने घायल जोधा बचे थे तिन्हें साथ ले अछता पछता जुरासिंधु के संग हो लिया ● ये तो यहां से यों हार के चले और जहां सिसुपाल का घर था तहां की बात सुनो - कि पुत्र का आगमन बिचार सिसुपाल की मा जो मंगलाचार करने लगी - तो सनमुख छींक हुई औ दाहनी आंख उस की फडकने लगी ● यह असगुन देख तिस का माथा ठनका - कि इस बीच किसी ने आय कहा जो तुम्हारे पुत्र की सब सेना कट गई औ दुलहन भी न मिली - अब वहां से भाग अपना जीव लिये आता है ● इतनी बात के सुनते ही सिसुपाल की महतारी अति चिंताकर अवाक होरही ●

आगे सिसुपाल औ जुरासिंधु का भागना सुन रुक्म अति क्रोधकर अपनी सभा में आन बैठा और सब को सुनाय कहने लगा - कि कृष्ण मेरे हाथ से बच कहां जा सकता है - अभी जाय तिसे मार रुक्मिनी को ले आऊं तो मेरा नाम रुक्म - नहीं तो फिर कुंडलपुर मे न आऊं ● महाराज - ऐसे पैजकर रुक्म एक अक्षौहिनी दल ले श्री कृष्णचंद से

लड़ने को चढ़धायो और उस ने यादवों का दल आ घेरा ॥ उस काल तिस ने अपने लोगों से कहा - कि तुम तो यादवों को मारो औ मैं आगे जाय कृष्ण को जीता पकड़ लाता हूं ॥ इतनी बात के सुनते ही उस के साथी तो यदुबंसियों से युद्ध करने लगे औ वह रथ बढ़ाय श्री कृष्ण चंद के निकट जाय ललकारकर बोला अरे-कपटी गंवार तू क्या जाने राज ब्यौहार-बालक पन में जैसे तैं ने दूध दही की चोरी करी-तैसे तू ने यहां भी आय सुंदरि हरी ॥॥

ब्रजबासी हम नहीं अहीर ॥ ऐसे कह करलीने तीर ॥
बिष के बुझे लिये उन बीन ॥ खैंच धनुष सर छोड़े तीन ॥

उन बानों को आते देख श्री कृष्णचंद ने बीच ही काटा - फिर रुक्म ने और बान चलाए - प्रभु ने वे भी काट गिराए औ अपना धनुष संभाल कई एक बान ऐसे मारे - कि रथ के घोड़ों समेत सारथी उड़गया औ र धनुष उस के हाथ से कट नीचे गिरा ॥ पुनि जितने आयुध उस ने लिये - हरि ने सब काट काट गिरादिये - तब तो वह अति झुंझलाय - फरी खांडा उठाय रथ से कूद श्री कृष्णचंद की ओर यों झपटा कि जैसे बावला गीदड़ गज पर आवे - कै ज्यों पतंग दीपक पर धावे ॥ निदान जाते ही उन ने हरि के रथ पर एक गदा चलाई - कि प्रभु ने झट उ से पकड़ बांधा औ चाहा कि मारैं - इस में रुक्मिनी जी बोलीं ॥॥

मारौ मत भैया है मेरौ ॥ छांडौ नाथ तिहारौ चेरौ ॥
मूरख अंध कहा यह जाने ॥ लक्ष्मीकंतहि मानुष माने ॥
तुम योगेश्वर आदि अनंत ॥ भक्त हेत प्रगटत भगवंत ॥

यह जड कहा तुम्हें पहचाने ॥ दीनदयाल कृपाल बखाने ॥

इतना कह फिर कहने लगीं कि साध जड औ बालक का अपराध मन में नहीं लाते-जैसे कि सिंह स्वान के भूंसने पर ध्यान नहीं करता और जो तुम इसे मारोगे तो होगा मेरे पिता को सोग - यह करना तुम्हें नहीं है जोग ॥ जिस ठौर तुम्हारे चरन पडते हैं-तहां के सब प्रानी आनंद में रहते हैं-यह बडे अचरज की बात है कि तुम सा सगा रहते राजा भीष्मक पुत्र का दुख पावें ॥ महाराज - ऐसे कह एक बार तो रुक्मिनी जी यों बोलीं - कि महाराज-तुम ने भला हित संबंधी से किया-जो पकड बांधा औ खडग हाथ में ले मारने को उपस्थित हुए ॥ पुनि अति व्याकुल हो थरथराय - आंखें डबडबाय बिसूर बिसूर पांओं पड गोद पसार कहने लगीं ॥

बंधु भीख प्रभु मोकौं देउ ॥ इतनो जस तुम जग में लेउ ॥

इतनी बात के सुन्ने से औ रुक्मिनी जी की ओर देखने से-श्री कृष्णचंद्र जी का सब कोप शांत हुआ ॥ तब उन्हों ने उसे जीव से तो न मारा पर सारथी को सैन करी-उस ने झट इस की पगडी उतार-टुंडियां चढाय-मूंछ दाढी औ सिर मूंड सात चोटी रख-रथ के पीछे बांध लिया ॥

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-रुक्म की तो श्री कृष्न जी ने यहां यह अवस्था की और बलदेव वहां से सब असुर दल को मार भगाय कर-भाई के मिलने को ऐसे चले कि जैसे स्वेत गज कंवल दह में कंवलों को तोड-खाय-बिथराय-अकुलाय के भागा आता होय ॥ निदान कितनी एक बेर में प्रभु के समीप जाय पहुंचे

औ रुक्म को बंधा देख श्री कृष्ण जी से अति झुंझलाय के बोले॥ कि तुम ने यह क्या काम किया-जु साले को पकड़ बांधा-तुम्हारी कुटेव नहीं जाती ॥॥

बांध्यौ याहि करी बुद्धि थोरी ॥ यह तुम कृष्ण सगाई तोरी ॥
औ यदुकुल कौं लीक लगाई ॥ अब हम सौं को करि है सगाई ॥

जिस समैं यह युद्ध करने को आप के सनमुख आया-तब तुम ने इसे समझाय बुझाय के उलटा क्यौं न फेर दिया ॥ महाराज-ऐसे कह बलराम जी ने रुक्म को ले खोल समझाय बुझाय अति शिष्टाचारकर विदा किया ॥ फिर हाथ जोड अति बिनतीकर बलराम सुखधाम रुक्मिनी जी से कहने लगे-कि हे सुंदरि-तुम्हारे भाई की जो यह दसा ऊई इस में कुछ हमारी चूक नहीं-यह उस के पूर्व जन्म के किये कर्म का फल है और क्षत्रियों का धर्म भी है कि भूमि-धन-त्रिया के काज-करते हैं युद्ध दल परस्पर साज ॥ इस बात का तुम बिलग मत मानौ-मेरा कहा सच ही जानौ ॥ हार जीत भी उस के साथ ही लगी है और यह संसार दुख का समुद्र है-यहां आय सुख कहां-पर मनुष माया के बस हो दुख सुख-भला बुरा-हार जीत-संयोग-वियोग-मन ही भ्रम से मान लेते हैं-पै इस में हरष शोक जीव को नहीं होता ॥ तुम अपने भाई के बिरूप होने की चिंता मत करो-क्यौं कि ज्ञानी लोग जीव अमर देह का नास कहते हैं-इस लेखे देह की पत जाने से कुछ जीव की नहीं गई ॥

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा-कि म

मौवतार - जब बलराम जी ने ऐसे रुक्मिनी को समझाया तब ●●

सुनि सुंदरि मन समझ कै - किये जेठ की लाज ●
सैन मांहिं पिय सों कहत - हांकहु रथ ब्रजराज ●
घूंघट ओट बदन को करै ● मधुर बचन हरि सों उचरै ●
सनमुख ठाढे हैं बलदाऊ ● अहो कंत रथ बेग चलाऊ ●

इतना बचन श्री रुक्मिनी जी के मुख से निकलते ही - इधर तो श्री कृष्णचंद जी ने रथ द्वारिका की ओर हांका औ उधर रुक्म अपने लोगों में जाय अति चिंताकर कहनें लगा - कि मैं कुंडलपुर से यह पैज कर के आया था कि अभी जाय कृष्ण बलराम को सब यदुवंसियों समेत मार - रुक्मिनी को ले आऊंगा - सो मेरा प्रन पूरा न हुआ और उलटी अपनी पत खोई - अब जीता न रहूंगा ● इस देस औ यहस्थाश्रम को छोड बैरागी हो कहीं जाय मरूंगा ●

जब रुक्म ने ऐसे कहा तब उस के लोगों में से कोई बोला - महाराज - तुम महा बीर हो औ बडे प्रतापी तुम्हारे हाथ से जो वे जीते बच गये - सो विन के भले दिन थे अपनी प्रारब्ध के बल से निकल गये - नहीं तो आप के सनमुख हो कोई शत्रु कब जीता बच सकता है ● तुम सज्ञान हो ऐसी बात क्यों बिचारते हो - कभी हार होती है कभी जीत - पर सूरवीरों का धर्म है जो साहस नहीं छोडते भला रिपु आज बचगया फिर मारलेंगे ● महाराज - जद यों बिस ने रुक्म को समझाया तद वह यह कहनें लगा कि सुनो ●●

हारयो उन सों औ पत गई ● मेरे मन अति लज्जा भई ●

जन्म न हौं कुंडलपुर जाऊं ॥ बरन और ही गांव बसाऊं ॥
यों कह उन इक नगर बसायौ ॥ सुत दारा धन तहां मंगायौ ॥
ताकौ धस्यौ भोजकटु नाम ॥ ऐसें रुक्म बसायौ गांम ॥

महाराज - उधर रुक्म तो राजा भीष्मक से बैरकर वहां रहा औ इधर श्री कृष्णचंद औ बलदेव जी चले चले द्वारिका के निकट आय पहुंचे ॥

उडी रेनु आकाशजु छाई ॥ तब ही पुरवासिन सुधपाई ॥
आवत हरि जाने जबहिं - राख्यौ नगर बनाय ॥
शोभा भई तिहुं लोक की - कही कौन पैजाय ॥

उस काल घर घर मंगलाचार होरहे - द्वार द्वार केले के खंभ गडे - कंचन कलस सजल सपल्लव धरे - ध्वजा पताका फहराय रहीं - तोरन बंदनवारें बंधी हुईं और हर हाट - बाट - चौहटों में चौमुखे दिये लिये युवतियों के यूथ के यूथ खडे औ राजा उग्रसेन भी सब यदुबंसियों समेत बाजेगाजे से अगाऊ जाय रीति भांतिकर - बलराम सुखधाम औ श्री कृष्णचंद आनंदकंद को नगर में ले आये ॥ उस समैं के बनाव की छबि कुछ बरनी नहीं जाती - क्या स्त्री क्या पुरुष सब ही के मन में आनंद छाय रहा था ॥ प्रभु के सोंहीं आय आय सब भेट दे दे भेटते थे औ नारियां अपने अपने द्वारों - बारों - चौबारों - कोठों पर से मंगली गीत गाय गाय आरती उतार उतार फूल बरसावती थीं औ श्री कृष्णचंद औ बलदेव जी यथा योग्य सब की मनुहार करते जाते थे ॥ निदान इसी रीति से चले चले राजमंदिर में जा बिराजे ॥ आगे कै एक दिवस पीछे

एक दिन श्री कृष्ण जी राजसभा में गये-जहां राजा उग्रसेन-सूरसेन -बसुदेव आदि सब बडे बडे यदुबंसी बैठे थे और प्रनामकर इन्हों ने उन के आगे कहा ● कि महाराज - युद्ध जीत जो कोई सुंदरि लाता है वही राक्षस ब्याह कहाता है ●

इतनी बात के सुनते ही सूरसेन जी ने परोहित बुलाय-विसे समझाय के कहा-कि तुम श्री कृष्ण के बिवाह का दिन ठहरा दो ● उस ने झट पत्राखोल भला महीना-दिन-बार-नक्षत्र-देख शुभ सूरज चंद्रमा बिचार ब्याह का दिन ठहराय दिया ● तब राजा उग्रसेन ने अपने मंत्रियों को तो यह आज्ञा दी कि तुम ब्याह की सब सामा इकठी करो और आप बैठ पत्र लिख लिख पांडव कौरव आदि सब देस बिदेस के राजाओं को ब्राह्मनों के हाथ भिजवाये ● महाराज - चीठी पाते ही सब राजा प्रसन्न हो हो उठ धाये-तिन्हों के साथ ब्राह्मन पंडित - भाट-भिखारी भी होलिये ●

और ये समाचार पाय राजा भीष्मक ने भी बहुत वस्त्र-शस्त्र-जडाऊ आभूषन औ रथ-हाथी-घोडे-दास-दासियों के डोले-एक ब्राह्मन को दे-कन्यादान का संकल्प मन ही में ले-अति बिनतीकर द्वारिका को भेजदिया ● उधर से तो देस देस के नरेस आये औ इधर से राजा भीष्मक का पठाया सब सामा लिये वह ब्राह्मन भी आया ● उस समैं की शोभा द्वारिकापुरी की कुछ बरनी नहीं जाती ● आगे ब्याह का दिन आया तो सब रीति भांतिकर बर कन्या को मंढे के नीचे लेजा बैठाया और सब बडे बडे मुख्य यदुबंसी भी आय बैठे-उस बिरियां ●●

पंडित जहां बेद उचरैं ● रुक्मिनि संग हरि भांवर फिरैं ●
ढोल दुंदभी भेर बजावें ● हरषहि देव पहुप बरसावें ●
सिद्ध साध चारन गंधर्व ● अंतरीक्ष भये देखैं सर्व ●
चढे बिमान घिरे सिरनावें ● देव बधू सब मंगल गावें ●
हाथ गह्यौ प्रभु भांवर पारी ● बाम अंग रुक्मिनि बैठारी ●
छोरी गांठ पटा फेर दियौ ● कुलदेवी कौं तब पूजियौ ●
छोरत कंकन हरि सुंदरी ● खेलत दूधा भाती करी ●
अति आनंद रच्यौ जगदीस ● निरखि हरखि सब देहिं असीस ●
हरि रुक्मिनि जोरी चिर जियौ ● जिन कौ चरित सुधारस पियौ ●
दीनौ दान बिप्रजो आये ● मागध बंदीजन पहिराये ●
जे नृप देस देस के आये ● दीनी बिदा सबै पहुंचाये ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज- जो जन हरि रुक्मिनी का चरित्र पढै सुनेगा औ पढ सुन के सुमिरन करेगा-सो भक्ति-मुक्ति-जस पावेगा ● पुनि जो फल होता है अश्वमेदादि यज्ञ-गौ आदि दान-गंगादि स्नान-प्रयागादि तीर्थ के करने में - सोई फल मिलता है- हरि कथा कहने सुन्ने में ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे रुक्मिनी चरित्रो नाम पंच पंचाशत्तमोध्यायः ● ॥ ५५ ॥ ●●

●●●●●●●●●●●●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-एक दिन श्री महादेव जी अपने स्थान के बीच ध्यान में बैठे थे-कि एकाएकी कामदेव ने आ सताया तो हर का ध्यान छूटा औ लगे अज्ञान हो पार्वती जी के साथ क्रीडा क

रहे ॥ इस में कितनी एक बेर पीछे शिव जी को केलि करते करते ज ब ज्ञान हुआ-तब क्रोधकर कामदेव को जलाय भस्म किया ॥॥

काम बली जब शिव दह्यो-तब रति धरत नधीर ॥
पति बिन अति तलफत खरी-बिह्वल बिकल शरीर ॥

काम नारि अति लोटति फिरै ॥ कंत कंत कहि छिन भुज भरै ॥
पिय बिन तिय महा दुखिया जान ॥ तब यौं गौरा कियौ बखान ॥

कि हे रति-तू चिंता मत करै तेरा पति तुझे जिस भांति मिलेगा तिस का भेद सुन-मैं कहती हूं कि पहले तो वह श्री कृष्णचंद के घर में जन्म लेगा औ तिस का नाम प्रद्युम्न होगा ॥ पीछे उसे संबर लेजाय समुद्र में बहावेगा-फिर वह मच्छ के पेट में हो संबर ही की रसोई में आवेगा ॥ तू वहीं जाय के रह-जब वह आवे तब उसे ले पालियो-पुनि वह संबर को मार तुझे साथ ले द्वारिका में सुख से जाय बसेगा ॥ महाराज ॥॥

शिवरानी यौं रति समझाई ॥ तब तन धर संबर घर आई ॥
सुंदरि बीच रसोई रहै ॥ निस दिन मारग पिय कौ चहै ॥

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी बोले कि हे राजा-उधर रति तो पिय के मिलन की आसकर यौं रहने लगी औ इधर रुक्मिनी जी को गर्भ रहा औ दस महीने में पूरे दिनों लडका भया ॥ यह समाचार पाय जोतिषियों ने आय लग्नसाध बसुदेव जी से कहा ॥ कि महाराज-इस बालक के शुभग्रह देख हमारे विचार में यौं आता है कि रूप-गुन-पराक्रम में यह श्री कृष्णचंद जी ही के समान होगा-पर बालकपन

भर जल में रहेगा ● पुनि रिपु को मार स्त्री समेत आन मिलेगा ● यों कह प्रद्युम्न नाम धर योतिषी तो दक्षिना ले बिदा हुए औ वसुदेव जी के घर में रीति भांति औ मंगलाचार होने लगे ● आगे श्री नारद मुनि जी ने जाय-उसी समैं समझाय संवर से कहा - कि तू किस नींद सोता है - तुझे चेत है कै नहीं ● वह बोला क्या ● इन्हों ने कहा तेरा बैरी काम का अवतार प्रद्युम्न नाम श्री कृष्णचंद के घर में जन्म ले चुका ●

राजा - नारद जी तो संवर को यों चिताय चले गये औ संवर ने सोचविचारकर मन हीं मन में यह उपाय ठहराया - कि पवन रूप हो वहां जाय विसे हरलाऊं औ समुद्र में बहाऊं - तो मेरे मन की चिंता मिटे औ निर्भय हो रहूं ● यह विचारकर संवर वहां से उठ अलख रूप हो चला चला श्री कृष्णचंद के मंदिर में आया - कि जहां रुक्मिनी जी सोअर में-हाथ से दबाए-छाती से लगाए-बालक को दूध पिलाती थीं औ चुपचाप घात लगाय खडा हो रहा ● ज्यों बालक पर से रुक्मिनी जी का हाथ अलग हुआ-त्यों असुर अपनी माया फैलाय उसे उठाय ऐसे ले आया-कि जितनी स्त्रियां वहां बैठी थीं तिन में से किसी ने न देखा न जाना-कि कौन किस रूप से आय-क्यौंकर उठाय लेगया ● बालक को आगे न देख रुक्मिनी जी अति घबराईं औ रोने लगी ● उनके रोने का शब्द सुन सब यदुबंसी क्या स्त्री क्या पुरुष घिर आए औ अनेक अनेक प्रकार की बातें कह कह चिंता करने लगे ●

इस बीच नारद जी ने आय सब को समझाकर कहा-कि तुम बालक

के जाने की कुछ भावना मत करो - विसे किसी बात का डर नहीं - वह कहीं जाय पर उसे काल न व्यापैगा - और बालापन वितीतकर एक सुंदरि नारी साथलिये तुम्हें आय मिलेगा ❁ महाराज - ऐसे सब यदुबंसियों को भेद बताय समझाय बुझाय नारद मुनि जब बिदा हुऐ - तब वे भी सोच समझ संतोषकर रहे ❁

अब आगे कथा सुनिये कि संबर जो प्रद्युम्न को लेगया था - उस ने उन्हें समुद्र में डालदिया ❁ वहां ऐक मछली ने इन्हें निगल लिया - उस मछली को ऐक और बडी मछली निगल गई ❁ इस में ऐक मछुऐ ने जाय समुद्र में जों जाल फैंका - तों वह मीन जाल में आई ❁ धीमर जाल खैंच उस मच्छ को देख अति प्रसन्न हो ले अपने घर आया ❁ निदान वह मछली उस ने जा राजा संबर को भेट दी - राजा ने ले अपने रसोई घर में भेज दी ❁ रसोई करनेवाली ने जों उस मछली को चीरा तों उस में से ऐक और मछली निकली ❁ विस का पेट फाडा तो ऐक लडका स्यामबरन अति सुंदर उस में से निकला - उस ने देखते ही अति अचरज किया औ वह लडका ले जाय रति को दिया - उस ने महा प्रसन्न हो ले लिया ❁ यह बात संबर ने सुनी तो रति को बुलाय कै कहा - कि इस लडके को भली भांति से यत्नकर पाल - इतनी बात राजा की सुन रति उस लडके को ले निज मंदिर में आई ❁ उस काल नारद जी ने जाय रति से कहा ❁❁

अब तू याहि पाल चितलाय ❁ तो पति प्रदमन प्रगट्यौ आय ❁
संबर मार तोहि लैजैहै ❁ बालापन याठौर बितै है ❁

इतना भेद बताय नारद मुनि तो चले गये और रति अति हित से चित लगाय पालने लगी ॥ ज्यों ज्यों वह बालक बढ़ता था त्यों त्यों रति को पति के मिलने का चाव होता था - कभी वह उस का रूप देख प्रेमकर हिये से लगाती थी - कभी दृग मुख कपोल चूम आप ही विहस उस के गले लगती थी और यों कहती थी ॥

ऐसो प्रभु संयोग बनायो ॥ मछरी मांहिं कंत मैं पायो ॥

औ महाराज -

प्रेम सहित पयप्याय कै - हित सों प्यावत ताहि ॥
हलरावत गुन गाय कै - कहत कंत चित चाहि ॥

आगे जब प्रद्युम्न जी पांच बरस के हुए - तब रति अनेक अनेक भांति के वस्त्र आभूषन पहनाय पहनाय - अपने मन का साद पूरा करने लगी औ नैनों को सुख देने ॥ उस काल वह बालक जो रति का आंचल पकडकर मा मा - कहने लगा तो वह हंसकर बोली ॥ हे कंत - तुम यह क्या कहते हो मैं तुम्हारी नारि - तुम देखो अपने हिये बिचार ॥ मुझे पार्वती जी ने यह कहा था कि तू संबर के घर जाय रह - तेरा कंत श्री कृष्णचंद जी के घर में जन्म लेगा - सो मछली के पेट में हो तेरे पास आवेगा औ नारद जी भी कह गये थे कि तू उदास मत हो - तेरा स्वामी तुझे आय मिलता है - तभी से मैं तुम्हारे मिलने की आस किये - यहां बासकर रही हूं - तुम्हारे आने से मेरी आस पूरी भई ॥

ऐसे कह रति ने फिर पति को धनुष विद्या सब पढ़ाई - जब वे धनुष विद्या में निपुन हुए - तब एक दिन रति ने पति से कहा - कि स्वा

मी अब यहां रहना उचित नहीं क्यौं कि तुम्हारी माता श्री रुक्मिनी जी-ऐसे तुम बिन दुख पाय अकुलाती हैं-जैसे बच्छ बिन गाय ❁ इस से अब उचित यही है कि असुर संबर को मार -मुझे संग ले द्वारिका में चलि मात पिता का दरसन कीजे और तिन्हें सुख दीजे-जो आप-के देखने की लालसा किये हुए हैं ❁

श्री शुकदेव जी यह प्रसंग सुनाय राजा से कहने लगे - कि महाराज-इसी रीति से रति की बातें सुनते सुनते प्रद्युम्न जी जब सयाने हुए तो एक दिन खेलते खेलते राजा संबर के पास गये - वह इन्हें देखते ही अपने हीं लडके समान जान लाडकर बोला - कि इस बालक को मैं ने अपना लडकाकर पाला है ❁ इतनी बात के सुनते ही प्रद्युम्न जी ने अति क्रोधकर कहा -कि मैं बालक हूं बैरी तेरा - अब तू लडकर देख बल मेरा ❁ यों सुनाय खंमठोक सनमुख हुआ-तब हंसकर संबर कहने लगा कि भाई -यह मेरे लिये दूसरा प्रद्युम्न कहां से आया-क्या दूध पिला मैं नें सर्प बढाया-जो ऐसी बातें करता है ❁ इतना कह फिर बोला-अरे बेटा-तू क्यौं कहता है ये बैन-क्या तुझे जम दूत आये हैं लेन ❁

महाराज - इतनी बात संबर के मुंह से सुनते ही वह बोला - प्रद्युम्न मेरा ही है नाम-मुझ से आज तू कर संग्राम ❁ तें ने तो था मुझे सागर में बहाया- पर अब मैं अपना बैर लेन फिर आया ❁ तू ने अपने घर में अपना काल बढाया आप- कौन किस का बेटा और कौन किस का बाप ❁❁

सुन संबर आयुध गहे-बढ्यौ क्रोध मन भाव ॥
मनहुं सर्प की पूंछ पर-पर्‌यौ अंधेरे पाव ॥

आगे संबर अपना सब दल मंगवाय- प्रद्युम्न को बाहर ले आय-क्रोध कर गदा उठाय-मेघ की भांति गरंजकर बोला ॥ देखूं अब तुझे काल से कौन बचाता है ॥ इतना कह जों उस ने दपट के गदा चलाई-त्यों प्रद्युम्न जी ने सहज ही काटगिराई ॥ फिर उस ने रिसायकर अग्निबान चलाये-इन्हों ने जलबान छोड बुझाय गिराये ॥ तब तो संबर ने महा क्रोधकर जितने आयुध उस के पास थे सब किये औ इन्हों ने काट काट गिराय दिये ॥ जब कोई आयुध उस के पास न रहा-तब क्रोधकर धाय प्रद्युम्न जी जाय लिपटे औ दोनों में मल्लयुद्ध होने लगा-कितनी एक बेर पीछे ये उसे आकाश को ले उडे-वहां जाय खडग से उस का सिर काट गिराय दिया और फिर आय असुर दल का बध किया ॥

संबर को मार रति ने सुख पाया औ विसी समय एक विमान स्वर्ग से आया-उस पर रति पति दोनों चढ बैठे और द्वारिका को चले-ऐसे कि जैसे दामनी समेत सुंदर मेघ जाता हो और चले चले वहां पहुंचे कि जहां कंचन के मंदिर ऊंचे सुमेरु से जगमगायरहे थे ॥ विमान से उतर अचानक दोनों रनवास में गये-इन्हें देख सब सुंदरि चौंक उठीं और यों समझ कि श्री कृष्ण एक सुंदरि नारी संग ले आये हैं सकुच रहीं-पर यह भेद किसू ने न जाना कि प्रद्युम्न है ॥ सब कृष्ण ही कृष्ण कहती थीं-इस में जब प्रद्युम्न जी ने कहा कि हमारे माता

पिता कहां हैं-तब रुक्मिनी जी अपनी सखियों से कहने लगीं-हे सखी -यह हरि की उनहार कौन है ● वे बोलीं हमारी समझ में तो ऐसा आता है कि हो नहो यह श्री कृष्ण ही का पुत्र है ● इतनी बात के सुनते ही रुक्मिनी जी की छाती से दूध की धार बह निकली औ बांई बाँह फड़कने लगी और मिलने को मन घबराया पर बिन पति की आज्ञा मिल न सकीं ● उस काल वहां नारद जी ने आय पूर्व कथा कह सब के मन का संदेह मिटादिया-तबतो रुक्मिनी जी ने दौड़कर पुत्र का सिरचूम उसे छाती से लगाया और रीति भांति से ब्याहकर बेटे बहू को घर में लिया ● उस समय क्या स्त्री क्या पुरुष सब यदुबंसियों ने आय - मंगलाचारकर अति आनंद किया ● घर घर बधाई बाजने लगी औ सारी द्वारिकापुरी में सुख छाय गया ●●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज-ऐसे प्रद्युम्न जी जन्म ले बालकपन अनत बिताय रिपु को मार रति को ले द्वारिकापुरी में आए- तब घर घर आनंद मंगल भए बधाए ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे प्रद्युम्न जन्म संवर बधो नाम षट पंचाशतमोध्यायः ● ॥ ५६ ॥ ●●

———●●●●●●●●●●●●———

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज -सत्राजीत ने पहले तो श्री कृष्णचंद को मनि की चोरी लगाई -पीछे झूठ समझ लज्जित हो उसने अपनी कन्या सतभामा हरि को ब्याह दी ● यह सुन राजा परीक्षित ने श्री शुकदेव जी से पूछा कि कृपानिधान-सत्राजीत कौन था-मनि उस

नें कहाँ पाई और कैसे हरि को चोरी लगाई - फिर क्यौंकर झूठ सम झ कन्या ब्याह दी - यह तुम मुझे बुझा के कहो ●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - सुनिये मैं सब समझाकर कहता हूं ● सत्राजीत एक यादव था जिस ने बहुत दिनतक सूरज की अति कठिन तपस्या की - तब सूरज देवता ने प्रसन्न हो उसे निकट बुलाय मनि देकर कहा ● कि सुमंतका है इस मनि का नाम - इस में है सुख संपत्ति का बिश्राम ● सदा इसे मानियो और बल तेज में मेरे समान जानियो ● जो तू इसे जप - तप - संजम - ब्रतकर धावेगा - तो इस से मुंह मांगा फल पावेगा ● जिस देस - नगर - घर में यह जावेगा - तहां दुख दरिद्र काल कभी न आवेगा ● सर्बदा सुकाल रहेगा औ ऋद्धि सिद्धि भी रहैगी ●

महाराज - ऐसे कह सूर्य्य देवता ने सत्राजीत को बिदा किया - वह मनि ले अपने घर आया ● आगे प्रात ही उठ वह प्रातस्नानकर संध्या तर्पन से निचिंत हो - नित चंदन अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य सहित मनि की पूजा किया करै और जिस मनि से जो आठ भार सोना निकले सो ले औ प्रसन्न रहै ● एक दिन पूजा करते करते सत्राजीत ने मनि की शोभा औ कांति देख निज मन में बिचारा - कि यह मनि श्री कृष्णचंद को लेजाकर दिखाइये तो भला ●

यों बिचार मनि कंठ में बांध सत्राजीत यदुबंसियों की सभा को चला - मनि का प्रकाश दूर से देख सब यदुबंसी खड़े हो श्री कृष्ण जी से कहने लगे - कि महाराज - तुम्हारे दरसन की अभिलाषा किये सूरज च

ला अविनासी है - तुम को ब्रह्मा - रुद्र - इंद्रादि सब देवता ध्यावते हैं औ आठ पहर ध्यानधर तुम्हारा जस गावते हैं ॰ तुम हो आदि पुरुष अविनासी - तुम्हें नित सेवती है कमला भई दासी ॰ तुम हो सब देवों के देव - कोई नहीं जानता तुम्हारा भेव ॰ तुम्हारे गुन औ चरित्र हैं अपार - क्यों प्रभु छिपोगे आय संसार ॰ महाराज - जब सत्राजीत को आता देख सब यदुवंसी यों कहने लगे - तब हरि बोले कि यह सूरज नहीं - सत्राजीत यादव है इस ने सूर्य्य की तपस्या कर ऐक मनि पाई है - उस का प्रकाश सूरज की समान है - वही मनि बांधे यह चला आता है ॰

महाराज - इतनी बात जबतक श्री कृष्ण जी कहैं तबतक वह आय सभा में बैठा - जहां यादव सार पासे खेल रहे थे ॰ मनि की कांति देख सब का मन मोहित हुआ औ श्री कृष्णचंद भी देख रहे - तद सत्राजीत कुछ मन हीं मन समझ उस समय बिदा हो अपने घर गया ॰ आगे वह मनि गले में बांध बांध नित आवे - ऐक दिन सब यदुबंसियों ने हरि से कहा कि महाराज - सत्राजीत से मनि ले राजा उग्रसेन को दीजै औ जग में जस लीजै - यह मनि इसे नहीं फबती राजा के जोग है ॰

इस बात के सुनते ही श्री कृष्ण जी ने हंसते हंसते सत्राजीत से कहा - कि यह मनि राजा जी को दो और संसार में जस बडाई लो ॰ देने का नाम सुनते ही वह प्रनामकर चुपचाप वहां से उठ सोच विचार करता अपने भाई के पास जा बोला - कि आज श्री कृष्ण जी ने मु

ज से मनि मागी औ‍र मैं ने न दी ● इतनी बात जों सत्राजीत के मुंह से निकली त्यों क्रोधकर उस के भाई प्रसेन ने वह मनि ले अपने गले में डाली औ शस्त्र लगाय घोड़े पर चढ अहेर को निकला ● महा बन में जाय धनुष चढाय लगा साबर-चीतल-पाढे-रोझ औ मृग मारने ● इस में एक हिरन जो उस के आगे से झपटा-तो इस ने भी खिजलाय के तिस के पीछे घोड़ा दपटा औ चला चला अकेला वहां पहुंचा-कि जहां जुगानजुग की एक बड़ी औंडी गुफा थी ●

मृग औ घोड़े के पांव का आहट पाय उस में से एक सिंह निकला-वह इन तीनों को मार मनि ले फिर उस गुफा में बडगया ● मनि के जाते ही उस महा अंधेरी गुफा में ऐसा प्रकाश हुआ कि पाताल तक चांदना गया-वहां जामवंत नाम रीछ जो श्रीरामचंद्र के साथ रामावतार में था-सो त्रेतायुग से तहां कुटुंब समेत रहा था-वह गुफा में उजाला देख उठ धाया औ चला चला सिंह के पास आया ● फिर वह सिंह को मार मनि ले अपनी स्त्री के निकट गया-तिस ने मनि ले अपनी पुत्री के पालने में बांधी-वह तिसे देख नित हंस हंस खेला करै औ सारे स्थान में आठ पहर प्रकाश रहै ● इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले-कि महाराज-मनि यों गई औ प्रसेन की यह गति भई ● तब प्रसेन के साथ जो लोग गये थे तिन्हों ने आ सत्राजीत से कहा कि महाराज-●●

हम कों त्याग अकेलौ धायौ ● जहां गयौ तहां खोज न पायौ ●
कहत न बने ढूंढ फिर आये ● कहूं प्रसेन न बन में पाये ●

इतनी बात के सुनते ही सत्राजीत खाना पीना छोड़ अति उदास हो चिंताकर मन हीं मन कहने लगा-कि यह काम श्री कृष्ण का है जो मेरे भाई को मनि के लिये मार-मनि ले घर में आय बैठा है ● पहले मुझ से मांगता था मैं ने न दी - अब उस ने यों ली ● ऐसे वह मन हीं मन कहै और रात दिन महा चिंता में रहै ● एक दिन वह रात समैं स्त्री के पास सेज पर-तनछीन मन मलीन मष्टमारे बैठा मन हीं मन कुछ सोच विचार करता था-कि उस की नारी ने कहा ●● 

कहा कंत मन सोचत रहौ ● मो सों भेद आपनों कहौ ●

सत्राजीत बोला-कि स्त्री से कठिन बात का भेद कहना उचित नहीं-क्यों कि इस के पेट में बात नहीं रहती-जो घर में सुनती है सो बाहर प्रकाशकर देती है-यह अज्ञान इसे किसी बात का ज्ञान नहीं भला हो कै बुरा ● इतनी बात के सुनते ही सत्राजीत की स्त्री खिजलाकर बोली-कि मैं ने कब कोई बात घर में सुन बाहरकही है जो तुम कहते हो-क्या सब नारी समान होती हैं ● यों सुनाय फिर उस ने कहा-कि जब तक तुम अपने मन की बात मेरे आगे न कहोगे-तब तक मैं अंन पानी भी न खाऊंगी ● यह बचन नारी से सुन सत्राजीत बोला-कि झूठ सच्च की तो भगवान जानें पर मेरे मन में एक बात आई है-सो मैं तेरे आगे कहता हूं परंतु तू किसू के सोंहीं मत कहियो ● उसकी स्त्री बोली अच्छा मैं न कहूंगी ●

सत्राजीत कहने लगा कि एक दिन श्री कृष्ण जी ने मुज से मनि मांगी और मैं ने न दी-इस से मेरे जी में आता है कि उसी ने मेरे भा

ई को बन में जाय मारा औ मनि ली-यह उसी का काम है दूसरे की सामर्थ नहीं जो ऐसा काम करे ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - बात के सुनते ही उसे रात भर नींद न आई और उस ने सात पांचकर रैन गंवाई ● भोर होते ही उन ने जा सखी सहेली और दासी से कहा - कि श्री कृष्ण जी ने प्रसेन को मारा औ मनि ली-यह बात रात मैं ने अपने कंत के मुख सुनी है पर तुम किसी के आगे मत कहियो ● वे वहां से तो भला कह चुपचाप चली आईं - पर अचरजकर एकांत बैठ आपस में चरचा करने लगीं ● निदान एक दासी ने यह बात श्री कृष्णचंद के रनवास में जा सुनाई ● सुनते ही सब के जी में आया कि जो सत्राजीत की स्त्री ने यह बात कही है तो झूठ न होगी ● ऐसे समझ उदास हो सब रनवास श्री कृष्ण को बुरा कहने लगा ● इस बीच किसी ने आय श्री कृष्ण जी से कहा कि महाराज - तुम्हें तो प्रसेन के मारने औ मनि के लेने का कलंक लगचुका-तुम क्या बैठ रहे हो कुछ इस का उपाय करो ●

इतनी बात के सुनते ही श्री कृष्ण जी पहले तो घबराए - पीछे कुछ सोच समझ वहां आए - जहां उग्रसेन - वसुदेव औ बलराम सभा में बैठे थे और बोले कि महाराज - हमें सब लोग यह कलंक लगाते हैं कि कृष्ण ने प्रसेन को मार मनि लेली - इस से आप की आज्ञा ले प्रसेन और मनि के ढूंढ ने को जाते हैं - जिस से यह अपजस छूटै ● यों कह श्री कृष्ण जी वहां से आय कितने एक यदुबंसियों औ प्रसेन

के साथियों को साथ ले बन को चले॰ कितनी एक दूर जाय देखें तो घो
डों के चरन चिन्ह दृष्ट पडे-तिन्हीं को देखते देखते वहां जाय पहुं
चे जहां सिंह ने तुरंग समेत प्रसेन को मार खाया था - दोनों की लोथ
और सिंह के पाओं का चिन्ह देख सब ने जाना कि उसे सिंह ने मार
खाया॰



यह समझ मनि न पाय श्री कृष्णचंद सब को साथ लिये लिये व
हां गये - जहां वह औंडी अंधेरी महा भयावनी गुफा थी - उस के
द्वार पर देखते क्या हैं कि सिंह मरा पडा है पर मनि व्हां भी नहीं॰
ऐसा अचरज देख सब श्री कृष्ण जी से कहने लगे कि महाराज - इ
स बन में ऐसा बली जंतु कहां से आया जो सिंह को मार मनि ले गु
फा में पैठा - अब इस का कुछ उपाय नहीं - जहां तक ढूंढने का धर्म
था तहां तक आप ने ढूंढा - तुम्हारा कलंक छूटा - अब नाहर के सिर अ
पजस पडा॰

श्री कृष्ण जी बोले चलो इस गुफा में धस के देखें कि नाहर को
मार मनि कौन ले गया॰ वे सब बोले कि महाराज - जिस गुफा का मु
ख देखे हमें डर लगता है तिस में धसेंगे कैसे - बरन हम तुम से भी
बिनतीकर कहते हैं कि इस महा भयावनी गुफा में आप भी न जाइये
- अब घर को पधारिये॰ हम सब मिल नगर में कहैंगे कि प्रसेन को
मार सिंह ने मनि ली औ सिंह को मार मनि ले कोई जंतु ऐक अति
डरावनी औंडी गुफा में गया - यह हम सब अपनी आंखों देख आये॰
श्री कृष्णचंद बोले मेरा मन मनि में लगा है - मैं अकेला गुफा में जाता

हूं दस दिन पीछे आऊंगा-तुम दस दिन तक यहां रहियो - इस में हमें बिलंब होय तो घर जाय संदेसा कहियो ● महाराज - इतनी बात कह हरि उस अंधेरी भयावनी गुफा में पैठे और चले चले वहां पहुंचे - जहां जामवंत सोता था और उस की स्त्री अपनी लडकी को खडी पालने में झुलाती थी ●

वह प्रभु को देख भयखाय पुकारी औ जामवंत जागा - तो धाय हरि से आय लिपटा औ मल्ल युद्ध करने लगा ● जब उस का कोई दाव औ बल हरि पर न चला तब मन ही मन बिचारकर कहने लगा - कि मेरे बल के तो हैं लक्षमन राम और इस संसार में ऐसा बली कौन है जो मुझ से करे संग्राम ● महाराज - जामवंत मन ही मन ज्ञान से यों बिचार प्रभु का ध्यानकर ●●

ठाढो उभरि जोर कै हाथ ● बोल्यो दरस देहु रघु नाथ ●
अंतरजामी मैं तुम जाने ● लीला देखत ही पहिचाने ●
भली करी लीनौं औतार ● करिहो दूर भूमि को भार ●
त्रेता युग तें इहिं ठां रह्यौ ● नारद भेद तुम्हारो कह्यौ ●
मनि के काजे प्रभु इत ऐहैं ● तबही तो कौं दरसन दैहैं ●

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि हे राजा - जिस समय जामवंत ने प्रभु को जान यों बखान किया - तिसी काल श्री मुरारी भक्तहितकारी ने जामवंत की लगन देख मगन हो राम का भेषकर - धनुष बान धर दरसन दिया ● आगे जामवंत ने अष्टांग प्रनामकर खडे हो हाथ जोड अति दीनता से कहा - कि हे

कृपासिंधु दीनबंधु - जो आप की आज्ञा पाऊं तो अपना मनोरथ कह सुनाऊं ✽ प्रभु बोले अच्छा कह - तब जामवंत ने कहा कि हे पतित पावन दीनानाथ - मेरे चित में यों है कि यह कन्या जामवती आप को ब्याह दूं औ जगत में जस बडाई लूं ✽ भगवान ने कहा जो तेरी इच्छा में ऐसे आया तो हमें भी प्रमान है ✽ इतना बचन प्रभु के मुख से निकलते ही जामवंत ने पहले तो श्री कृष्णचंद की चंदन - अक्षत - पुष्प - धूप - दीप - नैवेद्य ले पूजा की - पीछे वेद की बिध से अपनी बेटी ब्याह दी और उस के यौतुक में वह मनि भी धरदी ✽ 

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव मुनि बोले - कि हे राजा - श्री कृष्णचंद आनंदकंद तो मनि समेत जामवती को ले यों गुफा से चले और जो यादव गुफा के मुंह पर प्रसेन औ श्री कृष्ण के साथी खडे थे अब तिन की कथा सुनिये ✽ गुफा के बाहर उन्हें जब अट्ठाईस दिन बीते औ हरि न आये - तब वे वहां से निरास हो अनेक अनेक प्रकार की चिंता करते और रोते पीटते द्वारिका में आये ✽ ये समाचार पाय सब यदुबंसी निपट घबराये औ श्री कृष्ण का नाम ले ले महा शोक कर कर रोने पीटने लगे और सारे रनवास में कुहराम पडगया ✽ निदान सब रानियां अति व्याकुल हो तन छीन मन मलीन राजमंदिर से निकल रोती पीटती वहां आईं - जहां नगर के बाहर एक कोस पर देवी का मंदिर था ✽

पूजा कर गौर को मनाय हाथ जोड सिर नाय कहने लगीं - हे देवी तुझे सुर - नर - मुनि सब ध्यावते हैं औ तुझ से जो बर मांगते हैं

सो पावते हैं ● तू भूत-भविष्य-बर्तमान की सब बात जानती है-कह श्री कृष्णचंद आनंदकंद कब आवेंगे ● महाराज-सब रानियां तो देवी के द्वार धरना दे यों मनाय रहीं थीं औ उग्रसेन वसुदेव बलदेव आदि सब यादव महा चिंता में बैठे थे-कि इस बीच श्री कृष्ण अवनासी द्वारिकावासी हंसते हंसते जामवती को लिये आय राजसभा में खडे ऊए ● प्रभु का चंदमुख देख सब को आनंद ऊआ औ यह शुभ समाचार पाय सब रानियां भी देवी पूज घर आईं और मंगलाचार करने लगीं ● इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले- कि महाराज-श्री कृष्ण जी ने सभा में बैठते ही सेत्राजीत को बुलाभेजा औ वह मनि देकर कहा कि यह मनि हमने नली थी- तुम ने झूठमूठ हमें कलंक दिया था ●●

यह मनि जामवंत ही लीनी ● सुता समेत मोहि तिन दीनी ●
मनि लै तबहि चल्यौ सिरनाय ● सत्राजीत मन सोचतु जाय ●
हरि अपराध कियौ मैं भारी ● अन जाने दीनी कुल गारी ●
जादौंपति कौं कलंक लगायौ ● मनि के काजे बैर बढ़ायौ ●
अब यह दोष कटे सो कीजे ● सतिभामा मनि कृष्ण हि दीजे ●

महाराज-ऐसे मन हीं मन सोच विचार करता मनि लिये मनमारे सत्राजीत अपने घर गया और उस ने सब अपने जी का विचार स्त्री से कह सुनाया ● तिस की स्त्री बोली स्वामी - यह बात तुम ने अच्छी विचारी- सतिभामा श्री कृष्ण को दीजे औ जगत में जस लीजे ● इतनी बात के सुनते ही सत्राजीत ने ऐक ब्राह्मन को बुलाय शुभलग्न मुहूर्त

ठहराय रोली-अक्षत रुपया-नारियल एक थाली में धर-परोहित के हाथ श्रीकृष्णचंद के यहां टीका भेज दिया ● श्री कृष्ण जी बडी धूमधाम से मौड बांध ब्याहन आये-तब सत्राजीत ने सब रीति भांतिकर बेद की विधि से कन्यादान किया और बहुत सा धन दे यौतुक में विस मनि को भी धरदिया ●

मनि को देखते ही श्री कृष्ण जी ने उस में से निकाल बाहर किया और कहा कि यह मनि हमारे किसी काम की नहीं क्यौं कि तुम ने सूर्य्य की तपस्याकर पाई-हमारे कुल में श्री भगवान छुडाय और देवता की दी वस्तु नहीं लेते ● यह तुम अपने घर में रक्खो ● महाराज-श्री कृष्णचंद जी के मुख से इतनी बात निकलते ही-सत्राजीत मनि ले लजाय रहा औ श्री कृष्ण जी सतिभामा को ले बाजेगाजे से निज धाम पधारे औ आनंद से सतिभामा समेत राजमंदिर में जा विराजे ●

इतनी कथा सुन राजा परीक्षित ने श्री शुकदेव जी से पूछा कि कृपानिधान श्री कृष्ण जी को कलंक क्यौं लगा सो कृपाकर कहो ● शुकदेव जी बोले राजा- ●●

चांद चौथ कौ देखियौ-मोहन भादौं मास ●
ताते लग्यौ कलंक यह-अति मन भयौ उदास ●

और सुनौ ●

जो भादौं की चौथ कौ-चांद निहारै कोय ●
यह प्रसंग श्रवननि सुने-ताहि कलंक न होय ●

इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे जामवती सतिभामा विवाह संपूर्णं पंचाशत्तमोध्यायः ॥ ५७ ॥

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-मनि के लिये जैसे सतधन्वा सत्राजीत को मार-मनि ले अक्रूर को दे द्वारिका छोड भागा-तैसे मैं कथा कहता हूं-तुम चित दे सुनौ ॥ एक समैं हस्तनापुर से आय किसी ने-बलराम सुखधाम औ श्री कृष्णचंद आनंदकंद से यह संदेसा कहा-कि ॥

पंडौ न्योते अंधसुत-घर के बीच सुवाय ॥
अर्द्ध रात्र चहुं ओर तें-दीनी आग लगाय ॥

इतनी बात के सुनते ही दोनौं भाई अति दुखपाय-घबराय-ततकाल दारुक सारथी से अपना रथ मंगाय-तिस पर चढ हस्तनापुर को गये औ रथ से उतर कौरों की सभा में जा खडे रहे ॥ वहां देखते क्या हैं कि सब तन छीन मन मलीन बैठे हैं-दुर्योधन मन ही मन कुछ सोचता है-भीषम नैनौं से जल मोचता है ॥ धृतराष्ट बडा दुख करता है-द्रोनाचार्य की भी आंखों से पानी चलता है ॥ विदूरथ जी ही जी पछताय-गंधारी बैठी उस के पास आय ॥ और भी जो कौरों की स्त्रियां थीं सो भी पांडवों की सुध कर कर रो रही थीं औ सारी सभा शोकमय हो रही थी ॥ महाराज-वहां की यह दसा देख श्री कृष्ण बलराम जी भी उन के पास जा बैठे औ इन्हों ने पांडवों का समाचार पूछा पर किसी ने कुछ भेद न कहा-सब चुप हो रहे ॥

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महा राज-श्री कृष्ण बलराम जी तो पांडवों के जलने के समाचार पाय हस्तिना पुर को गये औ द्वारिका में सतधन्वा नाम एक यादव था कि जिसे प हले सतिभामा मांगी थी-तिस के यहां अक्रूर औ कृतवर्मा मिलकर ग ये और दोनों ने उस से कहा कि हस्तनापुर को गये श्री कृष्ण बलरा म-अब आयपडा है तेरा दांव ● सत्राजीत से तू अपना बैर ले-क्यों कि तिस ने तेरी बडी चूक की-जो तेरी मांग श्री कृष्ण को दी औ तुझे गाली चढाई-अब वहां उस का कोई नहीं है सहाई ● इतनी बात के सुनते ही सतधन्वा अति क्रोधकर उठा और रात समैं सत्राजीत के घर जा ललकारा ● निदान छल बलकर उसे मार वह मनि ले आया ● तब सतधन्वा अकेला घर में बैठ कुछ सोच बिचार मन ही मन पछ ताय कहने लगा ●● 

मैं यह बैर कृष्ण सों कियौ ● अक्रूर कौ मतौ सुन लियौ ●
कृतवर्मा अक्रूर मिल-मतौ दियौ मोहि आय ●
साध कहै जो कुपट की-तासों कहा बसाय ●

महाराज-इधर सतधन्वा तो इस भांति पछताय पछताय-बार बार कहता था कि होनहार से कुछ न बसाय-कर्म की गति किसी से जानी नहीं जाय ● और उधर सत्राजीत को मरा निहार-उस की नारि रो रो कंत कंतकर उठी पुकार ● उस के रोने की धुन सुन सब कुटुंब के लोग-क्या स्त्री क्या पुरुष अनेक अनेक भांति की बाते कह कह रोने पीटने लगे औ सारे घर में कुहराम पड़गया ● पिता का मरना सुन

उसी समैं आय-सतिभामा जी सब को समझाय बुझाय-बाप की लोथ तेल में डलवाय-अपना रथ मंगवाय-तिस पर चढ श्री कृष्णचंद आ नंदकंद के पास चलीं और रात दिन के बीच जापहुंचीं ●●

देखत ही उठ बोले हरी ● घर है कुशल क्षेम सुंदरी ●
सतिभामा कहि जोरे हाथ ● तुम बिन कुशल कहां यदुनाथ ●
हम हिं बिपत सतधन्वा दई ● मेरौ पिता हयौ मनि लई ●
● धरे तेल में ससुर तिहारे ● करौ दूर सब सूल हमारे ●

इतनी बात कह सतिभामा जी श्री कृष्ण बलदेव जी के सोंहीं खडी हो हाय पिता हाय पिताकर धायमार रोने लगीं ● तिन का रोना सुन श्री कृष्ण बलराम जी ने भी पहले तो अति उदास हो रोकर लोक रीति दिखाई-पीछे सतिभामा को आसा भरोसा दे ढाढस बंधाय- वहां से साथ ले द्वारिका में आऐ ● श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज- द्वारिका में आते ही श्री कृष्णचंद ने सतिभामा को महा दुखी देख प्रतिज्ञाकर कहा कि सुंदरि-तुम अपने मन में धीर धरो और किसी बात की चिंता मत करो ● जो होना था सो तो हुआ पर अब मैं सतधन्वा को मार तुम्हारे पिता का वैर लूंगा-तब मैं और काम करूंगा ●

महाराज-राम कृष्ण के आते ही सतधन्वा अति भयखाय घर छोड मन हीं मन यह कहता-कि पराऐ कहे मैं ने श्री कृष्ण जी से वैर किया अब सरन किस की लूं कृतवंर्मा के पास आया और हाथ जोड अति विनतीकर बोला कि महाराज - आप के कहे से मैं ने किया यह काम-अब मुझ पर कोपे हैं श्री कृष्ण औ बलराम ● इस से मैं भागकर

तुम्हारी सरन आया हूं-मुझे कहीं रहने को ठौर बताइये ◉ सतधन्वा से यह बात सुन कृतब्रंमा बोला - कि सुनौ हम से कुछ नहीं होसकता -जिस का वैर श्री कृष्णचंद से भया सो नर सब ही से गया ◉ तू क्या नहीं जानता था कि हैं अति बली मुरारि-तिन से वैर किये होगी हार ◉ किसी के कहे से क्या हुआ - अपना बल बिचार काम क्यों न किया ◉संसार की रीति है कि वैर ब्याह औ प्रीति समान ही से कीजे ◉ तू हमारा भरोसा मत रख - हम श्री कृष्णचंद आनंदकंद के सेवक हैं-विन से वैर करना हमें नहीं सोभता ◉ जहां तेरे सींग समांय तहां जा ◉

महाराज-इतनी बात सुन सतधन्वा निपट उदास हो वहां से चल अक्रूर के पास आया ◉ हाथ बांध सिरनाय-बिनतीकर हाहाखाय कहने लगा ◉ कि प्रभु तुम हो यादव पति ईस-तुम्हें मान के सब निवावते हैं सीस ◉ साध दयाल धरन तुम धीर-दुख सह आप हरते हो पर पीर ◉ बचन कहे की लाज है तुम्हें-अपनी सरन रक्खो तुम हमें ◉ मैं ने तुम्हारा ही कहा मान यह काम किया-अब तुम ही श्री कृष्ण के हाथ से बचाओ ◉

इतनी बात के सुनते ही अक्रूर जी ने सतधन्वा से कहा - कि तू बडा मूरख है जो हम से ऐसी बात कहता है-क्या तू नहीं जानता कि श्री कृष्णचंद सब के करता दुख हरता हैं-उन से वैरकर संसार में कब कोई रह सकता है ◉ कहनेवाले का क्या बिगडा - अब तो तेरे सिर आन पडी ◉ कहा है - सुर नर मुनि की यही है रीति-अपने स्वारथ के लि

से करते हैं प्रीति ❁ और जगत में बहुत भांति के लोग हैं सो अनेक अनेक प्रकार की बातें अपने स्वारथ की कहते हैं - इस से मनुष को उचित है किसी के कहे पर न जाय - जो काम करे तिस में पहले अपना भला बुरा विचार ले - पीछे उस काज में पांव दे ❁ तू ने समझ बूझकर कियो है काम - अब मुझे कहीं जगत में रहने को नहीं है धाम ❁ जिस ने श्री कृष्ण से बैर किया - वह फिर न जिया ❁ जहां भाग के रहा तहां मारा गया ❁ मुझे मरना नहीं जो तेरा पक्ष करूं - संसार में जी सब को प्यारा है ❁ [illegible]

महाराज - अक्रूर जी ने जब सतधन्वा को यों रूखे रूखे बचन सुनाये - तब तो वह निरास हो जीने की आस छोड - मनि अक्रूर जी के पास रख - रथ पर चढ नगर छोडे भागा और उस के पीछे रथ चढ श्री कृष्ण बलराम जी भी उठ दौडे औ चलते चलते इन्हों ने उसे सौ जोजन पर जाय लिया ❁ इन के रथ का आहट पाय सतधन्वा अति घबराय - रथ से उतर मिथलापुरी में जावडा ❁ [illegible] प्रभु ने उसे देख क्रोधकर सुदरसन चक्र को आज्ञा की तू अभी सतधन्वा का सिर काट ❁ प्रभु की आज्ञा पाते ही सुदरसन चक्र ने उस का सिर जा काटा - तब श्री कृष्णचंद ने उस के पास जाय मनि ढूंढी पर न पाई - फिर इन्हों ने बलदेव जी से कहा कि भाई - सतधन्वा को मारा औ मनि न पाई ❁ बलराम जी बोले कि भाई - वह मनि किसी बडे पुरुष ने पाई - तिस ने हमें लाय नहीं दिखाई ❁ वह मनि किसी के पास छिप ने की नहीं - तुम देखियो निदान प्रगटेगी कहीं न कहीं ❁

इतनी बात कह बलदेव जी ने श्री कृष्णचंद से कहा कि भाई-अब तुम तो द्वारिकापुरी को सिधारो औ हम मनि के खोजने को जाते हैं-जहां पावेंगे तहां से ले आवेंगे ❁

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज-श्री कृष्णचंद आनंदकंद तो सतधन्वा को मार द्वारिकापुरी पधारे औ बलराम सुखधाम मनि के खोजने को सिधारे ❁ देस देस नगर नगर गांव गांव में ढूंढते ढूंढते बलदेव जी चले चले अजोध्यापुरी जा पहुंचे-इन के पहुंचने के समाचार पाय अजोध्या का राजा दुरयोधन उठ धाया-आगे बढ भेटकर भेट दे प्रभु को बाजे गाजे से पाटंबर के पांवडे डालता निज मंदिर में ले आया❁सिंहासन पर बिठाय अनेक प्रकार से पूजाकर भोजन करवाय-अति बिनतीकर सिरनाय हाथ जोड सनमुख खडा हो बोला ❁ कृपासिंधु-आप का आना इधर कैसे हुआ सो कृपाकर कहिये ❁

महाराज-बलदेव जी ने उस के मन की लगन देख मगन हो अपने आने का सब भेद कह सुनाया ❁ इन की बात सुन राजा दुरयोधन बोला कि नाथ-वह मनि कहीं किसी के पास न रहैगी-कभी न कभी आप से आप प्रकाश हो रहैगी ❁ यों सुनाय फिर हाथ जोड कहने लगा-कि दीनदयाल-मेरे बडे भाग जो आप का दरसन मैं ने घर बैठे पाया औ जन्म जन्म का पाप गंवाया❁ अब कृपाकर दास के मन की अभिलाषा पूरी कीजे और कुछ दिवस रह शिष्यकर गदायुद्ध सिखाय जग में जस लीजे❁महाराज-दुरयोधन से इतनी बात सुन बलराम

जी ने उसे सिष्य किया और कुछ दिन वहां रह सब गदा युद्ध की बिद्या सिखाई-पर मनि वहां भी सारे नगर में खोजी औ न पाई ● आगे श्री कृष्ण जी के पहुंचने के उपरांत कितने एक दिन पीछे बलराम जी भी द्वारिका नगरी में आये-तो श्री कृष्णचंद जी ने सब यादौं साथ ले सत्राजीत को तेल से निकाल अग्नि संसकार किया औ अपने हाथों दाह दिया ●

अब श्री कृष्ण जी क्रियाकर्म से निचंत हुए तब अक्रूर औ कृतबर्मा कुछ आपस में सोच विचारकर-श्री कृष्ण जी के पास आय-उन्हें एकांत लेजाय मनि दिखायकर बोले ● कि महाराज-यादव सब बहुत मुख भए औ माया में मोह गए ● तुम्हारा सुमरन ध्यान छोड़ धनांध हो रहे हैं-जो ये अब कुछ कष्ट पावें-तो ये प्रभु की सेवा में आवें ● इस लिये हम नगर छोड़ मनि ले भागते हैं-जब हम इन से आप का भजन सुमरन करावेंगे-तभी द्वारिकापुरी में आवेंगे ● इतनी बात कह अक्रूर औ कृतबर्मा सब कुटुंब समेत आधी रात को श्री कृष्णचंद के भेद में द्वारिकापुरी से भागे-ऐसे कि किसी ने न जाना कि किधर गये ● भोर होते ही सारे नगर में यह चरचा फैली-कि न जानिये रात की रात में अक्रूर औ कृतबर्मा कुटुंब समेत किधर गये औ क्या हुए ●

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी बोले-कि महाराज-इधर द्वारिकापुरी में तो नित घर घर यह चरचा होने लगी औ उधर अक्रूर जी प्रथम प्रयाग में जाय मुंडन करवाय-त्रिबेनी न्हाय बहुत सा दान

पुन्यकर तहां हरि पैडी बंधवाय-गया को गये ● वहां भी फलगू नदी के तीर बैठ शास्त्र की रीति से श्राद्ध किया औ गयालियों को जिमाय बहुतही दान दिया ● पुनि गदाधर के दरसनकर तहां से चल का शीपुरी में आये-इन के आने का समाचार पाय इधर उधर के राजा सब आय आय भेटकर भेट धरने लगे औ ये वहां यज्ञ दान-तप-व्रतकर रहने लगे ●

इस में कितने एक दिन बीतें श्री मुरारी भक्त हितकारी ने अक्रूर जी का बुलाना जी में ठान-बलराम जी से आन के कहा कि भाई-अब प्रजा को कुछ दुख दीजे और अक्रूर जी को बुलवा लीजे ● बलदेव जी बोले महाराज - जो आप की इच्छा में आवै सो कीजे औ साधों को सुख दीजे ● इतनी बात बलराम जी के मुख से निकलते ही-श्री कृष्णचंद जी ने ऐसा किया-कि द्वारिकापुरी में घर घर तप-तिजारी-मिरगी-क्षई-दाद-खाज-आधासीसी-कोढ-महाकोढ-जलंदर-भगन्दर-कठन्दर-अतिसार-आंव-मडोडा-खांसी-सूल-अर्द्धंग-सीतांग-झोला-संनिपात आदि ब्याधि फैल गई ●

और चार महीनें वर्षा भी न हुई-तिस से सारे नगर के नदी नालें सरोवर सूक गये ● तृन अन्न भी कुछ न उपजा-नभचर-जलचर-थलचर जीव जंतु पक्षी औ ढोर लगे ब्याकुल हो सूक सूक मरनें औ पुरवासी मारे भूखों के त्राहि त्राहि करने ● निदान सब नगर निवासी महा ब्याकुल हो निपट घबराये ● श्री कृष्णचंद दुख निकंद के पास आये औ अति गिडगिडाय अधिक अधीनताकर हाथ जोड सिर

नाथ कहने लगे ॐॐ

हम तौ सरन तिहारी रहैं ॐ कष्ट महा अब कैांकर सहैं ॐ
मेघ न बरख्यौ पीडा भई ॐ कहा विधाता ने यह ठई ॐ

इतना कह फिर कहने लगे कि हे द्वारिकानाथ दीन दयाल-हमारे तो करता दुख हरता तुम हो-तुम्हैं छोड कहां जांय औ किस से कहैं-यह उपाध बैठे विठाऐ में कहां से आई और क्यैां ऊई सो कृपाकर कहिये ॐ

श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज - इतनी बात के सुनते ही श्री कृष्णचंद जी ने उन से कहा- कि सुनो जिस पुर से साध जन निकल जाता है-तहां आप से आप काल-दरिद्र-दुख- आता है ॐ जब से अक्रूर जी इस नगर से गये हैं-तभी से यहां यह गति ऊई है ॐ जहां रहते हैं साध सतवादी औ हरि दास-तहां होता है अशुभ-अकाल-विपत का नास ॐ इंद्र रखता है हरि भक्तों से सनेह-इसी लिये उस नगर में भली भांति बरसाता है मेह ॐ

इतनी बात के सुनते ही सब यादव बोलउठे-कि महाराज-आप ने सच कहा ॐ यह बात हमारे भी जी में आई-क्यौं कि अक्रूर के पिता का सुफलक नाम है-वह भी बडा साध- सतबादी-धर्मात्मा है ॐ जहां वह रहता है तहां कभी दुख दरिद्र औ नहीं होता है अकाल-सदा समय पर बरसता है मेह तिस से होता है सुकाल ॐ और सुनिये कि एक समें काशी पुरी में बडा दुरभिक्ष पड़ा-तब काशी का राजा सुफलक को बुलाय ले गया ॐ महाराज-सुफलक के जाते ही उस देस में मेह मन

मानता बरसा - समा हुआ औ सब का दुख गया ● पुनि काशीपुरी के राजा ने अपनी लडकी सुफलक को ब्याहदी - ये आनंद से वहां रहने लगे ● तिस राजकन्या का नाम गादिनका था - तिसी का पुत्र अक्रूर है ●

इतना कह सब यादों बोले कि महाराज-हम तो यह बात आगे से जानते थे - अब जो आप आज्ञा कीजे सो करें ● श्री कृष्णचंद बोले कि अब तुम अति आदर मानकर - अक्रूर जी को जहां पाओ तहां से ले आओ ● यह बचन प्रभु के मुख से निकलते ही सब यादव मिल अक्रूर को ढूंढन निकले औ चले चले बारानशीपुरी में पहुंचे - अक्रूर जी से भेटकर भेट दे हाथ जोड सिरनाय सनमुख खडे हो बोले ●●

चलौ नाथ बोलत बल स्याम ● तुम बिन पुरबासी हैं बिराम ●
जित हौं तुम तित हौं सुख बास ● तुम बिन कष्ट दरिद्र निवास ●
यद्यपि पुर में श्री गोपाल ● तऊ कष्ट दै पर्यो अकाल ●
साधनि के बस श्री पति रहैं ● तिन तें सब सुख संपति लहैं ●

महाराज - इतनी बात के सुनते ही अक्रूर जी वहां से अति आतुर हो कुटुंब समेत कृतबर्मा को साथ ले - सब यदुबंसियों को लिये बाजे गाजे से चल खडे हुए और कितने एक दिनों के बीच आ सब समेत द्वारिकापुरी में पहुंचे ● इनके आने का समाचार पा श्री कृष्ण जी औ बलराम-आगे बढ आय इन्हें अति मान सनमान से नगर में लिवाय ले गए ● हे राजा-अक्रूर जी के पुरी में प्रवेश करते ही मेह बरसा औ

समा हुआ - सारे नगर का दुख दरिद्र बह गया - अक्रूर की महिमा हुई - सब द्वारिकावासी आनंद मंगल से रहने लगे ● आगे एक दिन श्री कृष्णचंद आनंदकंद ने अक्रूर जी को निकट बुलाय एकांत ले जाय के कहा - कि तुम ने सत्राजीत की मनि ले क्या की ● वह बोला महाराज - मेरे पास है - फिर प्रभु ने कहा - जिस की वस्तु तिसे दीजे - औ वह नहोय तो तिस के पुत्र को सौंपिये - पुत्र नहोय तो उस की स्त्री को दीजिये - स्त्री नहोय तो उस के भाई को दीजे - भाई नहो तो उस के कुटुंब को सौंपिये - कुटुंब भी नहो तो उस के गुरुपुत्र को दीजे - गुरुपुत्र नहो तो ब्राह्मन को दीजिये - पर किसी का द्रव्य आप न लीजिये - यह न्याय है ● इस से अब तुम्हें उचित है कि सत्राजीत की मनि उस के नाती को दो औ जगत में बड़ाई लो ●

महाराज - श्री कृष्णचंद के मुख से इतनी बात के निकलते ही अक्रूर जी ने मनि लाय प्रभु के आगे धर हाथ जोड़ अति बिनतीकर कहा - कि दीनानाथ यह मनि आप लीजे औ मेरा अपराध दूर कीजे - क्यौं कि जो इस मनि से सोना निकला सो ले मैं ने तीरथ यात्रा में उठाया है ● प्रभु बोले अच्छा किया - यों कह मनि ले हरि ने सतिभामा को जाय दी औ उस के चित की सब चिंता दूर की ● इति श्री लालकृते प्रेम सागरे सतधन्वा बधो नाम अष्ट पंचाशतमोध्यायः ● ॥ ५८ ॥ ●●

●●●●●●●●●●●●●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - एक दिन श्री कृष्णचंद जगबंधु

आनंदकंद जी ने यह विचार किया - कि अब चलकर पांडवों को देखिये जो आग से बच जीते जागते हैं ◉ इतनी बात कह हरि कितने एक यदुबंसियों को साथ ले द्वारिका पुरी से चल हस्तनापुर आये ◉ इन के आने का समाचार पाय - युधिष्ठिर - अर्जुन - भीम - नकुल - सहदेव - पांचों भाई अति हर्षित हो उठ धाये औ नगर के बाहर आय मिल बडी आव भगतकर लिवाय घर ले गये ◉

घर में जाते ही कुंती औ द्रोपदी ने पहले तो सात सुहागनों को बुलाय - मोतियों का चौक पुरवाय - तिस पर कंचन की चौकी बिछवाय - उस पै श्री कृष्ण को बिठाय - मंगलाचार करवाय अपने हाथों आरता उतारा ◉ पीछे प्रभु के पांव धुलवाय - रसोई में ले जाय षटरस भोजन करवाया ◉ महाराज - जब श्री कृष्णचंद भोजनकर पान खाने लगे तब ◉◉

कौंता ढिग बैठी कहै बात ◉ पिता बंधु पूछत कुशलात ◉
नीके सूरसेन वसुदेव ◉ बंधु भतीजे अरु बलदेव ◉
तिन में प्रान हमारे रहै ◉ तुम बिन कौन कष्ट दुख दहै ◉
जब जब बिपत परी अति भारी ◉ तब तुम रक्षा करी हमारी ◉
अहो कृष्ण तुम पर दुख हरना ◉ पांचों बंधु तुम्हारी सरना ◉
ज्यों मृगनी वृकझुंड के त्रासा ◉ त्यों ये अंध सुतन के बासा ◉

महाराज - जब कुंती यों कह चुकी ◉◉

तबहिं युधिष्ठिर जोरे हाथ ◉ तुम हौ प्रभु यादवपति नाथ ◉
तुम कौं जोगेश्वर नित ध्यावत ◉ शिव विरंच के ध्यान न आवत ◉

हम कौं घर ही दरसन दीनौ ● ऐसौ कहा पुन्य हम कीनौ ●
चार मास रह कै सुख दैहौ ● बरषा ऋतु बीते घर जैहौ ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - इस बात के सुनते ही भक्त हितकारी श्री बिहारी सब को आसा भरोसा दे वहां रहे औ दिन दिन आनंद प्रेम बढाने लगे ● एक दिन राजा युधिष्ठिर के साथ श्री कृष्णचंद अर्जुन-भीम-नकुल-सहदेव को लिये-धनुष बान कर गहे रथ पर चढ बन में अहेर को गये ● वहां जाय रथ से उतर फेंट बांध-बांहें चढाय सरसाध जंगल झाड झाड लगे सिंह-बाघ-गेंडे-अरने-साबर-सूकर-हिरन-रोझ-मार मार राजा युधिष्ठिर के सनमुख लाय लाय धरने औ राजा युधिष्ठिर हंस हंस रीझ रीझ ले लो जिस का भक्षन था तिसे देने लगे और हिरन-रोझ-साबर रसोई में भेजने ●

तिस समैं श्री कृष्णचंद औ अर्जुन आखेट करते करते कितनी एक दूर सब से आगे जाय-एक बृक्ष के नीचे खडे हुए ● फिर नदी के तीर जाके दोनों ने जल पिया - इस में श्री कृष्ण जी देखते क्या हैं कि नदी के तीर-एक अति सुंदरि नवजोबना-चंद मुखी-चंपक बरनी-मृग नयनी-पिक बयनी-गज गामनी-कटि केहरी - नख सिख से सिंगार किये-अनंग मद पिये-महा छबि लिये अकेली फिरती है ● उसे देखते ही हरि चकित थकित हो बोले ●●

वह को सुंदरि बिहरति अंग ● कोऊ नहीं तासु के संग ●

महाराज-इतनी बात प्रभु के मुख से सुन औ विसे देख अर्जुन हडब

डाय दौडकर वहां गया-जहां वह महा सुंदरी नदी के तीर तीर बिहरती थी ❁ और पूछने लगा कि कह सुंदरी तू कौन है औ कहां से आई है और किस लिये यहां अकेली फिरती है- यह भेद अपना सब मुझे समझायकर कह-इतनी बात के सुनते ही ❁❁

सुंदरि कथा कहै आपनी ❁ हौं कन्या हौं सूरज तनी ❁
कालिंदी है मेरौ नाम ❁ पिता दियौ जल में बिश्राम ❁
रचे नदी में मंदिर आय ❁ मो सों पिता कह्यौ समझाय ❁
कीजो सुता नदी ढिग फेरौ ❁ आय मिलै गौ यहां बर तेरौ ❁
यदुकुल मांहिं कृष्ण औतरै ❁ तो काजे इहिं ठां अनुसरै ❁
आदिपुरुष अविनासी हरी ❁ ताकाजै तू है औतरी ❁
ऐसें जब हि तात रवि कह्यौ ❁ तबतें मैं हरि पद कौं चह्यौ ❁

महाराज-इतनी बात के सुनते ही अर्जुन अति प्रसंन हो बोले कि हे सुंदरि-जिन के कारन तू यहां फिरती है - वेई प्रभु अविनासी द्वारिकावासी श्री कृष्णचंद आनंदकंद आय पहुंचे ❁ महाराज- जों अर्जुन के मुंह से इतनी बात निकली-तों भक्त हितकारी श्री बिहारी भी रथ बढाय वहां जापहुंचे ❁ प्रभु को देखते ही अर्जुन ने जद विसका सब भेद कह सुनाया-तब श्री कृष्णचंद जी ने हंसकर झट उसे रथ पर चढाय नगर की बाटली ❁ जितने श्री कृष्णचंद बन से नगर में आवें- तितने में विश्वकर्मा ने ऐक मंदिर अति सुंदर सब से निराला -प्रभु की इच्छा देख बना रक्खा ❁ हरि ने आते ही कालिंदी को वहां उतारी औ आप भी रहने लगे ❁

आगे कितने एक दिन पीछे एक समैं श्री कृष्णचंद औ अर्जुन रात्र की बिरियां किसी स्थान पर बैठे थे - कि अग्नि ने आय हाथ जोड सिरनाय - हरि से कहा ◉ महाराज - मैं बहुत दिन की भूखी सारे संसार में फिर आई पर खाने को कहीं न पाया - अब एक आस आपकी है जो आज्ञा पाऊं - तो बन जंगल जाय खाऊं ◉ प्रभु बोले अच्छा जाय खा - फिर आग ने कहा कृपानाथ - मैं अकेली बन में नहीं जासकती - जो जाऊं तो इंद्र आय मुझे बुझाय देगा ◉ यह बात सुन श्री कृष्ण जी ने अर्जुन से कहा - कि बंधु तुम जाय अग्नि को चराय आओ - यह बहुत दिन से भूखी मरती है ◉

महाराज - श्री कृष्णचंद जी के मुख से इतनी बात के निकलते ही - अर्जुन धनुष बान ले अग्नि के साथ हुए ◉ और आग बन में जाय भडकी और लगे आम - इमली - बड - पीपल - पाकड - ताल - तमाल ◉ महुआ - जामन - खिरनी - कचनार - दाख - चिरोंजी - कौला - नीबू - बेर - आदि सब वृक्ष जलने और ◉◉

पटकैं कांस बांस अति चट के ◉ बन के जीव फिरें मग भट के ◉

जिधर देखिये तिधर सारे बन में आग हूहूकर जलती है औ धुंआं मंडलाय आकाश को गया ◉ तिस धुंएं को देख इंद्र ने मेघपति को बुलाय के कहा - कि तुम जाय अति बरषाकर अग्नि को बुझाय - बन औ बन के पशु पक्षी जीव जंतु को बचाओ ◉ इतनी आज्ञा पाय मेंघपति दलबादल साथ ले वहां आय - घहराय जों बरसने को हुआ तों अर्जुन ने ऐसे पवन बान मारे - कि बादल राईकाई हो यों उडगये कि जै

से रुई के पहल पौन के झोके में उडजांय - न किसी ने आते देखे न जाते-औ आये तो सहज ही बिलाय गये और आग बन झाडखंड ज लाती जलाती कहां आई - कि जहां मय नाम असुर का मंदिर था ॥ अग्नि को अति रिस भरी आती देख मय महा भयखाय नंगे पाओं गले में कपडा डाले हाथ बांधे- मंदिर से निकल सनमुख आय खडा हुआ- और अष्टांग प्रनामकर अति गिडगिडाय के बोला हे प्रभु हे प्रभु-इस आग से बचाय बेग मेरी रक्षाकरो ॥

चरी अग्नि पायौ संतोष ॥ अब तुम मानौं जिन कछु दोष ॥
मेरी बिनती मन में लाओ ॥ बैसंदर तें मोहि बचाओ ॥

महाराज - इतनी बात मयदैत्य के मुख से निकलते ही - अग्नि बान बैसंदर ने धरे औ अर्जुन भी चुपकरहे खडे ॥ निदान वे दोनों मय को साथ ले श्री कृष्णचंद आनंदकंद के निकट जा बोले-कि महाराज ॥

यह मय असुर आय है काम ॥ तुम्हरे लयें बनै है धाम ॥
अब हीं सुध तुम मय की लेहु ॥ अग्नि बुझाय अभयकर देहु ॥

इतनी बात कह अर्जुन ने गांडीव धनुष सर समेत हाथ से भूमि में रक्खा - तब प्रभुने आग की ओर आंख दबाय सैन की - वह तुरंत बुझ गई औ सारे बन में सीतलता हुई ॥ फिर श्री कृष्णचंद अर्जुन सहित मय को साथ ले आगेबढे-वहां जाय मय ने कंचन के मनिमय मंदिर अति सुंदर- सुहावने मन भावने छिनभर में बनाय खडे किये-ऐसे कि जिन की शोभा कुछ बरनी नहीं जाती - जो देखने को आता सो

चकित हो चित्र सा खड़ा रह जाता ॥ आगे श्री कृष्णजी वहां और महीने बिरमे - पीछे वहां से चल कहां आये कि जहां राजसभा में राजा युधिष्ठिर बैठे थे ॥ आतेही, प्रभु ने राजा से द्वारिका जाने की आज्ञा मागी - यह बात श्री कृष्णचंद के मुख से निकलते ही - सभा समेत राजा युधिष्ठिर अति उदास हुए औ सारे रनवास में भी क्या स्त्री क्या पुरुष सब चिंता करने लगे ॥ निदान प्रभु सब को यथा योग्य समझाय बुझाय-आसा भरोसा दे अर्जुन को साथ ले युधिष्ठिर से बिदा हो हस्तनापुर से चल-हंसते खेलते कितने एक दिनों में द्वारिकापुरी आ पहुंचे ॥ इनका आना सुन सारे नगर में आनंद होगया औ सब का बिरह दुख गया ॥ मात पिता ने पुत्र का मुख देख सुख पाया औ मन का खेद सब गंवाया ॥

आगे एक दिन श्री कृष्णजी ने राजा उग्रसेन के पास जाय-कालिंदी का भेद सब समझाय के कहा ॥ कि महाराज - भानु सुता कालिंदी को हम लेआये हैं-तुम वेद की बिधि से हमारा उस के साथ ब्याह कर दो ॥ यह बात सुन उग्रसेन ने वोंही मंत्री को बुलाय आज्ञा दी-कि तुम अबही जाय ब्याह की सब सामा लाओ ॥ आज्ञा पाय मंत्री ने बिवाह की सामग्री बात की बात में सब लाय दी - तिसी समैं उग्रसेन बसुदेव ने एक ज्योतिषी को बुलाय-शुभ दिन ठहराय श्री कृष्णजी का कालिंदी के साथ बेद की बिधि से ब्याह किया ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले कि हे राजा- कालिंदी का बिवाह तो यों हुआ ॥ अब आगे जैसे मित्रबिंदा को हरि लाये औ ब्याहा

तैसे कथा कहता हूं तुम चित दे सुनौ ❀ सूरसेन की बेटी श्री कृष्णजी की फुफी तिस का नाम राजाधिदेवी-उस की कन्या मित्रबिंदा ❀ जब वह ब्याहनजोग हुई तब उस ने स्वयंबर किया-तहां सब देस देस के नरेस गुनवान-रूपनिधान-महाज्ञान-बलवान-सूरवीर-अति धीर-बनठन के एक से एक अधिक जा इकठे हुए ❀ ये समाचार पाय श्री कृष्णचंद जी भी अर्जुन को साथ ले वहां गये औ जाके बीचों बीच स्वयंबर के खडे हुए ❀❀

हरषी सुंदरि देखि मुरारि ❀ हार डार मुख रही निहारि ❀

महाराज-यह चरित्र देखे सब देस देस के राजा तो लज्जित हो मन हीं मन अनखाने लगे और दुर्योधन ने जाय उस के भाई मित्रसेन से कहा ❀ कि बंधु-तुम्हारे मामा का बेटा है हरी-जिसे देख भूली है सुंदरी ❀ यह लोक बिरुद्ध रीति है इस के होने से जग में हंसाई होगी-तुम जाय बहन को समझाओ-कि कृष्ण को नबरै-नहीं तो सब राजाओं की भीड में हंसी होयगी ❀ इतनी बात के सुनते ही मित्रसेन ने जाय-बहन को बुझाय के कहा ❀

महाराज-भाई की बात सुन समझ जो मित्रबिंदा प्रभु के पास से हटकर अलग दूर हो खडी हुई-तो अर्जुन ने झुककर श्री कृष्णचंद के कान में कहा ❀ महाराज-अब आप किस की कान करते हैं बात बिगड चुकी-जो कुछ करना हो सो कीजै बिलंब नकरिये ❀ अर्जुन की बात सुनते ही श्री कृष्ण जी ने स्वयंबर के बीच से-झट हाथ पकड मित्र बिंदा को उठाय रथ में बैठाय लिया औ योंहीं सब के देखते

रथ हांक दिया ॥ उस काल सब भूपाल तो अपने अपने शस्त्र ले ले घोडों पर चढ चढ प्रभु का आगा घेर लडने को आ खडे रहे औ नगर निवासी लोग हंस हंस तालियां बजाय बजाय-गालियां दे दे यों कहने लगे ॥

फुफू सुता कौं व्याहन आयौ ॥ यहतें कृष्ण भलौ जस पायौ ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-जब श्री कृष्णचंद जी ने देखा कि चारों ओर से जो असुर दल घिर आया है सो लडे बिन न रहैगा-तब तिन्हों ने कैएक बान निखंग से निकाल धनुष तान ऐसे मारे-कि वह सब सेना असुरों की छिनीछान हो वहां की वहां बिलाय गई औ प्रभु निर्द्वंद आनंद से द्वारिका पहुंचे ॥

श्री शुकदेव जी बोले महाराज - श्री कृष्ण जी ने मित्रबिंदा को तो यों ले जाय द्वारिका में ब्याहा ॥ अब आगे जैसे सत्या को प्रभु लाये सो कथा कहता हूं-तुम मन लगाय सुनौ ॥ कौसल देस में नगनजित नाम नरेस तिस की कन्या सत्या-जब वह ब्याहन जोग हुई तब राजा ने सात बैल अति ऊंचे भयावने बिन नाथे मंगवाय-यह प्रतिज्ञाकर देस में छुडवाय दिये - कि जो इन सातों बृषभों को एक बार नाथ लावेगा उसे मैं अपनी कन्या ब्याहूंगा ॥ महाराज - वे सातों बैल सिर झुकाये पूंछ उठाये भौं खूंद खूंद डकारते फिरैं और जिसे पावैं तिसे हनैं ॥

आगे ये समाचार पाय श्री कृष्णचंद अर्जुन को साथ ले वहां गये औ जा राजा नगनजित के सनमुख खडे हुए-इन को देखते ही राजा सिं

हासन से उत्तर अष्टांग प्रनामकर-इन्हें सिंहासन पर बिठाय-चंदन-अक्षत-पुष्प चढाय-धूप-दीपकर-नैवेद्य आगे धर-हाथ जोड सिरनाय-अति बिनतीकर बोला ॐ कि आज मेरे भाग जागे जो शिव-बिरंच के करता प्रभु मेरे घर आए-यों सुनाय फिर बोला कि महाराज-मैं ने ऐक प्रतिज्ञा की है सो पूरी होनी कठिन थी- पर अब मुझे निह्चै ऊआ कि वह आप की कृपा से तुरंत पूरी होगी ॐ प्रभु बोले कि ऐसी क्या प्रतिज्ञा तू ने की है कि जिस का होना कठिन है कह ॐ राजा ने कहा कृपानाथ - मैं ने सात बैल अन नाथे छुडवाय यह प्रतिज्ञा की है कि जो इन सातों बैल को ऐक बेर नाथेगा-तिसे मैं अपनी कन्या ब्याहूंगा ॐ श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज ॐॐ

सुन हरि फेंटबांध तहां गऐ ॐ सात रूप धर ठाढे भऐ ॐ
काछन लख्यौ अलख ब्योहार ॐ सातों नाथे ऐक हि बार ॐ

वे बृषब नाथ के नाथने के समय ऐसें खडे रहे कि जैसे काठ के बैल खडे होंय-प्रभु सातों को नाथ ऐक रस्सी में गांथ राजसभा में ले आऐ ॐ यह चरित्र देख सब नगर निवासी तो क्या स्त्री क्या पुरुष अचरज कर धन्य धन्य कहने लगे औ राजा नगनजित ने उसी समें परोहित को बुलाय-बेद की विधि से कन्यादान दिया ॐ तिस के यौतुक में दस सहस्र गाय-नौलाख हाथी-दस लाख घोडे-तिहत्तर लाख रथ दे-दास दासी अनगिनत दिये ॐ श्री कृष्णचंद सब ले वहां से जब चले- तब खिजलाय सब राजाओं ने प्रभु को मारग में आनघेरा ॐ तहां मारे बानों के अर्जुन ने सब को मार भगाया-हरि आनंद मंगल से सब समेत द्वारि

कापुरी पहुंचे ● उस कांखे सब द्वारिकावासी आगे आय प्रभु को बाजे गाजे से पाटंबर के पांवडे डालते राजमंदिर में ले गये औ कौतुक देख सब अचंभे रहे ●●

नगनजीत की करत बडाई ● कहत लोग यह बडी सगाई ●
भलौ व्याह कौसल पति कियौ ● कृस्न हिं इतौ दायजौ दियौ ●

महाराज-नगर निवासी तो इस ढब की बातें कर रहे थे कि उसी समय-श्री कृस्नचंद औ बलराम जी ने यहां आके राजा नगनजित का दिया हुआ सब दायजा अर्जुन को दिया औ जगत में जस लिया ● आगे अब जैसे श्री कृस्न जी भद्रा को व्याह लाये सो कथा कहता हूं-तुम चित लगाय निचंत हो सुनौ ● केकय देस के राजा की बेटी भद्रा ने स्वयंबर किया औ देस देस के नरेसों को पत्र लिखे - वे आय इकठे हुऐ ●

तहां श्री कृस्नचंद भी अर्जुन को साथ ले गये और स्वयंबर के बीच सभा में जा खडे रहे ● जब राजकन्या माला हाथ में लिये सब राजाओं को देखती भालती-रूपसागर जगत उजागर श्री कृस्नचंद के निकट आई तो देखते ही भूलरही औ उस ने माला इन के गले में डाली-यह देख उस के मात पिता ने प्रसन्न हो वह कन्या हरि को बेद की विधि से व्याह दी ● तिस के दायजे में बहुत कुछ दिया कि जिस का वारपार नहीं ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-श्री कृस्नचंद भद्रा को तो यों व्याह लाये-फिर जैसे प्रभु ने लक्ष्मना को व्याहा सो कथा

कहता हूं तुम सुनौ ◈ भद्रदेस का नरेस अति बली औ बडा प्रतापी तिस की कन्या लक्षमना जद ब्याहन जोग भई - तब उस ने स्वयंबरकर चारों देसों के नरेसों को पत्र लिख लिख बुलाया ◈ वे अति धूमधाम से अपनी अपनी सेना साज साज वहां आये औ स्वयंबर के बीच बडेव नाव से पांति पांति जा बैठे ◈

श्री कृष्णचंद जी भी अर्जुन को साथ लिये तहां गये और जो स्वयंबर के बीच जा खडे भये - तो लक्षमना ने सब को देख आ श्री कृष्ण जी के गले में माला डाली ◈ आगे उस के पिता ने बेद की विधि से प्रभु के साथ लक्षमना को ब्याहकर दिया - सब देस देस के नरेस जो वहां आये थे सो महा लज्जित हो आपस में कहने लगे - कि देखें हमारे रहते किस भांति कृष्ण लक्षमना को लेजाता है ◈

ऐसे कह वे सब अपना अपना दल साज मारग रोक जा खडे हुए - जो श्री कृष्णचंद औ अर्जुन लक्षमना समेत रथ ले आगेबढे - तो विन्हों ने इन्हें आय रोका और युद्ध करने लगे ◈ निदान कितनी एक बेर में मारे बानों के अर्जुन औ श्री कृष्ण जी ने सब को मार भगाया और आप अति आनंद मंगल से नगर द्वारिका पहुंचे ◈ इन के जाते ही सारे नगर में घर घर ◈◈

भई बधाई मंगलचार ◈ होती बेद रीति ब्यौहार ◈

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - इस भांति श्री कृष्णचंद जी पांच ब्याहकर लाये - तब द्वारिका में आठों पटरानियों समेत सुख से रहने लगे औ पटरानियां आठों पहर सेवा करने लगीं ◈

पटरानियों के नाम-रुक्मिनी-जामवंती-सत्यभामा-कालिंदी-मित्रबिंदा-सत्या-भद्रा-लक्ष्मना ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे श्री कृष्ण पंच बिवाह करनो नाम एकोन षष्ठितमोध्यायः ● ॥ ५९ ॥ ●●

●●●●●●●●●●●●

श्री शुकदेव जी बोले कि हे राजा - एक समय पृथ्वी मनुष तन धारन कर अति कठिन तप करने लगी ● तहां ब्रह्मा विष्णु रुद्र इन तीनों देवताओं ने आ तिस से पूछा - कि तू किस लिये इतनी कठिन तपस्या करती है ● धरती बोली कृपासिंधु - मुझे पुत्र की वासना है इस कारन महा तप करती हूं - दयाकर मुझे एक पुत्र अति बलवंत महा प्रतापी बड़ा तेजस्वी दो - ऐसा कि जिस का साम्हना संसार में कोई न करै - न वह किसी के हाथ से मरै ●

यह बचन सुन प्रसन्न हो तीनों देवताओं ने बर दे उसे कहा - कि तेरा सुत नरकासुर नाम अति बली महा प्रतापी होगा - उस से लड़ कोई न जीतेगा - वह सृष्टि के सब राजाओं को जीत अपने बस करेगा - स्वर्ग लोक में जाय देवताओं को मार भगाय - अदिति के कुंडल छीन आप पहनेगा और इंद्र का छत्र छिनाय लाय अपने सिर धरेगा - संसार के राजाओं की कन्या सोलह सहस्र एक सौ लाय अनब्याही घेर रक्खेगा ● तब श्री कृष्णचंद्र सब भीषन कटक ले उस पर चढ़ जांयगे और उन से तू कहैगी इसे मारो - पुनि वे मार सब राजकन्याओं को ले द्वारिकापुरी पधारैंगे ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि म

हाराज-तीनों देवताओं ने वर दे जब यों कहा तब भूमि इतना कह चुप होरही - कि मैं ऐसी बात क्यों कहूंगी कि मेरे बेटे को मारे ● आगे कितने ऐक दिन पीछे भूमि पुत्र भौमासुर हुआ-तिसी का नाम नरकासुर भी कहते हैं-वह प्रागुजोतिषपुर में रहने लगा ● उस पुर के चारों ओर पहाडों की ओट और जल अग्नि पवन का कोट बनाय-सारे संसार के राजाओं की कन्या बलकर छीन छीन-धाय समेत लाय लाय उस ने वहां रक्खीं ● नित उठ उन सोलह सहस्र ऐक सौ राजकन्याओं को खाने पीने पहरने की चौकसी वह किया करे और बडे यत्न से उन्हें पलवावे ●

ऐक दिन भौमासुर अति कोपकर पुष्प विमान में बैठ जो लंका से लाया था-सुरपुर में गया और लगा देवताओं को सताने ● विस के दुख से देवता स्थान छोड छोड अपना जीव ले ले जिधर तिधर भाग गये - तब वह अदिति के कुंडल औ इंद्र का छत्र छीन लाया ● आगे सब सृष्ट के सुर - नर - मुनियों को अति दुख देने लगा - विस का सब आचरन सुन श्री कृष्णचंद जगबंधु जी ने अपने जी में कहा ●●

वाहि मार सुंदरि सब ल्याऊं ● सुरपति छत्र तहीं पहुंचाऊं ●
जाय अदिति के कुंडल दै हौं ● निर्भय राजइंद्र कौ कै हौं ●

इतना कह पुनि श्री कृष्णचंद जी ने सतिभामा से कहा कि हे नारि-तू मेरे साथ चले तो भौमासुर माराजाय - क्यों कि तू भूमि का अंस है इस लेखे उस की मा हुई - जब देवताओं ने भूमि को पुत्र का बर दिया

था तब यह कह दिया था - कि जद तू मारने को कहैगी तद तेरा पुत्र मरेगा नहीं तो किसी से किसी भांति मारा न मरेगा ॥ इस बात के सुनते ही सतिभामा जी कुछ मन ही मन सोच समझ इतना कह अनमनी हो रहीं - कि महाराज - मेरा पुत्र आप का सुत हुआ तुम उसे क्योंकर मारोगे ॥

प्रभु ने इस बात को टाल कहा कि उस के मारने की तो मुझे कुछ इतनी चिंता नहीं पर एक समै मैं ने तुम्हें बचन दिया था तिसे पूरा किया चाहता हूं ॥ सतिभामा बोली सो क्या - प्रभु कहने लगे कि एक समय नारद जी ने आय मुझे कल्पवृक्ष का फूल दिया - वह ले मैं ने रुक्मिनी को भेजा ॥ यह बात सुन तू रिसाय रही तब मैं ने यह प्रतिज्ञा करी कि तू उदास मत हो मैं तुझे कल्पवृक्ष ही ला दूंगा - सो अपना बचन प्रतिपालने को और तुझे वैकुंठ दिखाने को साथ ले चलता हूं ॥

इतनी बात के सुनते ही सतिभामा जी प्रसन्न हो हरि के साथ चलने को उपस्थित हुई - तब प्रभु उसे गरुड पर अपने पीछे बैठाय साथ ले चले ॥ कितनी एक दूर जाय श्री कृष्णचंद जी ने सतिभामा जी से पूछा - कि सच कह सुंदरि इस बात को सुन तू पहले क्या समझ अप्रसन्न हुई थी - उस का भेद मुझे समझाय के कह जो मेरे मन का संदेह जाय ॥ सतिभामा बोली कि महाराज - तुम भौमासुर को मार सोलह सयस एक सौ राजकन्या लाओगे तिन में मुझे भी गिनैंगे - यह समझ अनमनी हुई थी ॥

श्री कृष्णचंद्र बोले कि तू किसी बात की चिंता मत करै मैं कल्पवृक्ष लाय तेरे घर में रक्खूंगा औ तू तिस के साथ मुझे नारद मुनि को दान कीजो - फिर मोल ले मुझे अपने पास रखना मैं तेरे सदा आधीन रहूंगा ॥ ऐसे ही इंद्रानी ने इंद्र को वृक्ष के साथ दान किया था औ अदिति ने कश्यप को ॥ इस दान के करने से कोई नारी तेरी समान मेरे न होगी ॥ महाराज - इसी भांति की बातें कहते कहते श्री कृष्ण जी प्रागज्योतिषपुर के निकट जा पहुंचे - वहां पहाड का कोट अग्नि-जल-पवन की ओट देखतेही प्रभु ने गरुड औ सुदरसन चक्र को आज्ञा की - तिन्हों ने पलभर में ढाय-बुझाय-बहाय-थाम अच्छा पंथ बनाय दिया ॥

जो हरि आगे बढ नगर में जाने लगे तो गढ के रखवाले दैत्य लडने को चढ आये - प्रभु ने तिन्हें गदा से सहज ही मार गिराये ॥ तिन के मरने का समाचार पाय मुर नाम राक्षस पांच सीसवाला - जो उस पुर गढ का रखवाला था सो अति क्रोधकर त्रिशूल हाथ में ले श्री कृष्ण जी पर चढ आया औ लगा आंखें लाल लाल कर दांत पीस पीस कहने कि ॥

मोतें बली कौन जग और ॥ ताहि देखि हों मैं याठौर ॥

महाराज - इतना कह मुर दैत्य श्री कृष्णचंद्र पर यों दपटा कि जो गरुड सर्प पर झपटे ॥ आगे उस ने त्रिशूल चलाया - सो प्रभु ने चक्र से काट गिराया ॥ फिर खिजलाय मुर ने जितने शस्त्र हरि पर घाले - तितने प्रभु ने सहज ही काट डाले ॥ पुनि वह हकबकाय दौडकर

प्रभु से आय लिपटा और मल्लयुद्ध करने लगा ● निदान कितनी ऐ
क बेर में युद्ध करते करते-श्री कृष्ण जी ने सतिभामा जी को महा भ
यमान जान-सुदरसन चक्र से उस के पाँचों सिर काट डाले ● धड
से सिर गिरते ही धमका सुन भौमासुर बोला - कि यह अति शब्द
काहे का ऊआ-इस बीच किसी ने जा सुनाया-कि महाराज-श्री कृ
ष्ण ने आय मुर दैत्य को मार डाला ●

इतनी बात के सुनते ही प्रथम तो भौमासुर ने अति खेद किया-
पीछे अपने सेनापती को युद्ध करने का आयसु दिया ● वह सब क
टक साज लडने को गढ के द्वार पर आ उपस्थित ऊआ और तिस
के पीछे अपने पिता का मरना सुन मुर के सात बेटे जो अति बलवान
औ बडे जोधा थे - सो भी अनेक अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्र धारनक
र श्री कृष्णचंद्र जी के सनमुख लडने को आ खडे ऊए ● पीछे से भौ
मासुर ने अपने सेनापती औ मुर के बेटों से कहला भेजा-कि तुम सा
वधानी से युद्ध करो मैं भी आवता हूं ●

लडने की आज्ञा पाते ही सब असुर दल साथ ले मुर के बेटों स
मेत-भौमासुर का सेना पती श्री कृष्ण जी से युद्ध करने को चढ आया
औ ऐका ऐकी प्रभु के चारों ओर सब कटक दल बादल सा जाय छा
या ● सब ओर से अनेक अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्र भौमासुर के सू
र श्री कृष्णचंद्र पर चलाते थे औ वे सहज सुभाव ही काट काट ढेर
करते जाते थे ● निदान हरि ने श्री सतिभामा जी को महा भयातुर
देख-असुर दल को मुर के सातों बेटों समेत-सुदरसन चक्र से मा

की बात में यों काट गिराया कि जैसे किसान ज्वार की खेती को काट गिरावे ●



इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज-मुर के पुत्रों समेत सब सेना कटी सुन-पहले तो भौमासुर अति चिंताकर महा घबराया-पीछे कुछ सोच समझ धीरजकर कितने एक महा बली-राक्षसों को अपने साथ लिये - लाल लाल आंखें क्रोध से किये-कसकर फेंट बांधे-सर साधे-बकता झखता श्री कृष्ण जी से लडने को आय उपस्थित हुआ ● जों भौमासुर ने प्रभु को देखा तों उसने एक बार अति रिसाय मूठ की मूठ बान चलाये-सो हरि ने तीन तीन टुकडेकर काट गिराये-उसकाल ●●

काढ खडग भौमासुर लियौ ● कोपि हुंकारि कृष्ण उर दियौ ●
करै शब्द अति मेघ समान ● अरे गंवार- न पावे जान ●
करकस बचन तहां उचरै ● महा युद्ध भौमासुर करै ●

महाराज - वह तो अति बलकर इन पर गदा चलाता था और श्री कृष्ण जी के शरीर में उस की चोट यों लगती थी - कि जों हाथी के अंग में फूल छडी ● आगे वह अनेक अनेक अस्त्र शस्त्र ले प्रभु से लडा औ प्रभु ने सब काट डाले ● तब वह फिर घर जाय एक त्रिशूल ले आया औ युद्ध करने को उपस्थित हुआ ●●

तब सतिभामा टेर सुनाई ● अब किन याहि हतौ यदुराई ●
बचन सुनत प्रभु चक्र संभार्‌यौ ● काटि सीस भौमासुर मार्‌यौ ●
कुंडल मुकुट सहित सिर पर्‌यौ ● धर के गिरत सेस थरहर्‌यौ ●

तिहूं लोक में आनंद भयौ ॥ सोच दुख सब ही कौ गयौ ॥
तासु जोति हरि देह समानी ॥ जैजै शब्द करैं सुर ज्ञानी ॥
घिरे बिमान पुहुप बरषावैं ॥ बेद बखानि देव जस गावैं ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज-भौमासुर के मरते ही भूमि औ भौमासुर की स्त्री पुत्र समेत आय-प्रभु के सनमुख हाथ जोड सिर निवाय - अति बिनतीकर कहने लगी ॥ हे जोतीसरूप ब्रह्मरूप - भक्त हितकारी बिहारी-तुम साधसंत के हेतु धरते हो भेष अनंत-तुम्हारी महिमा-लीला-माया है अपरंपार तिसे कौन जानें और किसे इतनी सामर्थ है जो बिन कृपा तुम्हारी तिसे बखाने ॥ तुम सब देवों के हो देव-कोई नहीं जानता तुम्हारा भेव ॥

महाराज-ऐसे कह छत्र कुंडल पृथ्वी प्रभु के आगे धर फिर बोली -दीनानाथ-दीनबंधु-कृपासिंधु-यह सुभगदंत भौमासुर का बेटा आप की सरन आया है- अब करुनाकर अपना कोमल कमल सा कर इस के सीस पर दीजे औ अपने भय से इसे निर्भय कीजे ॥ इतनी बात के सुनते ही करुना निधान श्री कान्ह ने करुनाकर सुभगदंत के सीस पर हाथ धरा और अपने डर से उसे निडर करा ॥ तब भौमावती भौमासुर की स्त्री बहुत सी भेट हरि के आगे धर- अति बिनतीकर हाथ जोड सीस झुकाय खडी हो बोली ॥

हे दीनदयाल-कृपाल-जैसे आप ने दरसन दे हम सब को कृतारथ किया-तैसे अब चलकर मेरा घर पवित्र कीजे ॥ इस बात के सुनते ही अंतरजामी भक्त हितकारी श्री मुरारी भौमासुर के घर पधारे :

उस काल वे दोनों मा बेटे हरि को पाटंबर के पांवडे डाल घर में ले जाय - सिंहासन पर बिठाय अरघदे चरनामृत ले अति दीनताकर बोले ● हे त्रिलोकीनाथ - आप ने भला किया - जो इस महा असुर को बध किया ● हरि से बिरोधकर किस ने संसार में सुखपाया - रावन कुंभकरन कंसादि ने बैरकर अपना जी गंवाया ● और जिन जिन ने आप से द्रोह किया तिस तिस का जगत में नाम लेवा पानी देवा कोई न रहा ●

इतना कह फिर भौमावती बोली - हे नाथ - अब आप मेरी बिनती मान - सुभगदंत को निज सेवक जान - जो सोलह सहस राजकन्या इस के बाप ने अन ब्याही रोक रक्खी हैं सो अंगीकार कीजे ● महाराज - यों कह उस ने सब राजकन्याओं को निकाल प्रभु के सोंहीं पांत की पांत ला खडाकिया ● वे जगत उजागर रूपसागर श्री कृष्णचंद आनंदकंद को देखते ही मोहितहो अति गिडगिडाय हाहाखाय हाथ जोड बोलीं ● नाथ जैसे आप ने आय हम अबलाओं को इस महा दुष्ट की बंध से निकाला - तैसे अब कृपाकर इन दासियों को साथ ले चलिये औ निज सेवा में रखिये तो भला ●

यह बात सुन श्री कृष्णचंद ने तिन्हें इतनी कह - कि हम तुम्हारे साथ ले चलने को रथ पालकियां मंगावें हैं - सुभगदंत की ओर देखा ● सुभगदंत प्रभु के मन का कारन समझ अपनी राजधानी में जाय - हाथी घोडे सजवाय - घुडबहल औ रथ झमझमाते जगमगाते जुतवाय - सुखपाल - पालकी - नालकी - डोली - चंडोल - झलाबोर के कसवाय लिवा

थ लाया ● हरि देखते ही सब राजकन्याओं को उन पर चढने की आज्ञा दे-सुभगदंत को साथ ले-राजमंदिर में जाय-उसे राजगादी पर बिठाय-राजतिलक बिसे निज हाथ से दे-आप बिदा ले जिस काल सब राजकन्याओं को साथ लिये वहां से द्वारिका को चले-तिस समय की शोभा कुछ बरनी नहीं जाती ● कि हाथी बैलों की झलाबोर गंगा जमनी झूलों की चमक और घोडों की पाखरों की दमक औ सुखपाल पालकी नालकी डोली चंडोल रथ घुडबहलों के घटा टोपों की ओप औ उन की मोतियों की झालरों की जोत - सूरज की जोत से मिल एक हो जगमगाय रही थी ●

आगे श्री कृष्णचंद सब राजकन्याओं को लिये - कितने एक दिन में चले चले द्वारिका पुरी पहुंचे ● वहां जाय राजकन्याओं को राजमंदिर में रख- राजा उग्रसेन के पास जाय प्रनाम कर पहले तो श्री कृष्ण जी ने- भौमासुर के मारने और राजकन्याओं के छुडाय लाने का सब भेद कह सुनाया ● फिर राजा उग्रसेन से बिदा होय प्रभु सतिभामा को साथ ले - छत्र कुंडल लिये गरुड़ पर बैठ बैकुंठ को गये तहां पहुंचते ही ●●

कुंडल दिये अदिति के ईस ● छत्र धस्यो सुरपति के सीस ●

यह समाचार पाय वहां नारद आया-तिस से हरि ने कह सुनाया ● कि तुम जाय इंद्र से कहो जो सतिभामा तुम से कल्पवृक्ष मांगती है -देखो वह क्या कहता है-इस बात का उतर मुझे ला दो पीछे समझा जायगा ● महाराज-इतनी बात श्री कृष्णचंद जी के मुख से सुन-ना

रद जी ने सुरपति से जाय कहा ● कि सतिभामा तुम्हारी भौजाई तुम से कल्पतरु मांगती है-तुम क्या कहते हो सो कहो मैं उन्हें जाय सुनाऊं कि इंद्र ने यह कहा ● इस बात के सुनते ही इंद्र पहले तो हकबकाय कुछ सोच रहा-पीछे उस ने नारद मुनि का कहा सब इंद्रानी से जाय कहा ●●


इंद्रानी सुन कहै रिसाय ● सुरपति तेरी कुमति न जाय ●

तू है बडौ मूढ पति अंधु ● को है कृष्ण कौन कौ बंधु ●

तुझे वह सुध है कै नहीं - जो उस ने ब्रज में से तेरी पूजा मेट ब्रजबासियों से गिर पुजवाय - छलकर तेरी पूजा का सब पकवान आप खाया ● फिर सात दिन तुझे गिर पर बरसवाय उस ने तेरा गर्व गंवाय सब जगत में निरादर किया- इस बात की कुछ तेरे ताईं लाज है कै नहीं ● वह अपनी स्त्री की बात मानता है-तू मेरा कहा क्यों नहीं सुनता ●

महाराज-जब इंद्रानी ने इंद्र से यों कह सुनाया- तब वह अपना सा मुंह ले उलट नारद जी के पास आया और बोला ● हे ऋषिराय - तुम मेरी ओर से जाय श्री कृष्णचंद से कहो कि कल्पवृक्ष नंदन बन तज अनत न जायगा औ जायगा तो वहां किसी भांति न रहेगा ● इतना कह फिर समझा के कहियो जो आगे की भांति अब यहां हम से बिगाड न करैं - जैसे ब्रज में ब्रजबासियों को बहकाय गिरि का मिसकर सब हमारी पूजा की सामा खायगये - नहीं तो महा युद्ध होगा ●

यह बात सुन नारद जी ने आय श्री कृष्णचंद से इंद्र की बात कही कह सुनाय के कहा-महाराज-कल्पतरु इंद्र तो देता था पर इंद्राणी ने न देनेदिया ॥ इस बात के सुनते ही श्री मुरारी गर्वप्रहारी नंदन बन में जाय-रखवालों को मार भगाय-कल्पवृक्ष को उठाय-गरुड पर धर ले आये ॥ उस काल वे रखवाले जो प्रभु के हाथ की मार खाय भागे थे-इंद्र के पास जा पुकारे ॥ कल्पतरु के लेजाने के समाचार पाय महाराज-राजा इंद्र अति कोपकर बज्र हाथ में ले-सब देवताओं को बुलाय-ऐरावत हाथी पर चढ-श्री कृष्णचंद जी से युद्ध करने को उपस्थित हुआ ॥

फिर नारद मुनि जी ने जाय इंद्र से कहा-राजा-तू महा मूर्ख है जो स्त्री के कहे भगवान से लडने को उपस्थित हुआ है ॥ ऐसी बात कहते तुझे लाज नहीं आती-जो तुझे लडना ही था तो जब भौमासुर तेरा छत्र औ अदिति के कुंडल छिनाय लेगया तब क्यों न लडा ॥ अब प्रभु ने भौमासुर को मार कुंडल औ छत्र लादिया-तो तू उन ही से लडने लगा ॥ जो तू ऐसा ही बलवान था तो भौमासुर से क्यों न लडा तू वह दिन भूलगया जो ब्रज में जाय प्रभु की अति दीनताकर अपना अपराध क्षमा कराय आया-फिर उन हीं से लडने चला है ॥ महाराज-नारद जी के मुख से इतनी बात सुनते ही राजा इंद्र जो युद्ध करने को उपस्थित हुआ-तो अछताय पछताय लज्जित हो मनमार रहगया ॥

आगे श्री कृष्णचंद द्वारिका पधारे-तब हरषित भये देख हरि कौ या

द्व सारे ● प्रभु ने सतिभामा के मंदिर में कल्पवृक्ष ले जाय के रक्खा ॥ प्रेम० ॥
औ राजा उग्रसेन ने सोलह सहस्र ऐक सौ जो राजकन्या आन ब्याहीथीं ॥२६९॥
-सो सब बेद रीति से श्री कृष्णचंद को ब्याहीं ●●

भयौ बेद बिधि मंगलचार ● ऐसे हरि बिहरत संसार ●
सोलह सहस ऐक सौ गेहा ● रहत कृष्ण कर परम सनेहा ●
पटरानी आठों जे रानी ● प्रीति निरंतर तिन सौं ठानी ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले कि हे राजा - हरि ने ऐसे भौमासुर को बध किया औ अदिति का कुंडल और इंद्र का छत्र लादिया ● फिर सोलह सहस्र ऐक सौ आठ बिवाहकर श्री कृष्णचंद द्वारिकापूरी में आनंद से सब को ले लीला करने लगे ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे भौमासुर बधो नाम षष्टित मोध्यायः ॥ ६० ॥

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - ऐक समें मनिमय कंचन के मंदिर में कुंदन का जडाऊ छपर खट बिछा था - तिस पर फेन से बिछौने फूलों से सँवारे - कपोल गेंडुआ औ ओसीसे समेत सुगंध से महक रहे थे - करपूर - गुलावनीर - चोआ - चंदन - अरगजा - सेज के चारों ओर पात्रों में भरा धरा था - अनेक अनेक प्रकार के चित्र बिचित्र चारों ओर भीतों पर खिंचे हुए थे - आलों में जहां तहां फूल - फल - पकवान - पाक - धरे थे और सब सुख का सामान जो चाहिये सो उपस्थित था ●

गुलाबोर का घाघरा घूमघुमाला तिस पर सच्चे मोती टंके हुए - चम

चमाती अंगिया-झलझलाती सारी औ जगमगाती ओढ़नी पहने ओढ़े-नखसिख से सिंगार किये-रोली की आड दिये-बडे बडे मोतियों की नथ-सीसफूल-करनफूल-मांग-टीका-ढेढी-बंदी-चंद्रहार-मोहनमाल-धुकधुकी-पंचलडी-सतलडी-मुक्तमाल-दुहरे तिहरे नौरतन औ भुजबंध-कंकन पहुंची-नौगरी-चूडी-छाप-छल्ले-किंकनी-अनवट-बिछुए-जेहर तेहर-आदि सब आभूषन रतन जटित पहने-चंद्रबदनी-चंपकबरनी-मृगनयनी-पिकबयनी-गजगमनी-कटिकेहरी श्री रुकमनी जी और मेघबरन-चंदमुख-कंवलनैन-मोरमुकट दिये-बनमाल हिये-पीतांबर पहरे-पीतपट ओढे-रूपसागर-त्रिभुवन-उजागर श्री कृष्णचंद आनंदकंद तहां विराजते थे औ आपस में परसपर सुख लेते देते थे कि ऐका ऐकी लेटे लेटे श्री कृष्ण जी ने रुक्मिनी जी से कहा ॥

कि सुन सुंदरि-ऐक बात मैं तुज से पूछता हूं-तू उस का उत्तर मुझे दे - कि तू तो महा सुंदरी सब गुन संयुक्त औ राजा भीष्मक की पुत्री और महा बली बडा प्रतापी राजा सिसुपाल चंदेरी का राजा ऐसा कि जिन के घर सात पीढी से राज चला आता है औ हम उन के त्रास से भागे फिरते हैं औ मथुरापुरी तज समुद्र में जाय बसे हैं उन्हीं के भय से ॥ ऐसे राजा को तुम्हें तुम्हारे मात पिता भाई देते थे औ वह बरात ले ब्याहने को भी आचुका था - तिसे न बर तुम ने कुल की मर्याद छोड-संसार की लाज औ मात पिता बंधु की संका तज हमें ब्राह्मन के हाथ बुला भेजा ॥ ॥

तुम्हरे जोग न हम परवीन ● भूपति नाहिं रूप गुन हीन ●
काहू जाचक कीरत करी ● सो तुम सुन कै मन में धरी ●
कटक साज न्टप ब्याहन आयौ ● तब तुम हम कौं बोल पठायौ ●
आय उपाध बनी ही भारी ● क्यौं हूं कै पति रही हमारी ●
तिन के देखत तुम कौं लाए ● दल हलधर उन के बिच गाए ●
तुम लिख भेजी ही यह बानी ● सिसुपाल तें छुडावौ आनी ●
सो परतज्ञा रही तिहारी ● कछून इच्छा हुती हमारी ●
अज हूं कछून गयौ तिहारौ ● सुंदरि मानऊं बचन हमारौ ●

किजो कोई भूपति कुलीन- गुनी-बली तुम्हारे जोग होय तुम तिस के पास जा रहौ ● महाराज - इतनी बात के सुनते ही श्री रुक्मिनी जी भयचक हो भहराय पछाड खाय भूमि पर गिरीं औ जल बिन मीन की भांति तडफडाय अचेत हो लगीं ऊर्द्ध सांस लेने- तिस काल ●●

इहि छबि मुख अलका बली- रही लपट इक संग ●
मानऊं ससि भूतल परौ - पीवन अमी भुवंग ●

यह चरित्र देख इतना कह श्री कृष्ण चंद घबराकर उठे - कि यह तो अभी प्रान तजती है औ चतुर्भुज हो उस के निकट जाय दो हाथों से पकड उठाय गोद में बैठाय - एक हाथ से पंखा करने लगे औ एक हाथ से अलक संवारनें ● महाराज - उस काल नंद लाल प्रेम बस हो अनेक अनेक चेष्टा करने लगे ● कभी पीतांबर से प्यारी का चंद मुख पोंछते थे- कभी कोमल कमल सा अपना हाथ उस के हृदे पर रखते थे ● निदान कितनी एक बेर में श्री रुक्मिनी जी के जी में जी आया त

ब हरि बोले ॥

तू ही सुंदरि प्रेम गंभीर ॥ तैं मन कछू न राखी धीर ॥
तैं मन जान्यौं सांचे छाडी ॥ हम ने हंसी प्रेम की माडी ॥
अब तू सुंदरि देह संभार ॥ प्रान ठौर कै नैन उघार ॥
जौलौं तू बोलत नहीं प्यारी ॥ तौलौं हम दुख पावत भारी ॥
येती बचन सुनत पिय नारि ॥ चितई बारिज नयन उघारि ॥
देखे कृष्न गोद में लिये ॥ भई लाज अति सकुची हिये ॥
अरबराय उठ ठाढी भई ॥ हाथ जोरि पायन परि रही ॥
बोले कृष्न पीठ कर देत ॥ भली भली जू प्रेम अचेत ॥

हम ने हांसी ठानी सो तुम ने सच ही जानी ॥ हंसी की बात में क्रोध करना उचित नहीं - उठो अब क्रोध दूर करो औ मन का शोक हरो ॥ महाराज - इतनी बात के सुनते ही श्री रुक्मिनी जी उठ हाथ जोड सिरनाय कहने लगीं - कि महाराज - आप ने जो कहा कि हम तुम्हारे जोग नहीं सो सच कहा - क्यौं कि तुम लक्ष्मी पति शिव विरंच के ईस - तुम्हारी समता का त्रिलोकी में कौन है हे जगदीस ॥ तुम्हें छोड जो जन और को धावै - सो ऐसे है जैसे कोई हरि जस छोड गीध गुनगावै ॥ महाराज - आपने जो कहा कि तुम किसी महाबली राजा को देखो - सो तुम से अति बली औ बडा राजा त्रिभुवन में कौन है सो कहो ॥

ब्रह्मा रुद्र इंद्रादि सब देवता बरदाई तो तुम्हारे आज्ञाकारी हैं - तुम्हारी कृपा से वे जिसे चाहते हैं तिसे महाबली - प्रतापी - जसी - तेज

सी बर दे बनाते हैं श्रौर जो लोग श्राप की सैंकडों बरस श्रति कठिन तपस्या करते हैं - सो राज पद पाते हैं ❁ फिर तुम्हारा भजन - ध्यान- जप - तप - भूल नीति छोड श्रनीति करते हैं - तब वे श्राप से श्राप ही श्रपना सरवस खोय भृष्ट होते हैं ❁ कृपानाथ-तुम्हारी तो सदा यह रीति है कि श्रपने भक्तों के हेतु संसार में श्राय-बार बार श्रौतार लेते हो श्रौ दुष्ट राक्षसों को मार-पृथ्वी का भार उतार निज जनों को सुख दे कृतारथ करते हो ❁

श्रौ नाथ-जिस पर तुम्हारी बडी दया होती है श्रौर वह धन-राज-जोबन-रूप-प्रभुतापाय जब श्रभिमान से श्रंधा हो-धर्म-कर्म-तप-सत-दया-पूजा-भजन भूलता है तब तुम उसे दरिद्री बनाते हो-क्यों कि दरिद्री सदा ही तुम्हारा ध्यान सुमरन किया करता है-इसी से तुम्हें दलिद्री भाता है-जिस पर तुम्हारी बडी कृपा होगी सो सदा निर्धन रहैगा ❁ महाराज- इतना कह फिर रुक्मिनी जी बोलीं-कि हे प्राननाथ-जैसा काशीपुरी के राजा इंद्रदवन की बेटी श्रंबा ने किया-तैसा मैं न करूंगी-कि वह पति को छोड राजा भीषम के पास गई श्रौ जब उस ने इसे न रक्खा तब फिर श्रपने पति के पास श्राई ❁ पुनि पति ने उसे निकाल दिया-तद्द उन्ने गंगा तीर में बैठ महादेव का बडा तप किया-वहां भोलानाथ ने श्राय उसे मुंह मागा बर दिया-उस बर के बल से जाय उस ने राजा भीषम से श्रपना पलटा लिया ❁ सो मुज से न होगा ❁❁

श्ररु तुम नाथ यहो समझाई ❁ काहू जाचक करी बडाई ❁

वाकौ बचन मान तुम लियौ ● हम पै बिप्र पठै कै दियौ ●
जाचक शिव बिरंच सारदा ● नारद गुन गावत सरबदा ●
बिप्र पठायौ जान दयाल ● आय कियौ दुष्टनि कौ काल ●
दीन जान दासी संगलई ● तुम मोहि नाथ बडाई दई ●
यह सुनि कृष्ण कहत सुन प्यारी ● ज्ञान ध्यान गति लही हमारी ●
सेवा भजन प्रेम तें जान्यौं ● तोही सौं मेरौ मन मान्यौं ●

महाराज - प्रभु के मुख से इतनी बात सुनते ही संतुष्ट हो रुक्मिनी जी फिर हरि की सेवा करने लगीं ● इती श्री लाल कृते प्रेम सागरे श्री रुक्मिनी मान लीला बर्ननो नाम एक षष्ठित मोध्यायः ● ॥ ६१ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-सोलह सहस्र एक सौ आठ स्त्रीयों को ले श्री कृष्णचंद आनंद से द्वारिका पुरी में बिहार करने लगे ● औ आठों पटरानियां आठों पहर हरि की सेवा में रहैं-नित उठ भोर ही कोई मुख धुलावै-कोई उबटन लगाय न्हिलावै-कोई षटरस भोजन बनाय जिमावै-कोई अच्छे पान-लौंग-इलायची-जावित्री-जायफल-समेत पिय को बनाय बनाय खिलावै-कोई सुथरे वस्त्र औ रतन जटित आभूषन चुन बास औ बनाय प्रभु को पहनाती थी- कोई फूल माल पहराय गुलाबनीर छिडक केसर चंदन चरचती थी- कोई पंखा डुलाती थी और कोई पांव दाबती थी ●

महाराज - इसी भांति सब रानियां अनेक अनेक प्रकार से प्रभु की

सदा सेवा करैं औ हरि हरभांति उन्हें सुख दें ● इतनी कथा सुना य श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-कई बरस के बीच ●●



एक एक जदुनाथ की-नारिन जाये पुत्र ●
इक इक कन्या लक्ष्मी-दस दस पुत्र सपुत्र ●
एक लाख इकसठ सहस्र-ऐसी बाढ इकसार ●
भये कृष्ण के पुत्रये गुन-बल रूप अपार ●

सब मेघबरन चंद्मुख कंवलनयन लीले पीले झगुलें पहने-गंडे कठ ले ताइत गले में डाले-घर घर बाल चरित्र कर कर मात पिता को सुख दें औ उन की मायें अनेक भांति सें लाड प्यारकर प्रतिपाल करें ● महाराज-श्री कृष्णचंद्र जी के पुत्रों का होना सुन रुक्म नें अपनी स्त्री से कहा-कि अब मैं अपनी कन्या चारुमती जो कृतबर्मा के बेटे को मागी है-तिसे न दूंगा स्वयंबर करूंगा-तुम किसी को भेज मेरी बहन रुक्मिनी को पुत्र समेत बुलवाभेजो ●

इतनी बात के सुनते ही रुक्म की नारी नें अति विनतीकर-ननद को पत्रलिख पुत्र समेत बुलवाय एक ब्राह्मन के हाथ औ स्वयंबर किया ● भाई भौजाई की चिट्ठी पाते ही रुक्मिनी जी श्री कृष्णचंद्र जी से आज्ञा ले-विदा हो पुत्र सहित चलीं चलीं द्वारिका से भोजकट में भाई के घर पहुंचीं ●●

देख रुक्म ने अति सुख पायौ ● आदरकर नीचौ सिर नायौ ●
पायन पर बोली भौजाई ● हरन भयौ तब तें अब आई ●

यह कह फिर उस ने रुक्मिनी जी से कहा कि ननद जो तुम आई

हो तो हम पर दया मया कीजे और इस चारुमती कन्या को अपने पुत्र के लिये लीजे ❁ इस बात के सुनते ही रुक्मिनी जी बोलीं कि भौजाई-तुम पति की गति जानती हो-मत किसी से कलह करवाओ-भैया की बात कुछ कही नहीं जाती क्या जानिये किस समय क्या करे-इस से कोई बात कहते करते भय लगता है ❁ रुक्म बोला कि बहन-अब तुम किसी भांति न डरो कुछ उपाध न होगी-बेद की आज्ञा है कि दक्षन देस में कन्या दान भानजे को दीजे- इस कारन मैं अपनी पुत्री चारुमती तुम्हारे पुत्र प्रद्युम्न को दूंगा श्री कृष्ण जी से बैरभाव छोड नया संबंध करूंगा ❁

महाराज- इतना कह जब रुक्म वहां से उठ सभा में गया-तब प्रद्युम्न जी भी माता से आज्ञा ले-बनठनकर स्वयंबर के बीच गये तो क्या देखते हैं कि देस देस के नरेस भांति भांति के वस्त्र-शस्त्र-आभूषन-पहने बांधे बनाव किये- बिवाह की अभिलाषा हिये में लिये सब खडे हैं ❁और वह कन्या जैमाल कर लिये-चारों ओर दृष्ट किये बीच में फिरती है पर किसी पै दृष्ट उस की नहीं ठहरती-इस में जों प्रद्युम्न जी स्वयंवर के बीच गये तों देखते ही उस कन्या ने मोहित हो आ इन के गले में जैमाल डाली❁सब राजा अछता पछताय मुंह देखते अपना सा मुंह लिये खडे रहगये और अपने मन ही मन कहने लगे - कि भला देखें हमारे आगे से इस कन्या को कैसे ले जायगा हम वाट ही में छीन लेंगे ❁

महाराज- सब राजा तो यों कह रहे थे और रुक्म ने बर कन्या को

मढे के नीचे ले जाय-बेद की विधि से संकल्पकर कन्या दान किया औार उस के यौतुक में बज्जत ही धन द्रव्य दिया-कि जिस का कुछ वारापार नहीं ● आगे श्री रुक्मिनी जी पुत्र को ब्याह भाई भौजाई से बिदा हो-बेटे बहू को ले रथपरचढ औं द्वारिकापुरी को चलीं-तों सब राजाओं ने आय मारग रोका-इसलिये कि प्रद्युम्न जी से लड कन्या को छीन लें ●

उन की यह कुमति देख प्रद्युम्न जी भी अपने अस्त्र शस्त्र ले युद्ध करने को उपस्थित ज्जए-कितनी बेरतक इन से उन से युद्ध रहा ● निदान प्रद्युम्न जी उन सबों को मारभगाय आनंद मंगल से द्वारिका पुरी पज्जंचे ● इन के पज्जंच ने के समाचार पाय सब कुटुंब के लोग-क्या स्त्री क्या पुरुष पुरी के बाहर आय-रीति भांतिकर पाटंबर के पांवडे डालते बाजे गाजे से इन्हें लेगये ● सारे नगर में मंगलज्जआ औा ये राजमंदिर में सुख से रहने लगे ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा महाराज-कई बरष पीछे श्री कृष्णचंद आनंदकंद के पुत्र प्रद्युम्न जी के पुत्रज्जआ-उस काल श्री कृष्ण जी ने ज्योतिषियों को बुलाय-सब कुटुंब के लोगों को बैठाय-मंगलाचार करवाय शास्त्र की रीति से नाम करन किया ● ज्योतिषियों ने पत्रा देख बरष-मास-पक्ष-दिन-तिथि-घडी-लग्न-नक्षत्र ठहराय उस लडके का नाम अनरुद्ध रक्खा ● उस काल ●●

फूले अंग न समाइ-दान दक्षिना द्विजनकौं ●

देतन हाल बयांइ - प्रद्युम्न के बेटा भयो ●

महाराज- नाती के होने का समाचार पाय पहले तो रुक्म ने बहुत ब हुनोई को अति हितकर यह पत्री में लिख भेजा-कि तुम्हारे पोते से हमारी पोती का ब्याह होय तो बड़ा आनंद है और पीछे ऐक ब्राह्मन को बुलाय-रोली - अक्षत - रुपया - नारियल दे उसे समझाय के कहा कि तुम द्वारिकापुरी में जाय - हमारी ओर से अति बिनतीकर - श्री कृष्ण जी का पौत्र अनरुद्ध जो हमारा दोहता है - तिसे टीका दे आओ ● बात के सुनते ही ब्राह्मन टीका औ लग्न साथ ही ले चला २ ला श्री कृष्णचंद के पास द्वारिका पुरी में गया- जिसे देख प्रभु ने अति मान सनमानकर पूछा कि अहो देवता आप का आना कहां से हुआ ● ब्राह्मन बोला महाराज - मैं राजा भीष्मक के पुत्र रुक्म का पठाया उन की पोती औ आप के पौत्र से संबंध करने को टीका औ लग्न ले आया हूं ●

इस बात के सुनते ही श्री कृष्ण जी ने दस भाइयों को बुलाय - टीका औ लग्न ले तिस ब्राह्मन को बहुत कुछ दे बिदा किया और आप बलराम जी के निकट जाय - चलने का बिचार करने लगे ● निदान वे दोनों भाई वहां से उठ राजा उग्रसेन के पास जाय-सब समाचार सुनाय-उन से बिदा हो बाहर आय- बरात की सब सामा मंगवाय मंगवाय इकठी करवाने लगे● कई ऐक दिन में जब सब सामान उपस्थित हो चुका- तब बडी धूमधाम से प्रभु बरात ले द्वारिका से भोजकट नगर को चले ●

उस काल एक झमझमाते रथ पर तो श्री रुक्मिनी जी पुत्र पौत्र को लिये बैठी आती थीं औ एक रथ पर श्री कृष्णचंद औ बलराम बैठे आते थे-निदान कितने एक दिनों में सब समेत प्रभु वहां पहुंचे ● महाराज-बरात के पहुंचते ही रुक्म कलंगादि सब देस देस के राजाओं को साथ ले-नगर के बाहर आय-अगौनीकर सब को बागे पहराय-अति आदर मानकर जनवासे में लिवाय लाया ● आगे सब को खिलाय पिलाय मांढे के नीचे लिवाय लेगया औ उस ने बेद की बिधि से कन्यादान किया ● तिस के यौतुक में जो दान दिया उस को मैं कहां तक कहूं-वह अकथ है ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले महाराज-ब्याह के हो चुकते ही राजा भीष्मक ने जनवासे में जाय हाथजोड अति बिनतीकर-श्री कृष्णचंद जी से चुपचुपाते कहा ● महाराज-बिवाह होचुका औ रस रहा-अब आप शीघ्र चलने का बिचार कीजे क्यों कि ●●

भूप सबै जो रुक्म बुलाये ● ते सब दुष्ट उपाधी आये ●
मत काहू सों उपजै रारि ● याही तें हौं कहत मुरारि ●

इतनी बातकह ज्यों राजा भीष्मक गये त्योंही श्री रुक्मिनी जी के निकट रुक्म आया ●●

कहत रुक्मिनी टेरकर-किन घर पहुंचें जाय ●
बैरी भूपति पाहुने-जुरे तिहारे आय ●
जो तुम भैया चाहो भलै ● हमहिं बेग पहुंचावन चलो ●

नहीं तो रस में अनरस होता दीखे है ● यह बचन सुन रुक्म बोला

कि बहन-तुम किसी बात की चिंता मत करो - मैं पहले जो राजा देस देस के पाहुने आये हैं तिन्हें बिदाकर आऊं-पीछे जो तुम कहोगी सो मैं करूंगा ❁ इतना कह रुक्म वहां से उठ जो राजा पाहुने आये थे उन के पास गया- वे सब मिल के कहने लगे कि रुक्म- तुम ने कृष्ण बलदेव को इतना धन द्रव्य दिया और तिन्हों ने मारे अभिमान के कुछे भला न माना- एक तो हमें इस बात का पछतावा है और दूसरे उस बात की कसक हमारे मन से नहीं जाती - कि जो बलराम ने तुम्हें अपमान किया था ❁

महाराज - इस बात के सुनते ही रुक्म को क्रोध हुआ - तब राजा कलिंग बोला कि एक बात मेरे जी में आई है कहो तो कहूं ❁ रुक्म ने कहा कहो - फिर उस ने कहा कि हमें श्री कृष्ण से कुछ काम नहीं पर बलराम को बुलादो तो हम उस से चौपड खेल सब धन जीत लें और जैसा उसे अभिमान है तैसा यहां से रीतेहाथ बिदाकरैं ❁ जों कलिंग ने यह बात कही तोंही रुक्म वहां से उठ कुछ सोच विचार करता बलराम जी के निकट जा बोला-कि महाराज-आप को सब राजाओं ने प्रनामकर बुलाया है चौपड खेलने को ❁❁

सुन बलभद्र तबहि तहां आये ❁ भूपनि उठ कै सीस निवाये ❁

आगे सब राजा बलराम जी का सिष्टाचारकर बोले- कि आप को चौपड खेलने का बडा अभ्यास है-इसलिये हम आप के साथ खेला चाहते हैं❁ इतना कह उन्हों ने चौपड मंगवाय बिछाई और रुक्म से औ बलराम जी से होने लगी ❁ पहले रुक्म दस बेर जीता तो बलदेव जी

से कहने लगा कि धन तो सब बीता अब काहे से खेलोगे-इस में राजा कलिंग बडी बात कह हंसा-यह चरित्र देख बलदेव जी नीचा सिरकर सोच विचार करनेलगे - तब रुक्म ने दस करोड रुपये एक बार लगाये-सो बलराम जी ने जों जीत के उठाये तों सब धांधलकर बोले कि यह रुक्म का पासा पडा तुम क्यौं रुपये समेटते हो ●●

सुनि बलराम फेर सब दीने ● अर्ब लगायौ पासे लीने ●

फिर हलधर जीते औ रुक्म हारा-उस समय भी रौंगटीकर सब राजाओं ने रुक्म को जिताया और यों कह सुनाया ●●

जुआ खेल पासे की सार ● यह तुम जानों कहा गंवार ●

जुआ युद्ध गति भूपति जाने ● ग्वाल गोप गैयन पहचाने ●

इस बात के सुनते ही बलदेव जी का क्रोध यों बढा कि जैसे पून्यौ को समुद्र की तरंग बढै ● निदान जों तोंकर बलराम जी ने क्रोध को रोक-मन को समझाय फिर सात अर्ब रुपये लगाये और चौपड खेलने लगे ● फिर भी बलदेव जी जीते औ सबों ने कपटकर रुक्म ही को जीता कहा- इस अनीति के होते ही आकाश से यह बानी ऊई-कि हलधर जीते और रुक्म हारा-अरे राजाओ तुम ने क्यौं झूट बचन उचारा ● महाराज- जब रुक्म समेत सब राजाओं ने आकाश बानी सुनी अनसुनी की-तब तो बलदेव जी महा क्रोध में आय बोले ●●

करी सगाई बैर न छांड्यौ ● हम सों फेर कलह तुम मांड्यौ ●
मारौं तोहि अरे अन्याई ● भलौ बुरौ मानहु भौजाई ●
अब काहू की कान नकरि हौं ● आज प्रान कपटी के हरि हौं ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज ● निदान बलराम जी ने सब के देखते रुक्म को मारडाला औ कलिंग को पकड़ मारे घूसों के उस के दांत उखाड़ डाले औ कहा-कि तू भी मुंह पसार के हंसाथा ● आगे सब राजाओं को मार भगाय-बलराम जी ने जनवासे में श्री कृष्णचंद जी के पास आय- वहां का सब व्यौरा कह सुनाया ●

बात के सुनते ही हरि ने सब समेत वहां से प्रस्थान किया और च ले चले आनंद मंगल से द्वारिका में आन पहुंचे ● इन के आते ही सा रे नगर में सुख छायगया-घर घर मंगलाचार होने लगा ● श्री कृष्ण जी औ बलदेव जी ने उग्रसेन राजा के सनमुख जाय हाथजोड़ कहा महाराज-आप के पुन्य प्रताप से अनरुद्ध को ब्याह लाए औ महा दु ष्ट रुक्म को मारिआए ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे अनरुद्ध विवा ह रुक्म बधो नाम द्विषष्टतमोध्यायः ● ॥ ६२ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-अब जो श्री द्वारिकानाथ का बलपा ऊं-तो ऊषा हरन की कथा सब गाऊं ● जैसे उस ने रात समैं सपने में अनरुद्ध जी को देखा औ आशक्त हो खेद किया ● पुनि चित्ररेखा ने ज्यों अनरुद्ध को लाय ऊषा से मिलाया-तैसे मैं सब प्रसंग कहता हूं तुम मनदे सुनौ ● ब्रह्मा के बंस में पहले कश्यप हुआ-तिसका पुत्र हि रनकश्यप अतिबली महाप्रतापी औ अमर भया - उस का सुत हरि जन- प्रभु भक्त पहलाद नाम हुआ-तिस का बेटा राजा विरोचन-वि

रोचन का राजा बल - जिस का जस धर्म धरनी में अबतक छाय रहा है - कि प्रभु ने बावन अवतार ले राजा बल को छल पाताल पठाया ● उस बल का जेष्ट पुत्र महा पराक्रमी - बडा तेजस्वी बानासुर हुआ - वह श्रोनितपुर में बसे - नित प्रति कैलाश में जाय शिव की पूजा करे - ब्रह्मचर्य पाले - सत्य बोले - जितेंद्री रहै ● महाराज - ऐक दिन बानासुर कैलाश में जाय हर की पूजाकर - प्रेम में आय लगा मगन हो मृदंग बजाय बजाय नाचने गाने ● उस का गाना बजाना सुन श्री महादेव भोलानाथ मगन हो - लगे पार्वती जी को साथले नाचने औ डमरू बजाने ● निदान नाचते नाचते शंकर ने अति सुखपाय प्रसन्न हो - बानासुर को निकट बुलाय के कहा पुत्र - मैं तुज पर संतुष्ट हुआ बर मांग - जो तू बर मांगेगा सो मैं दूंगा ●●

तें कर बाजे भलें बजाऐ ● सुनत श्रवन मेरे मन भाऐ ●

इतनी बात के सुनते ही महाराज - बानासुर हाथजोड सिरनाय अति दीनताकर बोला - कि कृपानाथ - जो आप ने मेरे पर कृपा की तो पहले अमरकर मुझे सब पृथ्वी का राज दीजे - पीछे मुझे ऐसा बली कीजे कि कोई मुज से न जीते ● महादेव जी बोले कि मैं ने तुझे यही बर दिया औ सब भय से निर्भय किया ● त्रिभुवन में तेरे बल को कोई न पायगा औ बिधाता का भी कुछ तुझ पर बस नचलेगा ●●

बाजौ भलें बजाय कै - दियौ परम सुख मोहि ●
मैं अति हिय आनंदकर - दिये सहस भुज तोहि ●

अब तू घर जाय निचिंताई से बैठ अविचल राजकर ● महाराज - इ

तना बचन भोलानाथ के मुख से सुन-सहस्र भुजपाय-बानासुर अति प्रसन्न हो परिक्रमा दे सिरनाय-बिदाहोय आज्ञाले श्रोनतपुर में आया ❁ आगे त्रिलोकी को जीत सब देवताओं को बसकर - नगर के चारों ओर जल की चुआन चौडी खाई औ अग्नि पवन का कोट बनाय निर्भय हो सुख से राजकरने लगा ❁ कितने एक दिन पीछे ❁❁

लरवे बिन भई भुज सबल-फरकहिं अति सहिरांय ❁
कहत बान कासों लरैं - कापर अब चढि जांय ❁
भई खाज लरवे बिन भारी ❁ को पुजवै हिय हौंस हमारी ❁

इतना कह बानासुर घर से बाहर जाय -लगा पहाड उठाय उठाय तोड तोड चूरकरने औ देस देस फिरने ❁ जब सब पर्वत फोड चुका औ उस के हाथों की सुरसुराहट खुजलाहट न गई - तब ❁❁

कहत बान अब का सों लरों ❁ इतनी भुजा कहा लै करों ❁
सबल भार मैं कैसे सहौं ❁ बहुरि जाय कै हर सों कहौं ❁

महाराज - ऐसे मन ही मन सोच विचारकर बानासुर महादेव जी के सनमुख जा - हाथ जोड सिरनाय बोला कि हे त्रिशूल पानि-त्रिलोकीनाथ-तुम ने जो कृपाकर सहस्र भुजादीं- सो मेरे शरीर पर भारी भईं ❁ उन का बल अब मुझ से संभाला नहीं जाता इस का कुछ उपाय कीजे-कोई महा बली युद्ध करने को मुझे बताय दीजे ❁ मैं त्रिभुवन में ऐसा पराक्रमी किसू को नहीं देखता जो मेरे सनमुख हो युद्धकरे -हां दयाकर जैसे आप ने मुझे महाबली किया-तैसे ही अब कृपाकर मुझ से लड़ मेरे मन का अभिलाष पूरा कीजे तो कीजे- नहीं तो और

किसी अतिबली को बता दीजे ● जिस से मैं जाकर युद्ध करूं और अ पने मनका शोक हरूं ●



इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-बानासुर से इसभांति की बातें सुन श्री महादेव जी ने बलखाय मनहीं मन इतना कहा - कि मैं ने तो इसे साधजान के बर दिया - अब यह मुझी से लडने को उपस्थित हुआ ● इस मूरख को बलका गर्ब भया यह जीता न बचेगा-जिस ने अहंकार किया सो जगत में आय बहुत नजिया ● ऐसे मनहीं मन महादेव जी कह बोले कि बानासुर- तू मत घबराय-तुझ से युद्ध करनेवाला थोडे दिन के बीच-यदुकुल में श्री कृष्णावतार होगा -उस बिन त्रिभुवन में तेरा साम्हना करनेवाला कोई नहीं ● यह बचन सुन बानासुर अति प्रसन्न हो बोला- नाथ-वह पुरुष कब अवतार लेगा और मैं कैसे जानूंगा कि अब वह उपजा ● राजा-शिव जी ने एक ध्वजा बानासुर को देके कहा कि इस बैरख को लेजाय अपने मंदिर के ऊपर खडीकर दे-जब यह ध्वजा आप से आप टूटकर गिरे- तब तू जानियो कि मेरा रिपु जन्मा ●

महाराज - जद शंकर ने उसे ऐसे कहा समझाय-तद बानासुर ध्वजा ले निजघर को चला सिरनाय ● आगे घर जाय ध्वजा मंदिर पर चढाय-दिन दिन यही मनाताथा कि कब वह पुरुष प्रगटे औ मैं उस से युद्धकरूं ● इस में कितने एक बरष बीते उस की बडी रानी-जिस का नाम बानावती तिसे गर्भरहा औ पूरेदिनों एक लडकी हुई ● उस काल बानासुर ने ज्योतिषियों को बुलाय बैठाय के कहा-कि इ

स लडकी का नाम औ गुन गनकर कहो ● इतनी बात के कहतेही जो तिषियों ने झट बरष-मास-पक्ष-तिथ-बार-घडी-महूरत-नक्षत्र-ठहराय-लग्न बिचार उस लडकी का नाम ऊषा धरके कहा ● कि महाराज-यह कन्या रूप गुन शीलकी खान महाज्ञान होगी-इस के ग्रह औ लक्षन ऐसे ही आनपडे हैं ●

इतना सुन बानासुर ने अतिप्रसन्न हो पहले बहुत कुछ जोतिषियों को दे बिदाकिया-पीछे मंगलामुखियों को बुलाय मंगलाचार करवाया ● पुनि ज्यों ज्यों वह कन्या बढनेलगी-त्यों त्यों बानासुर उसे अतिप्यार करनेलगा ● जब ऊषा सात बरष की भई तब उस के पिता ने श्रोनितपुर के निकट ही कैलाश था तहां कैएक सखी सहेलियों के साथ उसे शिव पार्वती के पास पढने को भेजदिया ● ऊषा गनेश सरस्ती को मनाय-शिव पार्वती के सनमुख जाय-हाथजोड सिरनाय बिनतीकर बोली ●

कि हे कृपासिंधु शिव गवरी-दयाकर मुज दासी को बिद्या दानदीजे औ जगत में जसलीजे ● महाराज-ऊषा के अति दीनबचन सुन शिव पार्वती जी ने उसे प्रसन्न हो बिद्या का आरंभ करवाया-वह नित प्रति जाय जाय पढ पढ आवे ● इस में कितने एक दिन के बीच सब शास्त्र पढगुन बिद्यावान हुई औ सब यंत्र बजानेलगी ● एकदिन ऊषा पार्वती जी के साथ मिलकर बीन बजाय संगीत की रीति से गायरही थी-कि उसकाल शिव जी ने आय पार्वती से कहा-हे प्रिये-मैं ने जो कामदेव को जलाया था-तिसे अब श्री कृष्णचंद जी ने उप

आथि इतना कह श्री महादेव जी गिरजा को साथले गंगातीर पर जा य-नीर में न्हाय न्हिलाय सुख की इच्छाकर अतिलाड प्यार से लगे पार्वती जी को वस्त्र आभूषन पहराने औ हितकरने ● निदान अतिआनंद में मगन हो डमरू बजाय बजाय-तांडवनाच नाच नाच - संगीत शास्त्र की रीति से गाय गाय शिवा को लगे रिझाने और बडे प्यार से कंठलगाने ● उस समय ऊषा शिव गवरी का सुख प्यार देख देख - पति के मिलने की अभिलाषाकर मनहीं मन कहनेलगी - कि मेरा भी कंत होय तो मैं भी शिव पार्वती की भांति उस के साथ विहार करूं ● पति विन कामिनी ऐसे शोभा हीन है - जैसे चंद्र विन जामिनी ●

महाराज-जों ऊषा ने मनहीं मन इतनी बात कही तों अंतरजामी श्री पार्वती जी ने ऊषा की अंतरगति जानि - उसे अतिहित से निकट बुलाय प्यारकर समझाय के कहा ● कि बेटी - तू किसी बात की चिंता मन में मतकर तेरा पति तुझे सपने में आय मिलेगा - तू जिसे ढुंढवाय लीजो औ उसी के साथ सुखभोग कीजो ● ऐसे बरदे शिवरानी ने ऊषा को बिदाकिया- वह सब विद्यापढ बरपाय दंडवतकर अपने पिता के पास आई ● पिता ने एक मंदिर अतिसुंदर निराला उसे रहने को दिया औ यह कितनी एक सखी सहेलियों को ले वहां रहनेलगी औ दिन दिन बढने ●

महाराज - जिसकाल वह बाल बारह बरष की हुई तो उस के मुखचंद्र की जोति को देखि-पूनवासी का चंद्रमा छबि हीन हुआ ● बालों

की श्यामता के आगे मावस की अंधेरी फीकी लगनेलगी ● उस के चोटी की सटकाई लख नागनि अपनी कैंचली छोड सटकगई ● भौंह की बंकाई निरख धनुष धकधकाने लगा ● आंखों की बडाई चंचलाई पेख मृगमीन खंजन खिसाय रहे ● नाक की सुंदरताई को देख तिल फूल मुरझायगया ● उस के अधर की लाली लख विंबाफल बिलबिलाने लगा ● दांत की पांति निरख दाडिम का हिया दडकगया ● कपोलों की कोमलताई पेख गुलाब फलने से रहा ● गले की गुलाई देख कपोत कलमलाने लगे ● कुचों की कोर निरख कंवलकली सरोवर में जाय गिरी ● जिस की कट की छ्समता देख केहरी ने बनबासलिया ● जांघों की चिकनाई पेख केले ने कपूरखाया ● देह की गुराई निरख सोने को सकुच भई औ चंपा चपगया ● कर पद के आगे पद्मकी पदवी कुछ नरही ● ऐसी वह गजगवनी पिक बयनी नववाला जोबन की सरसाई से शोभायमान भई - कि जिस ने इन सब की शोभा छीन ली ●

आगे एकदिन वह नवजौवनी सुगंध उबट लगाय - निर्मल नीर से मल मल न्हाय - कंघी चोटीकर - पाटी संवार - मांग मोतियों से भर - अंजन मंजनकर - मिहदी महावर रचाय - पानखाय - अच्छे जडाऊ सोने के गहने मंगाय - सीसफूल - वैना - बेंदी - बंदी - ढेडी - करनफूल - चौदानियां - छडे - गजमोतियों की नथ झलके लटकन समेत - जुगनी मोतियों के दुलडे में गुही - चंद्रहार - मोहनमाल - पंचलडी - सतलडी - धुकधुकी - भुजबंद - नौरतन - चूडी - नौगरी - कंकन - कडे मुंदरी - छाप - छल्ले -

किंकनी-जेहर-तेहर-गूजरी-अनवट-बिछुऐ पहन ❁ सुथरा झमझ
माती सच्चेमोतियों की कोरका बडेघेर का घाघरा औ चमचमाती आंचल
पल्लू की सारी पहर-जगमगाती कंचु की कस-ऊपर से झलझलाती
ओढनी ओढ-तिस पर सुगंध लगाय इस सजधज से हंसती हंसती
सखियों के साथ मात पिता को प्रनामकरने गई-कि जैसे लक्ष्मी ❁
जों सनमुख जाय दंडवतकर झुका खडीभई तों बानासुर ने इस के जो
बन की छटा देख-निजमन में इतना कह-इसे बिदाकिया कि अब य
ह व्याहनजोग हुई और पीछे से कैऐक राक्षस उस के मंदिर की रख
वाली को भेजे औ कितनी ऐक राक्षसी तिस की चौकसी को पठाई ❁
वे वहां जाय आठपहर सावधानी से रहनेलगे और राक्षसनियां सेवा
करनेलगीं ❁

महाराज-यह राजकन्या पति के लिये नितप्रति तप-दान-ब्रतकर
श्री पार्वती जी की पूजा कियाकरे ❁ ऐकदिन नित्यकर्म से निचिंत हो
रात्रसमैं सेजपर अकेली बैठी मनमन यों सोचरही थी-कि देखिये पि
ता मेरा विवाह कबकरे औ किस भांति मेरा बर मुझे मिले ❁ इतना कह
पतिही के ध्यान में सोगई तो सपने में देखती क्या है-कि ऐक पुरुष
किशोरबैस-स्यामबरन-चंद्रमुख-कंवलनयन-अतिसुंदर कामसरूप
-मोहनरूप-पीतांबर पहरे-मोरमुकुट सिरधरे-त्रिभंगी छबिकरे ❁
रतनजटित आभूषन-मकराकृतकुंडल-बनमाल-गुंजहार-पहने औ
पीतबसन ओढे-महाचंचल सनमुखआय खडाहुआ ❁

यह उसे देखतेही मोहत हो लजाय सिरझुकायरही-तब उस ने

कुछ प्रेमसनी बातें कह स्नेह बढ़ाय निकट आय- हाथ पकड़ कंठ लगाय इस के मनका भ्रम औ सोच संकोच सब बिसराय दिया ● फिरतो परसपर सोच संकोच तज- सेजपर बैठ हाव भाव कटाक्ष औ आलिंगन चुंबनकर सुख लेने देने लगे औ आनंद में मगन हो प्रीति की बातें करने ● कि इस में कितनी एक बेर पीछे ऊषाने जों प्यारकर चाहा कि पतिको अंकवार भर कंठ लगाऊं- तों नयनों से नींद गई औ जिस भांति हाथ बढ़ाय मिलने को भई थी- तिसी भांति मुरझाय पछताय रहगई ●●

जाग परी सोचति खरी - भयौ परम दुख नाहि ●
कहां गयौ वह प्रान पति- देखति चहुं दिस चाहि ●
सोचत ऊषा मिलिहौं काहि ● फिर कैसें मैं देखों ताहि ●
सोवत जो रहती हौं आज ● प्रीतम कबहुं न जातौभाज ●
क्यौं सुख में गहिवे कौंभई ● जो यह नींद नयन तें गई ●
जागतही जामिनि जम भई ● जैहै क्यौंकर अब यहदई ●
बिन प्रीतम जिय निपट अचैन ● देखेबिन तरसत हैं नैन ●
श्रवन सुन्यौचाहत हैं बैन ● कहां गये प्रीतम सुखदैन ●
जौ सपने पिय पुनि लखलेउं ● प्रान सायकर उनके देउं ●

महाराज-इतना कह ऊषा अतिउदास हो पियका ध्यानकर-सेजपर जाय मुखलपेट पड रही ● जब रात जाय भोर हुआ औ डेढपहर दिनचढा-तब सखी सहेली मिल आपस में कहनेलगीं कि आज क्या है जो ऊषा इतना दिनचढा औ अबतक सोती नहीं उठी ● यह बात सुन

चित्ररेखा बानासुर के प्रधान कूषभांड की बेटी चित्रशाला में जाय क्या ॥ प्रेम० ॥
देखती है - कि ऊषा छपरखट के बीच मनमारे जीहारे निढाल पडी ॥ २८९ ॥
रोरो लंबीसांसे लेरही है ● उस की यह दशा देख ●●

चित्ररेखा बोली अकुलाय ● कह सखी तू मोसों समझाय ●
आज कहा सोचति है खरी ● परम वियोग समुद में परी ●
रोरो अधिक उसासें लेत ● तन मन व्याकुल है किहिं हेत ●
तेरे मन कौ दुख परिहरौं ● मन चीत्यौ कारज सब करौं ●
मोसी सखी और ना धनी ● है परतीति मोहि आपनी ●
सकल लोक में हौं फिरआऊं ● जहां जांउ कारजकर ल्याऊं ●
मोकौं बर ब्रह्मा ने दीनौ ● बस मेरे सब ही कौं कीनौ ●
मेरे संग सारदा रहै ● वाके बल करिहौं जो कहै ●
ऐसी महा मोहनी जानौ ● ब्रह्मा रुद्र इंद्र छलि आनौ ●
मेरौ कोऊ भेदन जानै ● अपनौ गुन को आप बखानै ●
ऐसें और न कहि है कोऊ ● भलौ बुरौ कोऊ किन होऊ ●
अब तू कह सब अपनी बात ● कैसें कटी आजकी रात ●
मोसों कपट करै जिन प्यारी ● पुजवोंगी सब आस तिहारी ●

महाराज-इतनी बात के सुनते ही ऊषा अति सकुचाय सिरनाय चित्र रेखा के निकट आय मधुर वचन से बोली-कि सखी-मैं तुझे अपनी हितू जान रात की बात सब कह सुनाती हूं-तू निज मन में रख और कुछ उपाय करसके तो कर ● आज रात को सपने में एक पुरुष मेघ बरन-चंद्रवदन-कंवलनैन-पीतांबर पहने-पीतपट ओढे मेरे पास आय

बैठा औ उसने अति हित कर मेरा मन हाथ में ले लिया- मैंभी सोच सं कोच तज उस से बातें करने लगी ॥ निदान बतराते बतराते जों मुझे प्या र आया तों मैंने उसे पकडने को हाथबढाया-इस बीच मेरी नींदगई औ उस की मोहनी मूरति मेरे ध्यान में रही ॥॥

देखौ सुन्यौ और नहिं ऐसौ ॥ मैं कह कहा बताऊं जैसौ ॥
बाकी छवि बरनी नहीं जाय ॥ मेरौ चित लैगयौ चुराय ॥

जब मैं कैलाश में श्री महादेव जी के पास विद्या पढती थी तब श्री पार्व ती जी ने मुझे कहाथा-कि तेरा पति तुझे स्वप्न में आय मिलेगा तू उसे ढुंढवा लीजो ॥ सोवह आज रात मुझे सपने में मिला मैं उसे कहां पाऊं औ अपने बिरह की पीर किसे सुनाऊं-कहां जाऊं उसे किस भांति ढुंढ वाऊं-न विस का नाम जानू नगांम ॥ महाराज-इतना कह जद ऊषा लंबी सांसले मुरझाय रहगई-तद चित्ररेखा बोली कि सखी-अब तू कि सी बातकी चितमें चिंता मतकरै-मैं तेरे कंत को तुझे जहां होगा तहां से, ढूंढ ला मिलाऊंगी॥ मुझे तीनों लोक में जाने की सामर्थ है-जहां होगा तहां जाय जैसे बनेगा तैसेही लेआऊंगी-तू मुझे उस का नाम बता औ जाने की आज्ञादे ॥

ऊषा बोली बीर- तेरी वही कहावत है कि मरी क्यों कि सांस नआई -जो मैं उसका नांव गांवही जानती तो दुख काहेका था- कुछ नकुछ उपाय करती ॥ यह बातसुन चित्ररेखा बोली सखी-तू इस बातका भी सोच नकर-मैं तुझे त्रिलोकी के पुरुष लिखदिखाती हूं-तिन में से अपने चितचोर को देख बतादीजो- फिर ला मिलाना मेरा काम है ॥ तब तो

हंसकर ऊषा बोली बहुतअच्छा ❁ महाराज-यह बचन ऊषा के मुख से निकलतेही चित्ररेखा लिखने का सब समान मगाय आसनमार बैठी औ गनेश सारदा को मनाय गुरुका ध्यानकर लिखने लगी ❁ पहले तो उस ने तीनलोक-चौदहभुवन-सातद्वीप-नौखंड पृथ्वी-आकाश-सातों समुद्र-आठोंलोक बैकुंठ सहित लिख दिखाये ❁ पीछे सब देव-दानव-गंधर्व-किन्नर-यक्ष-ऋषि-मुनि-लोकपाल-दिगपाल औ सब देसोंके भूपाल लिख लिख एक एककर चित्ररेखा ने दिखाया- पर ऊषा ने अपना चाहीता उन में न पाया ❁ फिर चित्ररेखा यदुबंसियों की मूरत एक एक लिख लिख दिखाने लगी - इस में अनिरुद्ध का चित्र देखतेही ऊषा बोली ❁❁

अब मन चोर सखी मैं पायौ ❁ रात यही मेरे ढिग आयौ ❁
कर अब सखी तू कछू उपाय ❁ याकौ ढूंढ कहूं तें ल्याय ❁
सुन कै चित्ररेख यों कहै ❁ अब यह मोतें किम बच रहै ❁

यों सुनाय चित्ररेखा पुन बोली कि सखी-तू इसे नहीं जानती मैं पहचानती हूं-यह यदुबंसी श्री कृष्णचंद जी का पोता-प्रद्युम्न जी का बेटा औ अनिरुद्ध इसका नाम है ❁ समुद्रके तीर नीर में द्वारिका नाम एक पुरी है तहां यह रहता है-हरि आज्ञा से उस पुरी की चौकी आठपहर सुदरसन चक्र देता है-इस लिये कि कोई दैत्य-दानव-दुष्ट आय यदुबंसियों को न सतावै और जो कोई पुरी में आवे सो बिन राजा उग्रसेन सूरसेन की आज्ञा न आने पावे ❁ महाराज- इस बात के सुनतेही ऊषा अति उदास हो बोली कि सखी-जो वहां ऐसी बिकट ठांव है तो तू

किस भांति तहां जाय मेरे कंत को लावेगी ● चित्ररेखा ने कहा आली-तू इस बात से निचिंतरह मैं हरि प्रताप से तेरे प्रानपति को लामिलाती हूं ●

इतना कह चित्ररेखा रमनामी कपडे पहन-गोपी चंदनका ऊर्द्ध पुंड तिलक काढ-छापे उर भुजमूल औ कंठ में लगाय-बहुत सी तुलसी की माला गले में डाल-हाथ में बडे बडे तुलसी के हीरों की सुमरन ले-ऊपर से हीरावल ओढ-कांख में आसन लपेटी भगवतगीता की पोथी दवाय-परम भक्त वैष्नव का भेषबनाय-ऊषा को यों सुनाय-सिरनाय बिदा हो द्वारिका को चली ●●

पैंडे अब आकाश के - अंतरीक्ष व्है जांउ ●
ल्याऊं तेरे कंत कौं - चित्ररेख तौ नांउ ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-चित्ररेखा अपनी मायाकर - पवन के तुरंग पर चढ-अंधेरी रात में स्यामघटा के साथ - बात की बात में द्वारिकापुरी में जा बिजली सी चमकी औ श्री कृष्नचंद के मंदिर में बडगई-ऐसे कि इस का जाना किसीने नजाना ● आगे यह ढूंढती ढूंढती वहांगई - जहां पलंग पर सोए अनिरुद्ध जी अकेले स्वप्न में ऊषा के साथ बिहार कररहेथे - इसने देखते ही झट उस सोने का पलंग उठाय चट अपनी बाटली ●●

सोवत ही परजंक समेत ● लिये जात ऊषा के हेत ●
अनिरुद्ध कौं लै आई तहां ● ऊषा चिंतति वैठी जहां ●

महाराज - पलंग समेत अनिरुद्ध को देखते ही ऊषा पहले तो हक

बकाय चित्ररेखा के पाओं पर जायगिरी-पीछे यों कहने लगी - धन्य है धन्य है सखी- तेरे साहस औ पराक्रम को जो ऐसी कठिन ठौर जाय बातकी बात में पलंग समेत उठालाई औ अपनी प्रतिज्ञा पूरीकी ● मेरे लिये तैंने इतना कष्टकिया- इस का पलटा मैं तुझे नहीं देसकती- तेरे गुन की कहनिया रही ●

चित्ररेषा बोली सखी - संसार में बडा सुख यही है जो पर को सुख दीजे औ कारज भी भलायही है कि उपकारकीजे ● यह शरीर किसी कामका नहीं इस से किसी का काम होसके तो यही बडाकाम है- इसमें स्वारथ परमारथ दोनों होते हैं ● महाराज-इतना बचन सुनाय चित्ररेषा पुनि यों कह बिदाहो अपने घरगई-कि सखी-भगवान के प्रताप से तेरा कंत मैं ने तुझे ला मिलाया-अब तू इसे जगाय अपना मनोरथ पूराकर ● चित्ररेखा के जाते ही ऊषा अतिप्रसन्न लाजकिये प्रथम मिलन का भयलिये-मनहीमन कहनेलगी ●●

कहा बात कहि पियहि जगाऊं ● कैसें भुजभर कंठलगाऊं ●

निदान बीन मिलाय मधुर मधुर सुरों से बजाने लगी - बीन की धुनि सुनतेही अनिरुद्ध जी जागपडे और चारों ओर देख देख मनमन यों कहने लगे ● यह कौन ठौर किसका मंदिर - मैं यहां कैसे आया और कौन मुझे सोते को पलंग समेत उठालाया ● महाराज-उसकाल अनिरुद्ध जी तो अनेक अनेक प्रकार की बातें कह कह अचरज करते थे औ ऊषा सोचसंकोच लिये प्रथम मिलन का भयकिये - एकओर कोने में खडी पिय का चंदमुख निरख निरख-अपने लोचन चकोरों को सुख

देती थी-इसबीच ॥

अनिरुद्ध देखि कहै अकुलाय ॥ कह सुंदरि तू अपने भाय ॥
है तू को मोपै क्यों आई ॥ कै तू मोहि आप लै आई ॥
सांच झूठ एकौ नहीं जानौ ॥ सपनौ सो देखतुहौं मानौ ॥

महाराज-अनिरुद्ध जी ने इतनी बातें कहीं औ ऊषा ने कुछउत्तर न दिया-वरन और भी लाजकर कोने में सटरही ॥ तब तो उन्हों ने झट उसे हाथपकड पलंग पर ला बिठाया औ प्रीतिसनी प्यारकी बातें कह उस के मन का सोचसंकोच और भय सब मिटाया ॥ आगे वे दोनों परस्पर सेजपर बैठे हावभाव कटाक्षकर सुखलेने देनेलगे औ प्रेम कथा कहने॥इस बीच बातोंही बातों अनिरुद्ध जी ने ऊषा से पूछा-कि हे सुंदरि तूने प्रथम मुझे कैसे देखा और पीछे किस भांति यहां मंगाया-इस का भेद समझाकर कह जो मेरे मन का भ्रमजाय ॥ इतनी बातके सुनतेही ऊषा पति का मुख निरख हरष के बोली ॥

मोहि मिले तुम सपने आय ॥ मेरो चित लैगये चुराय ॥
जागी मन भारी दुख लह्यौ ॥ तब मैं चित्ररेख सों कह्यौ ॥
सोई प्रभु तुम कौं यहां लाई॥ताकी गति जानी नहीं जाई ॥

इतना कह पुनि ऊषा ने कहा महाराज-मैं तो जिस भांति तुम्हें देखा औ पाया तैसे सब कह सुनाया ॥ अब आप कहिये अपनी बात समझाय-जैसे तुम ने मुझे देखा यादवराय ॥ यह बचन सुन अनिरुद्ध अति आनंदकर मुसकुराय के बोले कि सुंदरि-मैं भी आज रात को सपने में तुझे देखरहा था-कि नींदही में कोई मुझे उठाय यहां ले आया-इ

स का भेद अबतक मैं ने नहीं पाया - कि मुझे कौन लाया - जागी तो मैं ने तुझे ही देखा ● 

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - ऐसे वे दोनों पिय प्यारी आपस में बतराय - पुनि प्रीतिबढ़ाय अनेक अनेक प्रकार से कामकलोल करनेलगे औ विरह की पीर हरने ● आगे पान की सिठाई मोतीमाल की सीतलताई औ दीपजोति की मंदताई निरख - जो ऊषा बाहर जाय देखे तो ऊषाकाल हुआ - चंद की जोतिघटी - तारेदुतिहीन भये - आकाश में अरुनाई छाई - चारौंओर चिड़ियां चुहचुहाई - सरोवर में कमोदनी कुमलाई औ कंवलफूले - चकवा चकई को संयोग हुआ ●

महाराज - ऐसा समय देख एकबार तो सब बार मूंद ऊषा बहुतघबराय - घर में आय अछिप्यारकर पिय को कंठलगाय लेटी - पीछे पिय को दुराय सखी सहेलियों से छिपाय - छिप छिप कंत की सेवा करने लगी ● निदान अनिरुद्ध का आना सखी सहेलियों ने जाना ● फिर तो वह दिन रात पति के संग सुखभोग कियाकरे ● एक दिन ऊषा की मा बेटी की सुधलेन आई तो उस ने छिपकर देखा - कि वह एक महा सुंदर तरुनपुरुष के साथ कोठे में बैठी आनंद से चौपड़ खेलरही है - यह देखतेही बिन बोलेचाले दबे पाओं फिर - मनहींमन प्रसन्न हो असीस देती हूंटमारे वह अपने घर चलीगई ●

आगे कितनेएक दिन पीछे एकदिन ऊषा पति को सोतादेख - जी में यह विचारकर सकुचती सकुचती घर से बाहर निकली - कि कहीं ऐ

सा नहीं जो कोई मुझे नदेखे अपने मनमें जानें कि ऊषा पति के लिये घर से नहीं निकलती ● महाराज- ऊषा कंत को अकेला छोड जाते तो गई पर उससे रहा नगया- फिर घर में जाय किवाड लगाय बिहार करने लगी ● यह चरित्र देख पौरियों ने आपस में कहा कि भाई-आज क्या है जो राजकन्या अनेक दिन पीछे घर से निकली औ फिर उलटेपाओं चलीगई ● इतनी बात के सुनतेही उन में से एक बोला कि भाई-मैं कईदिन से देखता हूं ऊषा के मंदिर का द्वार दिनरात लगा रहता है और घरभीतर कोई पुरुष कभी हंसहंस बातेंकरता है औ कभी चौपड खेलता है ● दूसरे ने कहा जो यह बात सच है तो चलो बानासुर से जायकहैं-समझबूझ य्हां क्यों बैठरहैं ●●

एक कहै यह कही नजाय ● तुम सब बैठ रहौ अरगाय ●
भली बुरी होवे सो होय ● होनहार मेटै नहिं कोय ●
कछू नबात कुंवरि की कहियै ● चुप ह्वै देख बैठही रहियै ●

महाराज - द्वारपाल आपस में ये बातें करतेही थे कि कईएक जोधा साथलिये फिरता फिरता बानासुर वहां आनिकला और मंदिर के ऊपर दृष्टकर शिव जी की दीऊई ध्वजा नदेख बोला - य्हां से ध्वजा क्याऊई-द्वारपालों ने उत्तर दिया कि महाराज- वह तो बऊत दिन ऊए कि टूटकर गिरपडी ● इस बातके सुनतेही शिव जी का बचन स्मरनकर भावित हो बानासुर बोला ●●

कब की ध्वजा पताका गिरी ● बैरी कहूं औतरयौ हरी ●

इतना बचन बानासुर के मुख से निकलतेही - एक द्वारपाल सनमुख

आलखी हो हाथजोड सिरनाय बोला कि महाराज- ऐक बात है पर व ह मैं कहनहीं सकता जो आप की आज्ञापाऊं तो जों की तों कह सुना ऊं ❁ बानासुर ने आज्ञा की अच्छा कह ❁ तब पौरिया बोला कि महा राज-अपराध छिमा कई दिन से हम देखते हैं कि राजकन्या के मंदिरमें कोई पुरुष आया है-वह दिनरात बातें कियाकरता है-इस का भेद ह म नहीं जानते कि वह कौन पुरुष है औ कब कहां से आया है और क्या करता है ❁ इतनी बात के सुनत प्रमान बानासुर अति क्रोधकर शस्त्र उठाय-दबेपाओं अकेला ऊषा के मंदिर में जाय छिपकर क्या देखता है-कि ऐक पुरुष स्याम बरन अतिसुंदर-पीतपट ओढे निद्रा में अचेत ऊषा के साथ सोयापडा है ❁❁

सोचत बानासुर यों हिये ❁ होय पाप सोवत बध किये ❁

महाराज - यों मनहींमन बिचार बानासुर तो कईऐक रखवाले वहां र ख-उन से यह कह कि तुम इस के जागते ही हमें जाय कहियो-अ पने घरजाय सभाकर सब राक्षसों को बुलाय कहने लगा-कि मेरा बैरी आ नपऊंचा है तुम सब दल ले ऊषा का मंदिर जाय घेरो पीछे से मैं भी आता हूं ❁ आगे इधर तो बानासुर की आज्ञापाय सब राक्षसों ने आय ऊषा का घरघेरा औ उधर अनिरुद्ध औ और राजकन्या निद्रा से चौंक पुनि सारपासे खेलने लगे❁इस में चौपड खेलते खेलते ऊषा क्या देखती है कि चऊंओर से घनघोर घटाघिर आई- बिजली चमकने लगी-दा दुर-मोर-पपीहे बोलने लगे ❁ महाराज - पपीहे की बोली सुनतेही राजकन्या इतना कह पिय के कंठलगी ❁❁

तुम पपिहा पिय पिय मत करौ ● यह बियोग भाषा परिहरौ ●

इतने में किसीने जाय बानासुर से कहा कि महाराज-तुम्हारा बैरी आगा ● बैरी का नाम सुनतेही बानासुर अतिकोपकर के उठा औ अस्त्र शस्त्र ले ऊषा की पौली में आय खड़ा हुआ और लगा छिपकर देखने ● निदान देखते देखते ●●

बानासुर यों कहै हंकार ● कोहै रे तू गेह मझार ●

घनतन बरन मदन मनहारी ● कंवलनयन पीतांबरधारी ●

अरे चोर बाहर किन आवै ● आन कहां अब मोसों पावै ●

महाराज-जब बानासुर ने टेरके यों कहे बैन-तब ऊषा औ अनिरुद्ध सुन और देख भये निपट अचैन ● पुनि राजकन्या ने अति चिंताकर भयमान हो लंबीसांस ले कंत से कहा कि महाराज-मेरा पिता असुर दल ले चढिआया अब तुम इस के हाथ से कैसे बचोगे ●●

तबहि कोप अनिरुद्ध कहै - मत डर पै तू नारि ●

स्यार झुंड राक्षस असुर - पल में डारों मारि ●

ऐसे कह अनिरुद्ध जी ने बेद मंत्रपढ एकसौ आठ हाथ की सिला बुलाय हाथ में ले बाहर निकल दल में जाय बानासुर को ललकारा ● इन के निकलते ही बानासुर धनुष चढाय सब कटक ले अनिरुद्ध जी पर यों टूटा कि जैसे मधुमाखियों का झुंड किसी पै टूटे ● जद असुर अनेक अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्र चलाने लगे-तद क्रोधकर अनिरुद्ध जी ने सिला के हाथ कैएक ऐसे मारे कि सब असुर दल काई सा फटगया ● कुछ मरे कुछ घायलहुए-बचे सो भागगए- पुनि बानासुर जाय सब

को घेरलाया औ युद्धकरने लगा महाराज - जितने अस्त्र शस्त्र असुर च लाते थे तितने इधर उधरही जातेथे औ अनिरुद्ध जी के अंगमें एक भी नलगता था ●●

जे अनिरुद्ध पर परैं हथ्यार ● अधबर कटैं सिला की धार ●
सिला प्रहार सहौ नहिं परै ● बज्र चोट मनो सुरपति करै ●
लागत सीस बीचतें फटै ● टूटहिं जांघ भूजा धड़ कटै ●

निदान लडते लडते जब बानासुर अकेला रहगया औ सब कटक कट गया - तब उसने मनहींमन अचरजकर इतना कह नागपास से अनिरुद्ध जी को पकड़ बांधा - कि इस अजीत को मैं कैसे जीतूंगा ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज - जिस समय अनिरुद्ध जी को बानासुर नागपास से बांध अपनी सभा में लेगया - उसकाल अनिरुद्ध जी तो मनहीमन यों बिचारते थे कि मुझे कष्टहोय तोहोय पर ब्रह्मा का बचन झूठा करना उचित नहीं है क्योंकि जो मैं नागपास से बलकर निकलूंगा तो उस की अमर्याद होगी - इस से बंधे रहनाहीं भला है और बानासुर यह कहरहा था कि अरे लडके मैं तुझे अब मारता हूं जोकोई तेरा सहायक हो तो तू बुला ●

इसबीच ऊषा ने पिय की यहदशा सुन, चित्ररेखा से कहा, कि सखी धिक्कार है मेरा जीतब जो पति मेरा दुखमें रहै औ मैं सुख से खाऊं पीऊं और सोऊं ● चित्ररेखा बोली सखी - तू कुछ चिंता मतकरै तेरे पति का कोई कुछ कर नसकेगा निचिंतरह ● अभी श्री कृष्णचंद औ बलराम जी सब यदुबंसियों को साथले चढिआवेंगे और असुर दल को सं

हार तुम समेत अनिरुद्ध को छुड़ायले जायंगे ● उन की यही रीति है कि जिस राजा के सुंदर कन्या सुनते हैं - तहां से बल छलकर जैसे बने तैसे ले आते हैं ● उन्हीं का यह पोता है जो कुंडलपुर से राजा भीष्मक की बेटी रुक्मिनी को - महाबली बडे प्रतापी राजा सिसुपाल औ जुरासिंधु से संग्रामकर लेगये थे ● तैसे ही अब तुझे लेजायगे तू किसी बात की भावना मतकरे ●, ऊषा बोली सखी यह दुख मुझ से सहा नहीं जाता ●●

नागपास बांधे पिय हरी ● दहै गात ज्वाला बिष भरी ●
हौं कैसें पौढ़ौं सुखसेना ● पिय दुख क्यौंकर देखों नैना ●
प्रीतम बिपतपरे क्यौं जीऔं ● भोजनकरों न पानीपीऔं ●
बर बध अब बानासुर कीजो ● मोकों सरन कंत की दीजो ●
हौनहार हौनी है होय ● तासों कहा कहैगो कोय ●
लोक बेद की लाज नमानौ ● पियसंग दुख सुखही में जानौं ●

महाराज - चित्ररेखा से ऐसे कह जब ऊषा कंत के निकट जाय - निडर निसंक हो बैठी तब किसी ने बानासुर को जासुनाया - कि महाराज - राजकन्या घर से निकल उस पुरुष के पासगई ● इतनी बात के सुनतेही बानासुर ने अपने पुत्र स्कंध को बुलाय के कहा कि बेटा - तुम अपनी बहन को सभासे उठाय घरमें लेजाय पकडरक्खो औ निकलनेन दो ●

पिता की आज्ञापातेही स्कंध बहन के पासजा अतिक्रोधकर बोला - कि तैने यह क्याकिया पापनी - जो छोडी लोकलाज औ कानि आपनी ● हे

नीच-मैं तुझे क्यों बधकरूं-होगापाप और अपजस से भी हूं डरूं ● ऊषा बोली कि भाई-जो तुम्हें भावे सो करो औ करो मुझे पार्वती जी ने जो बर दियाथा सो बर मैं ने पाया ● अब इसे छोड और को धाऊं-तो अपने को गाली चढाऊं ● तजती हैं पति को अकुलीनी नारि-यही रीति परंपरा से चली आती है बीच संसार ● जिस से बिधना ने संबंध किया-उसी के संग जगत में अपजस लिया तो लिया ● महाराज-इतनी बात के सुनतेही स्कंध क्रोधकर हाथपकड ऊषा को वहां से मंदिर में उठालाया औ फिर नजानेदिया ●

पुनि अनिरुद्ध जी को भी वहां से उठाय कहीं अनत लेजाय बंधकिया ● उसकाल इधर तो अनिरुद्ध जी तियके बियोग में महासोग करतेथे औ उधर राजकन्या कंत के बिरह में अन्न पानी तज कठिन जोगकरने लगी ● इसबीच कितने एकदिन पीछे एकदिन नारदमुनि जीने पहले तो अनिरुद्ध जी को जाय समझाया-कि तुम किसी बात की चिंता मतकरो अभी श्री कृष्णचंद आनंदकंद औ बलराम सुखधाम राक्षसों से कर संग्राम तुम्हें छुडाय लेजायंगे ●

पुनि बानासुर को जा सुनाया कि राजा जिसे तुम ने नागपास से पकड बांधा है-वह श्री कृष्ण का पोता औ प्रद्युम्न जी का बेटा है औ अनिरुद्ध उस का नाम है ● तुम यदुबंसियों को भलीभांति जानते हो जो जानो सो करो-मैं इस बात से तुम्हें सावधान करने आया था सो करचला ● यहबात सुन इतना कह बानासुर ने नारद जी को बिदाकिया-कि नारद जी-मैं सब जानता हूं ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे ऊषा ख

इति अनिरुद्ध बंधनो नाम त्रिषष्ठितमोध्यायः ॥ ६३ ॥

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज जब अनिरुद्ध जी को बंधे बंधे चार महीने हुए तब नारद जी द्वारिका पुरी में गये तो वहां क्या देखते हैं कि सब यादव महा उदास मनमलीन तनछीन होरहे हैं और श्री कृष्ण जी औ बलराम जी उनके बीच में बैठे अति चिंता कर कहरहे हैं कि बालक को उठाय कहां से कौन लेगया ॥ इसभांति की बातें होरहीं थीं औ रनवास में रोना पीटना होरहा था ऐसा कि कोई किसीकी बात न सुनता था ॥ नारद जी के जातेही सब लोग क्या स्त्री क्या पुरुष उठधाये औ अतिव्याकुल तनछीन मनमलीन रोते बिलबिलाते सनमुख आनखडे हुए ॥ आगे अति बिनती कर हाथ जोड सिर नाय हाहा खाय खाय नारद जी से सब पूछने लगे ॥

साँची बात कहो ऋषिराय ॥ जासों जिय राखैं बहिराय ॥
कैसे सुधि अनिरुद्ध की लहैं ॥ कहो साधि ताके बल रहैं ॥

इतनी बातके सुनतेही श्री नारद जी बोले कि तुम किसी बात की चिंता मत करो औ अपने मनका शोक हरो ॥ अनिरुद्ध जी जीते जागते शोणितपुर में हैं, वहां तिन्होंने जाय राजा बाणासुर की कन्या से भोग किया, इसी लिये उसने उन्हें नागफांस से पकड बांधा है, बिन युद्ध किये वह किसीभांति अनिरुद्ध जी को न छोडेगा, यह भेद मैंने तुम्हें आय सुनाया, आगे जो उपाय तुम से होसके सो करो ॥ महाराज यह समाचार सुनाय नारदमुनि जी तो चलेगये, पीछे सब यदुबंसियों ने जाय

राजा उग्रसेन से कहा - कि महाराज- हमने ठीक समाचार पाये कि अनिरुद्ध जी सोनतपुर में बानासुर के यहां हैं- इन्होंने उस की कन्या रमी इस से उन ने इन्हें नागपास से बांधरक्खा है-अब हमें क्या आज्ञा होती है ॥ इतनी बातके सुनतेही राजा उग्रसेन ने कहा कि तुम हमारी सब सेना लेजाओ और जैसे बने तैसे अनिरुद्ध को छुडालाओ ॥ ऐसा बचन उग्रसेन के मुख से निकलतेही महाराज॰ सब यादव तो राजा उग्रसेन का कटक ले बलराम जी के साथहुए और श्री कृष्णचंद औ प्रद्युम्न जी गरुड पर चढ सब से आगे सोनतपुर को गये ॥

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-जिसकाल बलराम जी राजा उग्रसेन का सब दलले द्वारिकापुरी से धौंसादे सोनतपुर को चले-उस समय की कुछ शोभा बरनी नहीं जाती- कि सबके आगे तो बडे बडे दंतीले मतवाले हाथियों की पांति-जिनपर धौंसा बाजता जाता था औ ध्वजा पताका फहराती थीं ॥ तिनके पीछे एक और गजों की अवली अंबारियों समेत-जिनपर बडेबडे रावत-जोधा - सूर - बीर यादव झिलम टोप पहने सब शस्त्र अस्त्र लगाये बैठेजाते थे ॥ उनके पीछे रथोंके तांतों के तांते दृष्टआते थे ॥

तिन की पीठ पर घुडचढों के यूथ के यूथ बरन बरनके घोडे गंडे पट्टेवाले - गजगाह पाखरडाले - जमाते ठहराते नचाते कुदाते फंदाते चलेजाते थे और उन के बीच बीच चारन जसगाते थे औ कडखैत कडखा ॥ [illegible] पीछे फरीं-खांडे-छुरीं-कटारीं-जमधर-धोपें-बरछीं-बर[illegible] बाने-पटे-धनुषबान-गदा-चक्र-फरसे-गंडासे-लुहांगी

गौं-गुप्ती-बांक-बिछुए समेत अनेक अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्र लिये पैदलों का दल टीडी दलसा चलाजाता था ॥ उन के मध्य मध्य धौंसे-ढोल-डफ-बांसुरी-भेर-नरसिंगों का जो शब्द होता था सो अति ही सुहावना लगताथा ॥

उडी रेनु आकाश लौं छाई ॥ छिप्यौ भानु भयौ निसके भाई ॥
चकवी चकवा भयौ वियोग ॥ सुंदरि करें कंत सौं भोग ॥
फूले कमल कुमद कुम्हलाने ॥ निसचर फिरहिं निसा जियजाने ॥

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-जिस समय बलराम जी बारह अक्षौहनी सेना ले अति धूमधाम से उस के गढ गढी कोट तोडते औ देस उजाडते आ सोनितपुर में पहुंचे और श्री कृष्णचंद औ प्रद्युम्न जी भी आनमिले-तिसी समैं किसी ने अति भयखाय घबराय-जाय हाथजोड सिरनाय बानासुर से कहा कि महाराज-कृष्ण बलराम अपनी सब सेना ले चढआये औ उन्हों ने हमारे देस के गढ गढी कोट ढाय गिराए औ नगर को चारोंओर से आयघेरा अब क्या आज्ञा होती है ॥

इतनी बातके सुन्तेही बानासुर महाक्रोधकर अपने बडेबडे राक्षसों को बुलाय बोला-तुम सब दल अपना ले जाय नगर के बाहर जाय कृष्ण बलराम के सनमुख खडे हो पीछे से मैं भी आता हूं ॥ महाराज-आज्ञा पातेही वे असुर बात की बात में बारह अक्षौहनी सेना ले श्री कृष्ण बलराम जी के सोंही लडने को अस्त्र शस्त्र लिये आखडेरहे ॥ उन के पीछेही श्री महादेव जी का भजन सुमिरन ध्यानकर बानासुर भी आ उपस्थि

त हुआ ● शुकदेव मुनि बोले कि महाराज-ध्यान के करते ही शिव जी का आसन डोला औ ध्यान छूटा-तो उन्हों ने ध्यानधर जाना कि मेरे भक्त पर भीडपडी है इस समय चलकर उस की चिंता मेटा चाहिये ●

यह मन ही मन विचार जब पार्वती जी को अर्द्धंगधर-जटाजूट बांध-भस्मचढाय-बहुत सी भांग और आक धतूरा खाय-स्वेत नागों का जनेऊ पहन-गजचर्म ओढ-मुंडमाल-सर्पहार पहन-त्रिशूल-पिनाक-डमरू-खप्पर ले-नांदिये पर चढ-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-भूतनी-प्रेतनी-पिशाचनी आदि सेना ले भोलानाथ चले-उस समैं की कुछ शोभा बरनी नहीं जाती-कि कान में गजमनि की मुद्रा-लिलाट पै चंद्रमा-सीस पर गंगा धरै-लाल लाल लोचन करै-अति भयंकर भेष-महाकाल की मूरति बनायें इस रीति से बजाते गाते सेना को नचाते जाते थे कि वह रूप देखेही बनिआवे-कहने में न आवे ● निदान कितनी एक बेर में शिव जी अपनी सेना लिये वहां पहुंचे-कि जहां सब असुर दल लिये बानासुर खडा था ● हर को देखतेही बानासुर हरष के बोला कि कृपासिंधु-आप बिन कौन इस समय मेरी सुध ले ●● ।

तेजी तुम्हारौ इन कौं दहै ● यादव कुल अब कैसें रहै ●

यों सुनाय फिर कहने लगा कि महाराज-इस समैं धर्म युद्ध करो औ ऐक ऐक के सनमुख हो ऐक ऐक लडो ● महाराज-इतनी बात जों बानासुर के मुख से निकली तो इधर असुर दल लडने को तुलकर खडा हु

आ औ उधर यदुबंसी आ उपस्थित ऊए ● दोनों ओर जुझाऊ बाजे बाजने लगे-सूर बीर रावत जोधा धीर शस्त्र अस्त्र साजने औ अधीर नपुंसक कायर खेत छोड छोड जी ले ले भागने लगे ●

उसकाल महाकाल सरूप शिव जी श्री कृष्णचंद के सनमुख ऊए-बानासुर बलराम जी के सोहीं ऊआ-स्कंध प्रद्युम्न जी से आय भिडा औ इसी भांति एक एक से जुट गया औ दोनों ओर से शस्त्र चलने लगा● उधर धनुष पिनाक-महादेव जी के हाथ-इधर सारंग धनुष लिये यदुनाथ ● शिव जी ने ब्रह्मबान चलाया-श्री कृष्ण जी ने ब्रह्मशस्त्र से काट गिराया ● फिर रुद्र ने चलाई महाबयार-सो हरि ने तेज से दोनी टार ● पुनि महादेव ने अग्नि उपाई-वह मुरारि ने मेह बरसाय बुझाई और एक महाज्वाला उपजाई-सो सदाशिव जी के दल में धाई ● उस ने डाढी मूंछ औ जलाय के केस-कीने सब असुर भयानक भेस ●

जब असुर दल जलने लगा औ बडा हाहकार ऊआ-तब भोलानाथ ने जले अधजले राक्षसों औ भूत प्रेतों को तो जल बरसाय ठंडा किया और आप अति क्रोधकर नारायनीबान चलाने को लिया-पुनि मनहीमन कुछ सोच समझ नचलाय रखदिया● फिर तो श्री कृष्ण जी आलस्य बान चलाय सब को अचेतकर लगे असुर दल काटने-ऐसे कि जैसे किसान खेती काटे ● यह चरित्र देख कों महादेव जी ने अपने मन में सोचकर कहा कि अब प्रलय युद्ध बिन किये नहीं बनता-तों ही स्कंध मोर पर चढ धाया और अंतरीक्ष हो उस ने श्री कृष्ण जी की सेना पर बान चला

या ●●

तब हरि सौं प्रद्युम्न उचरै ● मोर चढ्यौ ऊपरतें लरै ●

आज्ञा देहु युद्ध अति करैं ● मारौं अब हि भूमि गिरपरै ●

इतनी बात के कहते ही प्रभु ने आज्ञा दी श्री प्रद्युम्न जी ने एक बान मारा सो मोर को लगा- स्कंध नीचे गिरा ● स्कंद के गिरते ही बानासुर अति कोप कर पांच धनुष चढाय-एक एक धनुष पर दो दो बान धर लगा मेह सा बरसाने और श्री कृष्णचंद बीच ही लगे काटने ● महाराज- उसकाल इधर उधर के मारू ढोल ढफ से बाजते थे-कड खैत धमाल सी गाते थे- घावों से लोहू की धार पिचकारियां सी चलरहीं थीं-जिधर तिधर जहां तहां लाल लाल लोहू गुलाल सा दृष्ट आता था -बीच बीच भूत प्रेत पिशाच जो भांति भांति के भेष भयावने बनाये फिरते थे-सो भगत सी खेलरहे थे औ रक्त की नदी रंग की सी नदी बह निकली थी - लडाई क्या दोनों ओर होली सी होरही थी ● इस में लडते लडते कितनी एक बेर पीछे श्री कृष्ण जी ने एक बान ऐसा मारा कि उस के रथ का सारथी उडगया औ घोडे भडके ● निदान रथवान के मरते ही बानासुर भी रनभूमि छोड भागा - श्री कृष्ण जी ने उस का पीछा किया ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-बानासुर के भागने के समाचार पाय उस की मा जिस का नाम कटरा - सो उसी समै भयानक भेष छुटे केस नंग मुनंगी आ श्री कृष्णचंद जी के सनमुख खडी हुई औ लगी पुकार करने ●●

देखत ही प्रभु मूंदे नैन ❁ पीठ दई ताके सुन बैन ❁
तौलौं बानासुर भज गयौ ❁ फिर अपनौ दल जोरत भयौ ❁

महाराज-जब तक बानासुर एक अक्षौहनी दल साज वहां आया-तब तक कटक श्री कृष्ण जी के आगे से न हटी-पुत्र की सेना देख अपने घर गई ❁ आगे बानासुर ने आय बडा युद्ध किया पर प्रभु के सनमुख न ठहरा-फिर भाग महादेव जी के पास गया ❁ बानासुर को भयातुर देख शिव जी ने अति क्रोधकर-महाविषमज्वर को बुलाय श्री कृष्ण जी की सेना पर चलाया ❁ वह महा बली बडा तेजस्वी जिस का तेज सूरज की समान-तीन मूंड नौपग छह करवाला-त्रिलोचन भयानक भेष श्री कृष्णचंद के दल को आय साला ❁ उस के तेज से यदुबंसी लगे जलने औ थर थर कांपने ❁ निदान अति दुख पाय घबराय यदुबंसियों ने आय श्री कृष्ण जी से कहा कि महाराज-शिव जी के ज्वर ने आय सारे कटक को जलाय मारा-अब इस के हाथ से बचाइये नहीं तो एक भी यदुबंसी जीता न बचेगा ❁ महाराज-इतनी बात सुन औ सब को कातर देख हरि ने सीतज्वर चलाया-वह महादेव के ज्वर पर धाया ❁ इसे देखते ही वह डरकर पलाया औ चला चला सदाशिव जी के पास आया ❁❁

तब ज्वर महादेव सों कहै ❁ राखहु सरन कृष्ण ज्वर दहै ❁

यह बचन सुन महादेव जी बोले कि श्री कृष्णचंद जी के ज्वर को बिन श्री कृष्णचंद-ऐसा त्रिभुवन में कोई नहीं जो हरे ❁ इस से उत्तम यही है कि तू भक्त हितकारी श्री मुरारी के पास जा ❁ शिव वाक्य

सुन सोच विचार विषमज्वर श्री कृष्णचंद आनंदकंद जी के सनमुख आ हाथजोड़ अति विनतीकर गिड़ गिड़ाय हाहा खाय बोला - हे कृपा सिंधु-दीनबंधु-पतितपावन-दीनदयाल-मेरा अपराध क्षमा कीजे औ अपने ज्वर से बचाय लीजे ॥

प्रभु तुम हौ ब्रह्मा दिव ईस ॥ तुम्हरी शक्ति अगम जगदीस ॥
तुम ही रचकर सृष्टि संवारी ॥ सब माया जग कृष्ण तुम्हारी ॥
कृपा तुम्हारी यह मैं बूझौ ॥ ज्ञान भये जग करता सूझौ ॥

इतनी बात के सुनते ही हरि दयाल बोले कि तू मेरी सरन आया इस से बचा नहीं तो जीता न बचता-मैं ने तेरा अबका अपराध क्षमा किया फिर मेरे भक्त औ दासों को मत व्यापियो तुझे मेरी ही आन है ॥ ज्वर बोला-कृपासिंधु-जो इस कथा को सुनेगा उसे सीतज्वर-एकतरा औ तिजारी कभी न व्यापैगी ॥ पुनि श्री कृष्णचंद बोले कि तू अब महादेव के निकट जा वहां मत रह-नहीं तो मेरा ज्वर तुझे दुख देगा ॥ आज्ञा पाते ही बिदा हो दंडवतकर विषमज्वर सदाशिव जी के पास गया औ ज्वर का बहधा सब मिट गया ॥ इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज ॥

यह संवाद सुने जो कोय ॥ ज्वर कौ डर ताकौ नहीं होय ॥

आगे बानासुर अति कोपकर सब हाथों में धनुष बान ले-प्रभु के सनमुख आ ललकार के बोला ॥

तुम तैं युद्ध कियौ मैं भारी ॥ तौहू साद न पुजी हमारी ॥

तब यह कह लगा सब हाथों से बान चलाने - तब श्री कृष्णचंद जी ने

सुदरसन चक्र को छोड उस के चार हाथ रख सब हाथ काट डाले-ऐसे कि-जैसे कोई बात के कहते वृक्ष के गुद्दे छांट डाले ❁ हाथ के कटते ही बानासुर सिथल हो गिरा - घावों से लोहू की नदी बह निकली - तिस में भुजाऐं मगर मच्छ सी जनाती थीं - कटे हुऐ हाथियों के मस्तक घडियाल से डूबते तिरते जाते थे - बीच बीच रथ बेडे नवाडे से बहे जाते थे और जिधर तिधर रनभूमि में स्वान स्यार गिद्ध आदि पसु पंक्षी लोथें खेंच खेंच आपस में लड लड झगड झगड फाड फाड खाते थे-पुनि कौवे सिरों से आंखें निकाल निकाल ले ले उड उड जाते थे ❁

श्री सुकदेव जी बोले महाराज - रनभूमि की यह गति देख बानासुर अति उदास हो पछताने लगा ❁ निदान निर्बल हो सदाशिव जी के निकट गया तब ❁❁

कहत रुद्र मनमाहि बिचार ❁ अब हरि की कीजे मनुहार ❁

इतना कह श्री महादेव जी बानासुर को साथ ले बेद पाठ करते वहां आऐ कि जहां रनभूमि में श्री कृष्णचंद खडे थे ❁ बानासुर को पाओं पर डाल शिव जी हाथ जोड बोले - कि हे सरनागत बत्सल - अब यह बानासुर आप की सरन आया इस पर कृपा दृष्ट कीजे औ इस का अपराध मन में न लीजे ❁ तुम तो बार बार अवतार लेते हो भूमि का भार उतारन को और दुष्ट हनन औ संसार के तारन को ❁ तुम हो प्रभु अलख अभेद अनंत - भक्तों के हेत संसार में आय प्रगटते हो भगवंत ❁ नहीं तो सदा रहते हो बिराट स्वरूप - तिस का है यह रूप ❁ स्वर्ग सि

र-नाभि आकाश- पृथ्वी पांव-समुद्र पेट-इंद्र भुजा-पर्वत नख-बादल 
केस-रोम बृक्ष- लोचन सूर्य औ भानु - ब्रह्मा मन-रुद्र अहंकार - पवन 
स्वासा-पलक लगना रात दिन गरजन शब्द ●●

ऐसे रूप सदा अनुसरै ● काहू पै नहीं जाने परै ●

और यह संसार दुख का समुद्र है इस में चिंता औ मोह रूपी जल भरा है ● प्रभु-बिन तुम्हारे नाम की नाव के सहारे-कोई इस महा कठिन समुद्र के पार नहीं जा सकता और यों तो बहुतेरे डूबते उछलते हैं ● जो नर देह पाकर तुम्हारा भजन सुमरन औ नकरेगा जाय - सो नर भूलेगा धर्म औ बढावेगा पाप ● जिस ने संसार में आय तुम्हारा नाम न लिया - तिस ने अमृत छोड बिष पिया ● जिस के हृदे में तुम बसे आय- उसी को भक्ति मुक्ति मिली गुनगाय ●

इतना कह पुनि श्री महादेव जी बोले कि हे कृपासिंधु दीनबंधु ● तुम्हारी महिमा अपरंपार है किसे इतनी सामर्थ है जो उसे बखाने औ तुम्हारे चरित्रों को जाने ● अब मुझ पर कृपाकर इस बानासुर का अपराध क्षमा कीजे औ इसे अपनी भक्ति दीजे - यह भी तुम्हारी भक्ति का अधिकारी है क्यों कि भक्त प्रह्लाद का बंस अंस है ● श्री कृष्णचंद बोले कि शिव जी - हम तुम में कुछ भेद नहीं औ जो भेद समझेगा सो महा नर्क में पडेगा और मुझे कभी न पावेगा ● जिस ने तुम्हें ध्याया-तिस ने अंत समैं मुझे पाया ● इस ने निष्कपट तुम्हारा नाम लिया- तिसी से मैं ने इसे चतुर्भुज किया-जिसे तुम ने बर दिया औ दोगे -तिस का निबाह मैं ने किया औ करूंगा ●

महाराज-इतना बचन प्रभु के मुख से निकलते ही - सदाशिव जी दंडवतकर बिदा हो अपनी सेना ले कैलाश को गये औ श्री कृष्णचंद वहां हीं खडे रहे - तब बानासुर हाथ जोड सिरनाय बिनतीकर बोला-कि दीनानाथ-जैसे आप ने कृपाकर मुझे तारा तैसे अब चलके दास का घर पवित्र कीजे औ अनिरुद्ध जी औ ऊषा को अपनें साथ लीजे ● इस बात के सुनते ही श्री बिहारी भक्त हितकारी प्रद्युम्न जी को साथ ले बानासुर के धाम पधारे ● महाराज-उस काल बानासुर अति प्रसन्न हो प्रभु को बडी आवभगत से - पाटंबर के पांवडे डालता लिवाय ले गया ● आगे ●●

चरन धोय चरनोदक लियौ ● अचमनकर माथे पर दियौ ● पुनि कहने लगा कि जो चरनोदक सब को दुर्लभ है सो मैं ने हरि की कृपा से पाया औ जन्म जन्म का पाप गंवाया ● यही चरनोदक त्रिभुवन को पवित्र करता है - इसी का नाम गंगा है ● इसे ब्रह्मा ने कमंडल में भरा - शिव जी ने सीस पर धरा ● पुनि सुर मुनि ऋषि ने माना औ भागीरथ ने तीनों देवताओं की तपस्याकर संसार में आना - तब से इस का नाम भागीरथी हुआ ● यह पाप मल हरनी - पवित्र करनी-साध संत को सुख देनी-बैकुंठ की निसेनी है औ जो इस में न्हाया- उस ने जन्म जन्म का पाप गंवाया ● जिस ने गंगा जल पिया - तिस ने निःसंदेह पर्मपद लिया ● जिन्ने भागीरथी का दरसन किया-तिन्ने सारे संसार को जीत लिया ● महाराज - इतना कह बानासुर अनिरुद्ध जी औ ऊषा को ले आय-प्रभु के सनमुख हाथ जोड बोला ●●

क्षमिये दोष भावई भई ● यह मैं ऊषा दासी दई ●

यों कह वेद की विधि से बानासुर ने कन्यादान किया औ तिस के यौतुक में बहुत कुछ दिया - कि जिस का वारापार नहीं ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - ब्याह के होते ही श्री कृष्णचंद बानासुर को आसा भरोसा दे - राजगादी पर बैठाय - पोते बहू को साथ ले - बिदा हो धौंसा बजाय - सब यदुबंसियों समेत वहां से द्वारिकापुरी को पधारे ● इन के आने के समाचार पाय सब द्वारिकावासी - नगर के बाहर जाय प्रभु को बाजेगाजे से लिवाय लाये ● उस काल पुरवासी हाट - बाट - चौहटों - चौबारों - कोठों से मंगली गीत गाय गाय मंगलाचार करते थे औ राजमंदिर में श्री रुक्मिनी आदि सब सुंदरि बधाये गाय गाय रीति भांति करती थीं औ देवता अपने अपने बिमानों पर बैठे अधर से फूल बरसाय बरसाय जैजैकार करते थे और घर बाहर सारे नगर में आनंद हो रहा था - कि उसी समय बलराम सुखधाम औ श्री कृष्णचंद आनंदकंद सब यदुबंसियों को बिदा दे - अनिरुद्ध ऊषा को साथ ले राजमंदिर में जा बिराजे ●●

आनी ऊषा गेह मझारी ● हरष हिं देखि कृष्ण की नारी ●
देहिं असीस सासु उरलावें ● निरखि हरषि भूषन पहिरावें ●

इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे ऊषा चरित्र बर्ननो नाम चतुष्षष्ठितमो ध्यायः ● ॥ ६४ ॥ ●●

———●●●●●●●●●●●●———

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - इक्ष्वाकबंसी राजा नृग बड़ा ज्ञानी

-दानी-धर्मात्मा-साहसी था ● उस ने अनगिनत गौ दान कीं-जो गंगा की बालू के कन-भादों के मेह की बूंदें औ आकाश के तारे गिने जांय-तो राजा न्हग के दान की गायें भी गिनी जांय ● ऐसा जो ज्ञानी महा दानी राजा सो थोड़े अधर्म से गिरगिट हो अंधे कुएं में रहा-तिसे श्री कृष्णचंद जी ने मोक्ष किया ●

इतनी कथा सुन श्री शुकदेव जी से राजा परीक्षित ने पूछा-महाराज-ऐसा धर्मात्मा दानी राजा किस पाप से गिरगिट हो अंधे कुएं में रहा औ श्री कृष्णचंद जी ने कैसे उसे तारा-यह कथा तुम मुझे समझाकर कहो जो मेरे मन का संदेह जाय ● श्री शुकदेव जी बोले महाराज-आप चित दे मनलगाय सुनिये मैं जों की तों सब कथा कह सुनाता हूं ● कि राजा न्हग तो नित प्रति गौ दान किया करते ही थे-पर एक दिन प्रात ही न्हाय संध्या पूजाकर कै सहस्र धौली-धूमरि-काली-पीली-भूरी-कबरी गौ मंगाय-रूपे के खुर-सोने के सींग-तांबे की पीठ समेत पाटंबर उढ़ाय संकल्पीं और उन के ऊपर बहुत सा अन धन ब्राह्मनों को दिया-वे ले अपने घर गये ● दूसरे दिन फिर राजा उसी भांति गौ दान करने लगा तो एक गाय पहले दिन की संकल्पी अन जाने आन मिली-सोभी राजा ने उन गायों के साथ दानकर दी ●

ब्राह्मन ले अपने घर को चला-आगे दूसरे ब्राह्मन ने अपनी गौ पहचान बाट में रोकी औ कहा कि यह गाय मेरी है मुझे कल्ह राजा के यहां से मिली है-भाई-तू क्यों इसे लिये जाता है ● यह ब्राह्मन बोला

ई-सैा मैं अभी राजा के यहां से लिये चला आता हूं तेरी कहां से ऊई ● महाराज-वे दोनैां ब्राह्मन इसी भांति मेरी मेरीकर झगडने लगे ● निदान झगडतेझगडते वे दोनैां राजा के पास गये-राजा ने दोनैां की बात सुन हाथ जोड अति विनतीकर कहा-कि ●●

कोऊ लाख रुपैया लेउ ● गैया एक काहूं कैां देउ ●

इतनी बात के सुनते ही दोनैां झगडालू ब्राह्मन अति क्रोधकर बोले-कि महाराज-जो गाय हम ने स्वस्ति बोल के ली सो कडोड रुपये पाने से भी हम न देंगे-वह तो हमारे प्रान के साथ है ● महाराज-पुनि राजा ने उन ब्राह्मनैां को पाओं पड पड अनेक अनेक भांति फुसलाया समझाया-पर उन तामसी ब्राह्मनैांने राजा का कहना न माना ● निदान महा क्रोधकर इतना कह दोनैां ब्राह्मन गाय छोड चले गये कि महाराज-जो गाय आप ने संकल्पकर हमें दी औ हम ने स्वस्ति बोल हाथ पसार ली-वह गाय रुपये ले नहीं दी जाती-अच्छा यें तुम्हारे यहां रही तो कुछ चिंता नहीं ●

महाराज-ब्राह्मनैां के जाते ही राजा न्टग पहले तो अति उदास हो मन हीं मन कहने लगा-कि यह अधर्म अन जाने मुझ से ऊआ सो कैसे छुटेगा औ पीछे अति दान पुन्य करने लगा ● कितने एक दिन बीते राजा न्टग काल बस हो मरगया-उसे यम के गन धर्मराज के पास ले गये ● धर्मराज राजा को देखते ही सिंहासन से उठ खडा ऊआ-पुनि आवभगतकर आसन पर बैठाय अति हितकर बोला ● महाराज-तुम्हारा पुन्य है बऊत औ पाप है थोडा-कहो पहले क्या भुगतोगे ●●

सुन न्हग कहत जोरकै हाथ ● मेरौ धर्म हरौ जिन नाथ ●
पहलै हौं भुगतौं गौ पाप ● तन धर कै सहि हौं संताप ●

इतनी बात के सुनते ही धर्मराज ने राजा न्हग से कहा- कि महाराज- तुम ने अन जाने जो दान की ऊई गाय फिर दान की- उसी पाप से आप को गिरगिट हो बन बीच गोमती तीर अंधे कुए में रहना ऊआ ● जब द्वापर के अंत में श्री कृष्णचंद अवतार लेंगे- तब तुम्हें वे मोक्ष देंगे ● महाराज- इतना कह धर्मराज चुप रहा औ राजा न्हग उसी स मैं गिरगिट हो अंधे कुए में जा गिरा औ जीव भक्षन कर कर वहां र हने लगा ●

आगे कई जुग बीते द्वापर के अंत में श्री कृष्णचंद जी ने अवतार लि या औ ब्रज लीलाकर जब द्वारिका को गए औ उन के बेटे पोते भए- तब एक दिन कितने एक श्री कृष्ण जी के बेटे पोते मिल अहेर को गये औ बन में अहेर करते करते प्यासे भये ● दैवी वे बनमें जल ढूंढ ते ढूंढते उसी अंधे कुए पर गए- जहां राजा न्हग गिरगिट का जन्म ले रहा था ● कुए में झांकते ही एक ने पुकार के सब से कहा कि अरे भाई- देखो इस कूप में कितना बडा एक गिरगिट है ●

इतनी बात के सुनते ही सब दौड आए औ कुए के मनघटे पर ख डे हो लगे पगडी फेंटे मिलाय मिलाय लटकाय लटकाय उसे काढने औ आपस में यों कहने- कि भाई- इसे बिन कुए से निकाले हम यहां से न जायगे ● महाराज-जब वह पगडी फेंटों की रस्सी से न निकला तब उन्हों ने गांव से सन-सूत-मूज- चाम की मोटी मोटी भारी भारी बरतें

मंगवाई और कुए में फांस गिरगिट को बांध बलकर खैंचने लगे ● पर वह वहां से टसका भी नहीं-तब किसी ने द्वारिका में जाय श्री कृष्ण जी से कहा कि महाराज - बन में अंधे कुए के भीतर एक बडा मोटा भारी गिरगिट है-उसे सब कुंवर काढ हारे पर वह नहीं निकलता ● -इतनी बात के सुनते ही हरि उठ धाए औ चले चले वहां आए जहां सब लडके गिरगिट को निकाल रहे थे ● प्रभु को देखते ही सब लडके बोले कि पिता देखो यह कितना बडा गिरगिट है-हम बडी बेर से इसे निकाल रहे हैं यह निकलता नहीं ● महाराज-इस बचन को सुनतों श्री कृष्णचंद जी ने कुए में उतर उस के शरीर में चरन लगाया-तो वह देह छोड अति सुंदर पुरुष हुआ ●●

भूपति रूप रह्यौ गहि पाय ● हाथ जोड बिनवै सिरनाय ●

कृपासिंधु-आपने बडी कृपा की जो इस महा बिपत में आय मेरी सुध ली ● शुकदेव जी बोले राजा-जब वह मनुष रूप हो हरि से इस ढब की बातें करने लगा-तब यादवों के बालक औ हरि के बेटे पोते अचरज कर श्री कृष्णचंद से पूछने लगे-कि महाराज-यह कौन है और किस पाप से गिरगिट हो यहां रहा था सो कृपाकर कहो तो हमारे मन का संदेह जाय ● उस काल प्रभु ने आप कुछ न कह उस राजा से कहा ●●

अपनौ भेद कहौ समझाय ● जैसें सबै सुनै मन लाय ●
कोहौ आप कहां तें आए ● कौन पाप यह काया पाए ●
सुन कै न्रप कहै जोरे हाथ ● तुम सब जानत हौ यदनाथ ●

तिस पर आप पूछते हो तो मैं कहता हूं-मेरा नाम है राजा न्रग मैं ने अ
नगिनत गौ ब्राह्मनों को तुम्हारे निमित्त दीं - एक दिन की बात है कि
मैं ने कितनी एक गाय संकल्पकर ब्राह्मनों को दीं-दूसरे दिन उन गा
यों में से एक गाय फिर आई सो मैं ने और गायों के साथ अन जाने
दूसरे द्विज को दानकर दी ❁ जों लेकर निकला तों पहले ब्राह्मन ने अ
पनी गौ पहचान इस से कहा-यह गाय मेरी है मुझे कल राजा के यहां
से मिली है तू इसे क्यों लिये जाता है ❁ यह बोला मैं अभी राजा के यहां
से लिये चला आता हूं तेरी कैसे हुई ❁ महाराज- वे दोनों बिप्र इसी
बात पर झगडते झगडते मेरे पास आए-मैं ने उन्हें समझाया और कहा
कि एक गाय के पलटे मुझ से लाख गौ लो औ तुम में से कोई यह गाय
छोडदो ❁

महाराज-मेरा कहा हठकर उन दोनों ने न माना ❁ निदान गौ छो
ड क्रोधकर वे दोनों चले गये ❁ मैं अछताय पछताय मनमार बैठ रहा
❁ अंत समय जम के दूत मुझे धर्मराज के पास ले गये- धर्मराज ने मुझ
से पूछा कि राजा-तेरा धर्म है बहुत औ पाप है थोडा कहु पहले क्या भु
गतेगा-मैं ने कहा पाप ❁ इस बात के सुनते ही महाराज- धर्मराज बोले
कि राजा-तैंने ब्राह्मन को दीहुई गाय फिर दान की- इस अधर्म से तू
गिरगिट हो पृथ्वी पर जाय गोमती तीर बन के बीच अंध कूप में रह-
जब द्वापर युग के अंत में श्री कृष्णचंद अवतार ले तेरे पास जांयगे तब
तेरा उद्धार होगा ❁

महाराज-तभी से मैं सरट स्वरूप इस अंध कूप में पड़ा आप के चरन

कमल का ध्यान करता था - अब आय आपने मुझे महा कष्ट से उबारा औ भवसागर से पार उतारा ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा-कि महाराज- इतना कह राजा न्हग तो बिदा हो बिमान में बैठ बैकुंठ को गया औ श्री कृष्णचंद जी सब बाल गुपालों को समझाय के कहने लगे ●●

बिप्र दोष जिन कोऊ करौ ● मत कोऊ अंस बिप्र कौ हरौ ●
मन संकल्प कियौ जिन राखौ ● सत्य बचन बिप्रन सों भाखौ ●
बिप्र हि दियौ फेर जो लेइ ● ताकौं दंड इतौ जम देइ ●
बिप्रन के सेवक ह्वै रहियौ ● सब अपराध बिप्र कौ सहियौ ●
बिप्रहि माने सो मोहि माने ● बिप्रन अरु मोहि भिन्न न जाने ●

जो मुझ में औ ब्राह्मन में भेद जानेगा सो नर्क में पडेगा औ बिप्र को मानेगा वह मुझे पावेगा औ निसंदेह परम धाम में आवेगा ● महाराज- यह बात कह श्री कृष्ण जी सब को वहां से ले द्वारिकापुरी पधारे ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे राजा न्हग मोक्षो नाम पंचषष्ठितमोध्यायः ● ॥ ६५ ॥ ●●

---

श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज - एक समैं श्री कृष्णचंद आनंदकंद औ बलराम सुखधाम- मनिमय मंदिर में बैठे थे कि बलदेव जी ने प्रभु से कहा ● भाई-जब हमें बृंदावन से कंस ने बुला भेजा था औ हम मथुरा को चले थे-तब गोपियों और नंद जसोदा से हमने तुम ने यह

वचन किया था कि हम शीघ्रही आय मिलेंगे सो वहां न जाय द्वारिका में आय बसे ❁ वे हमारी सुरत करतें होंगे जो आप आज्ञा करें तो हम जन्मभूमि देखिआवें औ उन का समाधान करिआवें ❁ प्रभु बोले कि अच्छा-इतनी बात के सुनतें ही बलराम जी सब से बिदा हो हल मूसल ले रथ पर चढ़ सिधारे ❁

महाराज - बलराम जी जिस पुर नगर गांव में जाते थे - तहां के राजा आगू बढ़ अति शिष्टाचार कर इन्हें ले जाते थे औ ये एक एक का समाधान करते जाते थे ❁ कितने एक दिन में चले चले बलराम जी अवंतिका पुरी पहुंचे ❁❁

बिद्या गुरु कौं कियौ प्रनाम ❁ दिन दस तहां रहे बलराम ❁

आगे गुरु से बिदा हो बलदेव जी चले चले गोकुल में पधारे तो देखते क्या हैं-कि बन में चारों ओर गायें मुंह बायें बिन तृन खायें-श्री कृष्णचंद की सुरत किये बासुरी की तान में मन दिये - रांभती हौंकती फिरती हैं ❁ तिन के पीछे पीछे ग्वाल बाल हरि जस गाते प्रेम रंगराते चले जाते हैं औ जिधर तिधर नगर निवासी लोग प्रभु के चरित्र औ लीला बखान रहे हैं ❁ महाराज-जन्मभूमि में जाय ब्रजवासियों औ गायों की यह अवस्था देखि बलराम जी करुनाकर नयन में नीर भर लाये ❁ आगे रथ की ध्वजा पताका देख श्री कृष्णचंद औ बलराम जी का आना जान सब ग्वाल बाल दौड आऐ ❁ प्रभु उन के आते ही रथ से उतर लगे एक एक के गले लग लग अति हित से क्षेमकुशल पूछने ❁ इस बीच किसी ने जा नंद जसोदा से कहा कि बलदेव जी आऐ - यह

समाचार पाते ही नंद जसोदा औ बडे बडे गोप ग्वाल उठ धाये ● उ हें दूर से आते देख बलराम जी दोडकर नंदराय के पाओं पर जाय गिरे - तब नंद जी ने अति आनंदकर नयनों में जल भर - बडे प्यार से बलराम जी को उठाय कंठ से लगाया औ वियोग दुख गंवाया ● पुनि प्रभु ने ●●

गहे चरन जसुमति के जाय ● उनि हितकर उर लिये लगाय ●
भुज भरि भेट कंठ गहि रही ● लोचन तें जल सलिता बही ●

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी ने राजा से कहा कि महाराज - ऐसे मिलजुल नंदराय जी बलराम जी को घर में ले जाय कुशल क्षेम पूछने लगे - कि कहो उग्रसेन वसुदेव आदि सब यादव औ श्री कृष्णचंद आनंदकंद आनंद से हैं और कभी हमारी सुरत करते हैं ● बलराम जी बोले कि आप की कृपा से सब आनंद मंगल से हैं औ सदा सर्वदा आप का गुन गाते रहते हैं ● इतना वचन सुन नंदराय चुप रहे - पुनि जसोदारानी श्री कृष्ण जी की सुरतकर लोचन में नीर भर अति व्याकुल हो बोलीं - कि बलदेव जी - हमारे प्यारे नैनों के तारे श्री कृष्ण जी अच्छे हैं ● बलराम जी ने कहा बहुत अच्छे हैं ● पुनि नंदरानी कहने लगीं - कि बलदेव - जब से हरि यहां से सिधारे तब से हमारी आंख आगे अंधेरा हो रहा है - हम आठ पहर उन्हीं का ध्यान किये रहते हैं औ वे हमारी सुरत भुलाय द्वारिका में जाय छाय रहे औ रदेखो बहन देवकी रोहनी भी हमारी प्रीति छोड बैठी ●●

मथुरा तें गोकुल ढिग जान्यौ ● बसी दूर तबही मन मान्यौ ●

भेटन मिलन आवते हरी ॥ फिर न मिलें ऐसी उन करी ॥

महाराज- इतना कह जब जसोदा जी अति व्याकुल हो रोने लगीं तब बलराम जी ने बहुत समझाय बुझाय आसा भरोसा दे उन को ढाढ़स बंधाया ॥ पुनि आप भोजन कर पान खाय घर से बाहर निकले तो क्या देखते हैं- कि सब ब्रज युवती तनछीन मनमलीन- छुटे केस मैले भेष- औ हारे घरबार की सुरत बिसारे- प्रेम रंगराती जोबन की माती- हरि गुन गातीं- बिरह में व्याकुल जिधर तिधर मत्तवत चली जाती हैं ॥ महाराज- बलराम जी को देखते ही अति प्रसन्न हो सब दौड आईं औ दंडवत कर हाथ जोड चारों ओर खडी हो लगीं पूछने औ कहने- कि कहो बलराम सुखधाम- अब कहां बिराजते हैं हमारे प्रान सुंदरस्याम ॥ कभी हमारी सुरत करते हैं बिहारी- कै राज पाट पाय पिछली प्रीति सब बिसारी ॥ जब से यहां से गये हैं तब से ऐकबार ऊधो के हाथ जोग का संदेसा कह पठाया था- फिर किसी की सुध नली ॥ अब जाय समुद्र माहिं बसे तो काहे को किसी की सोध लेंगे ॥ इतनी बात के सुनते ही ऐक गोपी बोल उठी- कि सखी- हरि की प्रीति का कौन करै परेखा - उन का तो देखा सब से यही लेखा ॥ ॥

वे काहू के नाहिन ईठ ॥ मात पिता कों जिन दई पीठ ॥

राधा बिन रहते नहीं घरी ॥ सोऊ है बरसाने परी ॥

पुनि हम तुम ने घर बार छोड- कुल कान लोक लाज तज- सुत पति त्याग -हरि से नेह लगाय क्या फल पाय ॥ निदान नेह की नाव पर चढाये -बिरह समुद्र मांझ छोड गये ॥ अब सुनती हैं कि द्वारिका में जाय प्रभु

ने बज्जत ब्याहकिये ओर सोलह सहस्र ऐक सौ राजकन्या जो भौमासुर ने घेर रक्खीथीं - तिन्हें भी श्री कृष्ण ने लाय ब्याहा ● अब उन से बेटे पोते नाती भये - उन्हें छोड यहां क्यों आवेंगे ● यह बात सुन ऐक ओर गोपी बोली कि सखी - तुम हरि की बातों का कुछ पछतावाही मत करो - क्यौं कि उन के तो गुन सब ऊधो जी ने आय ही सुनाऐ थे - इतना कह पुनि वह बोली - कि आली - मेरी बात मानौ तो अब ●●



हलधर जू के पर सौ पाय ● रहि हैं इन हीं के गुन गाय ●
ये हैं गौर स्याम नहिं गात ● करि हैं नाहिं कपट की बात ●
सुनि संकर्षन ऊतर दियौ ● तिहरे हेतु गवन हम कियौ ●
आवन हम तुम सों कहि गये ● तातें कृष्ण पठै ब्रज दये ●
रहि द्वैमास करेंगे रास ● पुजवेंगे सब तुम्हरी आस ●

महाराज - बलराम जी ने इतना कह सब ब्रजयुवतियों को आज्ञा दी - कि आज मधुमास की रात है तुम सिंगारकर बन में आओ - हम तुम्हारे साथ रास करेंगे ● यह कह बलराम जी सांझ समैं बन को सिधारे - तिन के पीछे सब ब्रज युवती भी सुथरे वस्त्र आभूषन पहन - नख सिख से सिंगारकर बलदेव जी के पास पज्जंचीं ●●

ठाढी भई सबै सिरनाय ● हलधर छवि बरनी नहीं जाय ●
कनक बरन नीलंबर धरें ● ससि मुख कंवल नयन मन हरें ●
कुंडल ऐक श्रवन छविछाजै ● मनौ भान ससि संग बिराजै ●
ऐक श्रवन हरि जस रसपान ● दूजौ कुंडल धरत न कान ●
अंग अंग प्रति भूषन घने ● तिन की शोभा कहत न बने ●

यों कहि पांय परी सुंदरी ॥ लीला राम करहु रसभरी ॥

महाराज - इतनी बात के सुनते ही बलराम जी ने हूं किया - हूं के करते ही रास की सब वस्तु आय उपस्थित हुई ॥ तब तो सब गोपियां सोच संकोच तज - अनुरागकर बीन - मृदंग - करताल - उपंग - मुरली आदि सब यंत्र लेले लगीं बजाने गाने औ थेई थेई कर नाच नाच भाव बताय बताय प्रभु को रिझाने ॥ उनका बजाना गाना नाचना सुन देख - मगन हो बारुनी पानकर बलदेव जी भी सब के साथ मिल गाने नाचने औ अनेक अनेक भांति के कुतूहल कर कर सुख देने लेने लगे ॥ उस काल देवता - गंधर्व - किन्नर - यक्ष - अपनी अपनी स्त्रीयों समेत आय आय - विमान पर बैठे प्रभु गुन गाय गाय अधर से फूल बरसाने थे ॥ चंद्रमा तारामंडल समेत रासमंडली का सुख देख देख किरनों से अमृत बरसाता था औ पवन पानी भी थंभ रहा था ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - इसी भांति बलराम जी ने ब्रज में रह चैत्र बैसाख दो महीने रात को तो ब्रज युवतियों के साथ रास बिलास किया औ दिन को हरि कथा सुनाय नंद जसोदा को सुख दिया ॥ बिसी में ऐक दिन रात समैं रास करते करते बलराम जी ने जा ॥॥

नदी तीर करके बिश्राम ॥ बोले तहां कोप के राम ॥
यमुना तू इतहीं बहि आव ॥ सहस धारकर मोहि न्हवाव ॥
जो न मानि है कह्यौ हमारौ ॥ खंड खंड जल होय तिहारौ ॥

महाराज - जब बलराम जी की बात अभिमानकर यमुना ने सुनी, अनसुनी ...

औ-तब तो इन्हों ने क्रोधकर उसे हल से खैंच ली औ स्नान किया ● उसी दिन से वहां यमुना अब तक टेढी है ● आगे न्हाय श्रम मिटाय बलराम जी सब गोपियों को सुख दे साथ ले वन से चल नगर में आये-वहां ●●

गोपी कहैं सुनौ ब्रजनाथ ● हम कौं हूं लैचलियौ साथ ●

यह बात सुन बलराम जी गोपियों को आसा भरोसा दे - ढाढस बंधाय बिदाकर बिदाहोन नंद जसोदा के निकट गये ● पुनि तिन्हें भी समझाय बुझाय धीरज बंधाय-कई दिन रह बिदा हो द्वारिका को चले औ कितने एक दिनों में जाय पहुंचे ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे बलभद्र चरित्रो नाम षष्ठ षष्ठितमोध्यायः ● ॥ ६६ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-काशीपुरी में एक पौन्ड्रक नाम राजा - सो महा बली औ बड़ा प्रतापी था ● तिस ने विष्णु का भेष किया औ छल बलकर सब का मन हर लिया ● सदा पीत बसन-बैजंतीमाल-मुक्तमाल-मनिमाल पहने रहै औ संख-चक्र-गदा-पद्म लिये-दो हाथ काठ के किये-एक घोडे पर काठ ही का गरुड धरे उस पर चढा फिरै-वह वासुदेव पौन्ड्रक कहावे औ सब से आप को पुजावे ● जो राजा उसकी आज्ञा न माने उस पर चढ जाय-फिर मारधाडकर विसे अपने बस में रक्खै ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि राजा-विस का यह आचरन देख सुन देस देस-नगर नगर-गांव गांव-घर घर में लोग चरचा

करने लगे-कि एक वासुदेव तो ब्रजभूमि के बीच यदुकुल में प्रगट हुए थे सो द्वारिकापुरी में बिराजते हैं-दूसरा अब काशी में हुआ है ॥ दोनों में हम किसे सच्चा जाने औ माने ॥ महाराज - देस देस में यह चरचा होरही थी कि कुछ संधान पाय-वासुदेव पौन्ड्रक एक दिन अपनी सभा में आय बोला ॥ ॥

कोहै कृष्ण द्वारिका रहै ॥ ताकौं वासुदेव जग कहै ॥
भक्त हेतु भू हौं औतर्यौ ॥ मेरो भेष तहां तिन धर्यौ ॥

इतनी बातें कह एक दूत को बुलाय- उस ने ऊंच नीच की बातें सब समझाय बुझाय-इतना कह द्वारिका में श्री कृष्णचंद जी के पास भेज दिया-कि कैतो मेरा भेष बनाए फिरता है सो छोड दे-नहीं तो लडने का बिचार कर ॥ आज्ञा पाते ही दूत बिदा हो काशी से चला चला द्वारिकापुरी पहुंचा औ श्री कृष्णचंद जी की सभा में जा उपस्थित हुआ ॥ प्रभु ने इस से पूछा कि तू कौन है और कहां से आया है ॥ बोला मैं काशीपुरी के वासुदेव पौन्ड्रक का दूत हूं - स्वामी का पठाया कुछ संदेसा कहन आपके पास आया हूं ॥ कहो तो कहूं -श्री कृष्णचंद बोले अच्छा कह ॥ प्रभु के मुख से यह बचन निकलते ही दूत खडा हो हाथ जोड कहने लगा-कि महाराज- वासुदेव पौन्ड्रक ने कहा है कि त्रिभुवन पति जगत का करता तो मैं हूं-तू कौन है जो मेरा भेष बनाय-जरासिंधु के डर से भाग द्वारिका में जाय रहा है ॥ कैतो मेरा बाना छोड शीघ्र आय मेरी सरन गह - नहीं तो तेरे सब यदुबंसियों समेत तुझे आय मारूंगा औ भूमि का भार उतार अपने भक्तों को पालूंगा ॥ मैं ही हूं अलख अ-

गोचर निरंकार ● मेरा ही जप-तप-यज्ञ-दान-करते हैं सुर-मुनि -ऋषि-नर बार बार-मैं हीं ब्रह्मा हो बनाता हूं -बिष्णु हो पालता हूं- शिव हो संहारता हूं ● मैं ने हीं मच्छ रूप हो बेद डूबते निकाले-कच्छ सरूप हो गिर धारन किया-बाराह बन भूमि को रखलिया-न्रसिंह अवतार ले हिरनकस्यप को बध किया-बावन अवतार ले बल को छला-रामाअवतार ले महा दुष्ट रावन को मारा ● मेरा यही काम है कि जब जब असुर मेरे भक्तों को आय सताते हैं-तब तब मैं अवतार ले भूमिका भार उतारता हूं ● 

इतनी कथा कंथ श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा-कि महाराज-वासुदेव पौन्ड्रक का दूत तो इस ढब की बातें करता था औ श्री कृष्णचंद आनंदकंद रत्न सिंहासन पर बैठे यादवों की सभा में हंस हंसकर सुनते थे-कि इस बीच कोई यदुवंसी बोल उठा ●●

तोहि कहा जम आयौ लैन ● भाखत तू जो ऐसे बैन ●

मारें कहा तोहि हम नीच ● आयौ है कपटी के बीच ●

जो तू बसीठ न होता तो बिन मारे न छोडतें-दूत को मारना उचित नहीं ● महाराज-जब यदुवंसी ने यह बात कही तब श्री कृष्ण जी ने उस दूत को निकट बुलाय-समुझाय बुझाय के कहा कि तू जाय अपने वासुदेव से कह-कि कृष्ण ने कहा है जो मैं तेरा बाना छोड सरन आता हूं सावधान होरहे ● इतनी बात के सुनते ही दूत डंडवतकर बिदा हुआ औ श्री कृष्णचंद जी भी अपनी सेना ले काशीपुरी को सिधारे ● दूत ने जाय वासुदेव पौन्ड्रक से कहा कि महाराज-मैं ने द्वारिका में जाय आ

प का कहा संदेसा सब श्री कृष्ण को सुनाया ● सुनकर उन्हों ने कहा कि तू अपने स्वामी से जाय कह कि सावधान होरहै-मैं उस का बाना छोड सरन लेन आता हूं ●

महाराज-बसीठ यह बात कहता ही था कि किसी ने आय कहा-कि महाराज-आप निचिंत क्या बैठे हो श्री कृष्ण अपनी सेना ले चढि आया ● इतनी बात के सुनते ही वासुदेव पौन्ड्रक उसी भेष से अपना सब कटक ले चढ धाया औ चला चला श्री कृष्णचंद जी के सनमुख आया-तिस के साथ ऐक और भी काशी का राजा चढ दौडा ● दोनों ओर दल तुल कर खडे ऊए-जुझाऊं बाजने लगे-सूर वीर रावत लडने औ कायर खेत छोड छोड अपना जीव ले ले भागने लगे ● उस काल युद्ध करता करता कालबस हो वासुदेव पौन्ड्रक-उसी भांति श्री कृष्णचंद जी के सनमुख आ ललकारा ● उसे विष्णु भेष से देख सब यदुबंसियों ने श्री कृष्णचंद से पूछा-कि महाराज-इसे इस भेष से कैसे मारेंगे-प्रभु ने कहा कपटी के मारने का कुछ दोष नहीं ●

इतना कह हरि ने सुदरसन चक्र को आज्ञा दी-उस ने जाते ही जो दो भुजा काठ की थीं सो उखाड लीं-उस के साथ गरुड भी टूटा औ तुरंग भागा ● जब वासुदेव पौन्ड्रक नीचे गिरा तब सुदरसन ने उस का सिर काट फेंका ●●

कटत सीस न्टप पौन्ड्रक तस्यौ ● सीस जाय काशी में पस्यौ ●
जहां कुतौ ताकौ रनवासु ● देखत सीस सुंदरी तासु ●
रोवें यों कहि खेंचें बार ● यह गति कहा भई करतार ●

तुम तो अजर अमर है भये ● कैसे प्रान पलक में गये ● 

महाराज-रानियों का रोना सुन सुदक्ष नाम उस का एक बेटा था सो व 
हां आय-बाप का सिर कटा देख अति क्रोधकर कहने लगा-कि जिस ने मेरे पिता को मारा है उस से मैं बिन पलटा लिये न रहूंगा ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-वासुदेव पौन्ड्रक को मार श्री कृष्णचंद जी तो अपना सब कटक ले द्वारिका को सिधारे औ उस का बेटा अपने बाप का बैर लेने को महादेव जी की अति कठिन तपस्या करने लगा ● इस में कितने एक दिन पीछे एक दिन प्रसन्न हो महादेव भोलानाथ ने आय कहा-कि बर माग ● यह बोला महाराज-मुझे यही बर दीजे कि श्री कृष्ण से मैं अपने पिता का बैर लूं ● शिव जी बोले अच्छा जो तू बैर लिया चाहता है तो एक काम कर-बोला क्या-कहा उलटे बेद मंत्रों से यज्ञ कर-इस से एक राक्षसी अग्नि से निकलेगी-उस से जो तू कहैगा सो वह करेगी ● इतना बचन शिव जी के मुख से सुन महाराज-वह जाय ब्राह्मनों को बुलवाय बेदी रच तिल-जौ-घी-चीनी आदि सब होम की सामा ले शाकल बनाय लगा उलटे बेद मंत्र पढ पढ होम करने ● निदान यज्ञ करते करते अग्नि कुंड से कृत्या नाम एक राक्षसी निकली-सो श्री कृष्ण जी के पीछे ही पीछे नगर देस गांव जलाती जलाती द्वारिकापुरी में पहुंची औ लगी पुरी को जलाने ● नगर को जलता देख सब यदुबंसी भयखाय श्री कृष्णचंद जी के पास जा पुकारे-कि महाराज-इस आग से कैसे बचेंगे यह तो सारे नगर को जलाती चली आती है ● प्रभु बोले तुम किसी बात की चिं

तो मत करो-यह कृत्या नाम राक्षसी काशी से आई है-मैं अभी इस का उपाय करता हूं ॥

महाराज-इतना कह श्री कृष्ण जी ने सुदरसन चक्र को आज्ञा दी कि इसे मार भगाव औ इसी समय जाय काशीपुरी को जलाय आव ॥ हरि की आज्ञा पाते ही सुदरसन चक्र ने कृत्या को मार भगाया औ बात के कहते ही काशी को जा जलाया ॥॥

परजा भागी फिरै दुखारी ॥ गारी देहि सुदक्ष हि भारी ॥
फिर्यौ चक्र शिवपुरी जराय ॥ सोई कही कृष्ण सों आय ॥

इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे न्रप पौन्ड्रक मोक्षो नाम सप्त षष्ठितमोध्यायः ॥ ॥ ६७ ॥ ॥॥

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-जैसे बलराम सुखधाम रूपनिधान ने दुविद कपि को मारा-तैसे ही मैं कथा कहता हूं-तुम चित दे सुनौ ॥ एक दिन दुविद जो सुग्रीव का मंत्री औ मयंद्री कपि का भाई औ भौमासुर का सखा था-कहने लगा ॥ कि एक सूल मेरे मन में है सो जब तब खटकता है ॥ यह बात सुन किसी ने उस से पूछा कि महाराज-सो क्या ॥ बोला-जिस ने मेरे मित्र भौमासुर को मारा तिसे मारूं तो मेरे मन का दुख जाय ॥

महाराज-इतना कह वह विसी समैं अति क्रोधकर द्वारिकापुरी को चला औ कृष्णचंद के देस उजाडता औ लोगों को दुख देता ॥ किसी को पानी बरसाय बहाया-किसी को आग बरसाय जलाया ॥ किसी को

पहाड से पटका - किसी पर पहाड दे पटका ● किसी को समुद्र में डु
बाया - किसी को पकड बांध गुफामें छिपाया ● किसी का पेट फाडडाला
- किसी पर वृक्ष उखाड मारा ● इसी रीति से लोगों को सताता जाता
था औ जहां मुनि-ऋषि-देवताओं को बैठे पाता था - तहां गू-मूत-रु
धिर बरसाता था ● निदान इसी भांति लोगों को दुख देता औ उपाध
करता जा द्वारिकापुरी पहुंचा औ अलप तनधर श्री कृष्णचंद्र के मंदि
र पर जा बैठा ● उस को देख सब सुंदर मंदिर के भीतर किवाड दे
दे भागकर जाय छिपीं ● तब तो वह मन हीं मन यह विचार बलराम
जी के समाचार पाय रैवतगिर पर गया कि ●●

पहले हलधर कौं बध करौं ● पाछे प्रान कृष्ण के हरौं ●

जहां बलदेव जी स्त्रियों के साथ बिहार करते थे ● महाराज - छिपकर
यह वहां क्या देखता है कि बलराम जी मद पी सब स्त्रियों को साथ ले
एक सरोवर बीच - अनेक अनेक भांति की लीला कर कर गाय गाय न्हा
य न्हिलाय रहे हैं ● यह चरित्र देख द्विविद एक पेड पर जा चढा औ
किलकारियां मार मार घुरक घुरक लगा डाल डाल कूद कूद फिर फि
र चरित्र करने औ जहां मदिरा का भरा कलस औ सब के चीर धरे थे
तिन पर हगने मूतने लगा ● बंदर को सब सुंदरी देखते ही डरकर
पुकारीं - कि महाराज - यह कपि कहां से आया जो हमें डराय डराय - हमारे
बस्त्रों पर हग मूत रहा है ● इतनी बात के सुनते ही बलदेव जी ने स
रोवर से निकल जों हंस के ढेल चलाया - तो वह इन को मतवाला जान
भज्ञ बांधकर किलकारी मार नीचे आया ● आते ही उस ने मद का भ

र घंडा जो तीर पर धरा था सो लुढ़ाय दिया औ सारे चीर फाड लीर
लीर कर डाले ❁ तब तो क्रोधकर बलराम जी ने हलमूसल संभाले औ
वह भी पर्वत सम हो प्रभु के सोंहीं युद्ध करने को आय उपस्थित हु
आ ❁ इधर से ये हलमूसल चलाते थे औ उधर से वह पेड पर्वत
❁❁ चौ०

महा युद्ध दोऊ मिल करैं ❁ नैक न कहूं ठौरतें टरैं ❁

महाराज - ये तो दोनों बली अनेक अनेक प्रकार की घातें बातें कर निध
डक लडते थे - पर देखनेवालों का मारे भय के प्रान ही निकलता था ❁
निदान प्रभु ने सब को दुखित जान दुबिद को मार गिराया - उस के म
रते ही सुर नर मुनि सब के जी को आनंद हुआ औ दुख दंद गया
❁❁ चौ०

फूले देव पहुप बरसावैं ❁ जैजैकर हलधर हि सुनावैं ❁

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने कहा कि महाराज - त्रेतायुग से वह
बंदर ही था जिसे बलदेव जी ने मार उद्धार किया ❁ आगे बलराम सु
खधाम सब को सुख दे वहां से साथ ले - श्री द्वारिकापुरी में आए औ
दुबिद के मारने के समाचार सारे यदुबंसियों को सुनाए ❁ इति श्री
लाल कृते प्रेमसागरे बलभद्र चरित्रे दुबिद कपि बधो नाम अष्ट षष्ठि
तमोध्यायः ❁ ॥ ६८ ॥ ❁❁

श्री शुकदेव जी बोले कि राजा - अब मैं दुर्योधन की बेटी लक्ष्मना के बि
बाह की कथा कहता हूं - कि जैसे संबू हस्तनापुर जाय उसे ब्याह लाए

॥ प्रेम० ॥
॥ ३३५ ॥

● महाराज - राजा दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मना जब ब्याहन जोग हुई - त ब उस के पिता ने सब देस देस के नरेसों को पत्र लिख लिख बुलाया औ स्वयंबर किया ● स्वयंबर के समाचार पाय श्री कृष्णचंद का पुत्र जो जामवती से था - संबू नाम वह भी वहां पहुंचा ● वहां जाय संबू क्या देखता है कि देस देस के नरेस - बलवान - गुनवान - रूपनिधान - महा ज्ञान - सुथरे वस्त्र आभूषन रत्न जटित पहने - अस्त्र शस्त्र बांधे मौन साधे स्वयंबर के बीच पांति पांति खडे हैं औ उन के पीछे उसी भांति स ब कौरव भी ● जहां तहां बाहर बाजन बाज रहे हैं - भीतर मंगली लो ग मंगलाचार कर रहे हैं - सब के बीच राज कुमारी मात पिता कीप्यारी - मन ही मन यों कहती हार लिये आंखों की सी पुतली फिरती है - कि मैं किसे बरूं ●

महाराज - जब वह सुंदरि शीलवान - रूपनिधान - माला लिये लाज किये - फिरती फिरती संबू के सनमुख आई - तब इन्हों ने सोच संकोच तज निर्भय उसे हाथ पकड रथ में बैठाय अपनी बाट ली ● सब ह जा खडे मुंह देखते रह गये और कर्न - द्रोन - सल्य - भूरिश्रवा - दुर्योधन आदि सारे कौरव भी उस समय कुछ न बोले - पुनि अति क्रोधकर आ पस में कहने लगे कि देखो इस ने क्या काम किया - जो रस में आय अ नरस किया ● कर्न बोला कि यदुबंसियों की सदा से यह टेव है - कि जहां कहीं शुभ काज में आते हैं तहां उपाध ही करते हैं - सल्य ने क हा ●●

जात हीन अब हीं ये बढे ● राज पाय माथे पर चढे ●

इतनी बात के सुनते ही सब कौरव महा कोपकर अपने अपने अस्त्र शस्त्र ले यों कह चल दौडे कि देखें वह कैसा बली है जो हमारे आगे से कन्या से निकल जायगा औ बीच बाट के संबू को जा घेरा ● आगे दोनों ओर से शस्त्र चलने लगे - निदान कितनी एक बेर के लडने में जब संबू का सारथी मारा गया औ वह नीचे उतरा - तब ये उसे घेर पकड कर बांध लाए ● सभा के बीचों बीच खडा कर इन्हों ने उस से पूछा कि अब तेरा पराक्रम कहां गया - यह बात सुन वह लजाय रहा ● इस में नारद जी ने आय राजा दुर्योधन समेत सब कौरवों से कहा - कि यह संबू नाम श्री कृष्णचंद्र का पुत्र है तुम इसे कुछ मत कहो - जो होना था सो हुआ ● अभी इस के समाचार पाय दल साज आवेंगे श्री कृष्ण औ बलराम - जो कुछ कहना सुनना हो सो उन से कह सुन लीजो - लडके से बात कहनी तुम्हें किसी भांति उचित नहीं इस ने लडक बुद्धि की तो की ● महाराज - इतना वचन कह नारद जी वहां से बिदा हो - चले चले द्वारिका पुरी को गये औ उग्रसेन राजा की सभा में जा खडे रहे ●●

देखत सबै उठे सिर नाय ● आसन दियौ ततछन लाय ●

बैठते ही नारद जी बोले कि महाराज - कौरवों ने संबू को बांध महा दुख दिया औ देते हैं - जो इस समैं जाय उस की सुध लो तो लो - नहीं फिर संबू का बचना कठिन है ●●

गर्व भयौ कौरव कौं भारी ● लाज सकुच नहीं करी बिचारी ●

बालक कौं बांध्यौ उन ऐसें ● शत्रु कौं बांधे कोऊ जैसें ●

इस बात के सुनते ही राजा उग्रसेन ने अति कोपकर यदुबंसियों को बु

जाय के कहा-कि तुम अभी सब हमारा कटक ले हस्तनापुर पर चढ जा
ओ औ कौरवों को मार संबू को छुडाय लेआओ ● राजा की आज्ञा पाते ही
जों सब दल चलने को उपस्थित हुआ - तों बलराम जी ने जाय राजा
उग्रसेन से समझायकर कहा कि महाराज-आप उन पर सेना न पठा
इये-मुझे आज्ञा कीजे जो मैं जाय उन्हें उलहनादे संबू को छुडाय ला
ऊं ● देखूं तिन्हों ने किस लिये संबू को पकड बांधा- इस बात का भेद
बिन मेरे गये न खुलेगा ●

इतनी बात के कहते ही राजा उग्रसेन ने बलराम जी को हस्तनापु
र जाने की आज्ञा दी औ बलदेव जी कितने एक बडे बडे पंडित ब्राह्मन
औ नारद मुनि को साथ ले द्वारिका से चल चले चले हस्तनापुर पहुं
चे ● उस समय प्रभु ने नगर के बाहर एक बाडी में डेराकर नारद
जी से कहा-कि महाराज-हम यहां उतरे हैं आप जाय कौरवों से ह
मारे आने के समाचार कहिये ● प्रभु की आज्ञा पाय नारद जी ने नग
र में जाय बलराम जी के आने के समाचार सुनाए ●●

सुन कै सावधान सब भए ● आगे होय लेन तहां गए ●
भीषम कर्न द्रोन मिल चले ● लीने बसन पटंबर भले ●
दुर्योधन यों कहि कै धायौ ● मेरौ गुरु संकर्षन आयौ ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा से कहा कि महाराज-सब कौ
रवों ने उस बाडी में जाय बलराम जी से भेट कर भेट दी औ पाओं प
ड हाथ जोड बहुत सी स्तुति की ● आगे चोआ चंदन लगाय- फूलमा
ल पहराय-पाटंबर के पांवडे बिछाय-बाजेगाजे से नगर में लिवालाए ●

पुनि षटरस भोजन करवाय-पास बैठ सब की कुशल क्षेम पूछ पूछा -कि महाराज- आप का आना यहां कैसे हुआ ● कौरवों के मुख से यह बात निकलते ही बलराम जी बोले -कि हम राजा उग्रसेन के पठाये- संदेसा कहन तुम्हारे पास आये हैं ● कौरव बोले कहो -बलदेव जी ने कहा कि राजा जी ने कहा है कि तुम्हें हम से विरोध करना उचित न था ●●

तुम हो बहुत सो बालक एक ● कियौ युद्ध तज ज्ञान बिवेक ●
महा अधर्म जान कै कियौ ● लोक लाज तज सुत गह लियौ ●
ऐसौ गर्व तुम्हें अब भयौ ● समझ बूझ ताकौं दुख दयौ ●

महाराज -इतनी बात के सुनते ही कौरव महा कोपकर बोले-कि बलराम जी बसकरो बसकरो अधिक बडाई उग्रसेन की मत करो- हम से यह बात सुनी नहीं जाती ● चार दिन की बात है कि उग्रसेन को कोई जानता मानता न था - जब से हमारे यहां सगाई की तभी से प्रभुता पाई-अब हमी से अभिमान की बात कह पठाई ● उसे लाज नहीं आती जो द्वारिका में बैठा राज पाय- पिछली बात सब गंवाय जो मनमानता है सो कहता है ● वह दिन भूल गया कि मथुरा में ग्वाल गूजरों के साथ रहता खाता था-जैसा हमने साथ खिलाय संबंधकर राज दिलवाया -तिस का फल हाथों हाथ पाया ● जो किसी पूरे पर गुन करते तो वह जन्म भर हमारा गुन मानता-किसी ने सच कहा है कि ओछे की प्रीत बालू की भींत समान है ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले महाराज- ऐसे अनेक अने

क प्रकार की बातें कह कह कर्न - द्रोन-भीषम - दुर्योधन-सल्य आदि सब कौरव गर्वकर उठ उठ अपने घर गऐ औ बलराम जी उन की बातें सुन सुन हंसि हंसि वहां बैठे मन हीं मन यों कहते रहे ● कि इन को राज औ बल का गर्भ भया है जो ऐसी ऐसी बातें करते हैं - नहीं तो ब्रह्मा - रुद्र - इंद्रकाईस - जिसे निवावैं सीस - तिस उग्रसेन की ये निंदा करैं ● तौ मेरा नाम बलदेव जो सब कौरवों को नगर समेत गंगा में डबोऊं - नहीं तो नहीं ●

महाराज - इतना कह बलदेव जी अति क्रोधकर सब कौरवों को नगर समेत हल से खैंच गंगा तीर पर लेगऐ औ चाहैं कि डबोवैं - तों हीं अति घबराय भयखाय सब कौरव आय - हाथ जोड सिरनाय गिडगिडाय बिनतीकर बोले ● कि महाराज-हमारा अपराध क्षमा कीजे - हम आप की सरन आऐ अब बचाय लीजे ● जो कहोगे सो करैंगे - सदा राजा उग्रसेन की आज्ञा में रहैंगे ● राजा - इतनी बात के कहते ही बलराम जी का क्रोध शांत हुआ औ जो हल से खैंच नगर गंगा तीर पर लाऐ थे सो वहीं रक्खा - तिसी दिनसे हस्तनापुर गंगा तीर पर है - पहले वहां न था ● आगे उन्होंने संबू को छोड दिया औ राजा दुर्योधन ने लछमती जी को मनाय - घर में लेजाय मंगलाचार करवाय - बेद की बिध से संबू को कन्या दान दिया औ उस के यौतुक में बहुत कुछ संकल्प किया ●

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी ने कहा कि महाराज - ऐसे बलराम जी हस्तनापुर जाय कौरवों का गर्व गंवाय - भती जे को छुडाय ब्याह ला

ऐ ● उस काल सारी द्वारिकापुरी में आनंद होगया औ वलदेव जी ने हस्तनापुर का सब समाचार ब्योरे समेत समझाय राजा उग्रसेन के पास जाय कहा ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे संबू विवाह कथनो नाम एकोन सप्ततिमोध्यायः ● ॥ ६९ ॥ ●●

●●●●●●●●●●●●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज ▾ एक समय नारद जी के मन में आई - कि श्री कृष्णचंद सोलह सहस्र एक सौ आठ स्त्री ले - कैसे ग्रहस्ताश्रम करते हैं सो चलकर देखाचाहिये ● इतना विचार चले चले द्वारिका पुरी में आये - तो नगर के बाहर क्या देखते हैं - कि कहीं बाडियों में नाना भांति के बडे बडे ऊंचे ऊंचे ब्रक्ष हरे फल फूलों से भरे खरे झूम रहे हैं ● तिन पर कपोत - कीर - चातक - मोर आदि पक्षी मन भावन बोलियां बैठे बोल रहे हैं ● कहीं सुंदर सरोवरों में कंवल खिले ऊरे - तिन पर भौंरों के झुंड के झुंड गूंज रहे - तीर में हंस - सारस समेत खग कुलाहलकर रहे हैं ● कहीं फुलवाडियों में माली मीठे सुरों से गाय गाय - ऊंचे नीचे नीर चलाय क्यारियों में जल सींच रहे हैं ● कहीं इंदारे बावडियों पर रहंट परोहे चल रहे हैं औ पन घट पर पनहारियों के ठट्ठ के ठट्ठ लगे हैं - तिन की शोभा कुछ बरनी नहीं जाती वह देखे ही बन आवे ●

महाराज - यह शोभा बन उपबन की निरख हरष नारद जी पुरी में जाय देखें तो अति सुंदर कंचन के मनिमय मंदिर जगमगाय रहे हैं - तिन पर ध्वजा पताका फहराय रही हैं - बार बार में तोरन बंदन

धंर बंधी हैं-द्वार द्वार पर केलेके खंभ औ कंचन के कुंभ सपल्लव भरे धरे हैं-घर घर की जाली झरोखों मोखों से धूप का धुंआं निकल स्याम घटा सा मंडलाय रहा है-उस के बीच बीच सोने के कलस कलसियां बिजली सी चमक रही हैं-घर घर पूजा पाठ होम यज्ञ दान होरहा है-ठौर ठौर भजन सुमिरन गान कथा पुरान की चरचा चलरही है-जहां तहां यदुवंसी इंद्र की सी सभा किये बैठे हैं औ सारे नगर में सुख छाय रहा है ◉

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज-नारद जी पुरी में जाते ही मगन हो कहने लगे कि प्रथम किस मंदिर में जाऊं जो श्री कृष्नचंद को पाऊं ◉ महाराज-मन हीं मन इतना कह नारद जी पहले-श्री रुक्मिनी जी के मंदिर में गये-वहां श्री कृष्नचंद विराजते थे सो इन्हें देख उठ खडे भये ◉ रुक्मिनी जी जल की झारी भर लाईं-प्रभु ने पांवधोय आसन पर बैठाय-धूप दीप नैवेद्यधर पूजाकर हाथ जोड़ नारद जी से कहा ◉◉

जा घर चरन साधके परैं ◉ ते नर सुख संपत अनुसरैं ◉
हम से कुटमी तारन हेतु ◉ घर हि आय तुम दरसन देतु ◉

महाराज-प्रभु के मुख से इतना बचन निकलते ही यह असीस दे नारद जी जंबावती के मंदिर में गये-कि जगदीस-तुम चिर थिर रहो श्री रुक्मिनी जी के सीस-तो देखा कि हरि सारपासे खेल रहे हैं ◉ नारद जी को देखते ही जों प्रभु उठे तों नारद जी आशीर्वाद दे उलटे फिरे ◉ पुनि सतिभामा के यहां गये तो देखा कि श्री कृष्नचंद बैठे तेल उ

बटन लगवाय रहे हैं ● वहां से चुपचाप नारद जी फिर आये- इस लिये कि शास्त्र में लिखा है जो तेल लगाने के समैं न राजा प्रनाम करै न ब्राह्मन असीस ● आगे नारद जी कालिंदी के घर गये- वहां देखा कि हरि सोरहे हैं ● महाराज - कालिंदी ने नारद जी को देखते ही हरि को पांव दाब जगाया-प्रभु जागते ही ऋषि के निकट जाय दंडवत कर हाथ जोड बोले-कि साध के चरन तीरथ के जल समान हैं-जहां पडें तहां पवित्र करते हैं ● यह सुन वहां से भी असीस दे नारद जी चल खडे हुए औ मित्रविंदा के धाम गए- तहां देखा कि ब्रह्मभोज हो रहा है औ श्री कृष्ण परोसते हैं ● नारद जी को देख प्रभु ने कहा कि महाराज - जो कृपाकर आये हो तो आप भी प्रसाद ले हमें उच्छिष्ट दीजे औ घर पवित्र कीजे ● नारद जी ने कहा महाराज-मैं थोडा फिर आऊं फिर आऊंगा- ब्राह्मनों को जिमा लीजे पुनि ब्रह्म शेष आय मैं पाऊंगा ● यों सुनाय नारद जी बिदा हो सत्या के गेह पधारे - वहां क्या देखते हैं कि श्री बिहारी भक्त हितकारी आनंद से बैठे बिहार कर रहे हैं ● यह चरित्र देख नारद जी उलटे पावों फिरे- पुनि भद्रा के स्थान पर गए तो देखा कि हरि भोजन कर रहे हैं ● वहां से फिरे तो लक्ष्मना के गेह पधारे - तो तहां देखा कि प्रभु स्नान कर रहे हैं ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने कहा कि महाराज - इसी भांति नारद मुनि जी सोलह सहस्र एक सौ आठ घर फिरे-पर बिन श्री कृष्ण कोई घर न देखा ● जहां देखा तहां हरि को गृहस्थाश्रम का काज ही करते देखा-यह चरित्र लख ●

नारद के मन अचरज ऐह ❁ कृष्ण बिना नहीं कोऊ गेह ❁
जा घर जांऊ तहां हरि प्यारी ❁ ऐसी प्रभु लीला विस्तारी ❁
सोलह सहस्र अठोतर सौ घर ❁ तहां तहां सुंदरि संग गिरधर ❁
मगन होय ऋषि कहत बिचारी ❁ जोग माया यदुनाथ तिहारी ❁
काहू सों नहीं जानी परै ❁ कौन तिहारी माया तरै ❁

महाराज- जब नारद जी ने अचंभाकर कहे ये बैन -तब बोले प्रभु श्री कृष्णचंद सुख देन ❁ कि नारद तू अपने मन में कुछ खेद मत करै- मेरी माया अति प्रबल है औ सारे संसार में फैल रही है- यह मुझे ही मोहती है तो दूसरे की क्या सामर्थ जो इस के हाथ से बचे औ जगत के बीच आय इस में न रचे ❁❁

नारद सुन बिनवै सिरनाय ❁ मो पर कृपा करौ यदुराय ❁

जो आप की भक्ति सदा मेरे चित में रहे औ मेरा मन माया के बस होय विषय की वासना न चहे ❁ राजा इतना कह नारद जी प्रभु से बिदा हो दंडवत कर बीन बजाते गुन गाते अपने स्थान को गये औ श्री कृष्णचंद जी द्वारिका में लीला करने रहे ❁ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे नारद माया दरसनो नाम सप्ततिमोध्यायः ❁ ॥ ७० ॥ ❁❁

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - एक दिन श्री कृष्णचंद रात समैं श्री रुक्मिनी जी के साथ विहार करते थे औ श्री रुक्मिनी जी आनंद में मगन बैठीं प्रीतम का चंदमुख निरख अपने नयन चकोरों को सुख देती थीं- कि इस बीच रात बितीत भई ❁ चिड़ियां चुहचहाई - अंबर में

अरुनाई छाई ॐ चकोर को बियोग हुआ औ चकवा चकवियों को संजोग ॐ कंवल बिकसे-कमोदनी कुम्हलाई-चंद्रमा छबिछीन भया औ सूरज का तेज बढ़ा-सब लोग जागे औ अपना अपना ग्रह काज करन लागे ॐ

उस काल रुक्मिनी जी तो हरि के समीप से उठ सोच संकोच लिये-घर की टहल टकोर करने लगीं औ श्री कृष्णचंद जी देह शुद्धकर हाथ मुंह धोय-स्नानकर जप ध्यान पूजा तर्पन से निचिंत होय-ब्राह्मनों को नाना प्रकार के दान दे-नित्य कर्म से सुचित हो-बालभोग पाय पान लौंग इलायची जायपत्री जायफल के साथ खाय-सुथरे वस्त्र आभूषन मंगाय पहन-शस्त्र लगाय राजा उग्रसेन के पास गये ॐ पुनि जुहार कर यदुबंसियों की सभा के बीच आय रत्न सिंहासन पर बिराजे ॐ

महाराज-उसी समैं एक ब्राह्मन ने जाय द्वारपालों से कहा-कि तुम श्री कृष्णचंद्र जी से जाकर कहो कि एक ब्राह्मन आप के दरसन की अभिलाषा किये द्वार पर खड़ा है जो प्रभु की आज्ञा पावे तो भीतर आवे ॐ ब्राह्मन की बात सुन द्वारपाल ने भगवान से आ कहा-कि महाराज-एक ब्राह्मन आप के दरसन की अभिलाषा किये पौर पर खड़ा है-जो आज्ञा पावे तो आवे ॐ हरि बोले अभी लाव-प्रभु के मुख से बात निकलते ही-द्वारपाल हाथों हाथ ब्राह्मन को सनमुख ले गये ॐ बिप्र को देखते ही श्री कृष्णचंद्र सिंहासन से उतर दंडवतकर आगू बढ़ हाथ पकड़ उसे मंदिर में ले गये औ रत्न सिंहासन पर अपने पास बिठाय पूछने लगे-कि कहो देवता-आप का आना कहां से हुआ औ किस कार्य के हेतु

पधारे ● ब्राह्मन बोला कृपासिंधु-दीनबंधु-मैं मगध देस से आया हूं औ बीस सहस्र राजाओं का संदेसा लाया हूं ● प्रभु बोले सो क्या-ब्राह्मन ने कहा महाराज-जिन बीस सहस्र राजाओं को जुरासिंधु ने बलकर पकड हथकडी बेडी दे रक्खा है-तिन्हों ने मेरे हाथ आप को अति बिनतीकर यह संदेसा कहला भेजा है ● दीनानाथ- तुम्हारी सदा सर्वदा यह रीति है कि जब जब असुर तुम्हारे भक्तों को सताते हैं- तब तब तुम अवतार ले अपने भक्तों की रक्षाकरते हो ● नाथ- जैसे हिरनकस्यप से प्रहलाद को छुडाया औ गज को ग्राह से-तैसे ही दयाकर अब हमें इस महा दुष्ट के हाथ से छुडाइये-हम महा कष्ट में हैं तुम बिन और किसी की सामर्थ नहीं जो इस महा बिपत से निकाले औ हमारा उद्धार करे ●

महाराज- इतनी बात के सुनते ही प्रभु दयाल हो बोले कि हे देवता-तुम अब चिंता मत करो बिन की चिंता मुझे है-इतनी बात के सुनते ही ब्राह्मन संतोषकर श्री कृष्णचंद को असीस देने लगा ● इस बीच नारद जी आ उपस्थित हुए - प्रनामकर श्री कृष्णचंद ने उन से पूछा- कि नारद जी - तुम सब ठौर जाते आते हो कहो हमारे भाई युधिष्ठिर आदि पांचों पांडव इन दिनों कैसे हैं औ क्या करते हैं ● बहुत दिन से हम ने उन के कुछ समाचार नहीं पाए-इस से हमारा चित उन्हीं में लगा है ● नारद जी बोले कि महाराज- मैं तिन्हीं के पास से आता हूं- हैं तो कुशल क्षेम से पर इन दिनों राजसू यज्ञ करने के लिये निपट भावित हो रहे हैं औ घड़ी घड़ी यह कहते हैं कि बिना श्री

कृष्णचंद की सहायता के हमारा यज्ञ पूरा न होगा-इस से महाराज-मेरा कहा मानिये तो ●●

पहिले उन कौ यज्ञ संवारौ ● पाछें अनत कहूं पगधारौ ●

महाराज-इतनी बात नारद जी के मुख से सुनते ही प्रभु ने ऊधो जी को बुलाय के कहा ●●

ऊधो तुम हौ सखा हमारे ● मन आंखन तें कबहुन न्यारे ●
दुहूं ओर की भारी भीर ● पहले कहां चलें कहौ बीर ●
उत राजा संकट में भारी ● दुख पावत कियेआस हमारी ●
इत पंडनि मिल यज्ञ रचायौ ● ऐसे कहि प्रभु बचन सुनायौ ●

इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे राजा युधिष्ठिर संदेसो नाम ऐक सप्तति मोध्यायः ● ॥ ७१ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-पहले तो श्री कृष्णचंद जी ने उस ब्राह्मन को इतना कह बिदा किया जो राजाओं का संदेसा लाया था-कि देवता-तुम हमारी ओर से सब राजाओं से जाय कहो कि तुम किसी बात की चिंता मत करो-हम बेग आय तुम्हें छुड़ाते हैं ● महाराज-यह बात कह श्री कृष्णचंद ब्राह्मन को बिदाकर-ऊधो जी को साथ ले राजा उग्रसेन सूरसेन की सभा में गये औ इन्होंने सब समाचार उन के आगे कहे-वे सुन चुप होरहे ● इस में ऊधो जी बोले कि महाराज ये दोनों काज कीजे-पहले राजाओं को जरासिंधु से छुड़ा लीजे-पीछे चलकर यज्ञ संवारिये-क्यों कि राजसू यज्ञ का काम बिन राजा औ

है कोई नहीं करसकता औ वहां बीस सहस्र नृप इकठे हैं-तिन्हें छुडा आगे ता वे सब गुनमान यज्ञ का काज बिन बुलाए जाकर करेंगे ॥ महाराज-और कोई दसों दिस जीत आवेगा-तोभी इतने राजा इकठे न पावेगा ॥ इस से अब उत्तम यही है कि हस्तनापुर को चलिये पांडवों से मिल मताकर जो काम करना हो सो करिये ॥ 

महाराज-इतना कह पुनि ऊधो जी बोले कि महाराज-राजा जुरासिंधु बडा दाता औ गौ ब्राह्मन का मानने औ पूजने वाला है ॥ जो कोई तिस से जाकर जो मांगता है सो पाता है-याचक उस के यहां से बिमुख नहीं आता ॥ वह झूठ नहीं बोलता जिस से बचन बंध होता है-तिस से निबाहता है औ दस सहस्र हाथी का बल रखता है उस के बल की समान भीमसेन का बल है ॥ नाथ-जो तुम वहां चलो तो भीमसेन को भी अपने साथ ले चलो-मेरी बुद्धि में आता है कि उस की मौच भीमसेन के हाथ है ॥

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि राजा-जब ऊधो जी ने ये बातें कहीं तभी श्री कृष्णचंद जी ने राजा उग्रसेन सूरसेन से बिदा हो सब यदुबंसियों से कहा- कि हमारा कटक साजो हम हस्तनापुर को चलेंगे ॥ बात के सुनते ही सब यदुबंसी सेना साज ले आए औ प्रभु भी आठों पटरानियों समेत कटक के साथ होलिए ॥ महाराज-जिस काल श्री कृष्णचंद कुटुंब सहित सब सेना ले धौंसा दे द्वारिकापुरी से हस्तनापुर को चले-उस समय की शोभा कुछ बरनी नहीं जाती ॥ आगे हाथियों का कोट-बाएं दाहने रथ घोडों की ओट-

बीच में रनिवास औ पीछे सब सेना साथ लिये-सब की रक्षा किये श्री कृष्णचंद जी चले जाते थे॥ जहां डेरा होता था तहां कै जोजन के बीच में एक सुंदर सुहावना नगर बस जाता था-देस देस के नरेस भयखाय आय आय भेंटकर भेंट धरते थे औ प्रभु तिन्हें भयातुर देख तिन का सब भांति समाधान करते थे ॥

निदान इसी धूमधाम से चले चले हरि सब समेत हस्तनापुर के निकट पहुंचे-इस में किसी ने राजा युधिष्ठिर से आयकहा कि महाराज॥ कोई नृपति अति सेना ले बड़ी भीड़भाड़ से आप के देस पर चढ़ आया है-आप बेग उसे देखिये नहीं तो उसे यहां पहुंचा जानिये॥ महाराज-इस बात के सुनते ही राजा युधिष्ठिर ने अति भयखाय-अपने नकुल सहदेव दोनों छोटे भाइयों को यह कह प्रभु के सनमुख भेजा-कि तुम देखि आओ कि कौन राजा चढ़ आता है॥ राजा की आज्ञा पाते ही ॥॥

सहदेव नकुल देख फिर आये॥ राजा कों ये वचन सुनाये॥
प्राननाथ आये हैं हरी॥ सुनि राजा चिंता परिहरी॥

आगे अति आनंदकर राजा युधिष्ठिर ने भीम अर्जुन को बुलाय के कहा-कि भाई-तुम चारों भाई आगू जाय श्री कृष्णचंद आनंदकंद को ले आओ॥ महाराज-राजा की आज्ञापाय औ प्रभु का आना सुन-वे चारों भाई अति प्रसन्न हो भेंट पूजा की सब सामा औ बड़े बड़े पंडितों को साथ ले बाजेगाजे से प्रभु को लेने चले॥ निदान अति आदर मान से मिल-वेद की विधि से भेंट पूजाकर-ये चारों भाई श्री कृष्ण जी को सब समेत पाटंबर

के पांवडे डालते-चोआ चंदन गुलाबनीर छिड़कते-चांदी सोने के फूल बरसाते-धूप दीप नैवेद्य करते-बाजेगाजे से नगर में ले आये ● राजा युधिष्ठिर ने प्रभु से मिल अति सुख माना औ अपना जीतब सुफल जाना ● आगे बाहर भीतर सब ने सब से मिल यथा योग्य परस्पर सनमान किया औ नयनों को सुख दिया ● घर बाहर सारे नगर में आनंद होगया औ श्री कृष्णचंद वहां रह सब को सुख देने लगे ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे श्री कृष्ण हस्तनापुर गमनो नाम द्वि सप्ततिमोध्यायः ● ॥ ७२ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-ऐके दिन श्री कृष्णचंद करुनासिंधु दीनबंधु भक्तहितकारी-ऋषि मुनि ब्राह्मन क्षत्रियों की सभा में बैठे थे-कि राजा युधिष्ठिर ने आय अति गिडगिडाय बिनतीकर हाथ जोड सिरनाय के कहा ● कि हे शिव बिरंच के ईस-तुम्हारा ध्यान करते हैं सदा सुर मुनि ऋषि जोगीस ● तुम हो अलष अगोचर अभेद-कोई नहीं जानता तुम्हारा भेद ●●

मुनि जोगेश्वर इकचित धावत ● तिन के मन छिनकभून आवत ●
हम कौं घर हीं दरसन देत ● मानत प्रेम भक्त के हेत ●
जैसी मोहन लीला करै ● काहू पै नहीं जाने परै ●
माया में भुलयौ संसार ● हम सौं करत लोक ब्यौहार ●
जे तुम कौं सुमिरत जगदीस ● ताहि आपनौ जानत ईस ●
अभिमानी तें हौ तुम दूर ● सत बादी के जीवन मूर ●

महाराज-इतनी कह पुनि राजा युधिष्ठिर बोले कि हे दीनदयाल-आप की दया से मेरे सब काम सिद्ध हुए पर एक ही अभिलाषा रही ● प्रभु बोले सो क्या-राजा ने कहा कि महाराज-मेरा यही मनोरथ है कि राजसूययज्ञ कर आप को अर्पन करूं-तो भवसागर तरूं ● इतनी बात के सुनते ही श्रीकृष्णचंद प्रसन्न हो बोले-कि राजा-यह तुम ने भला मनोरथ किया इस में सुर नर मुनि ऋषि सब संतुष्ट होंगे-यह सब को भाता है और इस का करना तुम्हें कुछ कठिन नहीं-क्यौं कि तुम्हारे चारों भाई अर्जुन-भीम-नकुल-सहदेव बडे प्रतापी औ अति बली हैं-संसार में ऐसा अब कोई नहीं जो इन का साम्हना करै ● पहले इन्हें भेजिये कि ये जाय दसोंदिसा के राजाओं को जीत अपने बसकर आवें-पीछे आप निश्चिंताई से यज्ञ कीजे ●

राजा-प्रभु के मुख से इतनी बात जों निकली त्योंहीं राजायुधिष्ठिर ने अपने चारों भाइयों को बुलाय कटक दे चारों को चारों ओर भेज दिया ● दक्षन को सहदेव जी पधारे-पच्छिम को नकुल सिधारे-उत्तर को अर्जुन धाए-पूरव में भीमसेन जी आए ● आगे कितने एक दिन के बीच महाराज-वे चारों हरि प्रताप से सात द्वीप नौखंड जीत-दसोंदिसा के राजाओं को बसकर अपने साथ ले आए ● उस काल राजा युधिष्ठिर ने हाथ जोड श्री कृष्णचंद जी से कहा कि महाराज-आप की सहायता से यह काम तो हुआ अब क्या आज्ञा होती है ● इस में ऊधो जी बोले कि धर्मावतार-सब देस के नरेस तो आए-पर अब एक मगध देस का राजा जरासिंधु ही आप के बस का नहीं और जब तक वह ब

र न होगा तब तक यज्ञ भी करना सुफल न होगा ● महाराज - जुरासिंधु राजा जैंद्रथ का बेटा महा बली बडा प्रतापी औ अति दानी धर्मातमा है - हर किसी की सामर्थ नहीं जो उस का साम्हना करे ● इस बात को सुन जों राजा युधिष्ठिर उदास ऊए तों श्रीकृष्णचंद बोले - कि महाराज - आप किसी बात की चिंता न कीजे - भाई भीम अर्जुन समेत हमें आज्ञा दीजे ● कै तो बल छलकर हम उसे पकड लावें कै मार आवें ● इस बात के सुनते ही राजा युधिष्ठिर ने दोनों भाइयों को आज्ञा दी - तद हरि ने उन दोनों को अपने साथ ले मगध देस की बाट ली ● आगे जाय पंथ में श्री कृष्ण जी ने अर्जुन औ भीम से कहा कि ●●

विप्र रूप ह्वै पगधारिये ● छल बलकर बैरी मारिये ●

महाराज - इतनी बात कह श्री कृष्णचंद जी ने ब्राह्मन का भेष किया - उन के साथ भीम अर्जुन ने भी विप्र भेष लिया ● तीनों त्रिपुंड किये पुस्तक कांख में लिये - अति उज्जल स्वरूप सुंदर रूप बन ठनकर ऐसे चले कि जैसे तीनों गुन सत रज तम देह धरे जाते होंय - कै तीनों काल ● निदान कितने एक दिनों में चले चले ये मगध देस में पऊंचे औ दो पहर के समय राजा जुरासिंधु की पौरि पर आ खडे ऊए ● इन का भेष देख पौरियों ने अपने राजा से जा कहा - कि महाराज - तीन ब्राह्मन अतिथ बडे तेजस्वी महा पंडित अति ज्ञानी - कुछ कांक्षा किये द्वार पर खडे हैं - हमें क्या आज्ञा होती है ● महाराज - बात के सुनते ही राजा जुरासिंधु उठ आया औ इन तीनों को प्रनामकर अति मान सनमान

से घर में ले गया * आगे वह इन्हें सिंहासन पर बैठाय आप सनमुख हाथ जोड खडा हो देख देख सोच सोच बोला **

आचक जो पर द्वारे आवै * बडो भूप सोऊ अतिथ कहावै *
विप्र नहीं तुम जोधा बली * बात न कछू कपट की भली *
औ ठग ठगनि रूप धर आवै * ठगि तो जाय भलो न कहावै *
छिपै न छत्री कांति तिहारी * दीसत सूर बीर बल धारी *
तेजवंत तुम तीनों भाई * शिव बिरंच हरि से बरदाई *
मैं जान्यौ जियकर निर्मान * कहौ देव तुम आप बखान *
तुम्हरी इच्छा हो सो करौं * अपनी बाचा तें नहीं टरौं *
दानी मिथ्या कबहु न भाखै * धन तन सर्वसु कछू न राखै *
मांगौ सोई देहौं दान * हुत सुंदरि सर्वस परान *

महाराज-इस बात के सुनते ही श्री कृष्णचंद जी ने कहा-कि महाराज-किसी समैं राजा हरिचंद बडा दानी हो गया है कि जिस की कीर्ति संसार में अब तक छाय रही है * सुनिये एक समैं राजा हरिचंद के देस में काल पड़ा औ अन्न बिन सब लोग मरने लगे-तब राजा ने अपना सर्वस बेच बेच सब को खिलाया * जद देस नगर धन गया औ निर्धन हो राजा रहा-तद एक दिन सांझ समैं यह तो कुटुंब सहित भूखा बैठा था-कि इस में विस्वामित्र ने आय इन का सत देखने को यह बचन कहा * महाराज-मुझे धन दीजे औ कन्या दान का फल लीजे * इस बचन के सुनते ही जो कुछ घर में था सो ला दिया-पुनि ऋषि ने कहा महाराज-मेरा काम इतने में न होगा * फिर राजा ने दास दासी बेच

धेन लादिया औ धेन जन गंवाय निर्धन निर्जन हो स्त्री पुत्र को ले रहा ❁ पुनि ऋषि ने कहा कि धर्ममूर्त्ति- इतने धन से मेरा काम न सरा-अब मैं किस के पास जाय मागूं- मुझे तो संसार में तुझ से अधिक धनवान धर्मात्मा दानी कोई नहीं दृष्ट आता- हां एक सुपच नाम चंडाल मायापात्र है कहो तो विस से जा धन मागूं- पर इस में भी लाज आती है कि ऐसे दानी राजा को जाच उस से क्या जाचूं ❁ महाराज-इतनी बात के सुनते ही राजा हरिचंद विस्वामित्र को साथ ले उस चंडाल के घर गये औ इन्हों ने विस से कहा कि भाई ❁ तू हमें एक बरष के लिये गहने धर औ इन का मनोरथ पूरा कर-सुपच बोला ❁❁

कैसे टहल हमारी करिहौ ❁ राजस तामस मन में हरि हौ ❁
तुम नृप महा तेज बल धारी ❁ नीच टहल है खरी हमारी ❁

महाराज - हमारे तो यही काम है कि स्मशान में जाय चौकी दे औ जो मृतक आवे उस से कर ले ❁ पुनि हमारे घर बार की चौकसी करे -तुम से यह होसकै तो मैं रुपये दूं औ तुम्हें बंधक रक्खूं ❁ राजा ने कहा अच्छा मैं बरष भर तुम्हारी सेवा करूंगा- तुम इन्हें रुपये दो ❁ महाराज - इतना बचन राजा के मुख से निकलते ही सुपच ने विस्वामित्र को रुपये गिन दिये - वह ले अपने घर गया औ राजा वहां रह उस की सेवा करने लगा ❁ कितने एक दिन पीछे काल बस हो राजा हरिचंद का पुत्र रुहितास मर गया- उस मृतक को ले रानी मरघट में गई और जौं चिता बनाय अग्नि संसकार करने लगी-तौंहीं राजा ने आय कर मांगा ❁❁

रानी बिलख कहै दुख पाय ❁ देखौ समझ हियै तुम राय ❁

यह तुम्हारा पुत्र रुहितास है औ कर देने को मेरे पास और तो कुछ नहीं ऐक यह चीर है जो पहरे खडी हूं ❁ राजा ने कहा मेरा इस में कुछ बस नहीं - मैं स्वामी के कार्य पर खडा हूं जो स्वामी का काम न करूं तो मेरा सत जाय ❁ महाराज-इस बात के सुनतेही रानी ने चीर उतारने को जों आंचल पर हाथ डाला तों तीनों लोक कांप उठे-वोंहीं भगवान ने राजा रानी का सत देख पहले ऐक विमान भेज दिया औ पीछे से आय दरसन दे तीनो का उद्धार किया ❁ महाराज - जब बिधाता ने रुहितास को जिवाय राजा रानी को पुत्र सहित बिमान पर बैठाय -बैकुंठ जाने की आज्ञा की - तब राजा हरिचंद ने हाथ जोड भगवान से कहा कि हे दीनबंधु पतितपावन दीनदयाल- मैं सुपच बिना बैकुंठ धाम में कैसे जा करूं बिश्राम ❁ इतना बचन सुन औ राजा के मन का अभिप्राय जान-श्री भक्तहितकारी करुनासिंधु हरि ने पुरी समेत सुपच को भी राजा रानी औ कुंवर के साथ तारा ❁❁

व्हां हरिचंद अमरपद पायौ ❁ व्हां जुगान जुग जस छवि आयौ ❁

महाराज-यह प्रसंग जुरासिंधु को सुनाय श्री कृष्णचंद जी ने कहा कि महाराज- और सुनिये कि रंतिदेव ने ऐसा तप किया कि अठतालीस दिन बिन पानी रहा औ जब जल पीने बैठा-तिसी समय कोई प्यासा आया-इस ने वह नीर आप न पी उस तृषावंत को पिलाया-उस जल दान से उस ने मुक्ति पाई ❁ पुनि राजा बलने अति दान किया तो पाताल का राज लिया ❁ औ अब तक उस का जस चलाजाता है ❁ फिर दे

खिये कि उद्दाल मुनि छठे महीने अन्न खाते थे-एक समैं खाती बिरयां उन के यहां कोई अतिथ आया-उन्हों ने अपना भोजन आप न खाय भूखे कों खिलाया औ उस क्षुधा ही में मरे ❀ निदान अन्न दान करने से वैकुंठ को गये चढ़कर बिमान ❀

पुनि एक समय सब देवताओं को साथ ले राजा इंद्र ने जाय दधीच से कहा कि महाराज-हम वृत्रासुर के हाथ से अब बच नहीं सकते-जो आप अपना अस्त्र हमैं दीजे तो उस के हाथ से बचें-नहीं तो बचना कठिन ❀ क्यों कि वह बिन तुम्हारे हाड के आयुध किसी भांति न मारा जायगा ❀ महाराज-इतनी बात के सुनते ही दधीच ने शरीर गाय से चटवाय-जांघ का हाड निकाल दिया ❀ देवताओं ने ले उस अस्त्र का बज्र बनाया औ दधीच ने प्रान गंवाय बैकुंठ धाम पाया ❀❀

ऐसे दाता भये अपार ❀ तिन कौ जस गावत संसार ❀

राजा-यों कह श्री कृष्णचंद जी ने जरासिंधु से कहा कि महाराज-जैसे आगे और जुग में धर्मात्मा दानी राजा होगये हैं तैसे अब इस काल में तुम हो ❀ जों आगे उन्हों ने जाचकों की अभिलाषा पूरी की-तों तुम अब हमारी आस पुजाओ ❀❀

कहा है जाचक कहा न मांगई-दाता कहा न देय ❀
गृह सुत सुंदरि लोभ नहिं-तन सिर दे जस लेय ❀

इतना वचन प्रभु के मुख से निकलते ही जरासिंधु बोला-कि जाचक को दाता की पीर नहीं होती तोभी दानी धीर अपनी प्रकृत नहीं छोडता-इस में सुख पावे कै दुख ❀ देखो हरि ने कपट रूप कर बावन बन-

राजा बल के पास जाय तीन पैंड पृथ्वी मागी-उस समैं शुक्रने बल को बिताया-तो भी राजा ने अपना प्रन न छोडा ●●

देह समेत मही तिन दई ● ताकी जग में कीरति भई ●
जाचक बिष्नु कहा जस लीनौं ● सर्बसु लै तौउ हठ कीनौं ●

इस से तुम पहले अपना नाम भेद कहो तद जो तुम मांगोगे सो मैं दूंगा मैं मिथ्या नहीं भावता ● श्री कृष्णचंद बोले कि राजा - हम क्षत्री हैं बासुदेव मेरा नाम है तुम भली भांति हमें जानते हो औ ये दोनों अर्जुन भीम हमारे फुफेरे भाई हैं ● हम युद्ध करने को तुम्हारे पास आये हैं -हम से युद्ध कीजे हम यही तुम से मांगने आये हैं और कुछ नहीं मांगते ● महाराज - यह बात श्री कृष्णचंद जी से सुनि जरासिंधु हंसकर बोला - कि मैं तुझ से क्या लडूं तू मेरे सोंहीं से भागचुका है औ अर्जुन से भी न लडूंगा - क्यौं कि यह बिदर्भ देस गया था करके नारी का भेष ● रहा भीमसेन कहो तो इस से लडूं यह मेरी समान का है - इस से लडने में मुझे कुछ लाज नहीं ●●

पहले तुम सब भोजन करौ ● पाछैं मल्ल अखारे लरौ ●
भोजन दै न्रप बाहर आयौ ● भीम सेन तहां बोल पठायौ ●
अपनी गदा ताहि तिन दई ● गदा दूसरी आपुन लई ●
जहां सभा मंडल बन्यौं - बैठे जाय मुरारि ●
जरासिंधु अरु भीम तहां - भए ठाढे इक बारि ●
टोपा सीस काछनी काछैं ● बने रूप नटुवा के आछैं ●

महाराज - जिस समय दोनों बीर अखाडे में खम ठोक - गदा तान - धमप

लट-कूमकर सनमुख आये- उस काल ऐसे जनाये कि मानों दो मतंग मतवाले उठ धाये ॥ आगे जुरासिंधु ने भीमसेन से कहा कि पहले गदा तू चला-क्यों कि तू ब्राह्मन का भेष ले मेरी पौरि पै आया था-इस से मैं पहले प्रहार तुझ पर न करूंगा ॥ यह बात सुन भीमसेन बोले कि राजा हम से तुम से धर्म युद्ध है-इस में यह ज्ञान न चाहिये-जिस का जी चाहे सो पहले शस्त्र करे ॥ महाराज-उन दोनों बीरों ने परस्पर ये बातें कर एक साथ ही गदा चलाई औ युद्ध करने लगे ॥

नाकत घात आप आपनी ॥ चोट करत बाईं दाहनी ॥
अंग बचाय उछरि पग धरें ॥ झरपहिं गदा गदा सों लरें ॥
खट पट चोट गदा पट कारी ॥ लागत शब्द कुलाहल भारी ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज-इसी भांति वे दोनों बली दिन भर तो धर्म युद्ध करते औ सांझ को घर आय एक साथ भोजनकर विश्राम ॥ ऐसे नित लडते लडते सत्ताईस दिन भए तब एक दिवस उन दोनों के लडने के समय श्री कृष्ण चंद जी ने मन ही मन विचारा-कि यह यों न मारा जायगा क्यों कि जब यह जन्मा था तब दो फांक हो जन्मा था- उस समै जराराक्षसी ने आय जुरासिंधु का मुंह औ नाक मूंदी- तब दोनों फांक मिल गईं ॥ यह समाचार सुनि उस के पिता जैद्रथ ने योतिषियों को बुलाय के पूछा -कि कहो इस लडके का नाम क्या होगा औ कैसा होगा ॥ योतिषियों ने कहा कि महाराज- इस का नाम जुरासिंधु हुआ औ यह बडा प्रतापी औ अजर अमर होगा ॥ जब तक इस की संधि न फटेगी तब तक

यह किसी से न मारा जायगा - इतना कह योतिषी बिदा हो चले ग ये ॥ महाराज-यह बात श्री कृष्ण जी ने मन मन सोच औ अपना बल दे भीमसेन को तिन का चीर सैन से जताया कि इसे इस रीति से चीर डालो ॥ प्रभु के चिताते ही भीमसेन ने जुरासिंधु को पकडकर दे मारा औ एक जांघ पर पांव दे दूसरा पांव हाथ से पकड यों चीर डाला कि जैसे कोई दातन चीर डाले ॥ जुरासिंधु के मरते हीं सुर नर गंधर्व-ढोल दमामे भेर बजाय बजाय-फूल बरसाय बरसाय- जैजैकार कर ने लगे औ दुख दंद जाय सारे नगर में आनंद हो गया ॥ उसी बिरियां जुरासिंधु की नारी रोती पीटती आ श्री कृष्णचंद जी के सनमुख खडी हो हाथ जोड बोली-कि धन्य हैं धन्य हैं नाथ तुम्हें जो ऐसा काम किया ॥ कि जिस ने सरबस दिया - तुम ने उस का प्रान लिया ॥ जो जन तुम्हें सुत बित औ समर्पै देह-उस से तुम करते हो ऐसा ही नेह ॥॥

कपट रूपकर छल बल कियौ ॥ अगत आय तुम यह जस लियौ ॥ महाराज- जुरासिंधु की रानी ने जब करुनाकर करुना निधान के आगे हाथ जोड बिनतीकर यों कहा - तब प्रभु ने दयाल हो पहले जुरासिंधु की क्रिया की-पीछे उस के सुत सहदेव को बुलाय - राजतिलक दे सिंहासन पर बिठाय के कहा ॥ कि पुत्र-नीति सहित राज कीजो औ ऋषि-मुनि-गौ-ब्राह्मन-प्रजा की रक्षा ॥ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे जुरासिंधु बधो नाम त्रिसप्ततिमोध्यायः ॥ ॥ ७३ ॥ ॥॥

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - राजपाट पर बैठाय समझाय - श्री कृष्णचंद जीने सहदेव से कहा - कि राजा - अब तुम जाय उन राजाओं को ले आओ जिन्हें तुम्हारे पिता ने पहाड की कंदरा में मूंद रक्खा है ● इतना बचन प्रभु के मुख से सुनते ही जरासिंधु का पुत्र सहदेव - बकत अक्काकर कंदरा के निकट जाय - उस के मुख से सिला उठाय - आठ सौ बीस सहस्र राजाओं को निकाल हरि के सनमुख ले आया ● आते ही हथकडियां बेडियां पहने - गले में सांकल लोहे की डाले - नख केस बढाये - तन छीन मन मलीन मैले भेष - सब राजा प्रभु के सनमुख पांति पांति खडे हो हाथ जोड बिनतीकर बोले ● हे कृपासिंधु - दीनबंधु - आप ने भले समय आय हमारी सुध ली नहीं तो सब मरचुके थे - तुम्हारा दरसन पाया हमारे जी में जी आया - पिछला दुख सब गंवाया ●

महाराज - इस बात के सुनते ही कृपा सागर श्री कृष्णचंद ने जो उन पर दृष्ट की - तो बात की बात में सहदेव उन को ले जाय हथकडी बेडी कडी कटवाय - क्षौर करवाय - न्हिलवाय धुलवाय - षटरस भोजन खिलाय - वस्त्र आभूषन पहराय - शस्त्र अस्त्र बंधवाय - पुनि हरि के सोहीं लिवाय लाया ● उस काल श्री कृष्णचंद जी ने उन्हें चतुर्भुज हो संख चक्र गदा पद्म धारनकर दरसन दिया ● प्रभु की सरूप भूप देखते ही हाथ जोड बोले - नाथ - तुम संसार के कठिन बंधन से जीव को छुडाते हो - तुम्हें जरासिंधु की बंध से हमें छुडाना क्या कठिन था ● जैसे आपने कृपाकर हमें इस कठिन बंधन से छुडाया - तैसे ही अब हमें गृह रूप कूप से निकाल काम क्रोध लोभ मोह से छुडाइये - जो हम एकांत बैठ आपका

ध्यान करैं औ भवसागर को तरैं ● श्री शुकदेव जी बोले कि राजा-अ ब सब राजाओं ने ऐसे ज्ञान वैराग्य भरे बचन कहे-तब श्री कृष्णचंद जी प्रसन्न हो बोले-कि सुनो जिन के मन में मेरी भक्ति है वे निःसंदेह भक्ति मुक्ति पावेंगे ● बंध मोक्ष मन हीं का कारन है-जिस का मन स्थिर है तिन्हें घर औ बन समान है ● तुम और किसी बात की चिंता मत करो-आनंद से घर में बैठ नीतिसहित राज करो ● प्रजा को पालो गौ ब्राह्मन की सेवा में रहो-झूठ मत भाखो-काम क्रोध लोभ अभिमान तजो-भाव भक्ति से हरि को भजो-तुम निःसंदेह परम पद पाओगे ● संसार में आय जिस ने अभिमान किया वुह बहुत न जिया-देखो अभिमान ने किसे किसे न खोदिया ●●

सहस्र बाहु अति बली बखान्यौ ● परसुराम ताकौ बल भान्यौ ●
वैनु भूप रावन हो भयौ ● गर्व आप ने सोऊ गयौ ●
भौमासुर बानासुर कंस ● भए गर्व नें ते बिध्वंस ●
श्रीमद गर्व करौ जिन कोय ● त्यागै गर्व सो निर्भय होय ●

इतना कह श्री कृष्णचंद जी ने सब राजाओं से कहा- कि अब तुम अपने घर जाओ-कुटुंब से मिल अपना राजपाट संभाल-हमारे न बहुंच ते न पहुंचते हस्तनापुर में राजा युधिष्ठिर के यहां राजसूय यज्ञ में शीघ्र आओ ● महाराज-इतना बचन श्री कृष्णचंद जी के मुख से निकलते ही सहदेव ने-सब राजाओं के जाने का सामान जितना चाहिये-तितना बात की बात में ला उपस्थित किया ● वे ले प्रभु से बिदा हो अपने अपने देसों को गए औ श्री कृष्णचंद जी भी सहदेव को साथ ले-भीम अर्जुन

सहित वहां से चले चले चले आनंद मंगल से हस्तनापुर आये ● आगे प्रभु ने राजा युधिष्ठिर के पास जाय - जरासिंधु के मारने के समाचार औ सब राजाओं के छुड़ाने के ब्यौरे समेत कह सुनाये ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज-श्री कृष्णचंद आनंदकंद जी के हस्तनापुर पहुंचते पहुंचते ही वे सब राजा भी अपनी अपनी सेना ले भेंट सहित आन पहुंचे औ राजा युधिष्ठिर से भेटकर भेंट दे श्री कृष्णचंद जी की आज्ञा ले हस्तनापुर के चारों ओर जा उतरे औ यज्ञ की टहल में आ उपस्थित हुए ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे सर्व भूपति हस्तनापुर गमनो नाम चतुःसप्ततिमोध्यायः ● ॥ ७४ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि राजा-जैसे यज्ञ राजा युधिष्ठिर ने किया औ सिसुपाल मारा गया तैसे मैं सब कथा कहता हूं-तुम चित दे सुनो ● बीस सहस्र आठ सौ राजाओं के जाते ही-चारों ओर के और जित ने राजा थे क्या सूर्यबंसी औ क्या चंद्रबंसी - तिन ने सब आय हस्तनापुर में उपस्थित हुए ● उस समय श्री कृष्णचंद औ राजा युधिष्ठिर ने मिलकर सब राजाओं का सब भांति शिष्टाचार कर समाधान किया औ हरएक को एक एक काम यज्ञ का सौंपा ● आगे श्री कृष्णचंद जी ने राजा युधिष्ठिर से कहा कि महाराज - भीम - अर्जुन - नकुल - सहदेव सहित हम पांचों भाई तो सब राजाओं को साथ ले ऊपर की टहल करैं और आप ऋषि मुनि ब्राह्मनों को बुलाय यज्ञ का आरंभ कीजे ●

महाराज- इतनी बात के सुनते ही राजा युधिष्ठिर ने सब ऋषि मुनि ब्राह्मनों को बुलाकर पूछा-कि महाराजो - जो जो वस्तु यज्ञ में चाहिये - सो सो आज्ञा कीजे ॐ महाराज - इस बात के कहते ही ऋषि मुनि ब्राह्मनों ने ग्रंथ देख देख-यज्ञ की सब सामग्री एक पत्र पर लिख दी औ राजा ने वोंहीं मंगवाय उन के आगे धरवा दी ॐ ऋषि मुनि ब्राह्मनों ने मिल यज्ञ की वेदी रची-चारों वेद के सब ऋषि मुनि ब्राह्मन बेदी के बीच आसन बिछाय बिछाय जा बैठे ॐ पुनि सुच होय स्त्री सहित गंठजोडा बांध राजा युधिष्ठिर भी आय बैठे औ द्रोनाचार्य - कृपाचार्य-धृतराष्ट - दुर्योधन - सिसुपाल- आदि जितने योधा औ बडे बडे राजा थे वे भी आन बैठे ॐ ब्राह्मनों ने स्वस्ति वाचनकर गणेश पुजवाय -कलशस्थापनकर ग्रहस्थान किया ॐ राजा ने भरद्वाज- गौतम- वशिष्ट-बिश्वामित्र-वामदेव-परासर-व्यास-कस्यप-आदि बडे बडे ऋषि मुनि ब्राह्मनों का बरन किया औ विन्हों ने बेद मंत्र पढ पढ सब देवताओं का आवाहन किया औ राजा से यज्ञ का संकल्प करवाय होम का आरंभ ॐ

महाराज-मंत्र पढ पढ ऋषि मुनि ब्राह्मन आहुत देने लगे औ देवता प्रत्यक्ष हाथ बढाय बढाय लेने ॐ उस समय ब्राह्मन बेद पाठ करते थे औ सब राजा होमने की सामग्री ला ला देते थे औ राजा युधिष्ठिर होमते थे - कि इस में निर्विघ्न यज्ञ पूरन हुआ औ राजा ने पूर्नाहुति दी ॐ उस काल सुर नर मुनि सब राजा को धन्य धन्य कहने लगे औ यक्ष गंधर्व किन्नर बाजन बजाय बजाय-जस गाय गाय फूल बर

सावने ● इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज- यज्ञ से निचिंत हो राजा युधिष्ठिर ने सहदेव जी को बुलाय के पूछा ●●

पहले पूजा काकी कीजे ● अक्षत तिलक कौन कौ दीजे ●
कौन बडौ देवन कौ ईस ● ताहि पूज हम नावें सीस ●

सहदेव जी बोले कि महाराज-सब देवों के देव हैं वासुदेव-कोई न हीं जानता इनका भेव ● ये हैं ब्रह्मा रुद्र इंद्र के ईस-इन्हीं को पहले पूजनवाइये सीस ● जैसे तरव की जड में जल देने से सब शाखा हरी होती हैं-तैसे हरि की पूजा करने से सब देवता संतुष्ट होते हैं ● यही जगत के करता हैं औ येही उपजाते पालते मारते हैं- इन की लीला हैं अनंत-कोई नहीं जानता इन का अंत ● येई हैं प्रभु अलख अगोचर अविनासी- इन्हीं के चरन कंवल सदा सेवती हैं कमला भई दासी ● भक्तों के हेतु बार बार लेते हैं अवतार-तनु धर करते हैं लोक बौहार ●●

बंधु कहत घर बैठे आवें ● अपनी माया मांहि भुलावें ●
महा मोह हम प्रेम भुलाने ● ईश्वर कौं भ्राता कर जाने ●
इनते बडौ नदीसे कोई ● पूजा प्रथम इन्ही की होई ●

महाराज-इस बात के सुनते ही सब ऋषि मुनि औ राजा बोल उठे-कि राजा-सहदेव जी ने सत्य कहा प्रथम पूजन जोग हरि ही हैं ● तब तो राजा युधिष्ठिर ने श्री कृष्णचंद जी को सिंहासन पर बिठाय-आठों पटरानियों समेत-चंदन अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य कर पूजा ●

पुनि सब देवतों औ ऋषियों मुनियों ब्राह्मनों और राजाओं की पूजा की - रंग रंग के जोड़े पहनाऐ - चंदन केसर की खौडें कीं - फूलों के हार पहराऐ - सुगंध लगाय यथा योग्य राजा ने सब की मनुहार की ● श्री सुकदेव जी बोले कि राजा ●●

हरि पूजत सब कौं सुख भयौ ● सिसुपाल कौ सीस भूं नयौ ●

कितनी एक बेर तक तो वह सिर झुकाऐ मन ही मन कुछ सोच विचार करता रहा ● निदान काल बस हो अति क्रोधकर सिंहासन से उतर सभा के बीच निःसंकोच निडर हो बोला कि इस सभा में धृतराष्ट्र - दुर्योधन - भीषम - कर्न - द्रोनाचार्य आदि सब बड़े बड़े ज्ञानी मानी हैं - पर इस समय सब की गति मति मारी गई - बड़े बड़े मुनीस बैठे रहे औ नंद गोप के सुत की पूजा भई औ कोई कुछ न बोला ● जिस ने ब्रज में जन्म ले ग्वाल बालों की झूठी छाक खाई - तिसी की इस सभा में भई प्रभुताई बड़ाई ●●

नाहि बड़ो सब कहत अचेत ● सुरपति कौ बल का गहि देत ●

जिन्ने गोपी औ ग्वालनों से नेह किया - इस सभा ने तिसे ही सब से बड़ा साध बनाय दिया ● जिस ने दूध दही मही माखन घर घर चुराय खाया - उसी का जस सब ने मिल गाया ● बाट घाट में जिन्ने लिया दान - तिसी का यहां हुआ सनमान ● पर नारी से जिस ने छल बलकर भोग किया - सब ने मनाकर उसी को पहले तिलक दिया ● ब्रज में से इंद्र की पूजा जिस ने उठाई औ पर्वत की पूजा ठहराई - पुनि पूजा की सब सामग्री गिर के निकट लिवाय ले जाय मिसकर आप ही खाई तो

भी उसे लाज न आई ॥ जिस की जात पांति औ मात पिता कुल धर्म का नहीं ठिकाना-तिसी को अलख अविनासी कर सब ने माना ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज-इसी भांति से कालबस होय राजा सिसुपाल अनेक अनेक बुरी बातें श्री कृष्णचंद जी को कहता था औ श्री कृष्णचंद जी सभा के बीच सिंहासन पर बैठे-सुन सुन एक एक बात पर एक एक लकीर खैंचते थे ॥ इस बीच भीष्म-कर्न-द्रोन औ बडे बडे राजा हरि निंदा सुन अति क्रोधकर बोले कि अरे मूर्ख-तू सभा में बैठा हमारे सनमुख प्रभु की निंदा करता है-रे चंडाल-चुप रह नहीं अभी पछाड मार डालते हैं ॥ महाराज- यह कह शस्त्र ले ले सब राजा सिसुपाल के मारने को उठ धाये ॥ उस समय श्री कृष्णचंद आनंदकंद ने सब को रोककर कहा-कि तुम इस पर शस्त्र मत करो खडे खडे देखो-यह आप से आप ही मारा जाता है ॥ मैं इस के सौ अपराध सहूंगा-क्यौं कि मैं ने बचन हारा है सो से बढती न सहूंगा- इसी लिये मैं रेखा काढता जाता हूं ॥

महाराज-इतनी बात के सुनते ही सब ने हाथ जोड श्री कृष्णचंद से पूछा-कि कृपानाथ-इस का क्या भेद है जो आप इस के सौ अपराध क्षमा करियेगा-सो कृपाकर हमें समझाइये जो हमारे मन का संदेह जाय ॥ प्रभु बोले कि जिस समय यह जन्मा था-तिस समय इस के तीन नेत्र औ चार भुजा थीं- यह समाचार पाय इस के पिता राजा दमघोष ने योतिषियों औ बडे बडे पंडितों को बुलाय के पूछा- कि यह

लडका कैसा हुआ-इस का बिचारकर मुझे उत्तर दो ❁ राजा की बातें सुनते ही पंडित औ जोतिषियों ने शास्त्र बिचार के कहा-कि महाराज यह बडा बली औ प्रतापी होगा और यह भी हमारे बिचार में आता है कि जिस के मिलने से इस की एक आंख औ दो बांह गिर पड़ेंगी-यह उसी के हाथ मारा जायगा ❁ इतना सुन इस की मा महादेवी-सूरसेन की बेटी-बसुदेव की बहन-हमारी फुफी अति उदास भई औ आठ पहर पुत्र ही की चिंता में रहने लगी ❁

कितने एक दिन पीछे एक समै पुत्र को लिये पिता के घर द्वारिका में आई औ इसे सब से मिलाया ❁ जब यह मुझ से मिला औ इस की एक आंख औ दो बांह गिर पडीं-तब फुफू ने मुझे बचन बंधकर के कहा-कि इस की मीच तुम्हारे हाथ है तुम इसे मत मारियो-मैं यह भीख तुम से मांगती हूं ❁ मैं ने कहा अच्छा सौ अपराध हम इस के न गिनेंगे-इस उपरांत अपराध करेगा तो हनेंगे ❁ हम से यह बचन ले फुफू सब से बिदा हो-इतना कह पुत्र सहित अपने घर गईं-कि यह सौ अपराध क्यों करेगा जो कृष्ण के हाथ मरेगा ❁

महाराज-इतनी कथा सुनाय श्री कृष्ण जी ने सब राजाओं के मन का भ्रम मिटाय-उन लकीरों को गिना जो एक एक अपराध पर खैंची थीं ❁ गिनते ही सौ से बढती हुई-तभी प्रभु ने सुदरसन चक्र को आज्ञा दी-उसने झट सिसुपाल का सिर काट डाला ❁ उस के धड से जो जोति निकली सो एक बार तो आकाश को धाई-फिर आय सब के देखते श्री कृष्णचंद्र के मुख में समाई ❁ यह चरित्र देख सुर न

र मुनि जैजैकार करने लगे औ पुष्प बरसावने - उस काल श्री मुरारी भक्त हितकारी ने उसे तीसरी मुक्ति दी औ उस की कृपा की ●

इतनी कथा सुन राजा परीक्षित ने श्री शुकदेव जी से पूछा कि महाराज - तीसरी मुक्ति प्रभु ने किस भांति दी सो मुझे समझाय के कहिये ● शुकदेव जी बोले कि राजा - एक बार यह हरनकस्यप हुआ तब प्रभु ने न्रसिंह अवतार ले तारा ● दूसरी बेर रावन भया तो हरि ने रामावतार ले इस का उद्धार किया ● अब तीसरी बिरियां यह है इसी से तीसरी मुक्ति भई ● इतना सुन राजा ने मुनि से कहा कि महाराज - अब आगे कथा कहिये ● श्री शुकदेव जी बोले कि राजा - यज्ञ के हो चुकते ही राजा युधिष्ठिर ने सब राजाओं को स्त्री सहित पहराय - ब्राह्मनों को अनगिनत दान दिया ● देने का काम यज्ञ में राजा दुर्योधन को था तिस ने द्वेश कर एक की ठौर अनेक दिये - इस में उस का जस हुआ तो भी वह प्रसन्न न हुआ ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज - यज्ञ के पूर्न होते ही श्री कृष्ण जी राजा युधिष्ठिर से बिदा हो सब सेना ले कुटुंब सहित - हस्तनापुर से चले चले द्वारिकापुरी पधारे ● प्रभु के पहुंचते ही घर घर मंगलाचार होने लगा औ सारे नगर में आनंद हो गया ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे सिसुपाल मोक्षो नाम पंच सप्ततिमोध्यायः ● ॥ ७५ ॥ ●●

●●●●●●●●●●●●

राजा परीक्षित बोले कि महाराज - राजसूयज्ञ होने से सब कोई प्र

संन्न ऊआ-ऐक दुर्योधन अप्रसन्न ऊआ इस का कारन क्या है-सो तुम मुझे समझाय के कहो जो मेरे मन का भ्रम जाय ● श्री शुकदेव जी बोले कि राजा-तुम्हारे पितामह बडे ज्ञानी थे-जिन्हों ने यज्ञ में जिसे जैसा देखा तिसे तैसा काम दिया ● भीम को भोजन करवाने का अधिकारी किया-पूजा पर सहदेव को रक्खा-धन लाने को नकुल रहे-सेवा कर ने पर अर्जुन ठहरे-श्री कृष्णचंद जी ने पांव धोने औ झूठी पत्तल उठा ने का काम लिया-दुर्योधन को धन बांटने का कार्य दिया और सब जित ने राजा थे तिन्हों ने ऐक ऐक काज बांट लिया ● महाराज-सब तो निः कपट यज्ञ की टहल करते थे-पर ऐक राजा दुर्योधन ही कपट सहि त काम करता था-इस से वह ऐक की ठौर अनेक उठाता था-निज मन में यह बात ठान के कि इन का भंडार टूटे तो अप्रतिष्ठा होय-पर भगवत कृपा से अप्रतिष्ठा न हो और जस होता था-इसलिये वह अप्रसन्न था और वह यह भी न जानता था कि मेरे हाथ में चक्र है ऐ क रुपया दूंगा तो चार इकठे होंगे ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि राजा-अब आगे कथा सु निये-श्री कृष्णचंद जी के पधारते ही राजा युधिष्ठिर ने सब राजाओं को खिलाय पिलाय-पहराय अति शिष्टाचार कर बिदा किया-वे दल साज साज अपने अपने देस को सिधारे ● आगे राजा युधिष्ठिर पांडव-कौर वों को ले गंगा स्नान को बाजे गाजे से गऐ ● तीर पर जाय दंडवत क र रज लगाय आचमन कर स्त्री सहित नीर में पैठे - उन के साथ सब ने स्नान किया ● पुनि न्हाय धोय संध्या पूजन से निचिंत होय-वस्त्र आभू

यन पहन सब को साथ लिये राजा युधिष्ठिर कहां आते हैं - कि जहां मय 
दैत्य ने मंदिर अति सुंदर सुवर्न के रतन जटित बनाए थे ● महाराज - 
यहां जाय राजा युधिष्ठिर सिंहासन पर विराजे - उस काल गंधर्व गुन गाते थे - चारन बंदी जन जस बखानते थे - सभा के बीच पातर नृत्य करती थीं - घर बाहर में मंगली लोग गाय बजाय मंगलाचार करते थे और राजा युधिष्ठिर की सभा इंद्र कीसी सभा होरही थी ● इस बीच राजा युधिष्ठिर के आने के समाचार पाय - राजा दुर्योधन भी कपट स्नेह किये वहां मिलने को बडी धूमधाम से आया ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज - वहां मय ने चौक के बीच ऐसा काम किया था कि जो कोई जाता था तिसे थल में जल का भ्रम होता था औ जल में थल का ● महाराज - जो राजा दुर्योधन मंदिर में पैठा तो उसे थल देख जल का भ्रम हुआ उस ने बस्त्र समेट उठाय लिये ● पुनि आगे बढ जल देख उसे थल का धोखा हुआ - जो पांव बढाया तो तिस के कपडे भींगे ● यह चरित्र देख सब सभा के लोग खिलखिला उठे - राजा युधिष्ठिर ने हंसी को रोक मुंह फेर लिया ● महाराज - सब के हंस पडते ही राजा दुर्योधन अति लज्जित हो महा क्रोधकर उलटा फिर गया सभा में बैठ कहने लगा - कि कृष्ण का बल पाय युधिष्ठिर को अति अभिमान हुआ है ● आज सभा में बैठ मेरी हांसी की इस का पलटा मैं लूं औ उस का गर्व तोडूं तो मेरा नाम दुर्योधन नहीं तो नहीं ● इति श्री लालकृते प्रेम सागरे दुर्योधन मान मर्दनो नाम षष्ट सप्ततिमोध्यायः ●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-जिस समय श्री कृष्णचंद औ बलराम जी हस्तनापुर में थे-तिसी समैं सालव नाम दैत्य सिसुपाल का साथी-जो रुक्मिनी के ब्याह में श्री कृष्णचंद जी के हाथकी मारखाय भागा था -सो मन ही मन इतना कह लगा महादेव जी की तपस्या करने-कि अब मैं अपना बैर यदुबंसियों से लूंगा ●●

इंद्री जीत सबै बस कीनी ● भूख प्यास सब तन सह लीनी ●
ऐसी बिधि तप लाग्यौ करन ● सुमिरै महादेव के चरन ●
नित उठ मुठी रेत लै खाय ● करै कठिन तप शिव मन लाय ●
बरष ऐक ऐसी बिधि गयौ ● तब हीं महादेव बर दयौ ●

कि आज से तू अजर अमर हुआ औ ऐक रथ माया का तुझे मय दैत्य बना देगा-तू जहां जाने चाहेगा वह तुझे तहां ले जायगा-विमान की भांति त्रिलोकी में उसे मेरे बर से सब ठौर जाने की सामर्थ होगी ●

महाराज-सदाशिव जी ने जों बर दिया तों ऐक रथ आय इस के सनमुख खडा हुआ ● यह शिव जी को प्रनामकर रथ पर चढ द्वारिकापुरी को धरधमका-वहां जाय नगर निवासियों को अनेक अनेक भांति की पीडा उपजानें लगा ● कभी अग्नि बरसाता था-कभी जल ● कभी ब्रक्ष उखाड नगर पर फैंकता था-कभी पहाड ● उस के डर से सब नगर निवासी अति भयमान हो भाग राजा उग्रसेन के पास जापु·

कारे-कि महाराज की दुहाई दैत्य नें आय नगर में अति धूम मचाई-जो इसी भाँति उपाध करैगा तो कोई जीता न रहैगा ● महाराज-इतनी बात के सुनते ही राजा उग्रसेन ने प्रद्युम्न जी औ संबू को बुलाय के कहा-कि देखो हरि का पीछा ताक यह असुर आया है प्रजा को दुख देने-तुम इस का कुछ उपाय करो ● राजा की आज्ञा पाय प्रद्युम्न जी सब कटक ले रथ पर बैठ-नगर के बाहर लडनें को जा उपस्थित हुए औ संबू को भयातुर देख बोले ● कि तुम किसी बात की चिंता मत करो मैं हरि प्रताप से इस असुर को बात की बात में मार लेता हूं-इतना बचन कह प्रद्युम्न जी सेना ले अस्त्र पकड जों उस के सनमुख हुए-तो उस ने ऐसी माया की कि दिन की महा अंधेरी रात हो गई ● प्रद्युम्न जी ने वोंहीं तेज बान चलाय यों महा अंधकार को दूर किया-कि जों सूरज का तेज कुहासे को दूर करै ● पुनि कई एक बान उन्हों ने ऐसे मारे कि उस का रथ अस्तव्यस्त हो गया औ वह घबराकर कभी भाग जाता था-कभी आय अनेक अनेक राक्षसी माया उपजाय उपजाय लडता था औ प्रभु की प्रजा को अति दुख देता था ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज-दोनों ओर से महा युद्ध होता ही था कि इस बीच ऐका ऐकी आय-सावल दैत्य के मंत्री दुविद ने प्रद्युम्न जी की छाती में ऐक गदा ऐसी मारी-कि ये मूर्छा खाय गिरे-इन के गिरते ही वह किलकारी मार के पुकारा-कि मैं ने श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न को मारा ● म

हाराज - यादव तो राक्षसों से महा युद्धकर रहे थे - उसी समय प्रद्युम्न जी को मूर्छित देख दारुक सारथी का बेटा रथ में डाल रनसे ले भागा औ नगर में ले आया ● चैतन्य होते ही प्रद्युम्न जी ने अति क्रोधकर सूत से कहा ●●

ऐसो नाहिं उचित हो तोहि ● जान अचेत भजावै मोहि ●
रन तजकै तू ल्यायौ धाम ● यह तो नहीं सूर कौ काम ●
यदुकुल में ऐसो नहीं कोय ● तज के खेत जो भाग्यौ होय ●

भया तैं ने कहीं मुझे भागते देखा था - जो तू आज मुझे रन से भगाय ला या ● यह बात जो सुनेगा सो मेरी हांसी औ निंदा करेगा - तैंने यह काम भला न किया जो बिन काम कलंक का टीका लगा दिया ● महाराज - इतनी बात के सुनते ही सारथी रथ से उतर सनमुख खड़ा हो हाथ जोड सिरनाय बोला - कि हे प्रभु - तुम सब नीति जानते हो ऐसा संसार में कोई धर्म नहीं जिसे तुम नहीं जानते - कहा है ●●

रथी सूर जों घायल परै ● ताकों सारथी लै नीकरै ●
जौ सारथी परै खा घाय ● ताहि बचाय रथी लै जाय ●
लागी प्रबल गदा अति भारी ● मूर्छित ह्वै सुध देह बिसारी ●
तब हौं रन तें लै नीसस्यौ ● स्वामि द्रोह अपजस तें डस्यौ ●
घरी एक लीनौ बिश्राम ● अब चलकर कीजै संग्राम ●
धर्म नीति तुम तें जानिये ● जग उप हास न मन आनिये ●
अब तुम सबही कौं बधकरिहौ ● माया मय दानवकी हरिहौ ●

महाराज - ऐसे कह सूत प्रद्युम्न जी को जल के निकट ले गया - वहां

जाय उन्हों ने मुख हाथ पांव धोय सावधान होय - कवच टोप पहन धनुष बान संभाल सारथी से कहा ● भला जो भया सो भया पर अब तू मुझे वहां ले चल - जहां दुविद यदुबंसियों से युद्धकर रहा है ● बान के सुनते ही सारथी बात की बात में रथ वहां ले गया - जहां वह लडरहा था ● जाते ही इन्हों ने ललकारकर कहा - कि तू इधर उधर क्या लडता है आ मेरे सनमुख हो जो तुझे सिसुपाल के पास भेजूं ● यह बचन सुनते ही वह जों प्रद्युम्न जी पर आय टूटा - तों कई ऐक बानमार इन्हों ने उसे मार गिराया औ संबू ने भी असुर दल काट काट समुद्र में पाटा ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - जब असुर दल से युद्ध करते करते द्वारिका में सब यदुबंसियों को सत्ताईस दिन हुए - तब अन्तरजामी श्री कृष्णचंद जी ने हस्तनापुर में बैठे बैठे द्वारिका की दसा देख - राजा युधिष्ठिर से कहा ● कि महाराज - मैं ने रात्र स्वप्न में देखा कि द्वारिका में महा उपद्रव होरहा है औ सब यदुबंसी अति दुखी हैं - इस से अब आप आज्ञा दो तो हम द्वारिका को प्रस्थान करैं ● यह बात सुन राजा युधिष्ठिर ने हाथ जोडकर कहा - जो प्रभु की इच्छा ● इतना बचन राजा युधिष्ठिर के मुख से निकलते ही श्री कृष्ण बलराम सब से बिदा हो - जों पुर के बाहर निकले तों क्या देखते हैं कि बांई ओर ऐक हिरनी दौडी चली जाती है औ सोंहीं स्वान खडा सिर झाडता है ● यह अपशकुन देख हरि ने बलराम जी से कहा कि भाई - तुम सब को साथ ले पीछे आओ मैं आगे चलता हूं ● राजा - भाई

से यों कह श्री कृष्णचंद जी आगे जाय रन भूमि में क्या देखते हैं - कि असुर यदुबंसियों को चारों ओर से बड़ी मार मार रहे हैं औ वे निपट घबराय घबराय शस्त्र चलाय रहे हैं ❁ यह चरित्र देख हरि जों यहां खड़े हो कुछ भावित हुए - तों पीछे से बलदेव जी भी जा पहुंचे ❁ उस काल श्री कृष्ण जी ने बलराम जी से कहा कि भाई - तुम जाय नगर औ प्रजा की रक्षा करो - मैं इन्हें मार चला आता हूं ❁ प्रभु की आज्ञा पाय बलदेव जी तो पुरी में पधारे औ आप हरि वहां रन में गए - जहां प्रद्युम्न जी सालव से युद्धकर रहे थे ❁ यदुपति के आते ही शंख धुनि हुई औ सब ने जाना कि श्री कृष्णचंद आए ❁ महाराज - प्रभु के आते ही सालव अपना रथ उड़ाय आकाश में ले गया औ वहां से अग्नि सम बान बरसाने लगा ❁ उस समय श्री कृष्णचंद जी ने सोलह बान गिनकर ऐसे मारे कि उस का रथ औ सारथी उड़ गया औ वह लड़खड़ाय नीचे गिरा ❁ गिरते ही संभलकर एक बान उसने हरि की बाम भुजा में मारा औ यों पुकारा कि रे कृष्ण - खड़ा रह मैं युद्धकर तेरा बल देखता हूं - तें ने तो संखासुर भौमासुर औ सिसुपाल आदि बड़े बड़े बलवान छल बलकर मारे हैं - पर अब मेरे हाथ से तेरा बचना कठिन है ❁❁

मो सों तोहि परयौ अब काम ❁ कपट छांडि कीजौ संग्राम ❁
बानासुर भौमासुर बरी ❁ तेरी मग देखत हैं हरी ❁
पठऊं तहां बहुरि नहिं आवै ❁ भाजे तू न बड़ाई पावै ❁

यह बात सुन जों श्री कृष्ण जी ने इतना कहा कि रे मूरख अभिमानी

कायर कूर-जो हैं क्षत्री गंभीर धीर सूर वे पहले किसी से बडा बोल न हीं बोलते-तौ उस ने दौडकर हरि पर एक गदा अति क्रोधकर चलाई सो प्रभु ने सहज सुभाव ही काट गिराई ● पुनि श्री कृष्णचंद जी ने उसे एक गदा मारी - वह गदा खाय माया की ओट में जाय दो घडी मूर्छित रहा ● फिर कपट रूप बनाय प्रभु के सनमुख आय बोला ●●

माय तिहारी देवकी - पठयौ मोहि अकुलाय ●
रिपु शाल्व वसुदेव कौं - पकरे लीये जाय ●

महाराज-वह असुर इतना वचन सुनाय वहां से जाय-माया का वसुदेव बनाय बांध लाय श्री कृष्णचंद के सोंहीं आय बोला ● रे कृष्ण - देख मैं तेरे पिता को बांध लाया औ अब इस का सिर काट सब यदुबंसियों को मार समुद्र में पाटूंगा - पीछे तुझे मार इकछत्र राज करूंगा ● महाराज - ऐसे कह उस ने माया के वसुदेव का सिर पछाड के श्री कृष्ण जी के देखते काट डाला औ बरछी के फल पर रख सब को दिखाया ● यह माया का चरित्र देख पहले तो प्रभु को मूर्छा आई - पुनि देह संभाल मन ही मन कहने लगे कि यह क्यौंकर हुआ जो यह वसुदेव जी को बलराम जी के रहते द्वारिका से पकड लाया ● क्या यह उन से भी बली है जो उन के सनमुख से वसुदेव जी को ले निकल आया ●

●महाराज-इसी भांति की अनेक अनेक बातें कितनी एक बेर लग आसुरी माया में आय प्रभु ने कीं औ महा चिंतित रहे ● निदान ध्यानकर हरि ने देखा तो सब आसुरी माया की छाया का भेद पाया - तब तो श्री

श्री कृष्णचंद जी ने उसे ललकारा - प्रभु की ललकार सुन वह आकाश को गया औ लगा वहां से प्रभु पर शस्त्र चलाने ● इस बीच श्री कृष्ण जी ने कई एक बान ऐसे मारे कि वह रथ समेत समुद्र में गिरा-गिर ते ही संभल गदा ले प्रभु पर झपटा-तब तो हरि ने उसे अति क्रोधकर सुदरसन चक्र से मार गिराया-ऐसे कि जैसे सुरपति ने वृत्तासुर को मार गिराया था ● महाराज-उस के गिरते ही उस के सीस की ज्योति निकल भूमि पर गिरी औ जोति श्री कृष्णचंद के मुख में समाई ●

इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे सालव दैत्य बधो नाम सप्तसप्ततिमोध्यायः ● ॥ ७७ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि राजा - अब मैं सिसुपाल के भाई बक्रदंत औ बिदूरथ की कथा कहता हूं कि जैसे वे मारे गये ● जब से सिसुपाल मारा गया तब से वे दोनों श्री कृष्णचंद जी से अपने भाई का पलटा लेने का विचार किया करते थे ● निदान सालव औ दुबिद के मरते ही अपना सब कटक ले द्वारिकापुरी पर चढि आये औ चारों ओर से घेर लगे अनेक अनेक प्रकार के जंत्र औ शस्त्र चलाने ●●

परौ नगर में खरबर भारी ● सुनि पुकार रथ चढे मुरारी ●

आगे श्री कृष्णचंद जी नगर के बाहर जाय वहां खडे हुए-कि जहां अति कोप किये शस्त्र लिये वे दोनों असुर लडने को उपस्थित थे ● प्रभु को देखते ही बक्रदंत महा अभिमान कर बोला-कि रे कृष्ण-तू पहले अपना शस्त्र चलाय ले पीछे मैं तुझे मारूंगा ● इतनी बात मैं ने इस

लिये तुझे कही कि मरते समय तेरे मन में यह अभिलाषा न रहै-कि मैं ने वक्रदंत पर शस्त्र न किया ● तू ने तो बडे बडे बली मारे हैं पर अब मेरे हाथ से जीता न बचेगा ● महाराज-ऐसे कितने एक दुष्ट बचन कह वक्रदंत ने प्रभु पर गदा चलाई-सो हरि ने सहज ही काट गिराई ● पुनि दूसरी गदा ले हरि से महा युद्ध करने लगा-तब तो भगवान ने उसे मार गिराया औ तिस का जी निकल प्रभु के मुख में समाया ●

आगे वक्रदंत का मरना देख विदूरथ जो युद्ध करने को चढआया-तों हीं श्री कृष्ण जी ने सुदरसन चक्र चलाया ● उस ने विदूरथ का सिर मुकुट कुंडल समेत काट गिराया-पुनि सब असुर दल को मार भगाया-उस काल ●●

फूले देव पहुप बरषावैं ● किन्नर चारन हरि जस गावैं ●

सिद्धसाध विद्याधर सारे ● जय जय चढे विमान पुकारे ●

पुनि सब बोले कि महाराज-आप की लीला अपरंपार है कोई इस का भेद नहीं जानता ● प्रथम हिरनकस्यप औ हिरनाकुस भए-पीछे रावन औ कुंभकरन-अब ये दंतवक्र औ सिसुपाल हो आए-तुम ने तीनों बेर इन्हें मारा औ परम मुक्ति दी-इस से तुम्हारी गति कुछ किसू से जानी नहीं जाती ● महाराज-इतना कह देवता तो प्रभु को प्रनाम कर चले गए औ हरि बलराम जी से कहने लगे-कि भाई-कौरव औ पांडवों से हुई लडाई अब क्या करैं ● बलदेव जी बोले-कृपानिधान-कृपाकर आप हस्तनापुर को पधारिये-तीरथ यात्राकर पीछे से मैं भी आ●

ताहूं ● इतनी कथा कह श्री सुकदेव जी बोले कि महाराज यह ब चन सुन श्री कृष्णचंद जी तो वहां को पधारे जहां कुरक्षेत्र में कौरव औ पांडव महा भारथ युद्ध करते थे औ बलराम जी तीरथ यात्रा को नि कले ● आगे सब तीरथ करते करते बलदेव जी नीमषार में पहुंचे तो वहां क्या देखते हैं कि एक ओर ऋषि मुनि यज्ञ रच रहे हैं औ ए क ओर ऋषि मुनि की सभा में सिंहासन पर बैठे सूतजी कथा बांच र हे हैं ● इन को देखते ही सौनकादि सब मुनि ऋषियों ने उठकर प्र नाम किया औ सूत सिंहासन पर गद्दी लगाए बैठा देखता रहा ●

महाराज सूत के न उठते ही बलराम जी ने सौनकादि सब ऋषि मुनियों से कहा कि इस मूरख को किस ने बक्ता किया और व्यास आसन दिया ● बक्ता चाहिये भक्तिवंत विवेकी औ ज्ञानी - यह है गुन हीन कृप न औ अति अभिमानी ● पुनि चाहिये निर्लोभी औ परस्वारथी - यह है महा लोभी औ आप स्वारथी ● ज्ञान हीन अविवेकी को यह व्यास गादी फबती नहीं - इसे मारें तो क्या पर यहां से निकाल दिया चाहिये ● इ स बात के सुनते ही सौनकादि बड़े बड़े मुनि ऋषि अति बिनतीकर बो ले कि महाराज तुम हो बीर धीर सकल धर्म नीति के ज्ञान - यह है का यर अधीर अविवेकी अभिमानी अज्ञान ● इस का अपराध क्षमा कीजे क्यों कि यह व्यास गादी पर बैठा है औ ब्रह्मा ने यज्ञ कर्म के लिये इसे य हां स्थापित किया है ●●

आसन गर्व मूढमन धर्यौ ● उठि प्रनाम तुम कौं नहीं कर्यौ ●
यही नाथ याकौ अपराध ● परी चूक है तौ यह साध ●

सूत हि मारे पातक होय ● जग में भलौ कहै नहीं कोय ●

निर्फल बचन नजाय तिहारौ ● यह तुम निज मनमांहि बिचारौ ●

महाराज- इतनी बात के सुनते ही बलराम जी ने ऐक कुश उठाय-सहज सुभाय सूत के मारा - उस के लगते वह मरगया ● यह चरित्र देख सौनकादि ऋषि मुनि हाहाकारकर अति उदास हो बोले कि महाराज- जो बात होनी थी सो तो हुई पर अब कृपाकर हमारी चिंता मेटिये ● प्रभु बोले तुम्हें किस बात की इच्छा है सो कहो हम पूरी करैं ● मुनियों ने कहा महाराज-हमारे यज्ञ करने में किसी बात का बिघ्न न होय यही हमारी बासना है सो पूरी कीजे औ जगत में जस लीजे ● इतना बचन मुनियों के मुख से निकलते ही अंतरजामी बलराम जी ने सूत के पुत्र को बुलवाय- व्यास गादी पर बैठाय के कहा ● यह अपने बाप से अधिक बक्ता होगा औ मैं ने इसे अमरपद दे चिरंजीव किया- अब तुम निचिंताई से यज्ञ करो ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे सूत बधो नाम अष्ट सप्ततिमोध्यायः ● ॥ ७८ ॥ ●●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज- बलराम जी की आज्ञा पाय सौनकादि सब ऋषि मुनि अति प्रसन्न हो जों यज्ञ करने लगे- तों बालक नाम दैत्य बल का बेटा आय- महा मेघकर बादल गरजाय-बडी भयंकर अति काली आंधी चलाय-लगा आकाश से रुधिर औ मल मूत्र बरसावने औ अनेक अनेक उपद्रव मचाने ●

महाराज- दैत्य की यह अनीति देखि बलदेव जी ने हल मूसल का

आवाहन किया - वे आय उपस्थित हुए ● पुनि महा क्रोधकर प्रभु ने जालव को हल से खैंच एक मूसल उस के सिर में ऐसा मारा कि ●●

फूट्यौ मस्तक छूटे प्रान ● रुधिर प्रवाह भयौ तिहिं स्थान ●
कर भुज डारि पर्यौ विकरार ● निकरे लोचन रातें बार ●

जालव के मरते ही सब मुनियों ने अति संतुष्ट हो बलदेव जी की पूजा की औ बहुत सी स्तुतिकर भेट दी ● फिर बलराम सुखधाम वहां से बिदा हो तीरथ यात्रा को निकले तो महाराज-सब तीरथकर पृथ्वी प्रदक्षना करते करते कहां पहुंचे-कि जहां कुरक्षेत्र में दुर्योधन औ भीमसेन महा युद्ध करते थे औ पांडव समेत श्री कृष्णचंद औ बड़े बडे राजा खडे देखते थे ● बलराम जी के जाते ही दोनों बीरों ने प्रनाम किया-एक ने गुरु जान दूसरे ने बंधु मान ● महाराज-उन दोनों को लडता देख बलदेव जी बोले ●●

सुभट समान प्रबल दोउ बीर ● अब संग्राम तजहु तुम धीर ●
कौर पंडु कौ राखहु बंस ● बंधु मित्र सब भए बिध्वंस ●
दोऊ सुनि बोले सिरनाय ● अब रन ते उतर्यौ नहीं जाय ●

पुनि दुर्योधन बोला कि गुरु देव मैं आप के सनमुख झूठ नहीं भाषता-आप मेरी बात मन दे सुनिये - यह जो महाभारथ युद्ध होता है औ लोग मारे गए औ जाते हैं औ जायगे- सो तुम्हारे भाई श्री कृष्णचंद जी के मते से ● पांडव केवल श्री कृष्ण जी के बल से लडते हैं-नहीं इन की क्या सामर्थ थी जो ये कौरवों से लडते ● ये बापरे तो हरि के

बस ऐसे हो रहे हैं - कि जैसे काठ की पुतली नटुऐ के बस होय - जिधर वह चलावे तिधर वह चले ॥ उन को यह उचित न था - जो पांडवों की सहायताकर हम से इतना द्वेषकरैं ॥ दूसासन की भीम से भुजा उखडाई औ मेरी जांघ में गदा लगवाई ॥ तुम से अधिक हम क्या कहैंगे इस समय ॥॥

जो हरि करैं सोई अब होय ॥ या बातें जाने सब कोय ॥

येह बचन दुर्योधन के मुख से निकलते ही - इतना कह बलराम जी श्री कृष्णचंद के निकट आऐ - कि तुम भी उपाध करने में कुछ घाट नहीं औ बोले - कि भाई - तुम ने यह क्या किया जो युद्ध करवाय दूसासन की भुजा उखडवाई औ दुर्योधन की जांघ कटवाई ॥ यह धर्म युद्ध की रीति नहीं है कि कोई बलवान हो किसी की भुजा उखाडे - कै कटि के नीचे शस्त्र चलावे ॥ हां धर्म युद्ध यह है कि ऐक ऐक को ललकार सनमुख शस्त्र करै ॥ श्री कृष्णचंद बोले कि भाई - तुम नहीं जानते ये कौरव बडे अधर्मी अन्याई हैं - इन की अनीति कुछ कही नहीं जाती ॥ पहले इन्हों ने दूसासन शकुन भगदंत के कहे जुआ खेल कपटकर - राजा युधिष्ठिर का सर्वस जीत लिया ॥ दूसासन द्रौपती को हाथ पकड लाया - इस से उस के हाथ भीमसेन ने उखाडे ॥ दुर्योधन ने सभा के बीच द्रौपती को जांघ पर बैठ ने को कहा - इसी से उस की जांघ काटी गई ॥

इतना कह पुनि श्री कृष्णचंद बोले कि भाई - तुम नहीं जानते इसी भांति की जो जो अनीति कौरवों ने पांडवों के साथ की है - सो ह

म कहां तक कहेंगे ● इस से यह भारथ की आग किसी रीति से अब न बुझेगी - तुम इस का कुछ उपाय मत करो ● महाराज - इतना बचन प्रभु के मुख से निकलते ही बलराम जी कुरक्षेत्र से चलि द्वारिका पुरी में आये औ राजा उग्रसेन सूरसेन से भेटकर हाथ जोड़ कहने लगे - कि महाराज - आप के पुन्य प्रताप से हम सब तीरथ यात्रा तो कर आये पर ऐक अपराध हम से हुआ ● राजा उग्रसेन बोले सो क्या - बलराम जी ने कहा महाराज - नीमषार में जाय हम ने सूत को मारा जिस की हत्या हमें लगी ● अब आप की आज्ञा होय तो पुनि नीमषार जाय - यज्ञ के दरसनकर तीरथ न्हाय हत्या का पाप मिटाय आवें - पीछे ब्राह्मन भोजन करवाय जात को जिमावें जिस से जग में जस पावें ● राजा उग्रसेन बोले अच्छा आप हो आइये ● महाराज - राजा को आज्ञा पाय बलराम जी कितने ऐक यदुबंसियों को साथ ले - नीमषार जाय स्नान दानकर शुद्ध हो आये ● पुनि प्रोहित को बुलाय होम करवाय ब्राह्मन जिमाय - जात को खिलाय लोक रीतिकर पवित्र हुऐ ● इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी बोले महाराज ●●

जो यह चरित्र सुनै मनलाय ● ताकौ सब ही पाप नसाय ●

इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे श्री बलराम तीर्थ करनो नाम उनाशीतिमोध्यायः ● ॥ ७९ ॥ ●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - अब मैं सुदामा की कथा कहता हूं

कि जैसें वह प्रभु के पास गया औ उस का दरिद्र कटा - सो तुम म न दे सुनौं ● दक्षन दिसा की ओर है एक द्रावड देस - तहां विप्र औ बनिक बसे थे नरेस ● जिन के राज में घर घर होता था भजन सुमिरन औ हरि का ध्यान - पुनि सब करते थे तप यज्ञ धर्म दान और साध संत गौ ब्राह्मन का सनमान ●●



ऐसे बसें सबै तिहिं ठौर ● हरि बिन कछू न जाने और ●

तिसी देस में सुदामा नाम ब्राह्मन श्री कृष्णचंद का गुरु भाई - अति दीन तन हीन महा दरिद्री ऐसा - कि जिस के घर पै न घास - न खाने को कुछ पास रहता था ● एक दिन सुदामा की स्त्री दरिद्र से अति घबराय महा दुख पाय - पति के निकट जाय - भयखाय डरती कांपती बोली - कि महाराज - अब इस दरिद्र के हाथ से महा दुख पाते हैं - जो आप इसे खोया चाहिये तो मैं एक उपाय बताऊं ● ब्राह्मन बोला सो क्या - कहा तुम्हारे परम मित्र त्रिलोकीनाथ द्वारिका बासी श्री कृष्णचंद आनंदकंद हैं - जो उन के पास जाओ तो यह जाय - क्यौं कि वे अर्थ धर्म काम मोक्ष के दाता हैं ●

महाराज - जब ब्राह्मनी ने ऐसें समझायकर कहा - तब सुदामा बोला कि हे प्रिये - बिन दिये श्री कृष्णचंद भी किसी को कुछ नहीं देते ● मैं भली भांति से जानता हूं कि जन्म भर मैं ने किसी को कभी कुछ नहीं दिया - बिन दिये कहां से पाऊंगा ● हां तेरे कहे से जाऊंगा - तो श्री कृष्ण जी के दरसनकर आऊंगा - इस बात के सुनते ही ब्राह्मनी ने एक अति पुराने धौले बस्त्र में थोडे से चावल बांध ला दिये - प्रभु की भेंट के लिये

और डोर लोटा औ लाठी ला आगे धरी ॥ तब तो सुदामा डोर लोटा कांधे पर डाल चांवल की पोटली कांख में दबाय - लाठी हाथ में ले गनेस को मनाय - श्री कृष्णचंद जी का ध्यान कर द्वारिकापुरी को पधारा ॥

महाराज - बाट ही में चलते चलते सुदामा मन ही मन कहने लगा - कि भला धन तो मेरी प्रारब्ध में नहीं पर द्वारिका जाने से श्री कृष्णचंद आनंदकंद का दरसन तो करूंगा ॥ इसी भांति से सोच बिचार करता करता सुदामा तीन पहर के बीच द्वारिकापुरी में पहुंचा - तो क्या देखता है कि नगर के चारों ओर समुद्र है औ बीच में पुरी ॥ वह पुरी कैसी है कि जिस के चहुं ओर बन उपबन फूल फल रहे हैं - तडाग बापी इंदारों पर रहट मरेहे चल रहे हैं - ठौर ठौर गायों के यूथ के यूथ चर रहे हैं - तिन के साथ साथ ग्वाल बाल न्यारे ही कुतूहल करते हैं ॥

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - सुदामा बन उपबन की शोभा निरख पुरी के भीतर जाय देखे तो कंचन के मनिमय मंदिर महा सुंदर जगमगाय रहे हैं - ठांव ठांव अथाइयों में यदुबंसी इन्द्र की सी सभा किये बैठे हैं - हाट बाट चौहटों में नाना प्रकार की वस्तु बिक रही है - घर घर जिधर तिधर गान दान हरि भजन औ प्रभु का जस हो रहा है औ सारे नगर निवासी महा आनंद में हैं ॥ महाराज - यह चरित्र देखता देखता औ श्री कृष्णचंद का मंदिर पूछता पूछता सुदामा जा प्रभु की सिंह पौर पर खडा हुआ - इस ने किसी

से डरते डरते पूछा कि श्री कृष्णचंद जी कहां विराजते हैं-उस ने क हा कि देवता आप मंदिर भीतर जाओ सनमुख ही श्री कृष्णचंद जी र त्न सिंहासन पर बैठे हैं ●

महाराज-इतना वचन सुन सुदामा जों भीतर गया-त्यों देखते ही श्री कृष्णचंद सिंहासन से उतर - आगू बढ भेटकर अति प्यार से हाथ पकड उसे ले गये ● पुनि सिंहासन पर बिठाय पांव धोय चरनामृत लिया - आगे चंदन चरच - अक्षत लगाय - पुष्प चढाय - धूप दीपकर प्रभु ने सुदामा की पूजा की ●●

इतनौ करि कै जोरे हाथ ● कुशल क्षेम पूछत यदुनाथ ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा से कहा कि महाराज-यह चरित्र देख श्री रुक्मिनी जी समेत आठों पट रानियां औ सोलह सहस्र आठ सौ रानियां और सब यदुबंसी जो उस समय वहां थे - मन हीं मन यों कहने लगे - कि इस दलिद्री - दुर्बल - मलीन - वस्त्र हीन - ब्राह्मन ने ऐसा क्या अगले जन्म पुन्य किया था जो त्रिलोकी नाथ ने इसे इतना माना ● महाराज - अंतरजामी श्री कृष्णचंद उस काल सब के मन की बात समझ उस का संदेह मिटाने को - सुदामा से गुरु के घर की बातें करने लगे ● कि भाई तुम्हें वह सुध है जो ऐक दिन गुरु पत्नी ने हमें तुम्हें ईंधन लेने भेजा था और जब वन से ईंधन ले गठडियां बांध शिर पर धर घर को चले - तब आंधी और मेह आया औ लगा मूसलाधार बरसने - जल थल चारों ओर भरगया - हम तुम भींग कर महा दुख पाय जाडाखाय रात भर ऐक वृक्ष के नीचे रहे ● भोर

श्री गुरुदेव बन में ढूंढने आये औ अति करुनाकर असीस दे हमें तुम्हें अपने साथ घर लिवाय लाये ❁

इतना कह पुनि श्री कृष्णचंद जी बोले कि भाई–जब से तुम गुरुदेव के यहां से बिछडे–तब से हम ने तुम्हारा समाचार न पाया था कि कहां थे औ क्या करते थे ❁ अब आय दरस दिखाय तुम ने हमें महा सुख दिया औ घर पवित्र किया ❁ सुदामा बोला हे कृपासिंधु–दीनबंधु–स्वामी अंतरजामी–तुम सब जानते हो कोई बात संसार में ऐसी नहीं जो तुम से छिपी है ❁ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे सुदामा द्वारिका गमनो नाम अष्टा शीततमोध्यायः ॥ ८० ॥

---

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज–अंतरजामी श्री कृष्ण जी ने सुदामा की बात सुन औ उस के अनेक मनोरथ समझ–हंसकर कहा कि भाई–भाभी ने हमारे लिये क्या भेट भेजी है सो देते क्यों नहीं–कांख में किस लिये दबाय रहे हो ❁ महाराज–यह बचन सुन सुदामा तो सुकुचाय मुरझाय रहा औ प्रभु ने झट चांवल की पोटली उस की कांख से निकाल ली ❁ पुनि खोल उस में से अति रुचिकर दो मुट्ठी चांवल खाये और जों तीसरी मुट्ठी भरी–तो श्री रुक्मिनी जी ने हरि का हाथ पकडा औ कहा कि महाराज–आप ने दो लोक तो इसे दिये अब अपने रहने को भी कोई ठौर रक्खोगे कै नहीं ❁ यह तो ब्राह्मन सुशील कुलीन अति बैरागी महा त्यागी सा दृष्ट आता है–क्यों कि इसे बिभौ पाने से कुछ हर्ष न हुआ ❁ इस से मैं ने जाना कि ये लाभ हान स

मान जानते हैं - इन्हें पाने का हर्ष न जाने का शोक ●

इतनी बात रुक्मिनी जी के मुख से निकलते ही श्री कृष्णचंद जी ने कहा कि हे प्रिये - यह मेरा परम मित्र है इस के गुन मैं कहां तक बखानूं ● सदा सर्वदा मेरे स्नेह में मगन रहता है और उस के आगे संसार के सुख को तृनवत समझता हैं ●

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी ने राजा-परीक्षित से कहा कि महाराज - ऐसे अनेक अनेक प्रकार की बातेंकर प्रभु रुक्मिनी जी को समझाय-सुदामा को मंदिर में लिवाय ले गये ● आगे षटरस भोजन करवाय पान खिलाय - हरि ने सुदामा को फेनसी सेज पर लेजाय बैठाया ● वह पथ का हारा थका तो था ही - सेज पर जाय सुखपाय सो गया ● प्रभु ने उस समय विश्वकर्मा को बुलाय के कहा - कि तुम अभी जाय सुदामा के मंदिर अति सुन्दर कंचन रत्न के बनाय-तिन में अष्ट सिद्ध नवनिद्धि धर आओ - जो इसे किसी बात की कांक्षा न रहे ● इतना बचन प्रभु के मुख से निकलते ही विश्वकर्मा वहां जाय बात की बात में बनाय आया औ हरि से कह अपने स्थान को गया ●

भोर होते ही सुदामा उठ स्नान ध्यान भजन पूजा से निचिंत हो य प्रभु के पास बिदा होन गया - उस समय श्री कृष्णचंद जी मुख से तो कुछ न बोल सके - पर प्रेम में मगन हो आंखें डबडबाय सिथल हो देख रहे ● सुदामा बिदा हो प्रनामकर अपने घर को चला औ पंथ में जाय मन हीं मन बिचार करने लगा ● कि भला भया जो मैं ने प्रभु से कुछ न मांगा - जो उन से कुछ मांगता तो वे देते तो सही

पर मुझे लोभी लालची समझते ● कुछ चिंता नहीं ब्राह्मनी को मैं सम झायलूंगा-श्री कृष्णचंद जी ने मेरा अति मान सनमान किया औ मुझे नि र्लोभी जाना यही मुझे लाख है ● महाराज - ऐसे सोच बिचार करता करता सुदामा अपने गांव के निकट आया-तो क्या देखता है कि न व ह ठांव है न वह टूटी मढैया-वहां तो ऐक इंद्रपुरी सी बस रही है ● देखते ही सुदामा अति दुखित हो कहने लगा कि हे नाथ - तू ने यह क्या किया ऐक दुख तो था ही दूसरा और दिया ● यहां से मेरी झोंपडी क्या ऊई और ब्राह्मनी कहां गई - किस से पूछूं औ कि धर ढूंढूं ●

इतना कह द्वार पर जाय सुदामा ने द्वारपाल से पूछा - कि यह मं दिर अति सुंदर किस के हैं ● द्वारपाल ने कहा श्री कृष्णचंद के मि त्र सुदामा के हैं- यह बात सुन जौं सुदामा कुछ कहने को ऊआ तों भीतर से देख उस को ब्राह्मनी-अच्छे वस्त्र आभूषन पहने नखसिख से सिंगार किये - पान खाऐ सुगंध लगाऐ सखियों को साथ लिये पति के निकट आई ●●

पायन पर पाटंबर डारे ● हाथ जोर ये बचन उचारे ●
ठाढे क्यौं मंदिर पगधारौ ● मन का सोच करौ तुम न्यारौ ●
तुम पाछें विश्वकर्मा आऐ ● तिन मंदिर पलमांझ बनाऐ ●

महाराज-इतनी बात ब्राह्मनी के मुख से सुन सुदामा जी मंदिर में गऐ औ अति बिभौ देख महा उदास भऐ ● ब्राह्मनी बोली स्वामी-धन पाय लोग प्रसन्न होते हैं तुम उदास ऊऐ इस का कारन क्या है सो कृपाक

र कहिये जो मेरे मन का संदेह जाय ● सुदामा बोला कि हे प्रिये-य

ह माया बडी ठगनी है इस ने सारे संसार को ठगा है - ठगती है औ

ठगेगी ● सो प्रभु ने मुझे दी औ मेरे प्रेम की प्रतीति न की- मैं ने उन
से कब मांगी थी जो उन्हों ने मुझे दी-इसी से मेरा चित उदास है ●
ब्राह्मनी बोली स्वामी-तुम ने तो श्री कृष्णचंद जी से कुछ न मागा था-
पर वे अंतरजामी घट घट की जानते हैं- मेरे मन में धन की वासना
थी सो प्रभु ने पूरी की तुम अपने मन में और कुछ मत समझो ● इत
नी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महा
राज - इस प्रसंग को जो सदा सुने सुनावेगा सो जन जगत में आय
दुख कभी न पावेगा औ अंतकाल बैकुंठ धाम जावेगा ● इति श्री लाल
कृते प्रेम सागरे सुदामा दरिद्र गमननो नाम एकाशीतिमोध्यायः ●
॥ ८१ ॥ ●●

श्री शुकदेव जी बोले कि राजा - अब मैं प्रभु के कुरक्षेत्र जाने की कथा
कहता हूं तुम चित दे सुनौ - कि जैसे द्वारिका से सब यदुबंसियों को
साथ ले श्री कृष्णचंद औ बलराम जी सूर्य ग्रहन न्हानें कुरक्षेत्र गऐ ●
राजा ने कहा महाराज - आप कहिये मैं मन दे सुनता हूं ● पुनि श्री
शुकदेव जी बोले कि महाराज- ऐक समय सूर्य ग्रहन के समाचार पा
य श्री कृष्णचंद औ बलदेव जी ने राजा उग्रसेन के पास जाय के कहा
-कि महाराज-बहुत दिन पीछे सूर्य ग्रहन आया है जो इस पर्व को कु
रक्षेत्र में चलकर कीजे तो बडा पुन्य होय- क्यौं कि शास्त्र में लिखा है

कि कुरक्षेत्र में जो दान पुन्य करिये सो सहस्र गुना होय ॥ इतनी बात के सुनते ही यदुबंसियों ने श्री कृष्णचंद जी से पूछा कि महाराज-कुरक्षेत्र ऐसा तीर्थ कैसे ऊआ सो कृपाकर हमें समझाय के कहिये ॥

श्री कृष्ण जी बोले कि सुनो यमदग्नि ऋषि बडे ज्ञानी ध्यानी तपस्वी तेजस्वी थे-तिन के तीन पुत्र ऊए उन में सब से बडे परशुराम-सो वैराग कर घर छोड चित्र कूट में जाय रहे औ सदाशिव की तपस्या करने लगे ॥ लडकों के होते ही यमदग्नि ऋषि गृहस्थाश्रम छोड वैराग कर-स्त्री सहित बन में जाय तपकरने लगे ॥ उन की स्त्री का नाम रेनुका सो एक दिन अपनी बहन को नौत नें गई-उस की बहन राजा सहस्रार्जुन की स्त्री थी ॥ नौता देतें ही अहंकारकर राजा सहस्रार्जुन की रानी रेनुका की बहन हंसकर बोली-कि बहन तुम हमें हमारे कटक समेत जिमाय सको तो नौता दो नहीं तो न दो ॥

महाराज-यह बात सुन रेनुका अपना सा मुंह ले चुपचाप वहां से उठ अपने घर आई-इसे उदास देख यमदग्नि ऋषि ने पूछा कि आज क्या है जो तू अन मनी हो रही है ॥ महाराज-बात के पूछते ही रेनुका ने रोकर सब ज्यों की त्यों बात कही ॥ सुनते ही यमदग्नि ऋषि ने स्त्री से कहा कि अच्छा तू जाय के अभी अपनी बहन को कटक समेत नौत आ ॥ पति की आज्ञा पाय रेनुका बहन के घर जाय नौत आई-उस की बहन ने अपने स्वामी से कहा कि कल तुम्हें हमें दल समेत यमदग्नि ऋषि के यहां भोजन करने जाना है ॥ स्त्री की बात सुन अच्छा क

॥ वह हँसकर चुप होरहा ● भोर होते ही यमदग्नि उठकर राजा इंद्र के पास गए औ कामधेनु मांग लाए ● पुनि आय राजा सहस्रार्जुन को बुलाय लाए- वह कटक समेत आया- तिसे यमदग्नि जी ने इच्छा भोजन खिलाया ●

कटक समेत भोजनकर राजा सहस्रार्जुन अति लज्जित हुआ औ मन हीं मन कहने लगा- कि इस ने इतने लोगों के खाने की सामग्री रात भर में कहां पाई औ कैसे बनाई- इस का भेद कुछ जाना नहीं जाता ● इतना कह बिदा होय उस ने अपने घर जाय- यों कह एक ब्राह्मन को भेज दिया- कि देवता तुम यमदग्नि के घर जाय इस बात का भेद लाओ- कि उस ने किस के बल से एक दिन के बीच मुझे कटक समेत नौत जिमाया ● इतनी बात के सुनते ही ब्राह्मन ने उठ जाय देख आय सहस्रार्जुन से कहा- कि महाराज- उस के घर में कामधेनु है उसी के प्रभाव से उस ने तुम्हें एक दिन में नौत जिमाया ● यह समाचार सुन सहस्रार्जुन ने उसी ब्राह्मन से कहा - कि देवता - तुम जाय हमारी ओर से यमदग्नि ऋषि से कहो- कि सहस्रार्जुन ने कामधेनु मांगी है ●

बात के सुनते ही वह ब्राह्मन संदेसा ले ऋषि के पास गया औ उस ने सहस्रार्जुन की कही बात कही ● ऋषि बोले कि यह गाय हमारी नहीं जो हम दें- यह तो राजा इंद्र की है हम इसे दे नहीं सकते तुम जाय अपने राजा से कहो ● बात के कहते ही ब्राह्मन ने आय राजा सहस्रार्जुन से कहा- कि महाराज- ऋषि ने कहा है कामधेनु हमारी नहीं

यह तो राजा इंद्र की है - इसे हम दे नहीं सकते ● इतनी बात ब्रा ह्मन के मुख से निकलते ही सहस्रार्जुन ने अपने कितने एक जोधा औं को बुलाय के कहा - तुम अभी जाय यमदग्नि के घर से कामधेनु खोल लाओ ●

स्वामी की आज्ञा पाय जोधा ऋषि के स्थान पर गए औ जो धेनु को खोल यमदग्नि के सनमुख हो ले चले-तो ऋषि ने दौड़कर बाट में जा य कामधेनु को रोका ● यह समाचार पाय-क्रोधकर सहस्रार्जुन ने आ -ऋषि का सिर काट डाला ● कामधेनु भाग इंद्र के यहां गई - रेनुका आय पति के पास खडी भई ●●

सिर खसोट लोटत फिरै - बैठि रहै गहिपाय ●
छाती पीटै रुदन करि-पिउ पिउ कहि बिललाय ●

उस काल रेनुका का बिलबिलाना औ रोना सुन दसों दिसा के दिग पा ल कांप उठे औ परशुराम जी का तप करते आसन डिगा और ध्यान छूटा ● ध्यान के छूटते ही जानकर परशुराम जी अपना कुठार ले वहां आये जहां पिता की लोथ पड़ी थी औ माता पीटती खड़ी थी ● देखते ही परशुराम जी को महा कोप हुआ - इस में रेनुका ने पति के मारे जाने का सब भेद पुत्र को रोरो कह सुनाया ● बात के सुनते ही परशुराम जी इतना कह वहां गये-जहां सहस्रार्जुन अपनी सभा में बैठा था-कि मा ता-पहले मैं अपने पिता के बैरी को मारिआऊं तब आय पिता को उठा ऊंगा ● उसे देखते ही परशुराम जी कोपकर बोले ●●

अरे क्रूर कायर कुल द्रोही ● तात मारि दुख दीनौं मोही ●

ऐसे कह जब फरसा ले परशुराम जी महा कोप में आये - तब वह भी धनुष बान ले इन के सोहीं खडा हुआ - दोनों बली महा युद्ध करने लगे ● निदान लडते लडते परशुराम जी ने चार घडी के बीच सहस्रार्जुन को मार गिराया - पुनि उस का कटक चढि आया तिसे भी इन्हों ने उसी के पास काट डाला ● फिर वहां से आय पिता की गति करी औ माता को समझा पुनि उसी ठौर परशुराम जी ने रुद्र यज्ञ किया - तभी से वह स्थान क्षेत्र कहकर प्रसिद्ध हुआ ● वहां जाकर ग्रहन में जो कोई दान स्नान तप यज्ञ करता है - उसे सहस्र गुना फल होता है ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज - इस प्रसंग के सुनते ही सब यदुबंसियों ने प्रसन्न हो श्री कृष्णचंद जी से कहा कि महाराज - शीघ्र कुरक्षेत्र को चलिये अब विलंब न करिये - क्यौं कि पर्व पर पहुंचा चाहिये ● बात के सुनते ही श्री कृष्णचंद औ बलराम जी ने राजा उग्रसेन से पूछा कि महाराज - सब कोई कुरक्षेत्र को चलेगा यहां पुरी की चौकसी को कौन रहेगा ● राजा उग्रसेन ने कहा अनिरुद्ध जी को रख चलिये - राजा की आज्ञा पाय प्रभु ने अनिरुद्ध को बुलाय समझायकर कहा कि बेटा - तुम यहां रहो गौ ब्राह्मन की रक्षा करो औ प्रजा को पालो हम राजा जी के साथ सब यदुबंसियों समेत कुरक्षेत्र न्हाय आवें - अनिरुद्ध जी ने कहा जो आज्ञा ● महाराज - ऐसे अनिरुद्ध जी को पुरी की रखवाली छोड शूरसेन - वसुदेव - उद्धव - अक्रूर - कृतबर्मा आदि छोटे बडे सब यदुबंसी अप

नी अपनी स्त्रीयों समेत राजा उग्रसेन के साथ कुरक्षेत्र चलने को उपस्थित हुए ॥ जिस समैं कटक समेत राजा उग्रसेन ने पुरी के बाहर डेरा किया, उस काल सब जाय मिले ॥ तिन के पीछे से श्री कृष्णचंद जी भी भाई भौजाई को साथ ले, आठों पटरानी औ सोलह सहस्र आठ सौ रानी औ बेटों पोतों समेत जाय मिले ॥ प्रभु के पहुंचते ही राजा उग्रसेन ने वहां से डेरा उठाया औ राजा इंद्र की भांति बडी धूमधाम से आगे को प्रस्थान किया ॥

॥ इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज, कितने एक दिनों में चले चले श्री कृष्णचंद सब यदुवंसियों समेत आनंद मंगल से कुरक्षेत्र में पहुंचे, वहां जाय पर्व में सब ने स्नान किया औ यथा शक्ति हरएक ने हाथी घोडा रथ पालकी वस्त्र शस्त्र रत्न आभूषन अन्न धन दान दिया ॥ पुनि वहां सबों ने डेरे डाले, महाराज, श्री कृष्णचंद औ बलराम जी के कुरक्षेत्र जाने के समाचार पाय, चहुं ओर के राजा कुटुंब सहित अपनी अपनी सब सेना लेले वहां आय आय श्री कृष्ण बलराम जी को मिले ॥ पुनि सब कौरव पांडव भी अपना अपना दल ले सकुटुंब वहां आय मिले, उस काल कुंती औ द्रोपती यदुवंसियों के रनवास में जाय सब से मिलीं ॥ आगे कुंती ने भाई के सनमुख जाय कहा कि भाई, मैं बडी अभागी जिस दिन से ब्याही उसी दिन से दुख उठाती हूं ॥ तुम ने जब से ब्याह दी तब से मेरी सुधि कभी न ली औ राम कृष्ण जो सब के हैं सुखदाई, उन को भी मेरी दया कुछ न आई ॥ महाराज, इस बात के सुनते ही करुनाकर आंखें भर वसु

देव जी बोले- कि बहन तू मुझे क्या कहती है इस में मेरा कुछ बस न हीं- कर्म की गति जानी नहीं जाती हरि इच्छा प्रबल है- देखो कंस के हाथ मैं ने भी क्या क्या दुख न पाया ॥

प्रभु आधीन सकल जग आय ॥ फिन दुख करौ देख जग भाय ॥

महाराज- इतना कह बहन को समझाय बुझाय बसुदेव जी वहां गये जहां सब राजा राजा उग्रसेन की सभा में बैठे थे औ राजा दुर्योधन आदि बड़े बड़े नृप औ पांडव उग्रसेन ही की बड़ाई करते थे ॥ कि राजा तुम बड़ भागी हो जो सदा श्री कृष्णचंद का दरसन पाते हो औ जन्म जन्म का पाप गंवाते हो ॥ जिन्हें शिव बिरंचि आदि सब देवता खोजते फिरें- सो प्रभु तुम्हारी सदा रक्षा करें ॥ जिन का भेद जोगी जती मुनी ऋषी न पावें ॥ सो हरि तुम्हारी आज्ञा लें ब आवें ॥ जो हैं सब जग के ईस- बेई तुम्हें निवावते हैं सीस ॥

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज- ऐसे सब राजा आय आय राजा उग्रसेन की प्रसंसा करते थे औ वे यथा योग सब का समाधान ॥ इस में श्री कृष्ण बलराम जी का आना सुन नंद उपनंद भी सकुटुंब- सब गोपी गोप ग्वाल बाल समेत आन पहुंचे ॥ स्नान ध्यान से सुचित्त हो नंद जी वहां गये जहां पुत्र सहित वसुदेव देवकी बिराजते थे- इन्हें देखते ही वसुदेव जी उठकर मिले औ दोनों ने परस्पर प्रेम कर ऐसे सुख माना- कि जैसे कोई गई वस्तु पाय सुख माने ॥ आगे वसुदेव जी ने नंदराय जी से ब्रज की पिछली सब बातें कह सुनाई- जैसे नंदराय जी ने श्री कृष्ण बलराम जी को पाला था ॥ म

हाराज-इस बात के सुनते ही नंदराय जी नयनों में नीर भर वसुदेव जी का मुख देख रहे-उस काल श्री कृष्ण बलदेव जी प्रथम नंद जसोदा जी को यथा योग दंडवत प्रनाम कर-पुनि ग्वाल बालों से जाय मिले ● तहां गोपियों ने आय हरि का चंद्रमुख निरख-अपने नयन चकोरों को सुख दिया औ जी मव का फल लिया ● इतना कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-वसुदेव-देवकी-रोहनी-श्री कृष्ण-बलराम से मिल जो कुछ प्रेम नंद उपनंद जसोदा गोपी गोप ग्वाल बालों ने किया सो मुझ से कहा नहीं जाता-वह देखे ही बन आवे ● निदान सब को स्नेह में निपट व्याकुल देख श्री कृष्णचंद जी बोले कि सुनो ●●

मेरी भक्ति जो प्रानी करै ● भवसागर निर्भय सो तरै ●
तन मन धन तुम अर्पन कीन्हो ● नेह निरंतरकर मोहि चीन्हो ●
तुम सम बड़ भागी नहीं कोय ● ब्रह्मा रुद्र इंद्र किन होय ●
जोगेश्वर के ध्यान न आयो ● तुम संग रह निज प्रेम बढायो ●
हों सबही के घट घट रहौं ● अगम अगाध जु बानी कहौं ●

जैसे तेज जल अग्नि पृथ्वी आकाश का है देह मे बास-तैसे सब घट में मेरा है प्रकाश ● श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-जब श्री कृष्णचंद ने यह सब भेद कह सुनाया-तब सब ब्रजबासियों को धीरज आया ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे श्री कृष्ण बलराम कुरक्षेत्र गमनो नाम द्वियाशीतिमोध्यायः ● ॥ ८२ ॥ ●●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - जैसे द्रोपती औ श्री कृष्णचंद जी की स्त्रीयों में परस्पर बातें ऊई सो मैं प्रसंग कहत हूं - तुम सुनौ ● एक दिन कौरव औ पांडवों की स्त्रीयां श्री कृष्णचंद जी की नारियों के पास बैठीं थीं औ प्रभु के चरित्र औ गुन गाती थीं - इस में कुछ बात जो चली तो द्रोपती ने श्री रुक्मिनी जी से कहा - कि हे सुंदरि - कह तू ने श्री कृष्णचंद जी को कैसे पाया ● श्री रुक्मिनी जी बोलीं ●●

सुनौ द्रोपती तुम चितलाय ● जैसे प्रभु ने किये उपाय ●

मेरे पिता का तो मनोरथ था कि मैं अपनी कन्या श्री कृष्णचंद को दूं औ भाई ने राजा सिसुपाल को देने का मन किया - वह बरात ले ब्याहन को आया औ श्री कृष्णचंद जी को मैं ने ब्राह्मन भेज बुलाया ● ब्याह के दिन मैं जौ गौरि की पूजाकर घर को चली - तौ श्री कृष्णचंद जी ने सब असुर दल के बीच से मुझे उठाय ले रथ में बैठाय अपनी बाट ली ● तिस पीछे समाचार पाय सब असुर दल प्रभु पर आय टूटा - सो हरि ने सहज ही मार भगाया ● पुनि मुझे ले द्वारिका पधारे - वहां जाते ही राजा उग्रसेन सूरसेन बसुदेव जी ने बेद की बिधि से - श्री कृष्णचंद जी के साथ मेरा ब्याह किया ● बिवाह के समाचार पाय मेरे पिता ने बऊत सा यौतुक भिजवाय दिया ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज - जैसे द्रोपती जी ने श्री रुक्मिनी से पूछा औ उन्हों ने कहा - तैसे ही द्रोपती जी ने सतभामा - जंबावती - कालिंदी - भद्रा - सत्या - मित्रबिंदा - लक्ष्मना आदि श्री कृष्णचंद की सोलह सहस्र आठ सौ पटरानियों से पू

हा औ एक एक ने सब समाचार अपने अपने विवाह का ब्यौरे समेत कहा ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे स्त्री गीत बर्ननो नाम त्रियाशीतिमोध्यायः ● ॥ ८३ ॥ ●●

●●●●●●●●●●●●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-अब मैं सब ऋषियों के आने की औ वसुदेव जी के यज्ञ करने की कथा कहता हूं तुम चित दे सुनो ● महाराज-एक दिन राजा उग्रसेन सूरसेन वसुदेव श्री कृष्ण बलराम-सब यदुबंसियों समेत सभा किये बैठे थे औ सब देस देस के नरेस वहां उपस्थित थे-कि इस बीच श्री कृष्णचंद आनंदकंद के दरसन की अभिलाषाकर-व्यास वशिष्ट विस्वामित्र बामदेव परासर भृगु पुलस्ति भरद्वाज मारकंडेय आदि अट्ठासी सहस्र ऋषि वहां आये औ तिन के साथ नारद जी भी ● उन्हें देखते ही सभा की सभा सब उठ खड़ी हुई-पुनि सब डंडवतकर पाटंबर के पांवडे डाल-सब को सभा में ले गये ● आगे श्री कृष्णचंद ने सब को आसन पर बैठाय-पांव धोय चरनामृत ले पिया औ सारी सभा पर छिड़का ● फिर चंदन अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्यकर-भगवान ने सब की पूजाकर परिक्रमा की ● पुनि हाथ जोड़ सनमुख खड़े हो हरि बोले-कि धन्य भाग हमारे जो आप ने आय घर बैठे दरसन दिया ● साध का दरसन गंगा के स्नान समान है-जिस ने साध का दरसन पाया-उस ने जन्म जन्म का पाप गंवाया ● इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले-कि महाराज ●●

श्री भगवान बचन जब कहे ❁ तब सब ऋषी विचारन रहे ❁

कि जो प्रभु है जोती सरूप औ सकल सृष्टि का करता - सो जब यह बात कहै तब और की किस ने चलाई ❁ मन ही मन सब मुनियों ने ज द इतना कहा - तद नारद जी बोले ❁❁

सुनो सभा तुम सब मन लाय ❁ हरि माया जानी नहीं जाय ❁

ये आप ही ब्रह्मा हो उपजावते हैं - बिष्णु हो पालते हैं - शिव हो संहारते हैं ❁ इन की गति अपरंपार है इस में किसी की बुद्धि कुछ काम नहीं करती - पर इतना इन की कृपा से हम जानते हैं कि साधों के सुख देने को औ दुष्टों के मारने को औ सनातन धर्म चलाने को - बार बार अवतार ले प्रभु आते हैं ❁ महाराज - जों इतनी बात कह नारद जी सभा से उठने को हुए - तों बसुदेव जी सन मुख आय हाथ जोड बिनती कर बोले कि हे ऋषिराय - मनुष संसार में आय कर्म से कैसे छूटे - सो कृपाकर कहिये ❁ महाराज - यह बात बसुदेव जी के मुख से निकलते ही सब मुनि ऋषि नारद जी का मुख देख रहे ❁ तब नारद जी ने मुनियों के मन का अभि प्राय समझकर कहा - कि हे देवताओ - तुम इस बात का अचरज मत करो - श्री कृष्ण की माया प्रबल है इस ने सारे संसार को जीत रक्खा है - इसी से बसुदेव जी ने यह बात कही औ दूसरे ऐसे भी कहा है ❁ कि जो जन जिस के समीप रहता है वह उस का गुन प्रभाव औ प्रताप - माया के बस हो नहीं जानता - जैसे ❁❁

गंगा बासी अनत हि जाई ❁ तज के गंग कूप जल न्हाई ❁
यों ही यादव भए अयाने ❁ नाहीं कछू कृष्ण गति जाने ❁

इतनी बात कह नारद जी ने मुनियों के मन का संदेह मिटाय-वसुदेव जी से कहा ● कि महाराज-शास्त्र में कहा है जो नर तीरथ-दान-तप-ब्रत-यज्ञ करता है सो संसार के बंधन से छूट परम गति पाता है ● इस बात के सुनते ही प्रसन्न हो वसुदेव जी ने बात की बात में सब यज्ञ की सामा मंगाय उपस्थित की औ ऋषियों औ मुनियों से कहा-कि कृपाकर यज्ञ का आरंभ कीजे ● महाराज-वसुदेव जी के मुख से इतना बचन निकलते ही-सब ब्राह्मनों ने यज्ञ का स्थान बनाय संवारा ● इस बीच स्त्रीयों समेत वसुदेव जी बेदी में जा बैठे-सब राजा औ यादव कृय की टहल में आ उपस्थित हुए ●

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा से कहा कि महाराज-जिस समय वसुदेव जी बेदी में जाय बैठे-उस काल वेद की बिधि से मुनियों ने यज्ञ का आरंभ किया औ लगे बेद मंत्र पढ पढ आहुत देने ● औ देवता सदेह भाग आय आय लेने ● महाराज-जिस काल यज्ञ होने लगा उस काल उधर किन्नर गंधर्व भेर दुंदभी बजाय बजाय गुन गाते थे-चारन बंदी जन जस बखानते थे-उरबसी आदि अपसरा नाचती थीं ● औ देवता अपने अपने बिमानों में बैठे फूल बरसावते थे औ इधर सब मंगली लोग गाय बजाय मंगलाचार करते थे औ जाचक जैजैकार ● इस में यज्ञ पूरन हुआ औ वसुदेव जी ने पूर्नाहुत दे-ब्राह्मनों को पाटंबर पहराय अलंकृतकर-रत्न धन बहुत सा दिया औ उन्हों ने बेद मंत्र पढ पढ आशीर्वाद किया ● आगे सब देस देस के नरेसों को भी वसुदेव जी ने पहराया औ जिमाया ● पुनि उन्हों

ने यज्ञ की भेट करकर विदा हो अपनी अपनी वाट ली ● महाराज-सब 
राजाओं के जाते ही-नारद जी समेत सारे ऋषि मुनि भी विदा हुऐ * 
पुनि नंदराय जी गोपी गोप ग्वाल बाल समेत जब वसुदेव जी से विदा होने लगे-उस समय की बात कुछ कही नहीं जाती ● कि इधर तो यदुवंसी करुनाकर अनेक अनेक प्रकार की बातें करते थे औ उधर सब ब्रजवासी ● उसका बखान कुछ कहा नहीं जाय-वह सुख देखे ही बनि आय ● निदान वसुदेव जी औ श्री कृष्ण बलराम जी ने सब समेत नंदराय जी को समझाय बुझाय पहराय औ बहुत साधन दे विदा किया ● इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-इस भांति श्री कृष्णचंद औ बलराम जी पर्व न्हाय यज्ञकर सब समेत-जब द्वारिकापुरी में आऐ-तो घर घर आनंद मंगल भऐ बधाऐ ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे वसुदेव यज्ञ करनो नाम चतुराशीतमोध्यायः ● ॥ ८४ ॥ ●●

-----●●●●●●●●●●●●-----

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-द्वारिकापुरी के बीच ऐक दिन श्री कृष्णचंद औ बलराम जी जों वसुदेव जी के पास गऐ-तों वे इन दोनों भाइयों को देख यह बात मन में विचार उठ खडे हुऐ-कि कुरुक्षेत्र में नारद जी ने कहा था कि श्री कृष्णचंद जगत के करता हैं औ हाथ जोड बोले कि हे प्रभु-अलख अगोचर अविनासी-सदा सेवती है तुम्हें कमला भई दासी ● तुम हो सब देवों के देव-कोई नहीं जानता तुम्हारा भेव ● तुम्हारी ही जोति है चांद सूरज पृथ्वी आकाश में-तु

म्हीं करते हो सब ठौर प्रकाश ● तुम्हारी माया है प्रबल उस ने सारे संसार को भुला रक्खा है - त्रिलोकी में सुर नर मुनि ऐसा कोई नहीं जो उस के हाथ से बचा हो ● महाराज - इतना कह पुनि वसुदेव जी बोले कि नाथ ●●

कोऊ न भेद तुम्हारो जाने ● बेदन मांझ अगाध बखाने ●
शत्रु मित्र कोऊन तिहारो ● पुत्र पिता न सहोदर प्यारो ●
पृथ्वी भार हरन अवतरो ● जन के हेत भेष बहु धरो ●

महाराज - ऐसे कह वसुदेव जी बोले कि हे करुना सिंधु दीनबंधु - जैसे आप ने अनेक अनेक पतितों को तारा - तैसे कृपाकर मेरा भी निस्तार कीजे - जो भवसागर के पार हो आप के गुन गाऊं ● श्री कृष्णचंद्र बोले कि हे पिता - तुम ज्ञानी होय पुत्रों की बडाई क्यों करते हो - टुक आप ही मन में बिचारो कि भगवत की लीला अपरंपार है - उस का पार किसी ने आज तक नहीं पाया - देखो वह ●●

घट घट माहि जोति व्है रहै ● ताही सों जग निर्गुन कहै ●
आप ही सिरजे आप ही हरै ● रहै निर्ल्यो बांध्यो नहीं परै ●
भू आकाश वायु जल जोति ● पंच तत्व ते देह जो होति ●
प्रभु की शक्ति सबनि में रहै ● वेद माहिं विधि ऐसें कहै ●

महाराज - इतनी बात श्री कृष्णचंद्र जी के मुख से सुनते ही - वसुदेव जी मोह बस होय चुपकर हरि का मुख देख रहे ● तब प्रभु वहां से चल माता के निकट गये तो पुत्र का मुख देखते ही देवकी जी बोलीं - हे श्री कृष्णचंद्र आनंदकंद - एक दुख मुझे जब न तब साले है ● प्र

भु बोले सो क्या ● देवकी जी ने कहा कि पुत्र - तुम्हारे छह बडे भाई जो कंस ने मार डाले हैं उन का दुख मेरे मन से नहीं जाता ●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - बात के कहते श्री कृष्णचंद जी इतना कह पातालपुरी को गये - कि माता - तुम अब मत कुढो मैं अपने भाइयों को अभी जाय लें आता हूं ● प्रभु के जाते ही समाचार पाय राजा बल आय - अति धूमधाम से पाटंबर के पांवडे डाल निज मंदिर में लिवाय लेगया ● आगे सिंहासन पर बिठाय राजा बल ने चंदन - अक्षत - पुष्प चढाय - धूप - दीप - नैवेद्य धर श्री कृष्णचंद की पूजा की ● पुनि सन मुख खडा हो हाथ जोड अति स्तुतिकर बोला - कि महाराज - आप का आना यहां कैसे हुआ ● हरि बोले कि राजा - सतयुग में मरीचि ऋषि नाम एक ऋषि बडे ब्रह्मचारी - ज्ञानी - सत्यवादी औ हरि भक्त थे - उस की स्त्री का नाम उरना - तिसके छह बेटे ● एक दिन वे छहों भाई तरुन अवस्था में प्रजापति के सनमुख जा हंसे - उन को हंसता देख प्रजापति ने महा कोपकर यह श्राप दिया - कि तुम जाय अवतार ले असुर हो ● महाराज - इस बात के सुनते ही ऋषि पुत्र अति भय खाय - प्रजापति के चरनों पैर जाय गिरे औ वकुत गिडगिडाय अति बिनतीकर बोले - कि कृपासिंधु आप ने श्राप तो दिया पर अब कृपाकर कहिये - कि इस श्राप से हम कब मोक्ष पावेंगे ● उन के दीन बचन सुन प्रजापति ने दयाल हो कहा - कि तुम श्री कृष्णचंद के दरसन पाय मुक्ति होगे - महाराज

इतनै कहत प्रान तज गये ● ते हरिनाकुस पुत्र जु भये ●
पुनि वसुदेव के जन्मे जाय ● तिन कौं हत्यौ कंस ने आय ●
मारत तिन्हें माया लै आई ● इह ठां राखि गई सुखदाई ●

जन का दुख माता देवकी करती हैं-इसी लिये हम यहां आये हैं-कि अपने भाइयों को ले जाय माता को दीजे औ उन के चित्त की चिंता दूर कीजे ● श्री शुकदेव जी बोले कि राजा - इतना बचन हरि के मुख से निकलते ही राजा बलि ने छहों बालक ला दिये औ बहुत सी भेटे आगे धरी ● तब प्रभु वहां से भाइयों को साथ ले माता के पास आये-माता पुत्रों को देख अति प्रसन्न हुई ● इस बात को सुन सारी पुरी में आनंद हुआ औ उन का श्राप छूटा ● इति श्री लाल कवे प्रेम सागरे देवकी मृतक पुत्र याचनो नाम पंचाशीतिमोध्यायः ● ॥ ८५ ॥
●●

---

श्री शुकदेव जी बोले कि राजा - जैसे द्वारिका से अर्जुन श्री कृष्णचंद जी की बहन सुभद्रा को हरि ले गये औ जैसे श्री कृष्णचंद मिथला में जाय रहे-तैसे मैं कथा कहता हूं तुम मन लगाय सुनौ ● देवकी की बेटी श्री कृष्ण जी से छोटी जिस का नाम सुभद्रा- जब ब्याहन जोग हुई तब वसुदेव जी ने कितने एक यदुबंसी औ श्री कृष्ण बलराम जी को बुलाय के कहा - कि अब कन्या ब्याहन जोग भई कहो किसे दें ● बलराम जी बोले कि कहा है-ब्याह बैर प्रीति समान से कीजे ● एक बात मेरे मन में आई है कि यह कन्या दुर्योधन को दीजे - तो जगत में

जस औ बडाई लीजे ● श्री कृष्णचंद ने कहा मेरे बिचार में आता है जो अर्जुन को लड़की दें - तो संसार में जस लें ● श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - बलराम जी के कहने पर तो कोई कुछ न बोला - पर श्री कृष्णचंद जी के मुख से बात निकलते ही सब पुकार उठे - कि अर्जुन को कन्या देना अति उत्तम है ● इस बात के सुनते ही बलराम जी बुरा मान वहां से उठ गये औ तिन का बुरा मानना देख सब लोग चुप रहे ● आगे ये समाचार पाय अर्जुन सन्यासी का भेष बनाय-दंड कमंडल ले द्वारिका में जाय - एक भली सी ठौर देख मृगछाला बिछाय आसन मार बैठा ●●

चार मास बरषा भरि रह्यौ ● काहू मरम न ताकौ लह्यौ ●
अतिथ जान सब सेवन लागे ● बिष्णु हेतु तासों अनुरागे ●
वाकौ भेद कृष्ण सब जान्यौ ● काहू सों तिन नाहि बखान्यौ ●

महाराज-एक दिन बलदेव जी भी जिमाने अर्जुन कौ साथ कर घर लिवाय लेगये ● जों अर्जुन भोजन करने बैठे तों चंद्रबदनि मृगलोचनी सुभद्रा जी दृष्ट आई -देखते ही उधर तो अर्जुन मोहित हो सब की दीठ बचाय फिर फिर देखने लगे औ मन ही मन यह बिचार करने - कि देखिये बिधाता कब जन्मपत्री की बिधि मिलावे ● औ इधर सुभद्रा जी इन के रूप की छटा देख रीझ मन मन यों कहती थीं कि ●●

है कोऊ न्रपति नाहिं सन्यासी ● का कारन यह भयौ उदासी ●

महाराज - इतना कह उधर तो सुभद्रा जी घर में जाय पति के मिल

न को चिंता करने लगीं औ इधर भोजनकर अर्जुन अपने आसन पर आय-प्रिया के मिलन को अनेक अनेक प्रकार की भावना करने लगे ❁ इस में कितने दिन पीछे एक समैं शिवरात्र के दिन-सब पुरवासी क्या स्त्री क्या पुरुष नगर के बाहर शिव पूजन को गए ❁ तहां सुभद्रा जी अपनी सखी सहेलियों समेत गईं- उन के जाने का समाचार पाय अर्जुन भी रथपर चढ धनुष बान ले वहां जाय उपस्थित हुए ❁ महाराज-जों शिव पूजनकर सखियों को साथ ले सुभद्रा जी फिरीं-तों देखते ही सोच संकोच तज अर्जुन ने हाथ पकड उठाय सुभद्रा को रथ में बैठाय अपनी बाट ली ❁❁

सुनि कै राम कोप अति कस्यौ ❁ हल मूसल लै कांधे धस्यौ ❁
राते नयन रक्त से करे ❁ घन सम गाज बोल उचरे ❁
अबही जाय प्रलै मैं करि हौं ❁ भुव उठायकर माथे धरि हौं ❁
मेरी बहन सुभद्रा प्यारी ❁ ताकौं कैसै हरै भिखारी ❁
अब हौं जहां सन्यासी पाऊं❁तिनकौ सब कुल खोज मिटाऊं❁

महाराज-बलराम जी तो महा क्रोध में बक झक रहे ही थे- कि इस बात के समाचार पाय प्रद्युम्न अनिरुद्ध संबू औ बडे बडे यादव-बलदेव जी के सनमुख आय हाथ जोड जोड बोले- कि महाराज-हमें आज्ञा होय तो जाय शत्रु को पकड लावें ❁

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-जिस समय बलराम जी सब यदुबंसियों को साथ ले अर्जुन के पीछे चलने को उपस्थित हुए-उस काल श्री कृष्णचंद जी ने जाय बलदेव जी को सुभद्रा हरन

का सब भेद समझाय औ अति बिनती कर कहा ❁ कि भाई - अर्जुन से क तो तुम्हारी फुफी का बेटा औ दूसरे परम मित्र - उस ने जाने अन जाने समझे बिन समझे यह कर्म किया तो किया - पर हमें उस से लड़ना किसी भांति उचित नहीं यह धर्म बिरुद्ध औ लोक बिरुद्ध है - इस बात को जो सुनेगा सो कहेगा - कि यदुबंसियों की प्रीति है बालू की सी भींत ❁ इतनी बात के सुनते ही बलराम जी सिरधुन झुंझलाकर बोले कि भाई - यह तुम्हारा ही काम है कि आग लगाय पानी को दौड़ना ❁ नहीं तो अर्जुन की क्या सामर्थ थी जो हमारी बहन को ले जाता - इतना कह मन ही मन पछताय ताव पेचखाय बलराम जी - भाई का मुख देख हल मूसल पटक बैठ रहे औ उन के साथ सब यदुबंसी भी ❁ [illegible]

श्री शुकदेव जी बोले कि राजा - इधर तो श्री कृष्णचंद जी ने सब को समझाय बुझाय रक्खा औ उधर अर्जुन ने घर जाय बेद की बिधि से सुभद्रा के साथ ब्याह किया ❁ ब्याह के समाचार पाय श्री कृष्ण बलराम जी नें वस्त्र आभूषन दास दासी हाथी घोड़े रथ औ बहुत से रुपये एक ब्राह्मन के हाथ संकल्प कर हस्तिनापुर भेज दिये ❁ आगे श्री मुरारी भक्त हितकारी रथ पर बैठ मिथिला को चले - जहां सुतदेव - बहुलास नाम एक राजा एक ब्राह्मन दो भक्त थे ❁ महाराज - प्रभु के चलते ही नारद वामदेव ब्यास अत्रि परशुराम आदि कितने एक मुनि आनि मिले औ श्री कृष्णचंद जी के साथ हो लिये ❁ पुनि जिस देस में हो प्रभु जाते थे - तहां के राजा आगू आय आय पूज पूज भेंट धरते जाते थे

● निदान चले चले कितने एक दिनों में प्रभु वहां पधारे-हरि के आने के समाचार पाय वे दोनों जैसे बैठे थे तैसे ही भेंट ले उठ धाये औ श्री कृष्णचंद के पास आये ● प्रभु का दरसन करते ही दोनों भेंट धर डंडवतकर हाथ जोड़ सनमुख खड़े हो अति बिनतीकर बोले-कि हे कृपासिंधु दीनबंधु-आपने बड़ी दया की जो हम से पतितों को दरसन दे पावन किया औ जन्म मरन का निबेड़ा चुका दिया ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-अंतरजामी श्री कृष्णचंद उन दोनों भक्तों के मन की भक्ति देखि-दो सरूप धारनकर दोनों के घर जाय रहे ● उन्हों ने मन माना सब राव चाव किया औ हरि ने कितने एक दिन वहीं ठहर उन्हें अधिक सुख दिया ● आगे प्रभु उन के मन का मनोरथ पूराकर ज्ञान दिढाय जब द्वारिका को चले-तब महर्षि मुनि पंथ से बिदा हुए औ हरि द्वारिका में जा बिराजे ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे सुभद्रा हरनो श्री कृष्णचंद मंथिला गमनो नाम षड़शीतितमोध्यायः ● ॥ ८६ ॥ ●●

---

इतनी कथा सुन राजा परीक्षित ने श्री शुकदेव जी से पूछा कि महाराज-आप जो आगे कह आये कि बेद ने प्रथम ईस्वर की स्तुति की-सो निर्गुन ब्रह्म की स्तुति बेद ने क्योंकर की-यह मुझे समझाकर कहो जो मेरे मन का संदेह जाय ● श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-सुनिये कि जिसने बुद्धि इंद्री मन प्रान धर्म अर्थ काम मोक्ष को बनाया है-सो प्रभु सदा निर्गुन रूप रहता है पर जब ब्रह्मांड रचता है तब सगु

गुन सरूप होता है - इस से निर्गुन सर्गुन वही ऐक ईस्वर है ● 

इतना कह पुनि श्रुकदेव मुनि बोले कि राजा - जो प्रश्न तुम ने की सोई 
प्रश्न ऐक समय नारद जी ने नरनारायन से की थी ● राजा परीक्षित ने कहा कि महाराज - यह प्रसंग मुझे समझाकर कहिये जो मेरे मन का संदेह जाय ● श्रुकदेव जी बोले कि राजा - सत युग में ऐक समैं नारद जी ने सत लोक में जाय - जहां नरनारायन अनेक मुनियों के संग बैठे तप करते थे - पूछा ● कि महाराज - निराकार ब्रह्म की स्तुति बेद किस भांति करते हैं ● सो कृपाकर कहिये ● नरनारायन बोले कि सुन नारद - जो संदेह तू ने मुझ से पूछा यही संदेह - ऐक समय जन लोक में जहां सनातनादि ऋषि बैठे तप करते थे हुआ था - तद सनंदन मुनि ने कथा कहि सब का संदेह मिटाया ● नारद जी बोले महाराज - मैं भी तो वहीं रहता हूं - जो यह प्रसंग चलता तो मैं भी सुनता ● नरनारायन ने कहा नारद जी जब तुम सेतदीप में भगवत दरसन को गये थे तभी यह प्रसंग चला था - इस से तुम ने नहीं सुना ●

इतनी बात सुन नारद जी ने पूछा महाराज - वहां क्या प्रसंग चला था सो कृपाकर कहिये ● नरनारायन बोले सुन नारद - जद मुनियों ने यह प्रश्न की तद सनंदन मुनि कहने लगे - कि सुनो जिस समय महा प्रलय होय चौदह ब्रह्मांड जलाकार हो जाते हैं - उस समैं पूरन ब्रह्म अकेले सोते रहते हैं ● जब भगवान को सृष्टि करने की इच्छा होती है - तब उन के स्वास से बेद निकल हाथ जोड स्तुति करते हैं ●

ऐसे कि जैसे कोई राजा अपने स्थान पर सोता हो औ बंदी जन भोर ही उस का जस गाय गाय उसी को जगावें - इस लिये कि चैतन्य हो शीघ्र अपने कार्य को करे ॥

इतना प्रसंग कह नरनारायन बोले कि सुन नारद - प्रभु के मुख से निकल वेद यह कहते हैं ॥ कि हे नाथ - वेग चैतन्य हो सृष्टि रचो औ जीवों के मन से अपनी माया दूर करो - क्यों कि वे तुम्हारे रूप को पहचाने ॥ माया तुम्हारी प्रबल है यह सब जीवों को अज्ञानकर रखती है - जो इस से छूटे तो जीव को तुम्हारे समझने का ज्ञान हो ॥ हे नाथ - तुम बिन इसे कोई बस नहीं कर सकता - जिस के हृदे में ज्ञान रूप हो तुम बिराजते हो - सोई इस माया को जीतता है - नहीं तो किस की सामर्थ है जो माया के हाथ से बचे ॥ तुम सब के करता हो सब जीव तुम्हीं से उत्पति हो तुम्हीं में समाते हैं - ऐसे कि जैसे पृथ्वी से अनेक वस्तु हो पुनि पृथ्वी में मिल जाती हैं ॥ कोई किसी देवता की पूजा स्तुति करे - पर वह तुम्हारी ही पूजा स्तुति होती है ॥ ऐसे कि जैसे कोई कंचन के अनेक आभरन बनाय अनेक नाम धरे पर वह कंचन ही है - तिसी भांति तुम्हारे अनेक रूप हैं और ज्ञानकर देखिये तो कोई कुछ नहीं - जिधर देखिये तिधर तुमहीं तुम दृष्ट आते हो ॥ नाथ - तुम्हारी माया अपरंपार है - वही सत रज तम तीन गुन हो तीन सरूप धारनकर सृष्टि को उपजाय पाल नाश करती है - इस का भेद न किसी ने पाया - न कोई पावेगा ॥ इस से जीव को उचित यह है कि सब वासना छोड तुम्हारा ध्यान करे ॥ इसी में इस का कल्यान है।

● महाराज - इतना प्रसंग सुनाय नरनारायन ने नारद से कहा कि हे नारद - जब सनंदन मुनि ने पुरातन कथा कह सब के मन का संदेह दूर किया - तब सनकादि मुनियों ने वेद की विधि से सनंदन मुनि की पूजा की ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि हे राजा - यह नारायन नारद का संवाद जो कोई सुनेगा सो निस्संदेह भक्तिपदारथ पाय मुक्ति होगा ● जो कथा पूरन ब्रह्म की वेद ने गाई सोई कथा सनंदन मुनि ने सनकादि मुनियों को सुनाई ● पुनि वही कथा नरनारायन ने नारद को आगे गाई - नारद से व्यास ने पाई - व्यास ने मुझे पढ़ाई - सो मैं ने अब तुम्हें सुनाई ● इस कथा को जो जन सुने सुनावेगा - सो मनमानता फल पावेगा ● जो पुन्य होता है जप यज्ञ दान व्रत तीरथ करने में - सोई पुन्य होता है इस कथा के कहते सुनते में ● इति श्री लालकृते प्रेम सागरे नरनारायन नारद संवादो नाम सप्ताशीतितमोध्यायः ● ॥ ८७ ॥ ●

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज - भगवत की अद्भुत लीला है इसे सब कोई जानता है - जो जन हरि की पूजा करे सो दरिद्री होय और और देव को माने सो धनवान ● देखो हरि हर की कैसी रीति है ● ये लक्ष्मी पति - वे गवरी पति ● ये धरें बनमाल - वे मुंडमाल ● ये चक्रपानि - वे त्रिसूलपानि ● ये धरनी धर - वे गंगाधर ● ये मुरली बजावें - वे सींगी ● ये वैकुंठ नाथ - वे कैलाश बासी ● ये प्रतिपालें - वे संहारें ● ये

चरचैं चंद्रन - वे लगावैं भभूत ● ये ओढें अंबर - वे बाघंबर ● ये पढें बेद - वे आगम ● इन का बाहन गरुड - उन का नंदी ● ये रहें ग्वाल बालों में - वे भूत प्रेतों में ●

दोऊ प्रभु की उलटी रीति ● जित इच्छा तित कीजे प्रीति ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराजा - राजा युधिष्ठिर से श्री कृष्णचंद ने कहा है कि हे युधिष्ठिर - जिस पर मैं अनुग्रह करता हूं हौले हौले उस का सब धन खोता हूं ● इस लिये कि धन हीन को भाई बंधु स्त्री पुत्र आदि सब कुटुंब के लोग तज देते हैं - तब तिसे वैराग उपजता है - वैराग होने से धन जन की माया छोड निरमोही हो मन लगाय मेरा भजन करता है - भजन के प्रताप से अटल निर्वान पद पाता है ● इतना कह पुनि शुकदेव जी कहने लगे कि महाराज - और देवता की पूजा करने से मन कामना पूरी होती है पर मुक्ति नहीं मिलती ●

यह प्रसंग सुनाय मुनि ने पुनि राजा परीक्षित से कहा कि महाराज - एक समय कश्यप का पुत्र बिकासुर तप करने की अभिलाषा कर जों घर से निकला - तों पंथ में उसे नारद मुनि मिले ● नारद जी को देखते ही इस ने दंडवत कर हाथ जोड सनमुख खडे हो अति दीनता कर पूछा - कि महाराज - ब्रह्मा बिष्नु महादेव इन तीनों देवताओं में शीघ्र बरदाता कौन है सो कृपा कर कहो तो मैं उन्हीं की तपस्या करूं ● नारद जी बोले कि सुन बिकासुर - इन तीनों देवताओं में महादेव जी बडे बरदाइक हैं - इन्हें न रीझते बिलंब न खीजते ● देखो शिव

जी ने थोडे से तप करने से प्रसन्न हो सहस्त्रार्जुन को सहस्त्र हाथ दिया औ अल्प ही अपराध में क्रोधकर उस का नाश किया ● महाराज-इतना कह नारद मुनि तो चले गये औ विकासुर अपने स्थान पर आय महा देव का अति तप यज्ञ करने लगा ● सात दिन के बीच उस ने छुरी से अपने शरीर का मास सब काट काट होम दिया-आठवे दिन जब सिर काटने का मन किया-तब भोलानाथ ने आय उस का हाथ पकड के कहा-कि मैं तुझ से प्रसन्न ऊआ जो तेरी इच्छा में आवे सो वरमांग-मैं तुझे अभी दूंगा ● इतना बचन शिव जी के मुख से निकलते ही विकासुर हाथ जोडकर बोला ●●

ऐसो वर दीजै अवै-जाके सिर धरौं हाथ ●
भस्म होय सो पलक में-करऊ कृपा तुम नाथ ●

महाराज-बात के कहते ही महादेव जी ने उसे मुंहमागा वर दिया-वर पाय वह शिव ही के सिर पर हाथ धरने गया ● उस काल भयखाय महादेव जी आसन छोड भागे-उन के पीछे असुर भी दौडा ● महाराज-सदाशिव जी जहां जहां फिरे-तहां तहां वह भी उन के पीछे ही लगा आया ● निदान अति व्याकुल हो महादेव जी वैकुंठ में गये-इन को महा दुखित देख भक्त हितकारी वैकुंठनाथ श्री मुरारी-करुनानिधान करुनाकर विप्र भेष धर विकासुर के सनमुख जाय बोले ● कि हे असुरराय-तुम इन के पीछे क्यौं स्रम करते हो यह मुझे समझाकर कहो-बात के सुनते ही विकासुर ने सब भेद कह सुनाया ● पुनि भगवान बोले कि हे असुरराय-तुम सा सयाना हो धोखाखाय

यह बडे अचरज की बात है ● इस नंगमुनंगे बावले भांग धतूरा खानेवा ले जोगी की बात कौन सत्य माने-यह सदा क्षार लगाये सर्प लिपटाये -भयानक भेष किये भूत प्रेतों को संग लिये स्मशान में रहता है-इस की बात किस के जी में सच आवे ● महाराज- यह बात कह श्री नारा यन बोले कि हे असुरराय-जो तुम मेरा कहा झूठ मानो तो अपने सिर पर हाथ रख देखलो ●

महाराज-प्रभु के मुख से इतनी बात सुनते ही-माया के बस अज्ञा न हो- जों विकासुर ने अपने सिर पर हाथ रक्खा तो जलकर भस्म का ढेर ऊआ ● असुर के मरते ही सुरपुर में आनंद के बाजन बाज ने लगे औ देवता जैजैकार कर फूल बरसावने - विद्याधर गंधर्व कि न्नर हरि गुन गाने ● उस काल हरि ने हर की अति स्तुति कर विदा किया औ विकासुर को मोक्षपदारथ दिया ● श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज- इस प्रसंग को जो सुने सुनावेगा-सो निसंदेह हरि हर की कृपा से परम पद पावेगा ● इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे रुद्र मो क्ष विकासुर बधो नाम अष्टाशीतिमोध्यायः ● ॥ ८८ ॥ ●●

---

शुकदेव जी बोले कि महाराज-एक समय सरस्वती के तीर सब ऋषि मुनि बैठे तप यज्ञ करते थे कि उन में से किसी ने पूछा- कि ब्रह्मा वि ष्णु महेश इन तीनों देवताओं में बडा कौन है सो कृपाकर कहो ● इ स में किसी ने कहा शिव - किसी ने कहा विष्णु - किसी ने कहा ब्रह्मा - पर सब ने मिल एक को बडा न बताया ● तब कई एक बडे बडे मुनीशों

ऋषीश्वरों ने कहा कि हम यों तो किसी की बात नहीं मानते- पर हां जो कोई इन तीनों देवताओं को जाकर परिक्षाकर आवे औ धर्म सरूपी का है तो उस का कहना सत्यमाने ●

महाराज - यह बात सुन सब ने प्रमान की औ ब्रह्मा के पुत्र भृगु को तीनों देवताओं की परिक्षाकर आने को आज्ञा दी ● आज्ञा पाय भृगु मुनि प्रथम ब्रह्मलोक में गये औ चुपचाप ब्रह्मा की सभा में जा बैठे - न दंडवत की न स्तुति- न परिक्रमा दी ● राजा - पुत्र का अनाचार देख ब्रह्मा ने महा कोप किया औ चाहा कि श्राप दूं पर पुत्र की ममताकर न दिया ● उस काल भृगु ब्रह्मा को रजोगुन में आशक्त देख वहां से उठ कैलाश में गया औ जहां शिव पार्वती विराजते थे तहां जा खडा रहा ● इसे देख शिव जी खडे हो जौ हाथ पसार मिलने को हुए तों यह बैठ गया-बैठते ही शिव जी ने अति क्रोध किया औ इस के मारने को त्रिशूल हाथ में लिया ● उस समय श्री पार्वती जी ने अति बिनतीकर पाओं पड महादेव जी को समझाया औ कहा कि यह तुम्हारा छोटा भाई है इस का अपराधक्षमा कीजे ● कहा है ●●

बालक सों जो चूक कछू परै ● साधन कबहू मन में धरै ●

महाराज - जब पार्वती जी ने शिव जी को समझाकर ठंडा किया - तब भृगु महादेव जी को तमोगुन में लीन देख चल खडे हुए ● पुनि वैकुंठ में गये जहां भगवान मनिमय कंचन के छपर खट पर- फूलों की सेज में लक्ष्मी के साथ सोते थे ● जाते ही भृगु ने भगवान के हृदे में ऐक लात ऐसी मारी कि वे नीद से चौंक पडे - मुनि को देख लक्ष्मी

को छोड पर्यंक से उतर हरि भृगु जी का पांव सिर आंखों से लगा य लगे दाब ने औ यों कहने ॥ कि हे ऋषिराय मेरा अपराध छमा कीजे - मेरे हृदय कठोर की चोट तुम्हारे कोमल कमल चरन में आन जा ने लगी यह दोष चित्त में न लीजे ॥ इतना बचन प्रभु के मुख से निक सते ही भृगु जी अति प्रसन्न हो स्तुति कर बिदा हो वहां आये - जहां सरस्वती तीर सब ऋषि मुनि बैठे थे ॥ आते ही भृगु जी ने तीनों देवता ओं का भेद सब ओं का त्यों कह सुनाया कि ॥

ब्रह्मा राजस में लपटायौ ॥ महादेव तामस में सान्यौ ॥
विष्णु जु सात्विक माहिं प्रधान ॥ तिनतें बडो देव नहीं आन ॥
सुनत ऋषिन कौ संसौ गयौ ॥ सब ही के मन आनंद भयौ ॥
विष्णु प्रसंसा सब ने करी ॥ अबिचल भक्ति हृदे में धरी ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा - कि महाराज - मैं अंतर कथा कहता हूं तुम मन लगाय सुनौ ॥ द्वारिका पुरी में राजा उग्रसेन तो धर्मराज करते थे औ श्री कृष्णचंद बलराम उन की आज्ञाकारी ॥ राजा के राज से सब लोग अपने अपने स्वधर्म में साव धान - काज कर्म में सज्ञान रहते औ आनंद चैन करते थे ॥ तहां एक ब्राह्मन भी अति सुशील धर्मिष्ठ रहता था - एक समैं उस के पुत्र हो मर गया - वह उस मरे पुत्र को ले राजा उग्रसेन के द्वार पर गया औ जो उस के मुंह में आया सो कहने लगा - कि तुम बडे अधर्मी दुराक र्मी पापी हो - तुम्हारे ही कर्म धर्म के प्रजा दुखपाती है औ मेरा भी पु त्र तुम्हारे ही पाप से मरा ॥

महाराज - इसी भांति की अनेक अनेक बातें कह मरा लड़का राज द्वार पर रख ब्राह्मन अपने घर आया ● आगे उस के आठ बेटे हुए औ आठों को वह उसी रीति से राजद्वार पर रख आया - जब नवां पुत्र होने को हुआ तब वह ब्राह्मन फिर राजा उग्रसेन की सभा में जा श्री कृष्णचंद जी के सनमुख खडा हो पुत्रों के मरने का दुख सुमिर सुमिर रोरो यों कहने लगा ● धिःकार है राजा औ इस के राज को - पुनि धिःकार है उन लोगों को जो इस अधर्मी की सेवा करते हैं औ धिःकार है मुझे जो इस पुरी में रहता हूं ● जो इन पापियों के देस में न रहता तो मेरे पुत्र बचते - इन्हीं के अधर्म से मेरे पुत्र मरे औ किसी ने रखवाला न किया ●

महाराज - इसी ढब की सभा के बीच खडे हो ब्राह्मन ने ऐसे बहुत सी बाते कहीं पर कोई कुछ न बोला - निदान श्री कृष्णचंद के पास बैठा सुन सुन घबराकर अर्जुन बोला ● कि हे देवता - तू किस के आगे यह बात कहै है औ क्यों इतना खेद करै है - इस सभा में कोई धनुधर नहीं जो तेरा दुख दूर करे ● आज कल के राजा आपकाजी हैं - पर दुःख निवारन नहीं जो प्रजा को सुख दें औ गौ ब्राह्मन की रक्षा करें ● ऐसे सुनाय पुनि अर्जुन ने ब्राह्मन से कहा कि देवता - अब तुम जाय अपने घर निचिंत हो बैठो जब तुम्हारे लडका होने का दिन आवे तब तुम मेरे पास आइयो - मैं तुम्हारे साथ चलूंगा औ लडके को न मरने दूंगा ● महाराज - इतनी बात के सुनते ही ब्राह्मन खिजलाय के बोला कि मैं इस सभा के बीच श्री कृष्ण बलराम प्रद्युम्न औ अनिरुद्ध छुडाय

ऐसा बलवान किसी को नहीं देखता - जो मेरे पुत्र को काल के हाथ से बचावे ● अर्जुन बोला कि ब्राह्मन - तू मुझे नहीं जानता कि मेरा नाम धनंजय है मैं तुझ से प्रतिज्ञा करता हूं - कि जो मैं तेरा सुत काल के हाथ से न बचाऊं तो तेरे मरे ऊए लडके जहां पाऊं तहां से ला आय तुझे दिखाऊं औ वे भी न मिलें तो गांडीव धनुष समेत अपने तई अग्नि में जलाऊं ● महाराज - प्रतिज्ञाकर जब अर्जुन ने ऐसे कहा तब वह ब्राह्मन संतोषकर अपने घर गया ● पुनि पुत्र होने के समय विप्र अर्जुन के निकट आया - उस काल अर्जुन धनुष बान ले उस के साथ उठ धाया ● आगे वहां जाय विस का घर अर्जुन ने बानों से ऐसा छाया कि जिस में पवन भी प्रवेश न करसके औ आप धनुष बान लिये उस के चारों ओर फिरने लगा ●

इतनी कथा कथ श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज - अर्जुन ने बऊत सा उपाय बालक के बचाने का किया पर न बचा - और दिनों बालक होने के समय रोता था - उस दिन सांस भी न लिया - बरन पेट ही से मरा निकला ● मरे लडके का होना सुन लज्जित हो अर्जुन श्री कृष्णचंद के निकट आया औ उस के पीछे ब्राह्मन भी ● महाराज - आते ही रोरो वह ब्राह्मन कहने लगा कि रे अर्जुन - धिःकार है तुझे औ तेरे जीतब को - जो मिथ्या बचन कह संसार में लोगों को मुख दिखाता है ● अरे नपुंसक - जो तू मेरे पुत्र को काल से नबचा सकता था - तो तैंने प्रतिज्ञा क्यों की थी कि मैं तेरे पुत्र को बचाऊंगा औ न बचा सकूंगा तो तेरे मरे ऊए सब पुत्र ला दूंगा ●

महाराज- इतनी बात के सुनते ही अर्जुन धनुष बान ले वहां से उठ चला चला संजमनी पुरी में धर्मराज के पास गया-इसे देख धर्मराज उठ खडा हुआ औ हाथ जोड स्तुतिकर बोला कि महाराज- आप का आगमन यहां कैसे हुआ ● अर्जुन बोला कि मैं अमुक ब्राह्मन के बालक लेने आया हूं - धर्मराज ने कहा कि यहां वे बालक नहीं आये ● महाराज-इतना बचन धर्मराज के मुख से निकलते ही अर्जुन वहां से बिदा हो सब ठोर फिरा-पर उस ने ब्राह्मन के लडकों को कहीं न पाया- निदान अछता पछता द्वारिकापुरी में आया औ चिता बनाय धनुष बान समेत जलने को उपस्थित हुआ ● आगे अग्नि जलाय अर्जुन जों चाहे कि चिता पर बैठे - तों श्री मुरारी गर्वप्रहारी ने आय हाथ पकडा औ हंस के कहा ● कि हे अर्जुन- तू मत जलै तेरी प्रतिज्ञा मैं पूरी करूंगा- जहां उस ब्राह्मन के पुत्र होंगे तहां से ला दूंगा ● महाराज- ऐसे कह त्रिलोकी नाथ रथ पर बैठ अर्जुन को साथ ले पूरब दिसा की ओर को चले औ सात समुद्र पार हो लोका लोक पर्वत के निकट पहुंचे ● वहां जाय रथ से उतर ऐक अति अंधेरी कंदरा में पैठे- उस समय श्री कृष्नचंद जी ने सुदरसन चक्र को आज्ञा की-वह कोटि सूर्य का प्रकाश किये प्रभु के आगे आगे महा अंधकार को टालता चला ●●

तम तज केतिक आगे गऐ ● जल में तबे जु पैठत भऐ ●
महा तरंग तासु में लसे ● मूंदि आंखि येता में धसे ●
पहुंडे हुते शेष जी जहां ● कृष्न अरु अर्जुन पहुंचे तहां ●

जाते ही आंख खोलकर देखा कि ऐक बडा लंबा चौडा ऊंचा कंचन का

मनिमय मंदिर अति सुंदर है-तहां शेष जी के सीस पर रतन जडि त सिंहासन धरा है-तिस पर स्यामघन रूप-सुंदर सरूप-चंद्रबदन कंवल नयन-किरीट कुंडल पहने-पीतबसन ओढे पीतांबर काछे-बनमाल मुक्तमाल डाले आप प्रभु मोहनी मूरत बिराजे हैं औ ब्रह्मा रुद्र इंद्र आदि सब देवता सनमुख खडे स्तुति करते हैं ॥ महाराज-ऐसा सरूप देख अर्जुन औ श्री कृष्णचंद जी ने प्रभु के सोंहीं जाय-दंडवत कर हाथ जोड अपने आने का सब कारन कहा ॥ बात के सुनते ही प्रभु ने ब्राह्मन के बालक सब मंगाय दीने औ अर्जुन ने देख भाल प्रसन्न हो लीने ॥ तब प्रभु बोले ॥

तुम दोऊ मेरी कलाजु आहि ॥ हरि अर्जुन देखौ चित चाहि ॥
भार उतारन भुव पर गये ॥ साधु संत कौं बहु सुख दये ॥
असुर दैत्य तुम सब संहारे ॥ सुर नर मुनि के काज संवारे ॥
मेरे अंस जु तुम में दै हैं ॥ पूरन काम तुम्हारे ह्वै हैं ॥

इतना कह भगवान ने अर्जुन औ श्री कृष्ण जी को बिदा किया-ये बालक ले पुरी में आये-द्विज के पुत्र द्विज ने पाये-घर घर आनंद मंगल भये बधाये ॥ इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज ॥

जो यह कथा सुने धर ध्यान ॥ तिन के पुत्र होंय कल्यान ॥

इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे द्विजकुमार हरनो नाम नवाशीति मोध्यायः ॥ ८९ ॥

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज-द्वारिकापुरी में श्री कृष्णचंद्र सदा विराजें-रिद्धि सिद्धि सब यदुबंसियों के घर घर राजें ● नर नारी बसन आभूषन ले नव बेष बनावें ● चोआ चंदन घरच सुगंध लगावें ● महाजन हाट बाट चौहटे झाड़ बुहार छिड़कावें- तहां देस देस के ब्योपारी अनेक अनेक पदारथ बेचने को लावें ● जिधर तिधर पुरवासी कुतूहल करें-ठौर ठौर ब्राह्मन वेद उचरें ● घर घर में लोग कथा पुरान सुने सुनावें-साध संत आठों जाम हरि जस गावें ● सारथी रथ घुड बहल जोत जोत राजद्वार पर लावें - रथी महारथी गजपति अश्वपति सूर बीर रावत जोधा यादव राजा को जुहार करने आवें ● गुनी जन नाचें गावें बजावें रिझावें - बंदी जन चारन जस बखान कर कर हाथी घोड़े बस्त्र शस्त्र अन्न धन कंचन के रतनजटित आभूषन पावें ●

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा से कहा कि महाराज-उधर तो राजा उग्रसेन की राजधानी में इसी रीति से भांति भांति के कुतूह हो रहे थे औ इधर श्री कृष्णचंद आनंदकंद सोलह सहस्र एक सौ आठ युवतियों के साथ नित्य विहार करें ● कभी युवतियां प्रेम में आशक्त हो प्रभु का बेष बनाव करें-कभी हरि आशक्त हो युवतियों को सिंगारें ● और जो परस्पर लीला क्रीड़ा करें सो अकथ हैं मुख से कही नहीं जातीं-वह देखे ही बनि आवे ● इतना कह शुकदेव जी बोले कि महाराज-एक दिन रात समय श्री कृष्णचंद सब युवतियों के साथ विहार करते थे औ प्रभु के नानाप्रकार के चरित्र देख किन्नर गंधर्व बीन पखावज भे

र दुंदभी बजाय बजाय गुन गाते थे और ऐक समा होरहा था ॥ कि
इस में बिहार करते करते जो कुछ प्रभु के मन में आया-तो सब को सा
थ ले सरोवर के तीर जाय नीर में पैठ जल क्रीडा करने लगे ॥ आगे ज
ल क्रीडा करते करते सब स्त्री श्री कृष्णचंद के प्रेम में मगन हो तन मन
की सुरत भुलाय-ऐक चकवा चकवी को [illegible] वारपार बैठे बोल
ते देख बोलीं ॥

हे चकई तू दुख क्यों रोवै ॥ पिय बियोग तें रैंन न सोवै ॥
अति ब्याकुल ह्वै पियहि पुकारे ॥ हम लौं तू निज पियहि संम्हारे ॥
हम तो तिन की चेरी भई ॥ ऐसें कहि आगे कों गई ॥

पुनि समुद्र से कहने लगीं कि हे समुद्र-तू जो लंबी सांस लेता है औ
रात दिन जागता है-सो क्या तुझे किसी का बियोग है कै चौदह रत्न गये
का सोग है ॥ इतना कह फिर चंद्रमा को देख बोलीं हे चंद्रमा-तू क्यों
तन छीन मन मलीन हो रहा है-क्या तुझे राजरोग हुआ जो दिन दि
न घटता बढता है-कै श्री कृष्णचंद को देख जैसे हमारी गति मति भूल
गी है-तैसे तेरी भी भूली है ॥

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी ने राजा से कहा कि महाराज-इ
सी भांति सब युवतियों ने पवन-मेघ-कोकिल-पर्वत-नदी-हंस से अने
क अनेक बातें कहीं सो जान लीजे ॥ आगे सब स्त्री श्री कृष्णचंद के सा
थ बिहार करें औ सदा सेवा में रहें प्रभु के गुन गावें औ मन वांछित
फल पावें-प्रभु गृहस्थ धर्म से गृहस्थाश्रम चलावें ॥ महाराज-सोलह
सहस्र ऐक सौ आठ श्री कृष्णचंद की रानी जो प्रथम बखानी ॥ तिन में

एक एक रानी के दस दस पुत्र औ एक एक कन्या थी औ उन की संतान अनगिनत हुई-सो मेरी सामर्थ नहीं जो विन का बखान करूं ॥ पर मैं इतना जानता हूं कि तीन करोड अट्ठासी सहस्र एक सौ चट सालें थीं श्री कृष्णचंद की संतान के पढाने को औ इतने हीं पांडे थे ॥ आगे श्री कृष्णचंद जी के जितने बेटे पोते नाती हुए-रूप बल पराक्रम धन धर्म में कोई कम न था एक एक से बढकर था-उन का बरनेन मैं कहां तक करूं ॥ इतना कह ऋषि बोले महाराज-मैं ने ब्रज औ द्वारिका की लीला गाई-यह है सब की सुख दाई ॥ जो जन इसे प्रेम सहित गावेगा-सो निःसंदेह भक्ति मुक्ति पदारथ पावेगा ॥ जो फल होता है तप यज्ञ दान व्रत तीरथ स्नान करने से-सो फल मिलता है हरि कथा सुन ने सुनाने से ॥ इति श्री लाल कृते प्रेम सागरे द्वारिका बिहार बरननो नाम नवतिमोध्यायः ॥ ९० ॥ ॥ इति श्री प्रेम सागर संपूरन समाप्तं ॥

ब्रह्म नागकुलि राग ऋषि मिल संवत निर्धार ॥
श्रावन कृष्ण त्रयोदशी भयो ग्रंथ रविवार ॥

॥ अथ अशुद्धनामा ॥

| अशुद्ध | शुद्ध | पिष्ठ | पंक्तिः |
|---|---|---|---|
| वोले | बोले | ६ | १८ |
| अभीमानी | अभिमानी | २६ | १२ |

|  |  |  |  |  |
|---|---|---|---|---|
| ॥ प्रेम० ॥ | मगावेगा | मगावेगा | ३५ | ७ |
| ॥ ४२४ ॥ | बतें | बातें | ३६ | ८ |
|  | मूझे | मुझे | ४० | ११ |
|  | सात | साथ | ४४ | ११ |
|  | बचाय | बजाय | [illegible] | ३ |
|  | लिथा | लिया | ४७ | ६ |
|  | बलों | भालों | ५२ | १० |
|  | थज्ञ | भज्ञ | ७२ | १८ |
|  | मेलें | मिलें | ८६ | १३ |
|  | ब्रह्मान | ब्राह्मन | १०६ | १७ |
|  | बाढाने | बढाने | १०६ | २० |
|  | ४०८ | १०८ | १०८ | २ |
|  | बाहार | बाहर | ११५ | १७ |
|  | बाहार | बाहर | १२२ | १७ |
|  | दिखारवै | दिखरावै | १२३ | ५ |
|  | देकने | देखते | १२३ | ८ |
|  | लादिंयो | लादियां | १२६ | ७ |
|  | बलवला | बलवाला | १३३ | ८ |
|  | पूंच | पूंछ | १३५ | ५ |
|  | फित | फिर | १४० | ८ |
|  | निवय | निवाय | १५० | ४ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| नायथी | नायकी | १६३ | [illegible] |
| खदे | खडे | १६७ | १९ |
| शुकदेत | शुकदेव | १८८ | २० |
| वोचाय | [illegible] | १९१ | २१ |
| रक | क्रूर | २२४ | ४ |
| अकूक | अक्रूर | २३९ | ११ |
| ४२७ | २४७ | २४७ | २ |
| खरू | खरूप | ३१२ | २१ |
| सनमुस | सनमुख | ३१४ | २१ |
| तर्पत | तर्पन | ३३४ | ७ |
| देवाता | देवता | ३६४ | १ |
| गमननो | गमनो | ३८९ | ११ |
| ज्ञय | यज्ञ | ४०० | ७ |

॥ इति अशुद्ध नामा ॥

## ॥ अथ सूची पत्र लिख्यते ॥

| | | |
|---|---|---|
| पंचम ५ | २५ | १४ |
| षष्ठ ६ | २७ | १७ |
| सप्तम ७ | ३० | ५ |
| अष्टम ८ | ३[illegible] | ८ |
| नवम ९ | ३४ | १३ |
| दशम १० | ३९ | २ |
| एकादश ११ | ४० | २० |
| द्वादश १२ | ४२ | १३ |
| त्रयोदश १३ | ४५ | १४ |
| चतुर्दश १४ | ४७ | १ |
| पंचदश १५ | ४९ | ११ |
| षोडश १६ | ५० | ११ |
| सप्तदश १७ | ५३ | १ |
| अष्टादश १८ | ५६ | ११ |
| एकोनविंश १९ | ५८ | ५ |
| विंशति २० | ५९ | १६ |
| एकविंशति २१ | ६१ | ६ |
| द्वाविंशति २२ | ६२ | १४ |
| त्रयोविंशति २३ | ६४ | १ |
| चतुर्विंशति २४ | ६७ | ८ |
| पंचविंशति २५ | ७१ | १२ |

॥ इति सूची पत्रम् ॥